

पुस्तक मिलनेका ठिकाना.

लाहोरमें लालामेहेरचंद म्यानेजर संस्कृत पुस्तकालय
सेद मिट्ठावाजार.

मुंबई पंडित ज्येष्ठाराम मुकुन्दजीकी पुस्तकोंकीदुकानपर
मुंबादेवीकेपास

” श्रीकृष्णदासात्मज गंगाविष्णु, खेमराज
श्रीव्यंकटेश्वराख्य (छापखाना)

मुंबई.

| सं | सूची | पृ | पं | सं | सूची | पृ | पं | सं | सूची | पृ | पं |
|----|----------------------|----|----|----|-----------------------|----|----|----|--------------------|----|----|
| १ | मंगलाचरणम् | १ | १ | ३४ | अंधादि | १० | ३ | ६७ | सामान्यभानि | २० | १ |
| २ | भयमानानि | १ | १२ | ३५ | जातिभानि | ११ | १ | ६८ | वस्त्रादिधारणं | २० | ६ |
| ३ | नंदादिनियिकलम् | २ | ५ | ३६ | भयक्षाणि | ११ | २ | ६९ | स्येतवस्त्र | २० | १० |
| ४ | नखेकफलम् | २ | १० | ३७ | पिकंभादियोग | ११ | ३ | ७० | रक्तवस्त्र | २० | १३ |
| ५ | नियिस्थामिनः | ३ | १ | ३८ | करणानि | १२ | १ | ७१ | कपिलपीतवस्त्र | २० | १५ |
| ६ | नंदादिनिययः | ३ | २ | ३९ | भद्राविचारः | १२ | ६ | ७२ | नीलश्यामवस्त्र | २० | १६ |
| ७ | शुभागुप्तः | ३ | ७ | ४० | भद्रारुलम् | १३ | १ | ७३ | पट्टवस्त्र | २० | १७ |
| ८ | यस्त्राधाः | ४ | ३ | ४१ | भद्रामुखपुच्छे | १३ | ११ | ७४ | कौशोपवस्त्र | २० | २० |
| ९ | कर्कषियोगः | ४ | ४ | ४२ | भद्रावासः | १३ | १३ | ७५ | रोमजवस्त्र | २१ | १ |
| १० | संवनेः | ४ | ५ | ४३ | भद्रास्तरवम् | १३ | १३ | ७६ | स्त्रीणां विशेषः | २१ | २ |
| ११ | अचूतः | ४ | ६ | ४४ | भद्रांगानि | १४ | १ | ७७ | दंतादिचूडकं | २१ | ४ |
| १२ | वस्त्रलभानि | ४ | ७ | ४५ | भद्रानाम | १४ | १ | ७८ | स्वर्णादि | २१ | ६ |
| १३ | दग्धादि | ४ | ८ | ४६ | भद्रारूपम् | १४ | २ | ७९ | कौर्ममणिचूडक | २१ | ९ |
| १४ | वस्त्रभानि | ४ | ९ | ४७ | भद्रास्तोत्रम् | १४ | ६ | ८० | विशेषः | २१ | ११ |
| १५ | भिनयः | ४ | १० | ४८ | आनंदादियोगः | १५ | १ | ८१ | सदलकंचुक | २१ | १४ |
| १६ | पिपमतिययः | ४ | ११ | ४९ | ग्रहणामस्यसाज्यता | १५ | २ | ८२ | सुवर्णादिजतु | २१ | १६ |
| १७ | वस्त्रनित्य्यादि | ५ | १ | ५० | होलिकावकम् | १६ | ४ | ८३ | मिश्र | २१ | १६ |
| १८ | सिद्धितिययः | ५ | २ | ५१ | नीरमानम् | १६ | ५ | ८४ | वस्त्रादिधारणोक्त | २१ | १८ |
| १९ | सर्वायेसिद्धियोगः | ५ | ३ | ५२ | साज्यमुहूर्ताः | १६ | ६ | ८५ | मशुद्धिः | २१ | १८ |
| २० | वर्ज्यानि | ५ | ४ | ५३ | ग्राह्यमुहूर्ताः | १६ | ७ | ८६ | नक्षत्रपाराणां | २१ | १८ |
| २१ | परिहारः | ५ | ५ | ५४ | अज्ञादीनांसाज्यता | १६ | ८ | ८७ | प्रत्येकफलम् | २२ | ३ |
| २२ | गवियोगः | ५ | ७ | ५५ | अयपादः | १६ | १८ | ८८ | अयावश्यके | २२ | ४ |
| २३ | नियिनां ग्राह्यताः | ६ | ३ | ५६ | वक्रादीनां वार्धका | १७ | ३ | ८९ | नृत्तेपस्त्रेदग्धे | २२ | ५ |
| २४ | व्याधौकांस्वामिनः | ६ | ४ | ५७ | क्षयमासः | १७ | १२ | ९० | अन्नवक्राणि | २२ | ६ |
| २५ | सर्वकार्यंशुभाः | १ | १ | ५८ | अधिमासः | १७ | २० | ९१ | वस्त्रनिर्माणं | २२ | ११ |
| २६ | कस्मिन्वारसिध्ति | ७ | १ | ५९ | न्यादवाह | १८ | ५ | ९२ | मन्तानं | २३ | १२ |
| २७ | उक्तेप्रसिद्धिदाः | ७ | २ | ६० | सिंहादियुगौ | १८ | ६ | ९३ | तारणमुहूर्त | २३ | १४ |
| २८ | अभ्यगफलंविधि | ७ | ४ | ६१ | मन्वादिनिययः | १८ | १४ | ९४ | वासोरजन | २३ | १९ |
| २९ | वारेनपुनिः | ७ | ९ | ६२ | युगाद्या | १८ | १५ | ९५ | वातःशालभं | २४ | २ |
| ३० | कान्तद्वारा | ७ | १२ | ६३ | कैद्रादिसंज्ञा | १८ | १६ | ९६ | कक्षाबंधन | २४ | ४ |
| | नक्षत्रस्वामिनंकार्य | | | ६४ | राशिसंज्ञा | १८ | १७ | | उपानन्तरिधानं | | |
| ३१ | चैत्र | ८ | १ | ६५ | मैत्रादिमुहूर्ताः | १९ | १ | ९७ | वर्मरुत्तं | २४ | ६ |
| ३२ | ध्रुवादिनक्षत्राणि | १० | १ | ६६ | ग्राह्याग्राह्यसंज्ञा | | | ९८ | कुसुमधारणां | २४ | ९ |
| ३३ | अभिसुखादि | | २ | | कन्काण्डः | | १ | ९९ | चंदनधारणं | २४ | ११ |

| सं. | सूची | पृ. | पं. | सं. | सूची | पृ. | पं. | सं. | सूची | पृ. | पं. |
|-----|--------------------|-----|-----|-----|------------------|-----|-----|-----|---------------|-----|-----|
| ९६ | पुष्पमालाधारणं | २४ | १३ | ३० | विक्रय | २७ | १६ | ६४ | शस्त्रघटनं | ३२ | ७ |
| ९७ | कालकज्जलधारणं | २४ | १५ | ३१ | पिपणि | २७ | १८ | ६५ | शस्त्राभ्यावा | ३२ | १३ |
| ९८ | नयपात्रेजलधारणं | २४ | १६ | ३२ | लताधारोपणं | २७ | १९ | ६६ | धनुस्त्र्यास | ३२ | १७ |
| ९९ | संयासनेरंभः | २४ | १८ | ३३ | औषधीभक्षणं | २८ | १ | ६७ | धनुषिगुणारोप | ३२ | १९ |
| १०० | नवपात्रेभोजनं | २४ | २१ | ३४ | रसभक्षणं | २८ | ५ | ६८ | शस्त्रधृति | ३२ | २० |
| १०१ | नवभांडसाधनं | २५ | १ | ३५ | पिप्पलादिभक्षणं | २८ | ७ | ६९ | सन्नाहादि | ३३ | २ |
| १०२ | राजदर्शनं | २५ | ३ | ३६ | अहिफेनविपभक्षणं | २८ | १० | ७० | खट्वादि | ३३ | ४ |
| १०३ | दीक्षा- | २५ | ५ | ३७ | मांसादिभक्षणं | २८ | ११ | ७१ | गारापदि | ३३ | ६ |
| ४ | वीराभिचार | २५ | ७ | ३८ | औषधनिर्माणं | २८ | १३ | ७२ | नलिकादि | ३३ | ९ |
| ५ | नपारंभ | २५ | ९ | ३९ | रससाधनं | २८ | १५ | ७३ | शत्रुसंधि- | ३३ | १२ |
| ६ | संन्यास | २५ | ११ | ४० | चूर्णादिसाधनं | २८ | १७ | ७४ | ननांगनाभोगः | ३३ | १४ |
| ७ | वस्त्रदानं | २५ | १३ | ४१ | वैलीपवेशनं | २८ | १९ | ७५ | स्त्रीसंभोगः | ३३ | १७ |
| ८ | गोक्रय | २५ | १५ | ४२ | यमनादिकर्म | २८ | १ | ७६ | गीतादिछत्तं | ३३ | १० |
| ९ | पशुनादनं | २५ | १७ | ४३ | हुताशकर्म | २९ | ४ | ७७ | नवादिछत्तं | ३३ | २१ |
| १० | नसाकर्म | २५ | १८ | ४४ | दूतनष्टशात्कलादि | २९ | ६ | ७८ | वंशानकम् | ३४ | २ |
| ११ | नहिपादीनां | २५ | २० | ४५ | सूचिकर्म | २९ | ८ | ७९ | वाद्यारंभ | ३४ | ३ |
| १२ | व्याघ्रादिपालनं | २५ | २ | ४६ | अश्वकर्म | २९ | ९ | ८० | भेरीवादनं | ३४ | ५ |
| १३ | वानरादिपालनं | २५ | ३ | ४७ | अश्वारोहण | २९ | १८ | ८१ | काहलायां | ३४ | १ |
| १४ | कुक्कुटादीनांपालनं | २५ | ६ | ४८ | अश्वचक्रे | २९ | १८ | ८२ | वादित्रसमय | ३४ | ११ |
| १५ | मत्स्यग्रहणं | २५ | ८ | ४९ | पञ्चापचक्र | ३० | ५ | ८३ | मृगणा | ३४ | १२ |
| १६ | पक्षिकर्म | २५ | १० | ५० | गजकर्म | ३० | ९ | ८४ | वायुराचक्रं | ३४ | १५ |
| १७ | पक्षिद्वेक्षाण | २५ | ११ | ५१ | गजांकुश | ३० | १५ | ८५ | जलयंत्र | ३५ | ८ |
| १८ | व्यालग्रह | २५ | १३ | ५२ | ध्वजादि | ३० | १६ | ८६ | हरहट्टचक्रम् | ३५ | १० |
| १९ | सामान्यपशुश्ला | २५ | १४ | ५३ | दंतद्विदः | ३० | १७ | ८७ | जलाशय- | ३५ | ११ |
| २० | गवांकर्म | २५ | १८ | ५४ | गजसंभनः | ३० | २१ | ८८ | जलादितानं | ३५ | १६ |
| २१ | अजादीनां | २५ | २० | ५५ | गजारोहणं | ३१ | २ | ८९ | मवांतरं | ३५ | १७ |
| २२ | शम्पादीनां | २७ | १ | ५६ | गजचक्रं | ३१ | ५ | ९० | कूपचक्रं | ३६ | १ |
| २३ | घृषादीनां | २७ | २ | ५७ | सूषणघटनं | ३१ | ६ | ९१ | कासारचक्रम् | ३६ | २ |
| २४ | नवीनघृषस्य | २७ | ४ | ५८ | स्वर्णकार | ३१ | १० | ९२ | वापीचक्रम् | ३६ | ३ |
| २५ | मेघमहिष्योः | २७ | ६ | ५९ | भिषुफरादि | ३१ | १५ | ९३ | कुंडचक्रम् | ३६ | ४ |
| २६ | उष्ट्रादीनां | २७ | ८ | ६० | फलदांतिश्र | ३१ | १७ | ९४ | कूपचक्रम् | ३६ | ५ |
| २७ | सर्वकृष | २७ | १० | ६१ | रत्नयुग्धटनं | ३२ | २ | ९५ | खट्वादि | ३६ | ६ |
| २८ | विनिमय | २७ | १२ | ६२ | मुक्तायुजी | ३२ | ३ | ९६ | खट्वादि | ३७ | १ |
| २९ | प्रापकृषधिकृषी | २७ | १३ | ६३ | पशुभोजनं | ३२ | ५ | ९७ | विधिकारकृतं | ३७ | २ |

| सं | सूची | पृ | पं | सं | सूची | पृ | पं | सं | सूची | पृ | पं |
|-----|-----------------|----|----|----|------------------|----|----|----|-----------------|----|----|
| १८ | त्रिविकाचक्रं | ३७ | ३ | २८ | पञ्चदेदः | ४१ | १४ | ६१ | तैलिकचक्रम् | ४५ | ९ |
| १९ | तरिघटनं | ३७ | ५ | २९ | करिणासिक्खेप- | ४१ | १५ | ६२ | इक्षरसादिच | ४५ | ८ |
| २०० | तरिचक्रं | ३७ | ६ | ३० | रसोदजं | ४१ | १७ | | क्रम | ४५ | |
| १ | तरिमोचनं | ३७ | ९ | ३१ | धान्यहेद | ४१ | १९ | ६३ | उपलविदागणं | ४५ | १० |
| २ | रज्ज्यावर्धनं | ३७ | १२ | ३२ | धान्यसंग्रह | ४२ | १ | ६४ | चक्रंच | ४५ | ११ |
| ३ | कूपकं | ३७ | १५ | ३३ | बीजसंग्रह | ४२ | ४ | ६५ | कुंभकारकृत्यं | ४५ | १४ |
| ४ | बस्तुपूरणा | ३७ | १८ | ३४ | बीजवर्धनं | ४२ | ५ | ६६ | चक्रंच | ४५ | १५ |
| ५ | यात्रा | ३७ | २० | ३५ | धान्यस्थापनं | ४२ | ७ | ६७ | लोहकारकृत्यं | ४५ | १८ |
| ६ | सेतुवर्धनं | ३८ | १ | ३६ | निःक्रमणा- | ४२ | ८ | ६८ | मणिकारकृत्यं | ४५ | १ |
| ७ | सेतुचक्रम् | ३८ | ५ | ३७ | कणमर्दनं | ४२ | ९ | ६९ | नापितकृत्यं | ४६ | २ |
| ८ | मपासु | ३८ | ६ | ३८ | धान्यवर्धनं | ४२ | ११ | ७० | मानिककृत्यं | ४६ | ४ |
| ९ | गृहादिकृत्यं | ३८ | ८ | ३९ | आनयनं | ४२ | १२ | ७१ | पलंगं | ४६ | ६ |
| १० | वाणिज्य- | ३८ | १० | ४० | स्थापनं | ४२ | १४ | ७२ | तंतुवायक | ४६ | ८ |
| | निधिनां गुप्तं | | | ४१ | पाकक्रिया- | ४२ | १५ | ७३ | चित्रकारकर्म | ४६ | १० |
| ११ | स्थापनं | ३८ | १३ | ४२ | धान्यस्थिति- | ४२ | १७ | ७४ | चर्मकारकर्म | ४६ | १२ |
| १२ | दत्तद्रव्याढाभं | ३८ | १६ | ४३ | धर्मक्रिया | ४२ | १८ | ७५ | जापानिवाजि | ४६ | १४ |
| १३ | द्रव्यदानं | ३८ | १९ | ४४ | तर्पसा- | ४२ | २१ | ७६ | व्याधादिक | ४६ | १५ |
| १४ | अरुणाग्रहाणा | ३९ | १ | ४५ | दाससंग्रह | ४३ | ३ | ७७ | म्लेच्छकर्म | ४६ | १७ |
| १५ | धान्यवृत्ति- | ३९ | ५ | ४६ | मुद्रापातन- | ४३ | ४ | ७८ | त्रिलाकारकर्म | ४६ | १९ |
| १६ | हलप्रवहणां | ३९ | ७ | ४७ | शांतिः | ४३ | ७ | ७९ | चौरकर्म | ४६ | २१ |
| १७ | अपरे | ३९ | ११ | ४८ | व्रतारंभोत्सर्गो | ४३ | ११ | ८० | निर्मयकर्म | ४७ | २ |
| १८ | चक्राणि | ३९ | १३ | ४९ | होमेभाहुतिचक्रं | ४३ | १४ | ८१ | निषिकरकर्म | ४७ | ४ |
| १९ | हलविधि | ३९ | १६ | ५० | अजविशेषः | ४३ | १५ | ८२ | गलमहा | ४७ | ६ |
| | उत्सातफलशां | | | ५१ | बन्निवासः | ४४ | १ | ८३ | पल्लिवादिनां | ४७ | ८ |
| २० | तिश्रम- | ४० | | ५२ | शत्रुवर्धनं | ४४ | ४ | ८४ | स्पर्णाकारकर्म | ४७ | १० |
| २१ | योक्तादिताधनं | ४० | १ | ५३ | मैत्री- | ४४ | ६ | ८५ | आत्मणादिकर्म | ४७ | १२ |
| २२ | बीजोक्तिः | ४० | ९ | ५४ | नक्षत्रकष्टवल्ली | ४४ | ८ | ८६ | पंषांस्वभावकर्म | ४७ | १६ |
| २३ | फणिवक्त्रे | ४० | ११ | ५५ | सर्पदनेस- | ४४ | १० | ८७ | विप्रकृत्यं | ४८ | १ |
| २४ | कुदालक | ४० | १२ | ५६ | योगसुक्तस्थानं | ४४ | १२ | ८८ | क्षत्रकृत्ये | ४८ | २ |
| २५ | सस्यसेवनं | ४१ | १६ | ५७ | औपधिस्थानं | ४४ | १४ | ८९ | भैरवकृत्ये | ४८ | ४ |
| २६ | कुलावर्धनं | ४१ | १० | | रोगसुक्तस्यग | ४५ | २ | ९० | शूद्रकृत्ये | ४८ | ६ |
| | कुल्यामूलवर्ध | | १२ | ५८ | मनं | | | ९१ | लघुभट्टी | ४८ | ८ |
| २७ | नम् | ४१ | | ५९ | अंडच्छेदनं | ४५ | ४ | ९२ | धूर्तकार्य- | ४८ | ९ |
| | धान्यामध्याह | | | ६० | तैलिककर्म- | ४५ | ५ | ९३ | मल्लयुद्ध | ४८ | १० |

| सं | सूची- | पृ | पं | सं | सूची- | पृ | पं | सं | सूची | पृ | पं |
|----|-----------------|----|----|----|---------------|----|----|----|----------------|----|----|
| ११ | स्त्रीणां | ७० | ६ | २२ | शांति | ७८ | ८ | ५७ | पद्मरोहण | ८५ | २ |
| १२ | कुटुंब | ७० | ८ | २३ | धर्मा | ७८ | १० | ५८ | दुग्धपानं | ८५ | ५ |
| १३ | सतायां | ७० | ९ | २४ | स्नान | ७८ | २१ | ५७ | राहुचक्रं | ८५ | ११ |
| १४ | चंद्रवलातपेक्षा | ७० | ११ | २५ | गर्भाधान | ७८ | २ | ५८ | रुडचक्रं | ८५ | १२ |
| १५ | चंडावस्था- | ७० | १६ | २६ | विशेष | ७९ | ९ | ५९ | सूर्यावलोकनं | ८५ | २१ |
| १६ | प्रयासादिक- | ७१ | ७ | २७ | ऋतुरात्रिफलं | ७९ | १३ | ६० | अग्निचंडयो | ८५ | १५ |
| १७ | तिथ्यादिनादानं | ७१ | ८ | २८ | विशेष- | ७९ | १४ | ६१ | निष्क्रमणां | ८५ | १७ |
| १८ | गंतव्यराहोगक | ७१ | ९ | २९ | उत्सवंतं | ७९ | १ | ६२ | कच्छावंधतं | ८५ | १७ |
| १९ | समयतः | ७१ | १० | ३० | शारफनु | ८० | ७ | ६३ | भस्मप्रयोगनं | ८६ | ७ |
| २० | रत्नन्यायः | ७१ | ११ | ३१ | अतपलोभनं | ८० | १० | ६४ | कटिसूत्रं | ८६ | ९ |
| | जल्यभोजस्मिता | | | ३२ | मीमंत | ८० | ११ | ६५ | अन्नमासनं | ८६ | १२ |
| | गारेतथायमलेत | | ११ | ३३ | गर्भिणीधर्मा | ८० | २० | ६६ | विशेष | ८६ | २० |
| १ | पघतकार्ये | ७१ | १२ | ३४ | कदाकार्ये | ८० | १३ | ६७ | घ्राणबंध | ८६ | ९ |
| २ | सर्वतोभद्रं | ७२ | १३ | ३५ | पतिधर्मा | ८१ | १४ | ६८ | तांम्यूलन्यसमे | ८७ | १२ |
| ३ | त्रिभुजाकि- | ७३ | १ | ३६ | जन्मप्रविष्ये | ८१ | १९ | ६९ | कर्णबंध | ८७ | १६ |
| ४ | सूर्यकालानलं | ७३ | २ | ३७ | विष्णुपूजा- | ८१ | २१ | ७० | सूची | ८७ | २१ |
| ५ | चंडकाशानलं | ७३ | ३ | ३८ | सूतिगेहवेश- | ८१ | ३ | ७१ | विशेष- | ८८ | २ |
| ६ | स्थादिचक्राणि | ७५ | १ | ३९ | मासेइ॥ | ८१ | ३ | ७२ | वर्धापन | ८८ | १० |
| ७ | कोटचक्रं | ७५ | १ | ४० | सूतिकाय | ८२ | ६ | ७३ | अब्दसूती | ८८ | ११ |
| ८ | गोचरकलोल- | | ४ | ४१ | जातकर्म | ८२ | ९ | ७४ | बीलं | ८८ | १३ |
| ९ | अयमार्तयेतिथि | ७६ | ३ | ४२ | जातकर्मातिंता | ८२ | १० | ७५ | केंद्रप्रहेषु | ८८ | १५ |
| १० | वार | ७६ | ४ | | रक | ८२ | | ७६ | मातरजसि | ८८ | १६ |
| ११ | नक्षत्र | ७६ | ५ | ४३ | जन्पदेवता | ८२ | २५ | ७७ | ज्येष्ठेच | ८९ | २ |
| १२ | योग | ७६ | ६ | ४४ | स्नपानं | ८३ | १ | ७८ | जन्यमासि | ८९ | ३ |
| १३ | करण | ७६ | ७ | ४५ | पथ्यं | ८३ | २ | ७९ | विशेष | ८९ | ५ |
| १४ | मास | ७७ | १ | ४६ | काप्य | ८३ | ३ | ८० | क्षीरं | ८९ | १२ |
| १५ | लग्न | ७७ | २ | ४७ | स्नानं | ८३ | ५ | ८१ | श्मश्रुर्य | ९० | ३ |
| १६ | समय | ७७ | ३ | ४८ | शतायिपक् | ८३ | ७ | ८२ | सन्यासिनां | ९० | ५ |
| १७ | वास | ७७ | ४ | ४९ | नामकर्म | ८३ | १० | ८३ | अक्षतायः | ९० | ७ |
| १८ | वर्ण | ७७ | ५ | ५० | मासनाम | ८३ | २१ | ८४ | चक्रं | ९० | ११ |
| १९ | मान | ७७ | ६ | ५१ | नाक्षत्रनाम | ८४ | ३ | ८५ | मंगलं | ९० | १२ |
| २० | प्रतिप्रसर्व | ७७ | ८ | ५२ | कुमारी- | ८४ | १० | ८६ | उपनयनं | ९० | १३ |
| २१ | विधि | ७८ | ३ | ५३ | दत्तजनने | ८४ | १२ | ८७ | युरुवलं | ९० | २१ |
| २२ | शांति | ७८ | ७ | ५४ | दोलोरोहणां | ८४ | १७ | ८८ | रविचक्रं | ९१ | २ |

| सं. | सूची | पृ | पं | सं. | सूची | पृ | पं | सं. | सूची | पृ | पं |
|-----|------------------|----|----|-----|-----------------|-----|----|-----|----------------|----|----|
| ८९ | चैत्रप्राशस्त्य | ९१ | १ | २३ | वनगमन | ९७ | ३ | ५६ | ग्रहचक्रं | २ | ३ |
| ९० | मदीपः | ९१ | १२ | २४ | मत्स्यगमनं | ९७ | ४ | ५७ | गणकूट | ३ | ९ |
| ९१ | अनध्यायः | ९१ | ५ | २५ | धुरिकाबंधनं | ९७ | ५ | ५८ | भकूट | ३ | १ |
| ९२ | पुनर्वस्तुनिषेधः | ९१ | १० | २६ | धुरिकाचक्रं | ९८ | ४ | ५९ | पडासकं | ४ | २ |
| ९३ | मासाः | ९१ | १ | २७ | विद्यारंभ | ९८ | ५ | ६० | द्विद्विशं | ४ | ३ |
| ९४ | घाराः | ९१ | २ | २८ | विद्यायोग | ९८ | १२ | ६१ | त्रिनाडिः | ४ | १९ |
| ९५ | विशेषः | ९१ | २ | २९ | वागीश्वरः | ९८ | १ | ६२ | चतुर्नाडि | ४ | ८ |
| ९६ | ज्येष्ठनिषेधः | ९२ | ३ | ३० | ज्योतिस्तु | ९९ | ३ | ६३ | पंचनाडी | ५ | ९ |
| ९७ | अनध्यायेषु- | ९२ | ४ | ३१ | गस्मिन् | ९९ | ५ | ६४ | पूजी | ५ | १३ |
| ९८ | विभागा | ९२ | ५ | ३२ | व्याकरणादि | ९९ | ६ | ६५ | दूरं | ५ | १६ |
| ९९ | सोपपदा | ९२ | ६ | ३३ | धर्मशास्त्र | ९९ | ८ | ६६ | वर्गी | ५ | ४ |
| १०० | रूपपक्षविशेषः | ९२ | ७ | ३४ | वैद्यगारुड- | ९९ | ९ | ६७ | पडासकादिका | ६ | ८ |
| १ | नक्षत्राणि | ९३ | ८ | ३५ | सांख्यवेदान्त | ९९ | ११ | ६८ | मेलकापवादः | ६ | १२ |
| २ | तिथयः | ९३ | ९ | ३६ | नाट्यारम्भः | ९९ | १३ | ६९ | यास्यादि | ६ | १७ |
| ३ | काल | ९३ | १० | ३७ | लिय्यारंभः | ९९ | १४ | ७० | निश्चयमु | ६ | २१ |
| ४ | लग्नशक्तिः | ९३ | ११ | ३८ | धनुर्विद्यारंभः | ९९ | १५ | ७१ | कन्यावरणं | ६ | ६ |
| ५ | देवस्वामिनोवेद | १ | १ | ३९ | शिल्पारंभः | ९९ | १९ | ७२ | वरवरणं | ७ | १० |
| ६ | मानिक | ९४ | १ | ४० | तंत्रारंभः | ९९ | २० | ७३ | सौभाग्यासकं | ७ | १३ |
| ७ | धुरिकाबंध- | ९४ | ३ | ४१ | जैनधर्मारंभः | ९९ | ४ | ७४ | समयः | ७ | १४ |
| ८ | केशान्तसमावर्तन | ९४ | ४ | ४२ | चक्रं | १०० | ५ | ७५ | गौर्यादि | ७ | १८ |
| ९ | वर्णचक्रं | ९४ | ५ | ४३ | पारायणमु- | १०० | ७ | ७६ | दानप्रशंशा | ७ | २३ |
| १० | विशेषः | ९४ | १ | ४४ | पुराणग्रन्थ | १०० | ११ | ७७ | जन्ममासादिनी | ७ | |
| ११ | इजामेदः | ९५ | ३ | | संस्कारकल्लो | १०० | ५ | | पेधः | | ३ |
| १२ | मन्त्रांतराणि | ९५ | ४ | ४५ | देवतपरिष्ठा | १० | ७८ | ७८ | ज्येष्ठे | ८ | १० |
| १३ | वेदपतिफलं | ९५ | १ | ४६ | शुभशकुना | १०० | ८ | ७९ | मार्गे | ८ | १५ |
| १४ | केंद्रभावफलं | ९५ | २ | ४७ | प्रभाः | १०० | २० | ८० | प्रतिकूलं | ८ | १८ |
| १५ | नवांशफलं | ९५ | २ | ४८ | वर्णचक्रं | १०० | १० | ८१ | नवमेद्विविशेषः | ८ | ८ |
| १६ | ग्रहांशफलं | ९५ | ४ | ४९ | गुणः | १ | ११ | ८२ | गोचरे | ९ | १३ |
| १७ | लग्नफलं | ९५ | ९ | ५० | वश्यचक्रं | १ | १२ | ८३ | आतिर्पातिके | ९ | १९ |
| १८ | लग्नग्रन्थे | ९५ | १२ | ५१ | तारा | १ | २ | ८४ | मेलानेविशेषः | ९ | २१ |
| १९ | महानाम्नीव्रतं | ९६ | ० | ५२ | योनिमैत्री | २ | ७ | ८५ | विशेषः | १० | १० |
| २० | सुहृत्तेकिं | ९६ | १ | ५३ | योनयः | २ | ८ | ८६ | मासाः | १० | १५ |
| २१ | योगचक्रं | ९७ | १ | ५४ | चैरं | २ | ९ | ८७ | नक्षत्राणि | ११ | ११ |
| २२ | समावर्तनः | ९७ | २ | ५५ | एकयोनावधि | २ | १४ | ८८ | तिथयः | ११ | १२ |

| सं | सूची | पृ | पं | सं | सूची | पृ | पं | सं | सूची | पृ | पं |
|-----|----------------|----|----|----|---------------|----|----|----|-------------------|----|----|
| ८८ | वाराः | ११ | १४ | २२ | विवाहकृत्यं | २१ | १५ | ५६ | निश्चय | ३२ | १७ |
| ८९ | दशमहादोषः | ११ | १८ | २३ | तैलारंभ | २१ | १७ | - | विवाहकलाः | ५ | |
| ९० | यान | ११ | २० | २४ | कंकणारंभ | २१ | १८ | ५७ | मयेत्रोदिनानि | ३१ | २१ |
| ९१ | युनि | ११ | २१ | २५ | काजिककरणं | २१ | १९ | ५८ | भानिवाराविच | २३ | ५ |
| ९२ | लता | १२ | १ | २६ | संभत्यापनं | २२ | १ | - | विवाहालयममा | | |
| ९३ | युति | १२ | २ | २७ | दन्नादीनि | २२ | | - | सेपुभर्तृगृहेपितृ | | |
| ९४ | पंचबालाका | १२ | ३ | २८ | नैलसेख्या- | २२ | ७ | ५९ | गृहच | ३३ | १२ |
| ९५ | सप्तबालाका | १२ | ४ | २९ | वेदनक्षपणं | २२ | ८ | ६० | पितृगृहागमनं | ३३ | १३ |
| ९६ | विंशतिबालाका | १२ | १ | ३० | ग्वडुविवाह | २२ | ११ | ६१ | वृत्थापनं | ३३ | १४ |
| ९७ | अंशवेधः | १४ | १ | ३१ | संकीर्णानि | २२ | १३ | - | वधूमयशः | | ७ |
| ९८ | दग्धादिभानि | १४ | २ | ३२ | खड्गचक्रं | २२ | १४ | ६२ | द्विगमकाल | ३४ | ४ |
| ९९ | नन्नाविचारः | १५ | १ | ३३ | पधरणे | २३ | १५ | ६३ | पतिशक्रं | ३४ | ५ |
| १०० | यामित्रः | १५ | ५ | ३४ | विशेषः | २३ | ३ | ६४ | पतिमवावः | ३४ | ६ |
| १ | यामित्रकलं | १५ | ७ | ३५ | पटचक्रं | २३ | ४ | ६५ | नवींदापाकं | ३४ | ७ |
| २ | यागः | १५ | ८ | ३६ | अपरं | २३ | ५ | - | द्विरागमन | ३४ | ८ |
| ३ | एकार्गल | १५ | १ | ३७ | लघुविचारः | २३ | ७ | ६६ | अप्याध्यानकाल | ३५ | १ |
| ४ | उपग्रह | १६ | २ | ३८ | ममवर्गः | २३ | १४ | ६७ | पाकपुता | ३५ | १७ |
| ५ | दग्धा | १६ | ३ | ३९ | राश्यांशः | २३ | १५ | ६८ | महोदाम | ३५ | ७ |
| ६ | तिथिगंड | १६ | ४ | ४० | होरा | २४ | १ | ६९ | वृणावृत्ति | ३५ | १० |
| ७ | क्रांतिसाम्यं | १६ | ५ | ४१ | द्रेकाण | २४ | २ | ७० | अवधृत्य | ३५ | ११ |
| ८ | भगंड | १७ | १ | ४२ | मत्तारा | २४ | ३ | ७१ | अभचक्राणि | ३५ | १४ |
| ९ | लघुगंड | १७ | २ | ४३ | नपांश | २५ | १ | ७२ | पंचागकूटं | ३७ | १ |
| १० | विपनाहि | १७ | ३ | ४४ | निशंश | २५ | २ | ७३ | फलानि | ३७ | २ |
| ११ | स्फुटभुक्तकरणं | १८ | १ | ४५ | द्वादशोश | २५ | १ | ७४ | तुरगचक्रं | ३७ | ३ |
| १२ | वातावयः | १८ | ६ | ४६ | उच्चादि | २५ | २ | ७५ | गजचक्रं | ३७ | ४ |
| १३ | भस्मकलं | १८ | ८ | ४७ | लघुसाधनं | २५ | ३ | ७६ | रघुचक्रं | ३८ | १ |
| १४ | अंशशक्तिः | १९ | १ | ४८ | लघुनारिणी | २७ | १ | ७७ | गनिकलं | ३८ | १ |
| १५ | नक्षत्रसुद्धिः | १९ | ५ | ४९ | गनं | २८ | ५ | ७८ | यामनस्थमुहूर्तः | ३८ | ११ |
| १६ | विंशोपका | १९ | १५ | ५० | दशनं | २९ | ८ | ७९ | मन्यास | ३८ | १५ |
| १७ | कर्तरि | १९ | २० | ५१ | गोपभावाः | २९ | १० | ८० | दीक्षाः | ३८ | १७ |
| १८ | भयवादः | २० | १ | ५२ | दशमनागिणी | २९ | ३ | ८१ | स्त्रीणां | ३८ | १९ |
| १९ | गोधूनी | २० | ८ | ५३ | नक्षत्रगणितं | ३२ | ३ | ८२ | पुण्यादिम्नानं | ३८ | २१ |
| २० | अंशदिलभा | २१ | ९ | ५४ | क्रांतिसंशोधः | ३२ | ६ | - | अप्याधानक | | |
| २१ | कुलदेवनास्थाः | २१ | ११ | ५५ | प्रतिफलं | ३२ | १५ | ८३ | शान्तिः | | ९ |

| सं | सूची | पृ | पं | सं | सूची | पृ | पं | सं | सूची | पृ | पं |
|-----|-----------------|----|----|----|-------------------|----|----|----|----------------|----|----|
| ८४ | गजामिषेककाल | ३९ | ५ | १७ | अपादि | ४५ | २ | ५१ | हिंवर | ५४ | २० |
| ८५ | दुर्गापिपद्यामा | ३९ | ९ | १८ | जातिभानि | ४५ | ३ | ५२ | घवाडकं | ५४ | २१ |
| ८६ | धिपौ | ३९ | २ | १९ | भवृक्षाणि | ४५ | ६ | ५३ | विघ्नकाल | ५५ | ३ |
| ८७ | आनपत्रचक्रं | ४० | २ | २० | योगिनी | ४५ | ५ | ५४ | दग्धादिदिशा | ५५ | ४ |
| ८८ | छत्रधानि | ४० | ३ | २१ | तिथिकाल | ४५ | ६ | ५५ | परिधः | ५५ | ५ |
| ८९ | तत्कालामिषेक | ४० | ५ | २२ | योगिन्यंतरं | ४५ | ७ | ५६ | धानाः | ५६ | १ |
| ९० | अभिषेकनं | ४० | ३ | २३ | पाशादीनांगणिः | ४५ | ८ | ५७ | विचार | ५६ | २ |
| ९१ | सभारचना | ४१ | ३ | २४ | योगिनीविचार | ४६ | ६ | ५८ | परिहसुक्त | ५६ | ३ |
| ९२ | समापवेश | ४१ | ८ | २५ | विशेषः | ४६ | ८ | ५९ | वक्रिणः | ५६ | ४ |
| ९३ | दामबंधनं | ४१ | ९ | २६ | दिवारात्रिविभाग | ४७ | १ | ६० | दिग्लग्नानि | ५७ | १ |
| ९४ | परमंडपादि | ४१ | ११ | २७ | अपरं | ४७ | ४ | ६१ | यात्रालक्षणो | ५७ | २ |
| ९५ | वितानादि | ४१ | १३ | २८ | चंद्रफलं | ४७ | ६ | ६२ | विमादीना | ५८ | २ |
| ९६ | सेनारचनं | ४१ | १५ | २९ | घट्यासकं | ४७ | ९ | ६३ | योगादयः | ५९ | २ |
| ९७ | युवगजामिषेक | ४१ | १५ | ३० | राहुचक्रं | ४७ | १० | ६४ | विजया | ५९ | ५ |
| ९८ | चामगादिधृतिः | ४१ | १६ | ३१ | लालाटिकाचक्रं | ४७ | ११ | ६५ | विजयस्तु | ५९ | ८ |
| ९९ | राज्याभिषेकलोचन | ४१ | १७ | ३२ | लालाटिका | ४७ | १२ | ६६ | तिथिदाहनं | ५९ | ९ |
| १०० | यानार्थः | ४१ | २० | ३३ | उपः प्रांतास्त्यं | ४८ | १ | ६७ | भदोहदं | ५९ | १० |
| १०१ | मतिवक्रं | ४१ | २१ | ३४ | यात्रालक्षणं | ४८ | ५ | ६८ | वारदोहदं | ६० | १ |
| १ | नोताज्ञातजन्मनं | ४२ | ७ | ३५ | रक्षादि | ४८ | १३ | ६९ | दिग्दोहदं | ६० | २ |
| २ | मभ्र | ४२ | ९ | ३६ | विशेषक | ५० | ३ | ७० | दिग्याहनं | ६० | ३ |
| ३ | यानाभेदाः | ४२ | १४ | ३७ | भावफलं | ५१ | ६ | ७१ | प्रस्थानदिन | ६० | ४ |
| ४ | समयः | ४२ | १७ | ३८ | विशेषः | ५१ | १ | ७२ | दिस्तुप्रस्थान | ६० | ५ |
| ५ | गपादि | ४२ | १९ | ३९ | चंद्रयुतौ | ५१ | २ | ७३ | प्रस्थानविधि | ६० | ६ |
| ६ | मासा | ४३ | १ | ४० | प्रत्येकफलं | ५१ | ३ | ७४ | दुग्धादिनिषे- | ६० | ७ |
| ७ | कृतयः | ४३ | २ | ४१ | जीवमृतपक्षौ | ५१ | १९ | ७५ | मैयुनेविचारः | ६१ | २ |
| ८ | भानि | ४३ | ३ | ४२ | फलं | ५२ | १ | ७६ | अकान्तवृष्टिः | ६१ | ५ |
| ९ | तिमयः | ४३ | ६ | ४३ | उदाहृति- | ५२ | ७ | ७७ | गमनविधि | ६१ | ८ |
| १० | निंदास्पतिः | ४३ | ५ | ४४ | कुलाकुलं | ५२ | ८ | ७८ | कस्माद्गुहात् | ६१ | १५ |
| ११ | मात्सेडविशेषः | ४४ | २ | ४५ | विचार | ५२ | ९ | ७९ | मंगलानि | ६१ | १७ |
| १२ | चारफल | ४४ | ४ | ४६ | तिषयः | ५३ | ४ | ८० | स्वरमु- | ६१ | १९ |
| १३ | दिक्शूलं | ४४ | ५ | ४७ | धर्मादि | ५४ | १ | ८१ | शकुन | ६२ | १ |
| १४ | विदिशः | ४४ | ६ | ४८ | अन्यं | ५४ | ६ | ८२ | अष्टशकुनः | ६२ | २ |
| १५ | वृद्धधाना | ४४ | ७ | ४९ | सर्वाको | ५४ | ८ | ८३ | आवश्यकं | ६२ | ३ |
| १६ | वारकाल | ४५ | १ | ५० | महाडानाभ्रमौ | ५४ | १० | | निवृ | ६२ | ३ |

| सं. | सूची | पृ. | पं. | सं. | सूची | पृ. | पं. | सं. | सूची | पृ. | पं. |
|-----|----------------|-----|-----|-----|---------------|-----|-----|-----|---------------|------|-----|
| ८२ | विचार | ६३ | ३ | १६ | विचार | ७३ | २ | ५१ | चक्रं | ८१ | ४ |
| ८३ | वारपरत्वे | ६३ | १५ | १७ | अर्धयाम | ७३ | ३ | ५२ | दिक्ताधनं | ८१ | १५ |
| ८४ | द्विष्ठाफलं | ६३ | २० | १८ | कालशान्यंशः | ७३ | ४ | ५३ | आयादि | ८१ | १८ |
| ८५ | चक्रच | ६३ | १ | १९ | महारस्थल | ७३ | ५ | ५४ | वास्तुफलं | ८३ | २ |
| ८६ | चतुर्धटिकं | ६४ | १ | २० | अपरं | ७४ | ६ | ५५ | गृहबलं | ८३ | १५ |
| ८७ | अश्वेगितं | ६५ | १२ | २१ | त्रिनाडिकं | ७४ | १ | ५६ | द्वारकन्यं | ८३ | १९ |
| ८८ | अस्तीगितं | ६६ | २ | २२ | नात्कालिकं | ७४ | २ | ५७ | धुवादितानं | ८४ | २ |
| ८९ | सारमेयेगितं | ६६ | ५ | २३ | हंसचारचक्रं | ७४ | ३ | ५८ | चक्रं | ८४ | ३ |
| ९० | काकेगितं | ६७ | ५ | २४ | क्रमः | ७५ | ४ | ५९ | आयादि | ८४ | ४ |
| ९१ | मानाचक्रं | ६७ | १५ | २५ | शुभाशुभंघुते | ७५ | १ | ६० | विचारः | ८५ | २ |
| ९२ | गणनं | ६८ | १ | २६ | जयीपथ्यः | ७५ | १ | ६१ | चक्रं | ८५ | ३ |
| ९३ | अपरं | ६८ | २ | २७ | अशुभचिह्नं | ७५ | २ | ६२ | मासफलं | ८५ | ५ |
| ९४ | गणनं | ६८ | ३ | २८ | शुभानि | ७६ | १४ | ६३ | गेहारंभे | ८५ | १२ |
| ९५ | अपरं | ६९ | १ | २९ | शियालिरित | ७७ | १५ | ६४ | तियिकलं | ८५ | १५ |
| ९६ | गणनं | ६९ | २ | ३० | क्रम | ७७ | ३ | ६५ | वारफलं | ८५ | २० |
| ९७ | वर्णास्वर | ६९ | ३ | ३१ | संकेत | ७७ | ८ | ६६ | वृषचक्रं | ८६ | २ |
| ९८ | द्वादशवार्षि | ७० | १ | ३२ | नामानिकर्माणि | ७७ | ९ | ६७ | काष्ठविचारः | ८६ | ६ |
| ९९ | वार्षिकं | ७० | २ | ३३ | ख्यादिषु | ७७ | १० | ६८ | वृच्छेदः | ८६ | ९ |
| १०० | अयनं | ७० | ३ | ३४ | चतुर्मासेषु | ७७ | २ | ६९ | शिनास्यापनं | ८६ | ११ |
| १ | वर्णश्चरचक्रं | ७० | ४ | ३५ | हिमासेषु | ८४ | ३ | ७० | खननविधि | ८६ | १५ |
| २ | क्रतु | ७० | ५ | ३६ | सुहूर्तमानं | ८७ | ३ | ७१ | फलं | ८७ | १ |
| ३ | मासाद्यंतरं | ७१ | १ | ३७ | प्रवेश | ८७ | ५ | ७२ | शंकुमानं | ८७ | ५ |
| ४ | अष्टसरा | ७१ | २ | ३८ | यानाकक्षोल | ११ | ७३ | ७३ | गिलन्यास | ८७ | ११ |
| ५ | रुपांकार्याणि | ७१ | ३ | ३९ | भूमिपरिक्षा | ८७ | ८ | ७४ | तासामानं | ८७ | १२ |
| ६ | जयपराजयं | ७२ | १ | ४० | गंधा | ८७ | १६ | ७५ | वास्तुस्थानं | ८७ | १५ |
| ७ | भूचलं | ७२ | २ | ४१ | जाति | ८८ | १ | ७६ | संभ | ८७ | १८ |
| ८ | राशिचक्रं | ७२ | ३ | ४२ | शकुनं | ८८ | ६ | ७७ | अंगुलं | ८८ | ५ |
| ९ | रविहत- | ७२ | ४ | ४३ | दुर्गारंभ | ८८ | ९ | ७८ | स्वमपरिक्षा | ८८ | ९ |
| १० | चंद्रहतगूढराहू | ७२ | ५ | ४४ | चक्रं | ८८ | १८ | ७९ | वेधं | ८८ | १२ |
| ११ | स्वरदलं | ७२ | ६ | ४५ | नगरेचक्रं | ८९ | १ | ८० | उपवेधः | ८८ | ७ |
| १२ | चंद्रबलं | ७२ | ७ | ४६ | पदाकुचक्रं | ८९ | २ | ८१ | कर्म्यहत्तेन- | ८८ | १७ |
| १३ | यायुबलं | ७२ | ८ | ४७ | अष्टपदं | ९० | १ | ८२ | भूमिस्मृता- | ९० | १८ |
| १४ | मौहूर्तिकराहु | ७३ | ९ | ४८ | शुभाशुभं | ९० | ११ | ८३ | गदोमुग्धादि | ९० | २१ |
| १५ | योगिन्यर्धमहरं | ७३ | १ | ४९ | गन्धज्ञानं | ९० | १२ | ८४ | चक्रत्रयं | २.०० | १ |

| अ | सूची | पृ | पं | सं | सूची | पृ | पं | सं | सूची | पृ | पं |
|-----|------------------|-----|----|----|-------------------|----|----|----|----------------|----|----|
| ८५ | द्वारविचार | २०० | २ | १९ | गृहप्रतिष्ठा | ६ | २ | ५१ | अतिचारग्रहा | १३ | २ |
| ८६ | द्वारफलं | २०१ | ३ | २० | कुम्भचक्रं | ६ | ३ | ५२ | ज्वालासुरवी | १३ | ३ |
| ८७ | द्वारचक्रं | १ | १ | २१ | देवागयादि | ६ | ६ | ५३ | गताब्दकरणं | १४ | ७ |
| ८८ | देहलीचक्रं | १ | २ | २२ | पुरवेशः | ६ | १३ | ५४ | इष्टकालानयनं | १४ | १ |
| ८९ | गृहभागचक्रं | १ | ३ | २३ | शत्रोः पुरवेशा | ६ | १५ | ५५ | वर्षेष्टमाग्नी | १४ | २ |
| ९० | गृहकूपं | १ | ४ | २४ | यान्त्रानि वृत्तौ | ६ | १७ | ५६ | दृष्टाणाचक्रं | १५ | ३ |
| ९१ | कूपफलं | १ | ५ | २५ | पुण्यार्जनं | ७ | १० | ५७ | त्रिराशिका | १५ | ४ |
| ९२ | वर्णशः | १ | ६ | २६ | विशेषः | ७ | १ | ५८ | हृद्वा | १५ | ५ |
| ९३ | गृहस्थितिषोः | १ | ७ | २७ | लभफलं | ८ | ५ | ५९ | त्रिशाशा | १५ | ६ |
| ९४ | मत्स्यफलं | १ | ८ | २८ | भावफलं | ८ | १ | ६० | पंचाधिकारी | १५ | ७ |
| ९५ | गृहस्थितिकुंठ | १ | ९ | २९ | रवेशमादि | ८ | ३ | ६१ | सुधानयनं | १५ | १ |
| ९६ | दृष्ट्यानिर्माणं | २ | ४ | ३० | नूतननगरं | ९ | २० | ६२ | दृष्टिचक्रं | १५ | ३ |
| ९७ | गैहोपकरणं | २ | ६ | ३१ | चूपबालायां | ९ | ४ | ६३ | सुद्धा | १६ | ५ |
| ९८ | इष्टिकयातनं | २ | ७ | ३२ | गज | ९ | ५ | ६४ | यागिनी | १६ | ६ |
| ९९ | चित्रकर्म | २ | ८ | ३३ | मया | ९ | ६ | ६५ | पताकी | १६ | १४ |
| १०० | वृत्तभट्टा | २ | १६ | ३४ | गृहोपस्करं | १ | ६ | ६६ | रचना | १६ | १३ |
| १ | अणुभट्टा | २ | १९ | ३५ | देवादिस्थापनं | १० | १० | ६७ | मिश्रकलोल | १६ | १५ |
| २ | प्रतिदिग्वृत्ता | २ | २१ | ३६ | उपसंहारः | १० | ११ | ६८ | मण्यमामान्यं | १६ | १६ |
| ३ | देवालयारभ | ३ | २ | ३७ | वेशप्रतिष्ठाक | ११ | ५९ | ६९ | सिध्यसिद्धी | १६ | १८ |
| ४ | प्रसादयीरभ | ३ | ४ | ३८ | स्थौ | १० | ७० | ७० | कदाभविष्यति | १७ | १४ |
| ५ | पुरादीनां | ३ | ६ | ३९ | गृहाणांजन्मति | १ | | | संततिर्भवति | १७ | १९ |
| ६ | मतोलीचक्रं | ३ | १० | ४० | व्यादि | १० | २ | ७१ | प्यति | १७ | |
| ७ | पुरवासन | ३ | १५ | ४१ | रव्यादिचक्रं | ११ | ३ | ७२ | यमलयोग | १८ | |
| ८ | प्रतालीचक्रं | ३ | १५ | ४२ | शनिपाद | ११ | ५ | ७३ | इत्यशाल | १८ | |
| ९ | वत्सचक्रं | ३ | १७ | ४३ | भस्मयोगः | १२ | ८ | ७४ | सूक्ष्मरिप्यु | १८ | २० |
| १० | वत्सचक्रं | ४ | ५ | ४४ | विजययोगः | १२ | १० | ७५ | दीप्तांशा | १९ | ३ |
| ११ | विचारः | ४ | ६ | ४५ | इष्टसिद्धि | १२ | १२ | ७६ | जीविष्यति | १९ | ४ |
| १२ | वास्तुचक्रना | ४ | १२ | ४६ | यमकर्तृ | १२ | १४ | ७७ | त्वाम | १९ | ११ |
| १३ | प्रवेशभेदः | ५ | १० | ४७ | हंस | १२ | १५ | ७८ | नष्टलाभः | २० | ७ |
| १४ | मासादि | ५ | १ | ४८ | अष्टसिद्धि | १२ | १ | ७९ | पतितधनलाभ | २० | १५ |
| १५ | विधि | ५ | ७ | ४९ | यमदंष्ट्रा | १२ | ६ | ८० | चौरहृति | २० | २० |
| १६ | जीर्णवेशः | ५ | १७ | ४८ | यमदंड | १३ | ९ | ८१ | चौरज्ञानं | २१ | १३ |
| १७ | साज्या | ५ | १९ | ४९ | कुदुष्ट | १३ | १२ | ८२ | दिग्ज्ञानं | २१ | १५ |
| १८ | आभ्युदयिकानि | ६ | २० | ५० | राक्षस- | १३ | १७ | ८३ | विवादप्रश्न | २२ | १ |

| सं | सूची | पृ | पं | सं | सूची | पृ | पं | सं | सूची | पृ | पं |
|-----|----------------|----|----|----|----------------|----|----|----|----------------|----|----|
| ८४ | वंचीमोन | २३ | १२ | १८ | दिनालाकद० | ३० | १ | ५२ | पूर्वा | ४३ | ३ |
| ८५ | वृष्टी | २३ | ८ | १९ | काकशब्द | ३१ | २ | ५३ | उत्तरा | ४३ | ८ |
| ८६ | दूरस्थोजीवा | २३ | १७ | २० | दिनमिति | ३१ | ३ | ५४ | हस्त | ४३ | १३ |
| ८७ | तीता | | | २१ | पादछाया | ३१ | ४ | ५५ | चिन्ता | ४३ | १८ |
| ८८ | सुषिमम- | २४ | २ | २२ | अंगुलं | ३१ | ५ | ५६ | स्वति | ४४ | २ |
| ८९ | कयास्करतं | २४ | १५ | २३ | चक्रं | ३१ | १ | ५७ | विशारवा | ४४ | ७ |
| ९० | मकारांतरं | २४ | १७ | २४ | सप्तगुलं | ३३ | १३ | ५८ | अनुराधा | ४४ | ११ |
| ९१ | अपरं | २४ | १८ | २५ | एकविंशंगुलं | ३३ | १३ | ५९ | ज्येष्ठा | ४४ | १६ |
| ९२ | अपरं | २४ | २१ | २५ | सप्तनाडी | ३३ | ७ | ६० | मूला | ४४ | २१ |
| ९३ | जीवाक्षरादि | २५ | ३ | २७ | विचारः | ३४ | ९ | ६१ | तिथीनांकघा | ४७ | ९ |
| ९४ | उत्तरोत्तरं | २५ | ४ | २८ | पक्षीपातफलं | ३४ | ८ | ६२ | वारकष्ट | ४८ | २१ |
| ९५ | उत्तराधरादि | २५ | ५ | २९ | सप्तनाडी | ३४ | १ | ६३ | शान्ति | ४९ | ४ |
| ९६ | अष्टौपक्षा- | २५ | १ | ३० | मल्लेकफलं | ३५ | ९ | ६४ | सर्वेपिध्याद्य | ५० | ५ |
| ९७ | शुभाशुभं | २६ | २ | ३१ | सरटफलं | ३५ | १६ | ६५ | भावे | | |
| ९८ | गर्गमनोरमायं | २७ | १ | ३२ | पक्षीशब्दफलं | ३५ | २ | ६६ | कष्टांतरं | ५० | १४ |
| ९९ | त्र्यारामोक्तं | २७ | २ | ३३ | चक्रम् | ३५ | ८ | ६७ | जननलक्षणफलं | ५२ | १९ |
| १०० | प्रश्नफलोत्तरं | | | ३४ | स्वप्रविचारः | ३५ | ८ | ६८ | किमपिजन्मफलं | ५३ | १४ |
| १ | चर्पशुभाशुभं | २७ | ९ | ३५ | शुभस्वप्ना | ३६ | ७ | ६९ | काकविषाफलं | ५४ | १६ |
| २ | जन्मान्त | २७ | १२ | ३५ | अशुभस्वप्ना | ३८ | १ | ७० | संक्रांतिविचार | ५४ | ३ |
| ३ | कृपादिवाहन | २८ | १ | ३७ | शान्ति | ३९ | ७ | ७० | मीनसंक्रांतिवि | ५४ | ११ |
| ४ | शृंगीन्नातिफलं | २८ | ८ | ३८ | अंगस्फुरणं | ३९ | १२ | ७१ | विचारः | | १५ |
| ५ | उदयफलं | २८ | ९ | ३९ | उसाताः | ४० | ५ | ७२ | विश्विकसंक्रां | ५४ | ८ |
| ६ | दशफलं | २८ | ११ | ४० | युगादि | ४० | १३ | | तिविचारः | | ११ |
| ७ | पंचवासरफलं | २८ | १३ | ४१ | गजछाया | ४० | १४ | ७३ | वृषसंक्रांति | ५५ | ५ |
| ८ | वायुपरिक्षा- | २८ | २० | ४२ | अर्धेदिय- | ४० | १६ | ७४ | अर्धविचार | ५५ | ७ |
| ९ | संवत्सरास्तुमि | | ४ | ४३ | अम्बिव्याष्टकं | ४० | १८ | ७५ | कुहचक्रयांग | ५५ | ११ |
| १० | क्षादि- | २८ | २ | ४४ | भरण्यां | ४१ | २ | ७६ | ग्रहयोग- | ५६ | १४ |
| ११ | भूकंपफलं | २९ | १२ | ४५ | रुतिका | ४१ | ९ | ७७ | वरणान्नक्षणं | ५६ | १८ |
| १२ | इंद्रमंडलं | २९ | १७ | ४६ | रोहिण्यां | ४१ | १५ | ७८ | जंघालक्षणं | ५६ | १९ |
| १३ | वारुण | २९ | २० | ४७ | आर्द्रा | ४१ | २१ | ७९ | रोमकूपं | ५६ | २१ |
| १४ | अग्नि | २९ | ७ | ४८ | पुन- | ४२ | ५ | ८० | जानु | ५६ | ४ |
| १५ | वायु | ३० | १३ | ४९ | पुष्य | ४२ | ९ | ८१ | सिंग | ५६ | ६ |
| १६ | काकनीडचक्रं | ३० | १४ | ५० | अस्सेपा | ४२ | १४ | ८२ | चुपणं | ५७ | ७ |
| १७ | काकमंथुनं | ३० | १५ | ५१ | मघा- | ४२ | २० | ८३ | मणि | ५७ | ११ |

| सं | सूची | पृ | पं | सं | | पृ | पं |
|-----|---------|----|----|----|----------------|----|----|
| ८४ | सूत्र | ५७ | १५ | १८ | भृ | ६१ | २ |
| ८५ | शुक्र | ५७ | १७ | १९ | गंरव | ६१ | ८ |
| ८६ | स्फिक | ५७ | १८ | २० | ललाट | ६१ | ८ |
| ८७ | कटि | ५७ | १९ | २१ | भदित | ६१ | १० |
| ८८ | जठर | ५७ | २० | २२ | हसिनं | ६१ | ११ |
| ८९ | पाश्च | ५७ | १ | २३ | ललाटेरेखा | ६१ | १२ |
| ९० | कुक्षि | ५७ | ५ | २४ | विरो | ६१ | १८ |
| ९१ | नाभि | ५८ | ८ | २५ | केश | ६१ | २१ |
| ९२ | वलि | ५८ | ९ | २६ | व्यासेनफलं | ६२ | ३ |
| ९३ | पार्श्व | ५८ | १० | २७ | रूपालक्षणं | ६४ | १९ |
| ९४ | बुक्क | ५८ | ११ | २८ | सासुद्रिकल | ६५ | १ |
| ९५ | हृदय | ५८ | १४ | | क्षणं | | ३ |
| ९६ | जानु | ५८ | १४ | २९ | शिवास्त्रविचार | ६५ | १ |
| ९७ | गिया | ५८ | १५ | ३० | उल्लुफरुत | ६८ | १ |
| ९८ | पृष्ठ | ५८ | १८ | ३१ | ग्रयचिष्य | ६९ | - |
| ९९ | कक्षा | ५८ | २१ | | | | |
| १०० | अंश | ५८ | २१ | | | | |
| १ | वाहू | ५८ | १ | | | | |
| २ | अंगुलि | ५८ | ७ | | | | |
| ३ | हस्त | ५९ | ११ | | | | |
| ४ | नख | ५९ | १० | | | | |
| ५ | यव | ५९ | २० | | | | |
| ६ | रेखाफल | ५९ | १० | | | | |
| ७ | सुबुक्क | ५९ | २१ | | | | |
| ८ | आष | ६० | २ | | | | |
| ९ | जिह्वा | ६० | ३ | | | | |
| १० | तालु | ६० | ४ | | | | |
| ११ | मुख | ६० | ५ | | | | |
| १२ | ह्रस्व | ६० | ६ | | | | |
| १३ | कण | ६० | १० | | | | |
| १४ | गंड | ६० | १३ | | | | |
| १५ | नाशा | ६० | १४ | | | | |
| १६ | क्षत | ६० | १७ | | | | |
| १७ | नेत्र | ६० | १८ | | | | |

मुहूर्तसिंधुः

ॐ

श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ ऐंकारपञ्जरशुकीमुपनिषदु
 द्यानकेलिकलकण्ठीम् ॥ आगमविपिनमयूरीमार्यामंत
 र्विप्तावधेगौरीम् ॥ १ ॥ ध्यायंश्चेतसिचरणौद्रुतकनकनिभा
 वनर्धमणियुक्तौ ॥ नमनोद्यतहरिहरयोर्भासापालाशतांती
 तौ ॥ २ ॥ पीतावारक्ततलैयावकलज्जाप्रदौधन्यौ ॥ देव-
 शिरोमणिमाल्यैर्वृतौनुतोकस्यंशुभदौन ॥ २ ॥ शंकरभा
 लविभूत्यागंगासलिलार्द्रयास्पृष्टौ ॥ अपिचंचललाटस्थ
 गिततृतीयनेत्राभिसंतप्तौ ॥ ३ ॥ चरणावनिशंभेतर्ध्वा
 तध्वंसंविधायचात्यंतं ॥ स्वांतंकुरुतांशांतंयंत्रांतंचाप्य-
 विघ्नान्तम् ॥ ४ ॥ अथमुहूर्तरत्नाकरारव्यःसंग्रहःक्रियते
 ॥ तत्रादौहेयोपादेयविचारकलोलःशुभः ॥ ॥

अथनवमानानिः

| | | | | | | | | |
|----------------|----|--------|---|---|---|---|---|---------------------|
| ॐ | ॐ | ॐ | ॐ | ॐ | ॐ | ॐ | ॐ | ॐ |
| १ भमानमितिः | | | | | | | | ६ गुरुमानम् |
| गुर्वक्षराचारः | ६० | पलम् | १ | | | | | गुरोर्मध्यमानेन |
| पलानां | ६० | घटिः | १ | | | | | एकराशिभागेष्टरुवर्ष |
| घटीनां | ६० | भादिने | १ | | | | | ७ देवमानम् |

| | | |
|----------------------------------|----------------------|-----------------------------------|
| २ चंद्रदिनमानं | ३ सावनमानं दिनं | मकरार्कादिमास षट्कं देवानां दि |
| एक तिथि मि तं | इनोदय द्वायांत रं | नं कर्कादिमास षट्कं |
| ४ सौरदिनं | ५ पैत्र्यदिनं | देवानां रात्रिः |
| प्रति दिनं स्फुटतु क्ति मितिः | विधोर्मासः | मासादीनां वर्षः कल्पनावर्षाणां |

मासादिकल्पना स्फुटैव मनोर्ब्रह्मणस्तु संख्याक्षमानगे
र्युगेः ७१ भवेत् ब्रह्ममानंतु कल्पः सर्व एवयस्य दिनं ३०
तथा च वर्षायनर्तु युगपूर्वक म त्रसौरान्मासास्तथा च ति
थयस्तु हिनां भुमानात् यत्कृच्छ्र सूतकचिकित्सित वासरा
द्यंतत्सावनाच्च घटिकादिक मार्क्षमानात् नंदादितिथीनां
फलं ५ नंदासु चित्र भवनोत्सव चृत्य कर्म भद्रा सु मांगलिक

| चांद्र नाक्षत्र सावन सौर मानम्. | | | | |
|---------------------------------|-----|-----|-----|-----|
| ३७१ | ३६६ | ३५५ | ३६० | दि० |
| ३ | १५ | १५ | ० | घ० |
| ५२ | ३० | ३० | ० | प० |
| ३० | २२ | २२ | ० | वि० |
| ० | ३० | ३० | ० | अ० |

पौष्टिकयानभूषाः कु
र्याज्जया सुजयसाध-
नमंत्रवादात्रिंत्तासु-
चोग्रमपरासु शुभं न
दर्शज्ञानातिदेकर्मणि
पौष्टिके च क्रवे च शस्ताप

तिथीनां स्वामिनः

| ति. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ |
|-----|-----|-------|------|------|-------|-------|-------|-----|-----|----------|-------|------|-------|-----|--------|
| शुभ | अभि | असा | गौर | गणेश | सर्व | गुरु | सर्व | शिव | हनु | यम | विश्व | हरि | कामदे | शिव | चंद्र |
| कुप | असा | विश्व | माधव | यम | चंद्र | कुमार | इंद्र | मनु | नील | धर्मरत्न | शिव | सर्व | मदन | कलि | विष्णु |

नंदादितिथयः

शुभाशुभतिथयः

| | | | | | | | | | | |
|--------|---|----|----|--|-----------|----|----|-----------|----|----|
| नंदा | १ | ६ | ११ | | शुक्लपक्ष | | | कृष्णपक्ष | | |
| भद्रा | २ | ७ | १२ | | १ | ६ | ११ | १ | ६ | ११ |
| जया | ३ | ८ | १३ | | २ | ७ | १२ | २ | ७ | १२ |
| रिक्ता | ४ | ९ | १४ | | ३ | ८ | १३ | ३ | ८ | १३ |
| पूर्णा | ५ | १० | १५ | | ४ | ९ | १४ | ४ | ९ | १४ |
| | | | | | ५ | १० | १५ | ५ | १० | १५ |
| | | | | | ६ | ११ | १६ | ६ | ११ | १६ |
| | | | | | ७ | १२ | १७ | ७ | १२ | १७ |
| | | | | | ८ | १३ | १८ | ८ | १३ | १८ |
| | | | | | ९ | १४ | १९ | ९ | १४ | १९ |
| | | | | | १० | १५ | २० | १० | १५ | २० |
| | | | | | ११ | १६ | २१ | ११ | १६ | २१ |
| | | | | | १२ | १७ | २२ | १२ | १७ | २२ |
| | | | | | १३ | १८ | २३ | १३ | १८ | २३ |
| | | | | | १४ | १९ | २४ | १४ | १९ | २४ |
| | | | | | १५ | २० | २५ | १५ | २० | २५ |
| | | | | | १६ | २१ | २६ | १६ | २१ | २६ |
| | | | | | १७ | २२ | २७ | १७ | २२ | २७ |
| | | | | | १८ | २३ | २८ | १८ | २३ | २८ |
| | | | | | १९ | २४ | २९ | १९ | २४ | २९ |
| | | | | | २० | २५ | ३० | २० | २५ | ३० |
| | | | | | २१ | २६ | ३१ | २१ | २६ | ३१ |

तिपत्य दिष्टाव्यायामशिल्पोषधमंगलेषु यात्राविवाहादिषु च द्वि
 तीया १ बीजोत्तिदास्यासवसंप्रयोगे ज्ञेया तृतीयोद्यविधौ च तु
 र्थीमांगल्यकृत्येषु च पंचमी स्यात् षष्ठी अवेकर्मणि न प्रयाणे
 २ अक्षयप्रयाणाभरणादिकेषु स्यात् सप्तमी अष्टमं मंगलेषु से
 नासु यात्रादिषु चाष्टमी अष्टा पापोग्रसिद्धौ नवमी वरिष्ठा ३ द
 शम्यभीष्टागमने प्रवेशो मांगल्यकर्मसिंहपौष्टिके च एका
 दशी मंगलसिद्धये च अक्षयक्रियायां च महानसे च ४ अक्षयसपा
 णिग्रहणे निधाने स्याद् द्वादशी सिद्धिकरी नयानेत्रयो दशी क
 र्मणि मंगलाद्ये क्षिप्रैः सप्तमी भाग्यविधौ अक्षयच ५ चतुर्द
 शी सिद्धिकृदुद्यकार्ये न तु प्रयाणे न खलु प्रवेशो मांगल्यय-

(४)

मुहूर्तसिंधु.

ज्ञादिषु पौर्णमासी दशौ नशस्तः पितृकर्मणीष्टः ६ अत्रकेषां
चिन्मतेन वमी पक्षरंध्रतिथिर्नशति पत्तितामध्यमा विषमासु स
मासु २ १० शुभा.

| कर्कियोगः शुभाः | | | | | | | पक्षरंध्रतिथयः | | | | | | |
|--------------------|-----|------|-----|-------|-------|-----|---|-----|-----|-----|--------|-----|----------|
| रु. | चं. | मं. | बु. | बृ. | शु. | श. | ४ | ६ | ८ | १२ | १४ | ९ | तिथयः |
| १२ | ११ | १० | ९ | ८ | ७ | ६ | ९ | ८ | ४ | १४ | २५ | २५ | वर्ज्यप० |
| रु. | चं. | मं. | बु. | बृ. | शु. | श. | सर्वेती ३ शुभाः | | | | | | |
| १२ | ११ | १० | ९ | ८ | ७ | ६ | वाराः | | बु. | रु. | वारे. | | |
| अमृतयोगः शुभाः | | | | | | | तिथयः | | १ | ७ | अशुभा. | | |
| रु. | चं. | मं. | बु. | बृ. | शु. | श. | अथयोग केषांचिन्मते ३ शुभाः मृत्युसज्ञ तिथिश्च न्यल प्राशुभाः | | | | | | |
| १ | २ | १ | ३ | ४ | २ | ५ | १ | ३ | ५ | ७ | ९ | ११ | १३ |
| ६ | ७ | ६ | ८ | ९ | ७ | १० | तु. | सि. | मि. | ध. | क. | ध. | बृ. |
| ११ | १२ | ११ | १३ | १४ | १२ | १५ | म. | म. | क. | क. | सि. | मी. | मी. |
| दग्धादियोगा अशुभाः | | | | | | | गृहप्र | | | | | | |
| रु. | चं. | मं. | बु. | बृ. | शु. | श. | वेशभौ | | | | | | |
| १२ | ११ | ५ | ३ | ६ | ८ | ९ | माशिव | | | | | | |
| ४ | ६ | ७ | २ | ८ | ९ | ७ | नीया | | | | | | |
| १२ | ६ | ७ | ८ | ७ | १० | ११ | आयां | | | | | | |
| म. | वि. | आ. | मू. | रु. | रो. | ह. | शनिरो. | | | | | | |
| भ. | चि. | उपा. | घ. | उफा. | ज्ये. | रे. | | | | | | | |
| त्रितीययोगः अशुभाः | | | | | | | हिणीं विवाहे गुरु | | | | | | |
| रु. | चं. | मं. | बु. | बृ. | शु. | श. | पुष्यवर्ज्येत् | | | | | | |
| ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | विषमतिथयोपिवर्ज्य | | | | | | |
| ह. | मू. | अ. | अ. | पुष्य | रे. | रो. | | | | | | | |

यत्तितामध्यमा विषमासु समासु २।१० शुभाः प्राति.

| चैत्रादिषु शून्यतिथ्यादिकमशुभं. | | | | | | | | | | | |
|---------------------------------|-------|-------|-----|-------|-----|-----|-----|-----|-----|------|-------|
| चै. | वै. | ज्ये. | आ. | श्रा. | मा. | आ. | का. | मा. | पौ. | मा. | फा. |
| ९ | १२ | १३ | ७ | ३ | १ | १० | १४ | ७ | ४ | ६ | ३ |
| ८ | १२ | १४ | ६ | २ | २ | ११ | ५ | ८ | ५ | ५ | ४ |
| कुं. | मी. | वृ. | मि. | मे. | कं. | वृ. | तु. | ध. | क. | म. | सिं. |
| अ. | चि. | उषा | पू. | रुफा | श. | पू. | रु. | चि. | ह. | श्र. | मू. |
| ऐ. | स्वा. | पू. | ध. | श्र. | रे. | फा | म. | वि. | आ. | नू. | ज्ये. |

| सिद्धनिधयः शुभाः | | | | | सर्वार्यसिद्धयोगः शुभः | | | | | | |
|------------------|-----|-----|----|-----|------------------------------|-----|-----|-----|-----|-----|-------|
| शु. | बु. | मं. | श. | बु. | र. | चं. | मं. | बु. | बु. | सु. | श |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ह. | अ. | अ. | रो. | रं. | रं. | अ. |
| ६ | ७ | ८ | ९ | १० | मू. | रो. | अ. | अनु | अनु | अनु | रो. |
| ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | उ. | मृ. | उमा | ह. | पु. | अ. | स्वा. |
| | | | | | पु. | पु. | क. | रु. | अ. | पुन | ० |
| | | | | | अ. | अनु | ० | मृ. | ० | अ. | ० |
| | | | | | तिथयोमासशून्याश्चशून्यलभा | | | | | | |
| | | | | | नियान्यपिमध्यदेशविवर्ज्यानि | | | | | | |
| | | | | | दूष्याणीतरेषुच१पंग्वंधकापाल- | | | | | | |
| | | | | | नानिमासशून्याश्चराशयःगौडमा | | | | | | |
| | | | | | लवयोस्त्याज्याअन्यदेशेनगर्हि | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | |

ताः कुयोगास्तिथिवारोत्थास्तिथिभोत्थाप्रवारजाहूणवंगरयशेधेव
वज्र्यास्त्रितयजास्तथा अयोगे सुयोगोपि चेत्स्यात्तदानीमयोगं
निह तैष सिद्धिं तनोति परे लम्ब्युत्थ्या ॥ चंद्रसूर्योपरागत्राह्वादिपुंस्तथावनं
वज्र्यम्.

(६)

मुहूर्तसिंधु.

कुयोगादिनाशंदिनार्धोत्तरंविष्टिपूर्वचशस्तमूरविद्योगःसू
 र्यभादेद ४ गो ९ तर्क ६ दिखि १० श्व १३ नरवर २० संमितेचंद्र
 क्षैरविद्योगास्युर्दोषसंघविनाशकाः अत्रतिथयःदैवेपूर्वा
 ण्हीकीयात्थाआद्धेकुतपरोहिणी पार्वणेवापराणहस्थाव्रते
 तत्कर्मकालिकी नक्तव्रतेषुप्रदोषव्यापिनीयात्थाः यां
 तिथिंसमनुप्राप्यउदयंयातिभास्करः सातिथिः सकलाज्ञे
 याव्रताध्ययनकर्मसु अपरेउदयमित्यथास्तपंदमाहुः

रव्यादिवाराणां स्वामिनः

| रवि. | चंद्र. | मंगळ. | बुध. | गुरु. | शुक्र. | शनि. | वाराः |
|----------|---------|----------|---------|----------|-----------|----------|--------|
| शिव. | शिवा. | गुरु. | विष्णु. | महेश्वर. | इंद्र. | काला. | देवाः |
| बन्धि. | जल. | भूमि. | हरि. | इंद्र. | इंद्राणी. | ब्रह्मा. | अदेवा. |
| पुरु. | स्त्री. | पुरु. | नपुं. | पुरु. | स्त्री. | नपुं. | मह. |
| क्षत्रि. | वैश्य. | क्षत्रि. | शूद्रा. | ब्राह्म. | ब्राह्म. | म्लेच्छ. | स्वा. |

नृपाभिषेक मांगल्यसेवायानाश्रकं
 मोषधाहवधान्यादिविधो
 शंखमुक्तावुरजतवृक्षस्त्रीभूषण
 पुष्पगीतकतुसारादीनि
 विद्यामिवंधंधनस्तेयसंधिविग्रहक
 र्षणधात्वाकरप्रवालादीनि
 नृत्यशिल्पकलागीतलिपिभूरससं
 ग्रहविवादादीनि
 यज्ञपौष्टिक मांगल्यत्वर्यवस्त्रादिभू
 षणशुल्कब्रह्मादिरोपण
 नृत्यगीतादिवादित्रस्वर्णस्त्रीरत्नभू
 षणभूषण्यौत्सवादीनि
 त्रपुशीसायसभ्रमादिविषदानमृग
 यानृतआसवास्थिराणि
 एतानिदिङ्मंत्रां दर्शितानि.

| सर्वकार्येषुशुभाः | | | | उक्तेषुविहिता | | | |
|--|------------------|-------|----------------|---------------|------|----|------|
| च. बु. | सर्वकर्मसिद्धिदा | र. म. | उक्तसिद्धिकरा. | रु. सु. | यकाः | श. | |
| ग्रहस्योपचयस्थस्य ३।६।१०।११ वारे कार्य्यप्रसिद्धूतिनैवापचयसंस्थस्य यत्नादपि कृतं नरैः जन्मलग्नादिदं बोध्यम्. | | | | | | | |
| अभ्यंगफलं विधिश्च. | | | | | | | |
| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | वारा |
| ॐ | ॐ | ॐ | ॐ | ॐ | ॐ | ॐ | फलं |
| ॐ | ॐ | ॐ | ॐ | ॐ | ॐ | ॐ | पातन |

इदंचतिलतैलपरम् सार्षपादिकंतुनतैलं तथा गंधवासितमपितैलभिन्नम् तादृशतैलाभ्यंगेन कस्मिन्नपि दुष्टः अथवारप्रवृत्तिः चरार्द्धदेशांतरयोर्वियोगयोगोप्यपानीयपलैश्च सम्यक् सूर्योदयादूर्ध्वमृणेधनेधोवारप्रवृत्तिमुनयो वदन्ति इदंच सूक्ष्मम् स्थूलं तु दिनमानं निशार्धं च पंचदश १५ समन्वितं वारप्रवृत्तिकालः कालहोराः वारारंभाद्धतानाड्योद्वाभ्यां पंचभिराहताः वप्नेशात्षष्टषष्टादिक्रमेण होरेशा भवन्ति यथा सूर्योद्गार्गवः भागवाच्चंद्र एवं वारे प्रोक्तं कालहोरासु कर्तव्यमिति.

| नक्षत्राणि | | | | | |
|--|--|---|---|--|--|
| अ. | भ. | क. | रो | म. | आ. |
| नास. | यम. | वह्नि. | ब्रह्मा. | यंत्र. | रुद्र. |
| वस्त्रोपनयनक्षौरसीमंताभरण क्रियास्थापनेमास्वकार्या. | वापिकूपतडागविषशस्त्रोद्यदा रुणर्निलप्रवेशाणि तानि. | अन्याधानास्त्रशस्त्रोद्यसंविधि ग्रहदारुणसंग्रामोपविधादि वादीनि. | सीमंतोपनयनोद्वाहयस्त्रभूषा स्थिरगजवास्त्वभिषेकाः | प्रतिष्ठाभूषणोद्वाहसीमंतादिस्तौ रवस्त्रयात्रादीनि. | ध्वजतोरणसंग्रामप्राकारास्त्र क्रियाभुषाः संध्यादि. |
| नक्षत्राणि. | | | | | |
| ज्ये. | ज्ये. | अश्ले. | मघा. | पूर्वा. | उक्ता. |
| आदि. | आदि. | सूर्य. | पितर. | भग्न. | अर्यमा. |
| प्रतिष्ठायानसीमंतवस्त्रवास्तूपयना यनक्षौरश्रकर्मोदितिभेधियेयं धा न्यभूषण | यात्राप्रतिष्ठासीमंतव्रतबंधमवेश नकरग्रहविनासवैभुषा. | अनृतनव्यसनंदूनंक्रोधास्त्रविषदा हंकंवादवाणिज्यपिशुनकर्म. | कुषिवाणिज्यगोधान्यरणोपकरणा दिकंविवाहनृत्यगीताद्यंनिस्विलं. | रणदारुणशस्त्राग्निधातुवादविषादि कंविवादभेषजकर्मपूर्वात्रयेमासविक्रय | वस्त्रोपनयनोद्वाहवास्तुसद्वप्रवेशनं अश्वप्रतिष्ठासीमंतभिषकर्मोत्तरात्रये. |

नक्षत्राणि.

| हं. | वि. | स्वा. | वि. | श्र. | ध्वे. | मू. | शू. |
|---|---|---|--|---|---|--|-----------|
| रवि | चन्द्रा | बाधु | शक्रानी | मित्र | इन्द्र. | निकृ. | जलं. |
| प्रतिषोढाहसीमंतयानवस्त्रोपनायनं क्षौरचास्त्वभिषेकादि शक्रभं. | प्रवेशवस्त्रसीमंतप्रतिष्ठाव्रतबंधनंचा प्रभेवास्तुविधेचक्षौरभूषणकर्म. | प्रतिषोपनयोद्वाहवस्त्रसीमंतभूषणं विवाहाश्वेमकुप्यादिक्षौरकर्म. | वस्त्रभूषणवाणिज्यवसुधात्यादिसंग्रहं. नृत्यगीतशिल्पलेखनकर्म. | प्रवेशस्थापयनोद्वाहव्रतबंधधाष्ट्रमंगलं. वस्त्रभूषणचास्त्वर्थसंधिविग्रहा. | मूरास्त्रशस्त्रचाण्डाल्यं गोमहिष्यंबुकर्म यत् नृत्यगीताद्यंशिल्पलोहाशमलखनं | विवाहकृषिवाणिज्यवाहाहवभेषजं नृत्यशिल्पास्त्रसंधिविग्रहलेखनम्. | पूफासमम्. |

नक्षत्राणि.

| उ. | श्र. | श्र. | ध. | श. | मू. | उ. | इ. |
|---------|----------|---|---|--|-----------|-----------|--|
| विश्वे | रिधि: | गोविं: | वसु. | वरुण. | अजना | अहिबुध्ना | मूपा. |
| उफासमम् | उफासमम्. | प्रतिष्ठापनसीमंतक्षौरोपनयनोपधम् युरारामशृङ्गारभयद्वंद्वनं. | वस्त्रोपनयनक्षौरप्रतिष्ठापनमौषधं चास्तु- सीमंतप्रवेशाश्वेमभूषणं. | प्रवेशस्थापनक्षौरप्रतिष्ठापनमेषजं अश्व- भरणसीमंतचास्तुकर्म. | पूफासमम्. | पूफासमम्. | विवाहव्रतबंधाश्रप्रतिष्ठापनभूषणम्. प्रवेशवस्त्रसीमंतक्षौरभेषजं. |

प्रवादिसंज्ञाः

| रवि | चंद्र | भौम | बुधः | जीवः | शुक्रः | शनिः |
|--|---|--|-----------------------------------|--|---|--|
| उ.३ रो. | सा पुन. श्र. प. श. | सू.३ भ. म. | रु. वि. | ह. अ. पुष्य. अभि. | मृ. रे. वि अनु. | मू. ज्ये. आ. अ. सं. |
| प्रव स्थिरं | परं बल | उग्रं भ्रं | विस्त्रसा धारणं | क्षिप्र लघु. | मृदु मंत्र | नीह्वा दाहण. |
| शान्तिपुष्टिगृह्यारंभादुक्ताभारो पयोजोषधप्रवक्तव्यमिति. | गजगोशवादिदयनसेतुबंधन प्रयाणाराधकार्थालिचराणि | विषमद्यादिबधनीच्चाटनश बुधहारशाल्माद्युर्वाणि. | आग्निकार्यवयोत्सर्गमित्र कर्म. | मित्रकार्यगृहग्रामप्रवेशनर तिभूषावस्त्रगीतमंगलादिच. | स्त्रीकार्यरत्नादिवाद्यादिचुला संयन. | चेतालभूतमंत्राभिचारिकंवि द्यानैरोद्गसंज्ञासाभि. |

उर्ध्वसुरपादिभानि.

अंधादिभानि.

| उ.सुरव. | ति.सुरव. | अ.सुरव. |
|---|--|---|
| रो.उ. ३ प.श.अ. उ.आ. | सू.३मू.रु. भ.म.वि. अ.श्रे. | मृ.रे.वि. सा.अ.उ.ह. पुष्य.ज्ये.अभि. |
| मुसूर्यगृह्यारामचारणध्वजकर्मच. प्रासादेवेदिकोद्यानमक राद्यं. | हलप्रवाहगमनंगीयंजगजोष्ट्रकं. खरगोरथनौयान लुलायहपकर्म. | बिलप्रवेशगणितभूतमेतविलयनं. खननं धित्यकूपादिनिक्षेपोद्गरणादि. |

| अंध. | मंद. | मध्यम | मुली. |
|--------------------------------------|-------------------------------|-------------------------------|---------------------------------------|
| रो.पु.उ. वि.पू.य. रे. | मृ.अ.ह. अ.उ.श. अ. | आयानि ये.भीपू. भ. | उ.पू. सा.मू. अ.उ.रु. |
| अंधेगतपस्तुलोभः पूर्वस्यादिशिवतु. | मंदेपलेनलाभः दक्षिणगतं पस्तु. | स्यादूरेअर्विशं पश्चिमेवस्तु. | मुलोचने अथवाणमपिनः उत्तरगतं पस्तु. |

जातिनक्षत्राणि.

| ब्राह्म. | क्षत्रि. | वैश्य. | शूद्र. | कर्पक. | उग्र. | चांडाल. | जातयः |
|---|----------------|------------------------------|------------------------|---------------------|-------------------|----------------------|-------|
| रु. पू. ३ | उ. ३ पुष्य. | ह. अभि. अश्वि. पुष. | मघा.रे. अनु. रो. | वि. मृ. ज्ये. घ. | मू. आ. स्ता.श. | भ. अश्वे वि. श्र. | भानि. |
| एषानक्षत्राणां उल्कापाते न भौमचारेण केतुस्पर्शनेन शनिचारेण प्रत्येकं जार्तानां पीडा ज्ञेया. | | | | | | | |

धिष्णरक्षाः

| अ. | भ. | रु. | रो. | मृ. | आ. | पु. | पुष्य. | अ. | म. |
|--------|-----------|---------|--------|---------|-------|---------|-----------------------------|--------------------------|-------|
| विप. | आमल क. | उदुंबर. | जवु. | खदिर. | कलि. | पिप्पल. | नाग. | वंश. | वट. |
| पु. | उ. | ह. | वि. | स्ता. | वि. | आं. | ज्ये. | मू. | पू. |
| पालाश. | पूक्ष. | आरिष्ट. | बिल्व. | अर्जुन. | पेतस. | वकुल. | लक्ष्मी. | सर्ज. | बकुल. |
| उ. | अ. | घ. | श. | पू. | उ. | रे. | स्वर्क्षरक्षाः पूजनीयः स्वा | रिभरक्षाः पीडनीयः श्रेया | धिना. |
| पनस. | अर्क. | शमी. | कदंब. | चूत. | निंब. | मधूक. | | | |

विक्रंभादिपोगाः स्वामिनो वर्ज्यनाडयश्च.

| वि. | प्री. | आ. | सौ. | शो. | अ. | सु. | धृ. | शू. | ० |
|--------|---------|--------|--------|-------|--------|--------|---------|-------|---|
| यम. | विष्णु. | चंद्र. | धान. | जीव. | चंद्र. | इंद्र. | जल. | सर्प. | ० |
| ३ | ० | ० | ० | ० | ६ | ० | ० | ५ | ० |
| गं. | रु. | धु. | व्या. | ह. | व. | सि. | व्य. | व. | ० |
| पद्मि. | रवि. | भूमि. | रुद्र. | करुण. | गणेश. | रुद्र. | कुबेर. | लघु. | ० |
| ६ | ० | ० | ६ | ० | ६ | ६० | ६० | ० | ० |
| पः | शि. | सि. | सा. | शु. | शू. | ब्र. | है. | वे. | ० |
| मित्र. | कुमार. | सावि. | कमला. | गौरी. | नामसौ. | पितर. | आदित्य. | अदि. | ० |
| ३० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | २० | ० | ० |

फलान्येयानामनुव्यानि सुधीभिस्त्यागिष्यन्ती
प्राप्यन्ती च परवर्जनीयेष्वमरुतं पातनीयं अति.

करणविचारः

| शु. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | शनिः |
|-------|----------------|----------------|------------------------|-----------------|-----------|----------------|-----------|----------------|---------|--------------------|
| प.द. | किं. | वा. | नै. | व. | व. | कौ. | गर. | वि. | | सू. ज्ये. |
| पद. | वय. | कौ. | गर. | वि. | वा. | नै. | व. | व. | | आ. अ. सं. |
| रु. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | | नीष्टा |
| प.द. | वा. | नै. | व. | व. | कौ. | ग. | वि. | वा. | | दांरुण. |
| रद. | कौ. | ग. | वि. | वा. | नै. | व. | व. | कौ. | | |
| कर. | वय. | वाल. | कौ. | नै. | गर. | वाण. | नर. | शकु. | | |
| स्वा. | इंद्र. | मजाप. | मित्र. | भयं. | भू. | लक्ष्मी. | पम. | कठि. | | |
| | सेषैहिकपराशरि. | सुस्थिराचारस्य | पूर्वक्रियादिनिर्दिष्ट | स्वर्गमित्रकरणा | निचकोलवे. | सोभयसमग्रयुद्ध | लिचनेनिलः | ऊर्ध्वजिगदाथरा | जानिगं. | गणिजिभुपकार्यप. |
| | | | | | | | | | | निचयतप. |
| | | | | | | | | | | नदिभिरुक्तविरथादि |
| | | | | | | | | | | कुपणीयताभिप्रादिसि |
| | | | | | | | | | | प्राधिक्योपयोगिदा |
| | | | | | | | | | | कुनोमूलाभिप्रादिसि |
| | | | | | | | | | | गोकार्गि |

वि
यतालभूतयंत्राणि
द्यानौदसंभ्रासनि.

करणविचारः

॥ गतनिधिर्दिगुणितापू

| १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | शु. |
|-------|--------|-----|-----|-----|------|-------|
| नै. | व. | व. | कौ. | ग. | वि. | प.द. |
| गर. | वि. | वा. | नै. | व. | व. | प.द. |
| १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | रु. |
| व. | व. | कौ. | ग. | वि. | चतु. | प.द. |
| वि. | वा. | नै. | व. | श. | नाग | प.द. |
| माधु. | कस्तु. | | | | | स्वा. |
| साधु. | जाक. | | | | | मौ. |

रणंभवेत् में १ कस्यादपरा
वाधारव्यं चरंतुयत् भूतार्थच्छ
कुनादीनिस्थिराणि करणानिच
॥ अथभद्रानिर्णयः ॥ शन-
कूपक्षे ८१५ पूर्वदलेभद्रा ४१११
परदलेरुष्णा पक्षे ७१४ पूर्वदलेभ

द्रा ३१० परदले भद्रा दिवाभद्रा रात्रौशुभा रात्रिभद्रा दिवाशुभा.
॥ नकुपार्थ्यंगलं विष्ट्यां जीवितार्थं कदाचन कृतमज्ञानतः क्षिप्रं
तल्लवंनाशमाप्नुयात् यत्तुभद्राकृतं कार्यं मसादेनैव सिध्यति.

नारिपुसदलरुणिह
रासिभापुसदलरुणिह
विष्ट्यामागल्यक
रासि.

मुहूर्तसिंधुः

(१३)

| | |
|----------|---|
| | तोडशेमासेसमूलंतद्विनश्याति ॥ अथभद्राकृत्यम् ॥ व |
| ब्राह्म. | एषान्यस्त्रछेदनोच्चाटनादिकं ॥ तुरंगमंहिवोष्ठादिकर्म |
| क. | उच्यति ॥ १ ॥ युद्धेतथाभूपविलोकनेचभयेवनेघान |
| पू. ३ | पुष्पावैद्यागमेपोनगमेचशत्रोरुच्चाटनेकर्मणिसंप्रति |

| | |
|------------------|---|
| एषान्नक्षत्राणां | होष्ट्रासमलुलायगजाश्वकर्मसिद्धेत् विष्टिः |
| जातानां | इलेकार्चनविधावुत्सर्गजातक्रिया वैभेयेपुशिचा |
| | वतीहोमेसदैवारचने सोपाकर्महुंताशनीजलधरा |

| | | | |
|-----|----|---------------------|---|
| अ. | भ. | क्रिया | स्वारब्धेध्वरकर्मणीष्टयजनेभूयप्रदानेतथा |
| वि. | क. | ग्रामलपहितकार्याणां | नृपभूदेवताज्ञया ॥ नृणांसफलयत्य |
| उ. | | उ. | गोसपर्यया ॥ ४ ॥ |

| पालाश | पू. | भद्रायासुरवपुच्छे. | | | | कृष्णः | भद्रायासुरवपुच्छे. | | | |
|-------|-----|--------------------|----|----|----------------|--------|--------------------|----|----|--------------------|
| उ. | | ८ | ११ | १५ | तिथि. | ३ | ७ | १० | १४ | तिथि. |
| पनर. | | २ | ७ | ४ | वा. ११ घ. ५ | ८ | ३ | ६ | १ | वामा. घटि. ५ |
| | | ८ | १ | ६ | वा. ११ घ. ३ | ७ | २ | ५ | ४ | वामा. त्य. घ. ३ |

| भद्रावासः | | | | | भद्रायादिङ्गुरवम्. | | | | | | | | |
|-----------|---|----|----|-------------|--------------------|----|----|-----|----|-----|----|----|------------------|
| ४ | ५ | ११ | १२ | मर्त्ये | १४ | ८ | ७ | १५ | ४ | १० | ११ | ३ | तिथि. |
| १ | २ | ३ | ८ | स्वर्गे | पू. | आ. | द. | नै. | प. | वा. | उ. | ई. | सुरव. |
| ६ | ९ | ७ | १० | पाता लो. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | प्रहरेमु र्य. |

| भद्रांगसूघटीतां३० | | | | | | अग्नेनिंद्यापृष्ठतः शक्रमायातुः क राली१ नंदिनी२ रौद्री३ सुमुखी ४ दुर्मुखी५ विश्वाच ६ वैष्णवी७ हंसी८ भद्रानामाष्टकं क्रमात् ॥ |
|-------------------|-----------|-----------|-----------|-----------|-----------|---|
| ५ | १ | ११ | ४ | ६ | ३ | |
| वि हिं | नि हिं | वि हिं | वि हिं | वि हिं | वि हिं | |
| मुख | गले | पक्षः | नाभि | कटी | पुच्छ | |

भद्रारूपम्.

दैत्येन्द्रैः समरे मरेषु विजिते वीशः कुधा दृष्टवान् साकोपात्किल
निर्गता रवरसुखी लांगूलिनी च त्रिपात् विष्टिः सप्तभुजामृगे
द्रगलकोक्षामोदरी प्रेतगा दैत्यघ्नी मुदितैः सुरैस्तु करण प्रांते
नियुक्ता तदा आचक्ष्य के भद्रास्तोत्रं पाठः धन्यात्वधोमुखी
भद्रां महामारीरवरानना कालरात्रिर्महारौद्री विष्टिः श्वाकुलपू
त्रिणी भैरवी च महाकाली दैत्यानां च क्षयं करी द्वादशैतानि
नामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत् न तु व्याधिर्भवेत्तस्य रोगी रोगा
त्यस्युच्यते ॥ ग्रहाः सर्वे तु कूलाः स्युस्तस्य विघ्नं न जायते रगेरा
जकुले धूते सर्वत्र विजयी भवेत् सर्वार्थसिद्ध्यस्तस्य भवंत्य
न्नसंशयः रत्नकोशी भद्रास्तोत्रं स्तोतव्यः पूजनीया च नर
स्तद्दोषशान्तये.

मुहूर्तसिंधुः

(94)

आनंदादियोगाः

[illegible]

आनंदादियोगानामनुल्य फलदाग्रहणादिपुनस्त्रे-
ग्रहणेपासादिपुननक्षत्रवर्जनम् सवग्रहसाध्ग्रहियासेमा
भासाइषादयासेभासः१ग्रहास्तेषु३दिने ३ग्रहस्तोदये पःदिने३

मुहूर्तसिंधुः

अर्धग्रासेदिन ७ पू-३ पर-३ वर्ज्यानि शतमेसाधारणग्रहणात्
पूर्वदि १ परदि ३ वर्ज्यकेचित्तु ३। ७ दिनेऽत्यातात्तदिवसानियोद्धर्म
तथोक्तममा ६ वर्ज्यम् सर्वग्रासेसप्तपंचत्रिघस्त्रान् पूर्ववर्जयेद्या
त्रामौज्युं द्वाहादिषु आवश्यकैऽप्येकं विपाशौ रावतीतीरे श

| त्याज्यमुहूर्ताः | | | | | | | | शतभाः | | | | | | | |
|------------------|-----|-----|-----|-----|-----|----|---------|-------|-----|-----|-----|-----|-----|----|-----|
| र. | चं. | मं. | बु. | वृ. | शु. | श. | वा. | र. | चं. | मं. | बु. | वृ. | शु. | श. | वा. |
| २४ | १३ | ४ | ८ | १२ | १६ | २० | २४ | १ | १ | १३ | ६ | ५ | ५ | १ | शु. |
| १४ | १३ | १० | ८ | ६ | ४ | २ | कुलि | २ | ९ | ७ | २ | २ | ६ | १३ | शु. |
| ६ | ४ | २ | १४ | १२ | १० | ८ | कट. | ५ | ८ | ३ | १० | ९ | १० | १४ | शु. |
| ८ | ६ | ४ | २ | १४ | १२ | २ | काल | ११ | १५ | १२ | ० | १० | १२ | १६ | शु. |
| ७ | १३ | ३ | ८ | १५ | ५ | ११ | अर्ध्या | १२ | १२ | ४ | ० | ८ | १५ | ५ | शु. |
| १० | ८ | ६ | ४ | २ | १४ | १२ | यमघं | २ | १० | २ | ० | ० | १४ | ० | शु. |

तद्गोश्वत्रिपुष्करे विवाहादिशतमेनेष्टं होलिकाप्रादिनाष्टकं
अत्रतीरशब्देन पिंशमितधनुश्चतुष्काणां त्याज्यत्वं प्रतीयते
एवमेवशिष्टसंप्रदायोपि अस्तादीनां त्याज्यमाह अस्तमिते
भृगुतनयनारीम्रियते बृहस्पतौ पुरुषदंपत्योऽहमरणं उदि
तेकेतौ करग्रहणो नष्टे चंद्रे तथा शुक्रे नष्टे चैव बृहस्पतौ संगला
नितथोद्वाहं त्वरितोपि चकारयेत् भृगुः उपाकर्मात्सर्जनं च
पवित्रंदमनार्पणं अवरोहस्तु हेमंतः सर्पाणां च लिरिष्टका ई
शानस्यर्वले विष्णोः शयनं परिवर्तनम् कुर्याच्छुक्रस्य च गु
रोर्मोदये पीतिविनिश्चयात् धर्मप्रदीपे गोदावर्यंगयायां च
श्रीशैले ग्रहणाद्वये अयने विषुवे चैव चातुर्मास्यव्रतेषु च उत्स

मुहूर्तसिंधुः

(१७)

वधुचसर्वेषु सीमन्तकृतकर्मसु सुं रा सुं रज्ययोश्चैव मोक्षदोषो न विद्यते ।
 ते बाल्यमायः स्त्रियं हन्याद्दूषमावर्त्ततं तथा तस्माद्बाल्ये च
 वार्धे च विवाहं नैव कारयेत् अथ शक्रजयचंद्रममां बाल्य
 वार्द्धके भृगां बाल्यं पूर्वं ३ त्रिदिनपश्चिमे १० दशदिनानि
 पूर्वं भृगावस्तं १५ क्षंवार्धकं पश्चिमे ५ पंचदिनं जीवस्यो-
 भौ १५ बाल्यवार्धको चंद्रस्य दिनाहं बाल्यं वार्धकं त्रिदिनं
 अत्र केचन पक्षांतरैर्बहुविधमाहुः दश १० दिन ७ सप्तदिन ३
 त्रिदिनं गुरुशक्रयोर्बाल्यवार्द्धके अन्यैरस्तदिनचतुर्थीश-
 मिते सर्वेषां बाल्यवार्धेभिर्हितं दशपरत्वेनापरे यथाच ग-
 र्गः शक्रांगुरुः प्राक्परतश्च बाल्ये विध्येदशा १० वंतिषु स-
 प्त ७ रात्रं हूणे पुष्यंगेषु च पट्चपंच ६ ५ शेषेषु घृत्त्रयमेव
 वर्ज्यम् न्यूनाधिमासयोः शक्रकर्मनिषेधः न्यूनमासस्तुर-
 विसंक्रमद्वयवांश्चांद्रो मासो भवति सच बहुभिर्वत्सरेः समा-
 याति गतक्षयमासादपरं क्षयमासः १५१ वर्षैः समायाति क-
 वित् १८ वर्षैः समायाति एकएव यदा मासः संक्रांतिद्वयसंयु-
 तः मासद्वयगतश्चाहंतस्मिन्नेव प्रशस्यते तिथ्यर्धे ग्रथं
 पूर्वो द्वितीयं धृतं श्रान्तः मासाविति बुधैर्ज्ञेयो क्षयमासस्य म-
 ध्यगो मासक्षये मृच्छपती वत्संधरा क्षयमासो भवेद्यस्मिं-
 स्तस्मिन् वर्षे श्रविग्रहं दुर्भिक्षं वाथवापीडां राष्ट्रभंगं करोति वा
 अधिमासस्तुरविसंक्रमरहितश्चांद्रो मासः सच ३० १५ ६ ८
 सावयवैर्मासैर्भवति अस्मिन्परः शक्रां मां तमासं न अत्र का-

र्याणि शतद्वन्दैवानिकर्माणि कर्तव्यानि शतभाविन् मलिनन्या
 निचोक्तानि मासिषैव्याणि चोभयाः गर्भाधानादिका अन्न
 प्राशनांतामलिस्तु च व्याकर्णैर्वधात्संस्कारानान्यद्व्या
 हभास्करः प्रवृत्तमन्त्रमासात्प्राग्यत्काम्यमसमापितं आ
 गते मलमासे पितृसमाध्यमसंशयं द त्रयोदशाहपक्षोपि
 शतभकर्मणि निषिद्धः पक्षे विनष्टे सकलं विनष्टक सिंहस्या
 दिगुरौ निषिद्धं गोदो नरकूलाद्वागीरथियाम्यतटांतर्विवाहनि
 षेधः सिंहे सिंहशकगुरौ नान्यत्र दोषः मेयग्वौ न प्रतिषेधः प
 रं सिंहशकगतः सर्वत्र वर्ज्यः एवमकरस्थोपि सर्वत्र वर्ज्यः कं
 चिद्देशपरत्वं नाहुः एवमतीचारगोपि वर्ज्यः यात्री ह्यह प्रतिष्ठा
 श्वगृहचूडावतादिकं वर्जयेद्यत्नतश्चैवर्जावेव क्रातिचारगे
 शौनकः गुर्यादिन्येदशाहानि गुरौ सिंहे द्विमासिकं गुरुव-
 क्रातिचाराभ्यामष्टाविंशतिवासरात् अन्यः शतभाः

| मन्वादिनित्ययः | | | | | | | | | | | |
|----------------|----------|-----------|---------|---------|----------|---------|----------|----------|----------|----------|----------|
| क शु | वृ शु | ज्य शु | आ शु | आ शु | भा शु | आ शु | का शु | मा शु | पौ शु | मा शु | फा शु |
| ३ १५ | ८ | १५ | १० | ८ | ३ | ८ | १० | ३ | ११ | ३ | १५ |

| युगाद्याः | | | | केद्रादिसंज्ञाः | | | राशिसंज्ञाः | | |
|-----------|-----------|----------|----------|-----------------|--------|-------------------|-------------|-------|-----------|
| का शु | वृ- शु | भा शु | मा शु | केंद्रं | परांका | प्रांता विक्रम | चर | स्थिर | द्विस्वभा |
| १ | ३ | १३ | ३० | १ | २ | ३ | १ | २ | ३ |
| | | | | ४ | ५ | ६ | ४ | ५ | ६ |
| १८ | १९ | १० | ११ | ७ | ८ | ९ | ७ | ८ | ९ |
| | | | | १० | ११ | १२ | १० | ११ | १२ |

अथ दिवारात्रौ १५ मुहूर्ताः

| | | | | | | | | | | | | | | |
|---------|-------|-----|--------|----------|---|----|------|---|-----|--------|--------|--------|---|---------|
| रात्रिः | अतनयः | आहि | प्रातः | नक्षत्रः | म | वि | द्यौ | प | जीव | विष्णु | शुक्रः | तृतीया | म | रात्रिः |
| रात्रिः | अतनयः | आहि | प्रातः | नक्षत्रः | म | वि | द्यौ | प | जीव | विष्णु | शुक्रः | तृतीया | म | रात्रिः |

दिवामुहूर्तारुद्राहिमित्राः पितृवसूजलं विश्वं भिजिद्वह्मशक्रे
 द्राघिकां एशपाशिनः अर्यमाभग इत्येते रात्रौ रीशाजपादि
 तः दशभेशारुद्रहीनाहरीनत्यापुन्यायवः यस्मिन्भेयच्चक
 र्मांस्तत्तन्नाथमुहूर्तके दिक्शुल्काद्यंचित्तर्नायं तद्दंडश्च
 यारिद्यः अर्यमगोर्केतुहिनकिरणोराक्षसब्राह्मसंज्ञौपि
 ज्येष्ठेयो क्षितिस्ततदिने चंद्रपुत्रेभिजिच्च व्यवाह्योभृगुस्त
 तदिने राक्षसारव्योचजीवेभौजंगेशां सवितृनयैवर्जनीयौ
 मुहूर्तौ पौराणिकारौद्रसितमेत्रवारभवाः क्षणाः सावित्रश्चा-
 थैराजोगांधर्वश्चाष्टमोभिजित् रौहिणो बलसंज्ञश्च विजयो
 नैर्ऋतस्तथा इंद्रोजलेश्वरः पंचदशमो भगसंज्ञकः रौद्रगांध
 र्वयक्षेशाश्चारुणो मारुतो नलः रक्षोधाता तथा सौम्ययम
 जो वाक्पतिस्ततः पूषा हरिर्वापुनिर्ऋतुहूर्तारात्रिसंज्ञिताः
 क्षणोत्रदिनमानस्य रात्रेश्च शरभूलवः श्वेतो मेत्राविराज
 श्वरसावित्रश्चाभिजित् तथा बलश्च विजयश्चैव मुहूर्ताः कार्य
 साधकाः अष्टमांशोभिजिन्संज्ञः स एव कुतुपः स्मृतः तस्मि
 न्काले शक्रभायान्नाविनायाम्यंशुभाभवेत् इति मुहूर्तरत्नाकरे
 आदिमः संज्ञाग्रात्याग्रात्यादिकलोऽयः १ सामान्यतया शुभा

शुभक्षीणि रोहिण्यश्विभृगः पुष्योद्गस्तचित्रोत्तरात्रयं रेव
तीश्रवणश्चैव धनिष्ठाचपुनर्वसु अनुराधा तथा स्वातिः शुभा
न्येतानि भागिनच सर्वाणि शुभकार्याणिसिद्ध्यन्त्ये पुत्रभेषु च पू
र्वात्रयं विशारवाचज्येष्ठा आर्द्रा च मूलभं शतताराभमेतेषु
कृत्यंसाधारणं स्मृतम् भरणीकृत्तिकचैव मघा स्तेषां त
थैव च अत्युग्रद्वयकर्माणि एषु भेषु विधीयन्ते अथ सामा
न्येन नूतनवस्त्रालंकारादिधारणम् रो. उ. ३ रे. अश्वि. ह.
वि. स्वा. वि. अनु. पुन. पुष्य. धनि. एषु भेषु रिक्ता ५। ६। १५
३० मारहिततिथौ शनिभौमचंद्रान्विनाचरगशुदयं १। ४। ७
११० विनाष्टमशुद्धे चंद्रतारानुकूले वासो धार्य्य ॥ अथपि
शेषतः श्वेतवासो मुहूर्तम् ॥ उ. ३ रो. ह. अश्वि. पुष्य. वि.
स्वा. वि. अनु. धनि. पुन. रे. एषु भेषु शक्रबुधजीववासो इ
तरदोषरहितेशुभम् ॥ रक्तवस्त्रधारणं ॥ अश्वि. धनिष्ठा.
ह. ५. रे. एषु भेषु रविभौमगुरुशक्रवासरे इतरदोषराहित्ये
कपिलपीतयोर्मु. ॥ ध्रुव. लघु. वि. अनु. रे. अश्वि. धनि. वि.
पुष्य. एषु भेषु बुधजीवरविवारसरेः इतरदोषराहित्ये ॥ नी-
लश्यामयोर्मूहः ॥ उ. ३ पू. ३ ध. ह. वि. स्वा. वि. पुन. अश्वि. भ
र. एषु भेषु शनिरविवारयोरितरदोषाभावे ॥ यद्वस्त्रमुहः ॥
उ. ३ रो. ह. अश्वि. पुष्य. वि. स्वा. वि. अनु. ध. पुन. रे. मृ. मृ. एषु
भेषु चं. र. श. वृ. बु. एषां दिने पूर्वोक्तदोषरहिते ॥ कोशेय
वस्त्रम् ॥ मू. ज्ये. आ. अश्ले. वि. कृ. एषामन्यभेर. जी. च.

मुहूर्तसिंधुः

(२१)

वारं पु० पूर्वोक्तदोषरहित्ये ॥ रोमजवरुसु० ॥ ह० चि० स्वा० वि० ध०
 पु० ३ उ० ३ पुन० पुष्य० रे० अश्वि० एषु भेषु० र० शत० श० वासरेषु पूर्वो
 क्तदोषाभावे ॥ अत्र स्त्रीणां विशेषः ॥ उ० ३ रो० पुन० पुष्य० एषु
 भेषु सुभगान् दध्यान् वासः ॥ स्त्रीणां दंतादिचूडकमु० क्षय
 मासाधिमासयोः शक्रं ज्ययोरस्ते धनुर्मीनस्ये सूर्ये सिंहगे
 र्जाचे दं वशयने च न विभ्रूयान् ॥ स्त्रीणां स्वर्णादिधारणं ॥ जी
 व० शक्र० र० चं० एषां चारे हस्तपंचकं ५ धनिष्ठा० रे० अश्वि० एभि
 र्भैः पूर्वोक्तदोषाभावे स्वर्णरोप्यपाषाणशंखसुक्ता अर्की
 कविद्रुमदंतचूडकाधार्याः ॥ कौर्ममणिचूडकमु० ॥ मघा०
 आर्द्रा० अ० ह० मृदु० विशा० स्वा० वरु० अश्वि० पू० फा० धनि० एषु भेषु
 शु० जी० र० चं० चारु० इतरदोषाभावे ॥ अत्र हारीतः ॥ पुनर्वसु
 न्तरा पुष्यरोहिण्यर्काश्विनीपुच ॥ पतिर्जीवितमिच्छंती नैव
 स्त्रीकनकं स्पृशेत् पौष्णवसुतुरंगेषु रोहिण्यासुत्तरात्रये
 पतिर्जीवितमिच्छंती नैव स्त्रीकनकं स्पृशेत् ॥ सतूलकं तु क
 था० पुष्य० उ० ३ अचु० रे० ध० अश्वि० ह० चि० स्वा० रो० एषु भेषु चं
 जी० श० वासरे सन्निधौ ॥ स्वर्णरजततंतुमिश्रधा० ॥ स्व
 र्णतंतुसंमिश्रं वा सोधार्यं रवौ कुजे राजतंतुद्विशक्रं श्लेषस्त्र
 धारणमेश्वरं ॥ अथ वस्त्रादिधारणलक्षणशुद्धिमाह ॥ ६१ ॥
 ५१ ॥ ११ लग्नेषु शक्रभग्रहयुक्तेषु केंद्रेश्वरभयुते वस्त्रधारितं शु
 भं अष्टमेश्वरं ११ ॥ ७१ ॥ १० ॥ ८१ ॥ ६१ ॥ १२ मंजीरं एषु शक्रभदं ५१
 २१ ॥ ८१ ॥ १३ एषु लग्नेषु ११ ॥ १० ॥ ११ ॥ १३ ॥ ११ लग्नादेषु भावेषु शुभ

योगे कलकांगदकर्णकभूषारशनाहारादिधृतशतभंस्यात् ॥
प्रत्येकं नक्षत्रचारफलानि ॥ प्रत्येकमिदं समानफलं च ॥ -

| नक्षत्राणि. | | | | | | | | वारा. | | | |
|-------------|-------|---------|------------|---------|-------------|---------|---------|----------|--------|--|--------|
| अ. | भ. | रु. | रो. | मृ. | आ. | पु. | मि. | अ. | र. | चं. | मं. |
| वसुप्रसि | हरणम् | वह्निमी | धनलाभं | राजमी | दुर्वृद्धिं | धनसिं | शान्तिं | शोकं | जीर्णं | जलादि | दुःखदं |
| मं. | मृ. | ज. | रु. | मि. | स्वा. | वि. | अ. | ज्ये. | दु. | रु. | शु. |
| मृक | राजमी | संपदं | कर्मसिद्धि | इष्टसिं | दशनं | शम्भुं | चलसलं | मित्राभि | पुनं | मानं | शैल |
| मृ. | मृ. | ज. | अ. | ध. | श. | पु. | उ. | रं. | श. | अथविवाहा यावश्यके हि जा तयाराजदत्तसु | |
| अंगारकः | सलिल | तेजः | मिश्रणं | नयनं | प्रायं | विष्णुं | जलपी | रत्नसिं | मं | | |

परचक्रः

| | | |
|-----|-----|-----|
| दे. | रा. | दे. |
| म | रा. | म. |
| दे | रा. | दे. |

अपरचक्रः

| | | |
|-----|-----|-----|
| ई | पु. | आ. |
| उ. | ० | द. |
| गा. | प. | जे. |

अपरचक्रम्.

| | | | |
|----|---|---|---|
| १२ | १ | २ | ३ |
| ११ | ० | ० | ४ |
| १० | ० | ० | ५ |
| ९ | ० | ० | ६ |

निधेयिधार्यं नूतनचरुदेवाद्यधेस्फुटिते
पंकादिलिप्ते देवमनुष्यांशेशतभम् भोगप्राप्ति
देवतांशेनरांशेभिन्नासिः रक्षोशेसृत्युः प्रात्ये
सर्वांशेनिष्ठं अपरचक्रयोस्तु मध्यत्र्यंशेच
मध्येचकोष्ठेचोर्ध्वाधरेमृतिः प्राच्यांतत्रभ
वेलुक्ष्मीराग्नेय्यामग्निजंभयम् याप्यायां
जायतेव्याधिर्नैर्ऋत्यां पुत्रवर्धनम् वारुण्यां
धनसंप्राप्तिर्वायव्यांधनलब्धये उदीच्यांतु
महोद्वेगमैशान्यांधर्मवृद्धिकृत् नवधैतक
लं ज्ञेयं कोष्ठसंधौ फलद्वयम् अजपत्यांकु

मुहूर्तसिंधुः

(२३)

शच्छत्रचंद्रदीपाकृतिः भा निद्यात्रिकोणसूर्यादित्रय्यादवि
 कृताकृतिः कोष्ठेश्चभेश्चभं चिन्हमंतीवफलदं भवन् निघेनि
 द्यंतथादुष्टमन्यथामध्यमंफलं वारं वारं यस्य वस्त्रं दूषितं दहनादि
 भिः तस्य विघ्नं भवेदाशक्ततस्याज्यं श्चभमिच्छता दग्धमात्रं त्य
 जेद्वस्त्रं स्नान्वादिघ्नेश्वरं यजेत् एकं गुलमानेन निघं षट्पर्व
 तोधिकम् नदीधोरक्तवस्त्रे स्यादौर्णकोशौ यषट्पदे भूषणे हे-
 स्त्रिरत्नादौ नित्यधौ तंतिदुर्लभं एवमेव राशिचक्रेपि वस्त्रफ
 लं बोध्यं वृश्चिके चाधिकफलं बोध्यं केषां चिन्मते चत्वारो देव
 ताभागा द्वौ भागौ दानवानां उभौ मानुषौ भागश्चैको राक्षसा
 नां उत्तमं देवताभागे दानवे रोगसंभवः मध्यमो मानुषो लोभो
 राक्षसे मरणं पुनः ॥ अथ वस्त्रनिर्माणम् ॥ रोगरे चिन्मनुः मृ
 दुः ३ एषु भेषु शनिभौमं विना तंतुभिः पट्टसाधनं श्चभं ॥ अन्ये
 पांमते तु ॥ लघुः मृदुः रुः पुनः ज्येः श्च जीः चं रः नक्षत्रचारयोः
 सुलभं चार्गनिर्माणमाहुः अन्ये त्वेव माहुः चरः मृदुः क्षिप्रः रो
 ज्यः एषु भेषु रः चं वृः श्च वारेषु श्चभलमे चार्गनिर्माणमस्ति
 लं ज्ञानादिकं प्राहुः ॥ नानाचटाणां १ मु० ॥ चिन्मनुः रोगमृ
 रे हः ज्येः स्वाः पुः पुष्यं एषु भेषु श्चभवारे पुंराशौ १ १३ ५ ७ १९
 ११ सूर्यक्षति १० १५ चंद्रनक्षत्रभिन्ने श्चभं अमुमेव सृत्वीकर्म
 णि श्चभमाहुः ॥ वासोरंजनमुद्रू ॥ पुनः पुष्यः हः चिन्मनुः चिन्मनुः
 अनुः अनुः धनिः अग्निः एषु भेषु मंगुः श्च वासंरं अत्रापरे चर
 म्थिरः अनुः चिन्मनुः आः तिष्यः मृः एषु भेषु रः जीः चं श्च वास

रे शोभनलभेरिक्तामारहितनिधौ वस्त्ररंजनमाहुः ॥ व
 स्त्रक्षालनमुहूर्तः ॥ पुनः पुष्पः अश्विः धः हः चिः स्वाः विः
 अन्तुः एषु भेषु पुंलभे बुः शः विनारिक्ताषष्ठी आह्वयपर्वदिनानित्य
 त्का ॥ कच्छाबंधनम् अयोत्तरावगुपुनर्वसुरेवतीषु पुष्पाश्वि
 नीधातुभतस्त्रयंच एतानिकच्छाविधिबंधनानिसौम्यग्रह
 स्यदिवसेचसितेचपक्षे ॥ अथोपानत्परिधानंचर्मकृत्यंच ॥
 चिः पूः ३ अन्तुः अः ज्येः अश्वः मंः मूः विः कूः मूरेः एषु भेषुः सूः बुः
 शः वासरे अपरेचैवमाहुः मूः पूः ३ रेः विः ज्येः आः मूः धः हः चिः
 एषु भेषु शः रः शनिवारंचर्मकृत्यं ॥ कुसुमादिधारणं ॥ अः धः शः
 अश्विः पुष्पः पूषाः अन्तुः हः चिः स्वाः पुः रेः मूः शः भवासरे चंदन
 अगुरुकस्तूरिपुष्पाणां धारणं शः भम् ॥ चंदनादिधारणं ॥
 मु० ॥ लघुः चरः मृदुः ज्येः पूषाः एषु भेषु पुंलभे १।३।५।७।९।११ शुभग्रहवासरे कर्पू
 रकस्तुरी हिंगुलअगुरुगोरोचन चंदन धारणं शुभं ॥ पुष्पमालाधारणमु० ॥
 मूः नीः अः धः शः स्वाः एषु भेषु जीवः शुः चं वासरे चंद्रालोकितविषमलग्ने
 १।३।५।७।९।११ कुक्कुटमालाधारणं शुभम् ॥ काचकज्जलयोर्धारणं
 स्वाः धः मृदुः विः आधिः एषु भेषु रः शः शुक्रवारेशुभम् ॥ अथनवपात्रे
 जलधारणम् ॥ जीवः शः चं वारेषु शः स्वाः मूः अश्विः स्थिरः धः
 निः मूः मः पुनः पुष्पः एषु भेषु ॥ अथशय्यासनारंभः ॥ पुनः रोह
 पुष्पः उः ३ रेः अश्विः मूः मूः चिः एषु भेषु जीः चं शः बुः वारेषु
 नमृतयोगे सिद्धियोगे जययोगे च दीपिका नामरुद्रदोला शय्यासनादि
 शः भं ॥ अथपात्रेभोजनमु० ॥ अमृतयोगे सिद्धियोगेनवान्न

भक्षणीोक्तकाले पात्रभोगशुभः ॥ नवभांडादिसाधनं ॥ मृदु
 ध्रुवः चरः क्षिप्रः एषुभेषु शनिभौमान्यतरवारेषु शुभतिथौ शु
 भलमे लोहधातु अश्वमृत्काष्ठतृणपर्णादिनूतनं शुभं ॥ राज
 दर्शनसु ॥ श्रः धः शः मृदुः क्षिप्रः ध्रुवः एषुभेषु शुभवासरे सत्त्वमे
 केंद्रस्थेषु शुभेषु यात्राभिवेकोक्तयोगैश्च ॥ दीक्षासु ॥ मृदुः ध्रुव
 चरक्षिप्र एषुभेषु अर्केवारे स्वदेवतिथिभेच शुभलमे १० जीवे
 पापेर्वलहीनेर्दशमेः शुभास्थिरेचलमे ॥ वीराभिचारसु ॥ मः
 आः भः मूः मृः एषुभेषु बुधवासरे कुंभलमे अष्टमशब्दे शक्रेतुर्ये
 ॥ मद्यारंभसु ॥ मः आः आः रुः मूः शः भः पूः ३ ज्येः एषुभेषु अ
 मृतयोगेषु लमे ११३१५१७१९१११ शुक्रचंद्रयोः केंद्रगयोः शनि
 वासराभावे ॥ अथसंन्याससु ॥ उः ३ रोः एषुभेषु जीवरविवा
 रयोः पापैर्निवलेः अष्टमहीनं विधौ ८१०११ ॥ बृहस्पतौ स्थिरल
 मे ३१६१११ शनौ १२१६ भार्गवेशुभाय ॥ अब्रह्मज्ञानोपदेशः ॥
 चंद्रे मित्युनकन्यागते शुभग्रहेषु लग्नेषु पापग्रहरहिते लग्ने पा
 पलग्नरहिते शुभतिथौ शुभवारे शुभर्क्षे शुभः ॥ अथगोक्रय
 विक्रयो ॥ हः अश्विः पुष्यः अभिः कुरः रेः मृः पुः ज्येः शः धः एषुभेषु
 शुभवासरे अथपशूनां दमनं कुरः रोः हः स्वाः पुष्यः अः धः
 मृः एषुभेषु सूः मं वारे रिक्तानिथौ अथवृषस्य नसाकर्मादि
 कं ॥ रेः मूः चरस्थिर चिः अनुः अश्विः हः पुष्यः अभिः एषुभेषु
 भौमशानिबुधभिन्नवारे शुभं ॥ अथोष्णमहिषाजाव्यादीनां
 निश्चिलकर्म ॥ निर्यद्भुतस्वनक्षत्रे पूषा अः धः शः एषुभेषु

र.चं.बु.जीव.शत. चारेषु केचित्शानावपि शतभलमग्रहयोगे ॥
 अथाव्याघादानां पालनमाह ॥ मित्र लघु आ.रो.ज्ये.पू.३
 एषु भेषु.श.र.गु.भौ.सचारे पालनादिकर्मशतम् ॥ अथवान
 ररुर्धादिपालनमु. ॥ आ.स्थिर.लघु.चर.मृ.एषु भेषु.र.
 चं.बु.जी.शत. वासंगेषु खेलेन पालनादिशतम् ॥ अथकु.कु
 टादीनां पालनमु. ॥ तिर्यङ्मुखवर्द्धमुखभेषु र.चं.बुध.जीव
 शत. एषु चारेषु शतभतिथौ शकुंतपालनमभिनवग्रहएं च शु
 भं ॥ अथमत्स्यग्रहएं मु. ॥ श.स्वा.रो. पू.वा.दारुण.भ.ह.ए
 षु भेषु.भौ.शत.र.जलजंतूनां कुबेराण्यां स्थापनं च शतम् ॥ अ
 थपक्षीणां कर्माग्याह ॥ चंद्रे पक्षिद्रेकाणां गेलग्ने शतभयुक्ते
 शुभमंदयोः सबलयोः पक्षिद्रेकाणाः तुलामध्यां ते सिंहाद्यः
 कुंभाद्योद्रेकाणाः पक्षिद्रेकाणां शतभस्वामिभुतो हृष्टो वा बल
 वान् भवति एतादृशं शतभम् ॥ अथव्यालग्रह. ॥ पू.३ भ.
 म.एषु भेषु चारे भौ.शन्यो शतभम् तिथौ रिक्तायां ॥ अथसा
 मा न्येन पशुरक्षणाप्रवेशः ॥ उ.३ रो.अ.चि.एतद्विन्नभेषु भौ
 मं विनारिक्ता ४।८।१५।८।३० रहिततिथिषु शतभयुतलमे अ
 ष्टमशतद्वे पशुयोनिनक्षत्रे चरेलमे शतभः अत्रायरे भौमस्था
 ने रविमाहुः क्रयविक्रयावपिनकार्यौ पशूनाम् ॥ अथगवां
 कर्मशतद्विः ॥ लघु.श.रे.पु.वि.ज्ये.ध.एषु भेषु चं.बु.ह.शत.
 चारेषु शतभा ॥ अथअजामेषीमहिषीणां कृत्यं ॥ पू.३ वि.
 रे.मृ.मृ.ति.ध.पु.श.क्षिप्रएषु भेषु मृ.चं.ह.श.चारेषु शतम्

मुहूर्तसिंधुः

(२७)

॥ चामीगरु त्मत्वरनौ कृत्यं ॥ ह० अश्वि० ज्येष्ठा० मृदु० स्वा० पु० एषु
 भेषु सू० च० श० श० एषां वासरे श० भम् ॥ अथ वृषभादीनां व्यव
 हारशक्तिः ॥ चर० क्षिप्र० मृदु० ध्रुव० एषु भेषु च० बु० वृ० श० वासरेषु
 १। ८। १५। ६। ८। ३० वर्जितासु निधिषु श० भा ॥ अथ नवीनव्यव
 कृत्यं ॥ वि० पु० ज्ये० लघु० धनि० श० रे० एषु भेषु च० बु० वृ० श० वासरे
 षु श० भयोगे शी० र्वल० ग्रेषु श० भम् ॥ अजमेयमहिषीणां कृत्यं ॥
 सू० पु० ति० श० रे० पू० ३ क्षिप्रमृ० धनि० एषु भेषु सू० च० श० श० वासरे
 षु श० भम् ॥ अथ उष्ट्रवरघोटकादीनां कृत्यं ॥ ह० ज्ये० अ० स्वा०
 अनु० पुन० एषु भेषु र० श० श० वारेषु प० म्यादीनां च कर्मश० भम्
 ॥ अथ पशुधनधातुवस्त्रधान्यादीनां क्रयविक्रयशक्तिः ॥ ल
 घु० अ० ध० ज्ये० रे० ति० पु० वि० चि० श० भग्रहवासरे श० भम् ॥ अ
 थ विनिमयमुहूर्तः ॥ श० मृ० ३ उ० आ० लघु० अ० ध० रे० ति० चि०
 एषु भेषु च० श० वृ० वासरे स्थिरल० ग्रे श० भेषु केंद्रगतेषु ॥ अथ परा
 एयक्रयविक्रयमु० ॥ पू० भा० उ० भा० पुष्य० ह० मृ० स्वा० उ० रे०
 अ० मृ० अनु० १०। ११। १। २। ५। ७। ५। ८ सुभैः परायकर्म ॥ अथ
 विक्रयमु० ॥ पू० ३ वि० कृ० आ० म्ले० भ० एषु भेषु कुंभं विना सन्नियौ
 १। ५। ७। १०। ५। ८ श० भैः ३। ६। ११ पापे शुभः ॥ अथ विपत्तिः ॥
 मित्रः ध्रुव० क्षिप्र० एषु भेषु चंद्रश० के १२। ८ पापवर्जितयोः २। ११। १०
 श० भेषु ॥ अथ लतागुल्मचक्षरोपणं ॥ ह० पुष्य० अश्वि० ध्रुव०
 वि० मृदु० मृ० श० एषु भेषु श० भवासरे सन्नियौ १। ५। ७। १० गुरोपा
 परहिते चंद्रेवारिचरराशौ श० भयुक्ते चतुर्थेश० भम् ॥ अथोषधी

भक्षणं ॥ ह. वि. स्वा. रे. अशि. पुष्य. अभि. मृ. अनु. अ. ध. श
 सू. एषु भेषु ३।६।८।१२ लग्नेषु चं. बु. वृ. श. लग्ने वारे वा सूर्ये वा ल
 ग्नात् ७।८।१२ श. ध्वे सति थो जन्मर्क्षे न १ वैथो ४ औषधं ७ व्या
 धि १० रोगी क्रमाच्छुभयुक्ते तस्य तस्य श. भ. पापयुक्ते तस्य-
 न्हासः अथ रसभक्षणम् चर. मृ. तु. एषु भेषु नंदा १।६।११ भ-
 द्रा २।७।१२ आसुतिधिषु चं. र. श. जी. एषु वारेषु पुं. लग्ने १।३।
 ५।७।८।११ चंद्रे पूर्णे ॥ अथ पिप्पली हरितक्योर्भक्षणमु० ॥
 लघु रे. मृ. अ. ध. श. एषु भेषु रु. चं. जी. श. वारेषु भद्रा २।७।१२
 रिक्ता ५।८।१४ रहित तिथिषु शुंठ्या अ. भक्षणं श. भं ॥ अथा-
 ह्रिफेनविषभक्षणमु० ॥ चर. स्थिर. लघु. मृ. वि. एषु भेषु रु. श.
 चं. भौ. वारेषु ॥ अथ मांसमुहूर्तं मर्क मज्जून्मुहूर्तं ॥ श. उग्र.
 दारुण एषु भेषु रु. भौ. श. श. वारेषु पर्वरहित दिवसे ॥ अ-
 थौषधनिर्माणम् चर. क्षिप्र. मृ. दु. ध्रुव. एषु भेषु शनि भौ. र
 हित वारेषु १।५।७।१० केंद्रगतयोः सूर्यबुधयोस्तथा श. भैश्च
 ॥ अथ रससाधनं ॥ मिश्र. अ. सू. आ. मृ. ज्ये. ध. ह. एषु भेषु
 भौ. मं. रु. जी. एषु वारेषु जया ३।८।१३ तिथौ गुरुभौमयोरनस्ते
 धनुर्मीनान्यगसूर्ये ॥ अथ चूर्णादिना अमृतयोगे क्षिप्र. चर
 एषु भेषु सू. बु. वारयोः १।४ श. भ. स्वामि सुतदृष्टयोः इंदौ श. कू
 पक्षीये तैलघृतसाधनं च ॥ अथ वानरोगादौ तैलोपवेशनं
 ॥ आस्ले. म. मृ. वि. आ. भ. क. एभ्यो विना चं. बु. श. वासरेतृ
 तीयादि ३।८।१३ के ॥ अथ च मनविरेचनधूमपानस्येदनर

क्तस्त्रावाणांमु० ॥ ह० चि० स्वा० पुष्य० अश्वि० श० रो० मृ० अ० अनु०
ज्ये० एषु भेषु सू० भौ० जी० वासरे शकभतिथौ रक्तस्त्रावे भौमहोराभौ
मवारौ १।४।७।१० कुजेशनौ रघौ वा केन्द्रे ८ वर्जिते रव ले सुवस्वरे
पष्ठे सङ्करे चर १।४।७।१० लग्ने कर्मपंचकं शकभम् अथ हुताश
शस्त्रक्रिया मु० ॥ मि० अ० श० दारुण० अश्वि० चि० पू० ३ एषु भेषु भौ०
र० वारयोः शकभम् ॥ अथ नूतनरक्षेभ्यो फलपुष्पाद्याहरणम्
॥ कर्कटाद्याहकारो शकभस्वामियुते शकभवारे शकभतिथौ शकभ
नक्षत्रे च ॥ अथ सूचिकर्म ॥ पु० ध० चि० अनु० मृ० अश्वि० एषु
भेषु शकभवारे शकभतिथौ शकभयुक्ते क्षिते तनौ ॥ अथाश्वकृत्य
म् ॥ स्वा० पु० ध० श० क्षिप्रह० अश्वि० पुष्य० अभि० मृदुस्थिर एषु भेषु
रिक्ता रहिततिथौ भौमरहितवारेऽपितु विशेषात् सूर्यवासरे चरे
१।४।७।१० लग्ने शकभे ३।११।०।४।७।१० आयकेन्द्रगोः वाजिक
र्महितं स्यात् लग्ने गु० श० युते २।७।४ चंद्रेशोपैः ३।४।११ हय
कर्म शकभं धृताद्र्चणकक्षीरनवत्तणादिभक्षणो अन्नप्रा-
शनवत् सर्वाणिकार्याणि पुरुषाणां मित्रविचार्याणि ॥ अ
थाश्वारोहणं ॥ रे० अश्वि० श० स्वा० मृ० चि० पु० ह० पुष्य एषु भेषु
भौमः श० विना सतिथौ के १।४।७।१० द्रस्यैर्के परैः ३।४।११
शकभलग्ने अथाश्वचक्रे ॥ सूर्यभात् पस्कंधे १० पृष्ठे २ पुच्छे
४ पादे ५ उदरे २ मुरवे अर्थलाभो मुरवे ज्ञेयो वा जी
नश्यति चोदरे चरणस्थे रणे भंगो जाया पुच्छे विनश्यति अ
र्थसिद्धिर्भवेत् पृष्ठे स्कंदे स्कंधपतिर्भवेत् चक्रे श्वेशिरपंच

केसरवकराः पृष्ठे च दिग्गामदा पुच्छे द्वे गृहिणी विनाशनकराः पा
दे धिभंगो भवेत् नाशं चोदरपंचभिश्च कुरुते चास्ये दिग्गामो भ
वेत् देहे चानयरोहणे फलमिदं सूर्यर्क्षतो वा क्रमात् सूर्यर्क्षत्वा
ध्यम् ५ शिर १० पृष्ठे २ पुच्छे ४ पादे ५ उदो २ मुखं.

पल्याणचक्रं दिन ३ समस्ते अर्थाय.

क्षिब्धेयं नूतनप ३ मुखे कामाय.

त्याणनिर्माणे आ ५ हृदये श्रेष्ठाः

रोहणे च ध्येयं ५ अग्रपदोः दुष्टा

अथ गजकर्म ४ पश्चात्पदोः मांघदा.

४ पृष्ठे व्यर्थाः

अनु० मृ० रे० चि० ह०

४ पुच्छे - हानि.

अश्वि० पुन० स्वा० पुन० अ०

४ मुखे धनं.

ध० श० एषु भेषु रिक्ता भौमं शनिं विना ३

३ शिरे - लाभं.

१२।८। एषु शतमव्यतिरेके ३६।११ पापे

४ पृष्ठे - श्रियम्

राजयोगसत्त्वे दशमशतदौ च शतम्

८ पादे - भयं.

अथ गजस्यां कुशं शतमदिने शतमति

६ हृदये - सुखं.

शौ शनिवासरे १०।११ लग्ने ॥ ध्वजअंबारिगदीमुहूर्त ॥ ल
घु० चि० पुन० स्वा० चर० स्थिर० आ० पुष्य० शतमत्प्राप्तरे शतम् ॥ दं
तच्छेदमु० ॥ पौषचैत्ररहिते मासे अचतुर्मासे कृष्णपक्षे न
रात्रौ न भौमार्कदिनव्यतिरिक्ते शतमदिने शतमर्क्षे अन्यत्कर्मम
नुजइव ॥ अथ गजबंधनमु० ॥ निर्यङ्मुखवनक्षत्रेषु गजच

मुहूर्तसिंधुः

(३१)

कशकन्देषु शक्रजीव वारेषु स्थिरलग्नेशकन्दे केंद्रत्रिकोणे १।४
७।१०।५।८ शतभतिथौ शतभं ॥ अथ गजारोहणं ॥ अश्वि-
रे-श-स्वा-मृ-वि-पु-पुष्य-अ-एषु भेषु शतभासरे शतभति
थौ शतभलग्ने ३।६

अथ गजचक्रमसूयभात्

| | | |
|---|------------|---------|
| ३ | कुंभे | लक्ष्मी |
| ३ | शंङ्गे | लक्ष्मी |
| २ | सुरवे | मरणं |
| ३ | लृदि | सरवं |
| ४ | अग्रपादौ | व्याधि |
| ४ | पश्चात्पदौ | भीति |
| ४ | पुच्छे | मृति |
| ४ | पृष्ठे | व्याधि |

अत्र चक्रे खिलगजकार्याणां
शतदिर्बोध्या ॥ अथ भूषण
घटनं ॥ त्रिपुष्करदिने स्वा-पु-
अ-ध-श-ह-अश्वि-पुष्य-अ-
भि-उ-३-रो-रिक्ताभौ मरहितेषु
भग्नहयुते लग्ने ॥ अथ स्वर्ण
कारस्य सु० ॥ चर-मिश्र-वि-मृ-
लघु-एषु भेषु च-बु-श-र-वास
रे ३।८।१३।५।१०।१५ आस्तति

धिषु तथा ३।६।२०।८।१२ एषु लग्नेषु चंद्रजीवयुक्तेषु ॥ अ
थ त्रिपुष्करद्विपुष्करौ ॥ २।७।१२ तिथौ सू-मं-श-वासरे-पु-उ-
फा-वि-उषा-पू-भा-नक्षत्रे त्रयाणां योगे त्रिपुष्करः पूर्वोक्तति
थिवारयोः मृ-वि-ध-भानि स्यु द्विपुष्करः एतौ हानि वृद्धिकार्ये
षु त्रिगुणद्विगुणदौ त्रिपुष्करमृते पंचकद्वयशान्तिः कर्तव्या
त्रिपुष्करे त्रयः कार्याः पुनलादौ द्विपुष्करे मृतस्य च समीपे च
स्थाप्यापिष्टमयास्तथा कार्योदाहस्तु तत्सार्धं सूतकांते तु शां
तिकृत् कृत्वा गाश्च हिरण्यं च दद्यादन्नं च शक्तिः त्रिपुष्करमृ


तैदद्याहोत्रयंमूल्यमेववा द्विषुष्करेचगोयुग्मंततोदाहोत्र-
 दोषकृत् ॥ अथरत्नयुग्मभूषणघटनं ॥ ज्ये.मू.आश्ले.आ.
 पू.३भ.श. एभ्योविना.१।५।६लग्ने ॥ अथमुक्तासहितं ॥
 स्वा.पु.अ.ध.श.उ.३रो.मृ.रे.वि.अनु.ह.अश्वि.पुष्य.अ.
 भि.एषुभेषुसत्तिथौशुभवासरे शुभग्रहाणांलग्ने ॥ अथपा-
 त्रभोजनं ॥ रो.मृ.ह.वि.स्वाती.रे.अ.अ.ध.श.पु.पुष्य.अनु.
 उ.३सत्तिथौशुभवासरे ॥ अथशस्त्रघटनं ॥ क्रूर.तीक्ष्ण-
 मित्र.एषुभेषुवज्रयोगे श.जी.मं.वारेषुशुभं मू.रो.पुष्य.अ.
 अश्वि.अनु.शुक्रेचंद्रेवारे नंदापूर्णातिथौ मृत्युयोगेषुधवा-
 रेचघटितं पराजयकरम् स्वान्.रे.ध.श.एषुभेषुघटितं कोशप-
 त्तीनाशनंवि.उ.३एषुभेषुघटितंशस्त्रंषुत्रनाशदं मृ.ह.पु.ए-
 षुभेषुघटितंभयदंभवति रु.वि.एषुभेषुभौमेजया३।८।१३ति-
 थौघटितंशस्त्रंसंग्रामेजयदं ॥ अथशस्त्राभ्यासः ॥ ह.वि.
 स्वा.अ.अश्वि.पुष्य.पु.कृ.उ.३जन्मभेसर्वशस्त्राणांअभ्या-
 सः बु.जी.भौ.र.एषांहोरायामेषामेवलग्न्येसबलेः केंद्रगेःबु-
 जी.भौ.रविभिस्तथा उपचय ३।६।१०।११गैःशुभैः अथवाध-
 वमृतु.लघु.अ.ध.एषुकेचनकथयंति ॥ अथधनुर्भ्यासः॥
 ह.वि.स्वा.ति.अश्वि.पु.कृ.उ.३शुभतिथौशुभवासरेशुभः॥
 अथधनुषिगुणारोपः ॥ स्थिरवारलग्नयोःशुभर्क्षतिथौ ॥
 अथसामान्येनशस्त्रधृतिः ॥ पु.ति.ह.वि.रो.मृ.वि.अनु.
 ज्येष्ठा.उत्तरा३ अश्विनी.रेवती.एषु.भेषु.सू.जी.शु.वारेरिक्ता

रहिततिथौ गोचरे णरवेः शुद्धिरपेक्षिता पुंराशौ जययोगे युव
 स्वरोदये ॥ अथ नूतनसन्नाहरवेटकमुचिः पुंश्रः अनुंरेः अ
 श्विः उ० ३ रोः एषु भेषु जीः शक्रः शः रः वासरे लग्ने चंद्रयुक्ते शुभैः
 ७।४।१० पापे ६।११ गतैः ॥ अथ खड्ग तोमर कटारिकाधार
 एः ॥ रेः स्वाः बृहत्संज्ञपुष्पः हृज्येः चिः आः धः एषु भेषु शक्रः
 शः रः भौमवासरे तथैषां लग्ने च ॥ अथ वाणधनुर्भिडिपाल
 धाः ॥ अः हः आः रोः यूयानस्थिरः तिः भः मृदुः विः एषु भेषु चः
 भौः शः रः वासरे भद्राः पूर्णाः जयाः आसुतिथिः शक्रभलग्ने
 शक्रभाश्रिते ॥ अथ नलिकादिशस्त्रविधाने ॥ उग्रः दारुणः
 स्वानेः चिः तिः हः अः मिश्रः एषु भेषु शः भौः रः वासरे रिक्ता
 जयातिथिषु पापैः ३।६।१०।११ उपचयगेः वृश्चिककुंभवृ
 पसिंहलग्ने बन्धिसुक्तपरमास्त्रविधानंसत् ॥ अथ शत्रुसं
 धिः ॥ अनुः मः तिः एषु भेषु विष्ट्यांतैति लंसदृष्टे लग्ने ८।१२ ति
 थ्यो ॥ अथ नवांगनाभोगः ॥ अः धः शः उ० ३ स्वाः मृः हः
 अनुः रोः एषु भेषु शक्रभतिथौ शक्रभवासरे द्विपदचलचरराशि
 लग्ने शक्रभयुतदृष्टे उपचयगे चंद्रे पर्वरहितदिवसे शक्रभं ॥ अथ
 स्त्रीसंभोगः ॥ पर्वरहिते दिवसे निदाद्ये १० दिनेः हंसंते नित्यं
 अन्यर्तुषु न्यहैः कामयेत अपरे अहाह्मसंतशब्दोः पक्षाह्न्या
 निदाद्यधोः सेवेत कामतः कामं हेमंते शिशिरे नर्त्ता ॥ अथ गी
 तनृत्यादिकृः ॥ रेः अनुः धः शः हः राः मृः तिः उ० ३ एषु भेषु गी
 तारहिततिथौ शक्रभवासरे शक्रभम् ॥ अथ नटनर्तकाकृत्यम् ॥

मृ० आ० रो० पु० ति० अश्वि० अ० ध० श० चि० उ० ३ मू० एषु भेषु शुभ
ग्रहसूर्ये शोभनलमे ॥ वंशचक्रं च विनोकनीयं रविभात् ॥ अथ
दुन्दुभिमृदंगादिवाद्यारंभः सामान्येन ॥ ह० चि० स्वा० अनु० रे०

| | | |
|---|----------|--------|
| ४ | मूर्ध्नि | शुभं |
| ४ | मध्ये | शुभं |
| ४ | पूर्व | कामनाश |
| ४ | दक्षिणे | कामनाश |
| ४ | पश्चिमे | कामनाश |
| ४ | उत्तर | कामनाश |
| ४ | तले | शुभं. |

पु० ति० अ० ध० श० ३ अश्वि० शुभं दि
ने जयापूर्णातिथिषु शुभम् ॥ अथ-
भेर्ष्यावादने मु० ॥ मैत्र० चर० लघु०
बुधरहितवासरे शुभलग्ने जयापूर्णा
तिथिषु वीणादिचशुभं ॥ अथकाह
लशुद्धि० ॥ आ० स्ते० मू० ज्ये० भ० पू० ३
एषु भेषु गिक्त तिथौ पापग्रहवारे ॥ अथ

वादित्रसमयशु० अमृतसिद्ध्यादियोगे भद्रारहिते १।२।३।४
६ एषु लग्नेषु शुभम् ॥ अथमृगया ॥ तीक्ष्णचर० उग्र०
मिश्र० एषु भेषु व्रतपर्वदिने रु० श० भौ० वासरे अष्टमद्वादश
शुद्धे अर्कभादिव ८।१४।२० समे मृगो बद्धः शंभैः समैर्ग
तः विषमैरातः  वागुरा अंधाः ३ बंधाः ४ खंजाः
१० तरुणा १० दूरे यांति खंजाविद्धा अपि दुर्ल
भाः अंधाबंधा लभ्यं ते दिनक्रक्षाद्वध्यभांतंग
रायेत्वार्य्य, क्षीहिन्क्षान्तिं अंधास्तु कोष्ठम-
ध्यस्यावद्धास र्वत्रबंधिताः कन ७ लग्ने १ शौ
सहितौ मृगया सिद्धिदौ कुजबुधौ पापांशका
गतौ मृगया भंगदौ लग्ने शुभे सप्तमगे क्रूरे सिद्धिः जलरा

शौजलग्रहेर्जलजमृगयास्थलजैस्थलजाः शकभेलग्रं ७ स
 त्तमं यावतां दृष्टिस्तावत्संख्यप्राणिवधः वक्रोच्चेत्रिगुणं शक
 भमेशकभंपापेक्षेशः पायवेधेशीघ्रं दिनर्क्षयोर्मध्ये यावन्ति पा
 यविध्वानितावतां वधः शकभयुक्तानां पलायनं नक्षत्रजातिव
 ज्जातिं पापसंयोगाच्चतुश्चरणेषु अग्रपश्चात्प्राक्पृष्ठयोर्ब्रू
 यात् घातं स्वांशो ग्रहे द्विगुणं द्रेष्काणो रबीये वक्रोच्चेत्रिगुणं वदे
 त् योनयो विवाहप्रकरणे वक्ष्य माणा बोध्याः ॥ अथ जल-
 यंत्रमुहूर्तः ॥ म. मू. मृ. आ. स्ले. पू. ३ श. एषु भेषु च. बु. जी.
 श. वारे रिक्तारहिततिथौ शकूपक्षे जलराशिगते चंद्रे उत्तरा
 यणे चैत्ररहिते मार्गसहिते गुरुशक्रोदये शकभं हरहटचक्रं सू
 र्यभातबोध्यं ॥ अथ सर्वजलाश

| | | |
|----|--------|--------|
| ५. | मस्तक | शकभ |
| ६ | गर्भ | अनिष्ट |
| ५ | मध्य | अनिष्ट |
| ५ | मस्तके | शकभ |
| ७ | तले | शकभ |

यमुहूर्तसाधारण्येन ॥ अनु. ह.
 उ. ३ रौ. ध. श. म. रे. ति. मृ. एषु भेषु च
 द्वे वारिराशौ पापेर्हीनवलेः बु. वृ.
 लग्ने भृगुः १० च. बु. वृ. श. वासरे-
 शकभतिथौ तत्रादौ जलदिग्ज्ञान
 म् पुरात्ग्रामाद्वाहुताशनैर्ऋ

त्य वायव्यदिशो मुक्ताजलाशयः कार्यः मत्तातरं श. पु. म.
 तिर्गवि. पूषा. स्थिर. मृ. ह. ध. एषु भेषु च. श. जी. वारेषु उत्त
 रायणे विचैत्रे समार्गे गुरुशक्रोदये चंद्रशक्रजीवयुतल
 मे न्यूनाधिकमासराहित्ये वापीकासारकूपकुंडानांसि

धिः कूपचक्रे.राहिण्यादिभानि ॥ अथकासारचक्रभानिरो-
हिण्यादीनि.

| कूपचक्र. | | | कासागचक्र. | | |
|----------|---------|-------|------------|----------|-------|
| ३ | मध्ये | शुभ | ३ | मध्य | शुभ |
| ३ | पूर्व | शुभ | ३ | पूर्व | अशुभ |
| ३ | आग्ने | शुभ. | ३ | आग्ने० | अशुभ. |
| ३ | दक्षिणे | दुष्ट | ३ | दक्षि. | अशुभ |
| ३ | नैर्ऋ० | शुभ | ३ | नैर्ऋत्य | शुभः |
| ३ | पश्चिमे | दुष्ट | ३ | पश्चि० | अशुभः |
| ३ | वायव | दुष्ट | ३ | वायव्य | शुभ. |
| ३ | उत्तर | शुभ | ३ | उत्तर | अशुभ |
| ३ | ईशाने | दुष्ट | ३ | ईशान्ये | अशुभः |

वापिचक्रेपिरोहिण्यादिभानि ॥ अथकुंडचक्रभानिरोहिण्यादीनि.

| वापीचक्रं | | | कुंडचक्रम् | | | केचिद्विभात्कूपचक्रमाहः | | |
|--|--------|-----------|------------|---------|-------|-------------------------|----------|--------|
| ४ | कोष्ठ | शुभजलं | ३ | मध्ये | १ शुभ | ३ | मध्ये | शुभ |
| ४ | नाभौ | बुद्धिनाश | ४ | पूर्व | १ शुभ | ३ | पूर्व | शुभ |
| ४ | हृदि | स्थिरता | २ | आग्ने | शुभ | ३ | आग्ने | दुष्ट |
| ४ | गले | कलि | ४ | दक्षि० | १ शुभ | ३ | दक्षि | दुष्ट |
| ४ | नेत्रे | द्रविणं | २ | नैर्ऋ० | शुभ | ३ | नैर्ऋत्य | दुष्ट |
| ८ | पादौ | अनर्थ | ४ | पश्चिमे | १ शुभ | ३ | पश्चि | शुभः |
| अथगुरुत्यचमैचलपु रो ज्ये वि एषुमपु रचबु शु व शोभना नंदापूर्वातिथिपुत्रध जी शुक्र स्वामिकलये ७१४१८ शुभमह | | | ० | वाय० | १ शुभ | ३ | वाय. | दुष्टः |
| | | | ४ | उत्तरे | शुभ | ३ | उत्तरे | शुभः |
| | | | २ | ईशाने | शुभ. | ३ | ईशाने | शुभ. |

सुहूर्तसिंधू.

(३७)

अथरथचक्रं सूर्यभातवाध्यम् ॥ शिविका समस्तकू.उ. ३ ज्ये. लघु. मे.

| | | |
|---|-----------|-------|
| ३ | अग्ने | कलि |
| ३ | कुपेर | मृति |
| ६ | शक्रयो | जय |
| ६ | संध्या | धननाश |
| ६ | अंतस्स्थो | भीति |
| ३ | गर्भे | शुभं. |

अथशिविकाच.सूर्यक्षति

| | | |
|---|---------|-------|
| ५ | पूर्वे | करव |
| ५ | दक्षिणं | रोगं |
| ५ | पश्चिमे | भयं |
| ५ | उत्तरे | पीडां |
| ३ | मौली | शुभ |
| ४ | दंडयो | शुभं |

अथनौकाचक्रं रविभात.

| | | |
|---|---------|------|
| २ | अग्ने | अशुभ |
| ६ | मध्ये | शुभ |
| ३ | सुरवे | शुभ |
| ३ | लौहि | शुभ |
| १ | पाठाणे | शुभ |
| ३ | अग्ने | शुभ |
| ३ | करवाणगे | शुभ |
| ६ | मध्यं. | शुभ. |

च.चर. एषुभेषु चं. बु. वृ. श. वासरेनं
दाजया पूर्णातिथिषु केंद्रे १।४।७।१०
शुभग्रहं शं. ३।६।१०।११ उपचये पापेषु
शुभदं ॥ अथतरिद्यत्नमाह ॥ मू.
अश्वि. ति. मृदु. अ. ध. पू. स्या. एषुभेषु
चं. बु. वृ. शु. वारेषु चरलग्ने १।४।७।१० नं

दाभद्रातिथ्योः शुभसुतलग्ने ॥ अथ
जलेतरिमोचनं ॥ लघु. अ. ध. अनु. मृ.
एषुभेषु चंद्रजीवश. वासरे जया पूर्णास्फ
तिथिषु जलचर रा शौलमे चंद्रबले च ॥

अथास्यारज्वायं त्रणमाह ॥ वृश्चि
करहिते लग्ने बुधजीवयुक्ते रवले र्वल
रहितैः १० शुक्रके चंद्रे जलचर रा शौ ॥

अथास्याऋषकमु. ॥ श. आ. अ. उ. ३
रो. ध. तिष्ण एषुभेषु रिक्तारहिततिथौ
र. भौ. श. वासरे ॥ अथास्यां वस्तुपूर
णं ॥ स्थिर. मृदु. क्षिप्र. एषुभेषु पूर्णा. ज

यानंदातिथिषु चं. बु. जी. श. वासरे स्थिरलग्ने चतुर्याष्टमशुद्धे ॥
अथास्यां यात्रामाह ॥ स्थिर. मृदु. क्षिप्र. एषुभेषु जयातिथौ शु
भवासंर वृहदात्रोऽर्योगे अजन्मदशानुकूले दिवसे ॥ अथसंतु

बंधनम् ॥ पूषा.श.मृ.लघु.अ.आ.ध.एषुभेषु र.जी.श.श.वा
 सरे रिक्तारहिततिथौ नक्षत्रेषु वेधरहितेषु सूर्याक्रमणवर्जिते
 शु ५।१२।२।११।६।३ लघ्वेषुकेंद्रेश ५ पादौ शक्रभाः
 मसहिते पापै ३।६।१०।११ शक्रभं ॥ अ ५ अंशे शक्रभाः
 धसेतुबंधचक्रे सूर्यभाङ्गानि ॥ अ ७ उदरे शक्रभाः
 थप्रपासुहूर्तः ॥ भद्राक्षयदिनचद्ररि ५ स्कंदे १ शक्रभाः
 क्ता.एतान्वर्जयित्वा.जलराशौ चंद्रे ५ पादे १ शक्रभाः

गे ५।६।८।१।४।७।१० शक्रध्देश्च म गृहक्षेत्रादि क्रयविक्रयः
 मृ.मू.पू.३ अश्वि.म.रे.वि.अनु.पु.एषुभेषु जी.श.वा सरे
 नंदापूर्णातिथौ अष्टमशुद्धे आयगते बलवति ॥ अथवा
 एिज्यं ॥ अनु.उ.३ पू.रे.रो.मृ.ह.वि.अश्वि.एषुभेषु शक्रभ
 दिने शक्रभतिथौ च शक्रभावहं भवति लग्नादिशुद्धिश्चापेक्षि
 ता ॥ अथ द्रव्यनिधीनां गुप्तस्थापनम्. मृदु.ति.अश्वि.रे.
 पु.वि.अ.ध.श.एषुपि अंधभे ४।१ शक्रभयुक्ते जीववासरे श-
 निवारे च ६।५।२।१।४।७।१० शक्रभैः पापैः १२ हीनैः लग्नच-
 स्थिरमेव ग्राह्यम् पूर्णातिथौ च ॥ अथ दत्त द्रव्यस्यालाभः ॥
 मू.ज्ये.आ.आश्ले.वि.रु.उ.३ रो.पू.३ भ.स्वा.मू.एषुभेषु य-
 द्यदत्तं यच्च स्थापितं ऋणदत्तं चोरेण हृतं नष्टं च न ल-
 भ्यते एवं विष्ट्यां पाते च फलम् ॥ अथ द्रव्यप्रयोगः ॥ स्वा.
 पु.मृ.रे.वि.अनु.वि.पुष्य.अ.ध.श.एषुभेषु चरे लग्ने ५।८
 १६ शक्रध्देश्च एषु शक्रभमृणदानम् ॥ अथ ऋण ग्रहणनिधि

ददकालः ॥ भौमे हस्तेर्कचारेसंक्रांतौ पंचकेत्रिपुष्करद्वि-
पुष्करयोश्च यदृणंतन्नयाति वृद्धियोगे संक्रमापरदिने
च नर्णीगृहीयात् अणच्छेदंकुजे कुर्यात्संचयंसोमनंद
ने धनादिस्थापने क्रूराः ३।११।६ रवि १० शक्रभा ८।१२ वर्जि
ताः कृष्णोपक्षे चंद्रः शक्रभोन ॥ अथ वृध्यर्थे धान्यदानं ॥
वि.रो.ज्ये.पु.अश्वि.श.पू.भा.३उ.स्वा.ति.शक्रभतिथिवारयोः
॥ अथ हलप्रवहणमु० ॥ सू.वि.म.स्वा.पु.अ.ध.श.उ.३रो.
सू.रे.वि.अनु.ह.अश्वि.ति.अभि.एपु.भे.पु.सू.श.विनापापै
हीनबलैर्जलचरराशौ चंद्रे सति चं.शक्र.पुष्टे सति गुरुर्लभे
२।३।६।८।९।१२ लभे पुरिकाषष्ठीर्विना सूर्यभुक्तनक्षत्रात्
३५ शक्रभः ततः ८ शक्रभः ततः ९।२ शक्रभः ततः ८ शक्रभः एता
दृशोदिने हलप्रवहणं शक्रभं अपरे चैव माहुः कृ.भ.आ.अ
श्ले.पू.३ज्ये.एतानि नक्षत्राणि -भौ.बु.श.वारान् दुष्टयोगयु
क्तिथि तथा २।४।६।८।९।१२।१४।३० एताश्च त्यक्त्वा अह
लं च भद्रां च विवर्जयेत् लभे २।३।९।९ ताराबले च हलच-

| भाद्रणानाबोद्ध्या | | | |
|-------------------|-----------|---|----------|
| ३ | अशक्रभं | ३ | १ शक्रभं |
| ५ | शक्रभं | ३ | शक्रभं |
| ३ | १ अशक्रभं | ३ | १ शक्रभं |
| ५ | शक्रभं | ५ | शक्रभं |
| ३ | १ शक्रभं | ३ | १ शक्रभं |
| ३ | शक्रभं | ५ | शक्रभं |
| ३ | १ शक्रभं | ३ | १ शक्रभं |
| ३ | शक्रभं | ३ | शक्रभं |

कशब्दे मेरविगत शक्रचिर्भूत्वा
गंधाक्षतैर्भूमिं पूजयित्वा य
हान्प्रजापतीश्च प्रदक्षिणांकु
त्वाफाले हेमसंधर्व्य उत्तरा-
भिमुखो नवाभ्यां वृषभाभ्यां
पंचरेखाः कुर्यात् तस्मिन्स-

मये यदिदृष्येयुज्येतेतदाविघ्नंयदिकूर्मउत्पद्यते तदाजा
 यावधः अग्निभयंच ईषाभंगेमरणंयुगेभग्नेपुत्रनाशः अ
 परस्मिन्बालकष्टं योक्नच्छेदेशास्यहानिः व्यासंगः यद्येको-
 दृषभःपतेत् अथवाबंधछेदः तथाज्वरातिसाररोगेणकृषि
 भंगः युक्तमात्रएवशीघ्रंचलतिचतुर्गुणंशस्यंयदिसर्पउत्पद्य
 तेतदाजीवितसंदेहः अनिष्टेषुशांतिः स्वर्णहलंविप्रायदेय
 मंत्रेणाहुतयोविधेयाः वसवःशक्रःपृथुःरामचंद्रमापरा-
 शरः बलभद्रः स्मर्त्तव्याः सर्वविघ्नोपशांतये ॥ अथयोक्ता-
 दिसाधनशु ॥ मृदुःस्थिरःक्षिप्रःसूःचरःएषुभेषुसूःचंबुः
 जीःशुः वारेषु पूर्णाजयानंदातिथिषुअमाचर्जितासु ॥
 अथबीजोतिः ॥ मैत्रःस्थिरःलघुःकुःसूःधःअःएषुभेषुचंबुः
 जीःशुःरः वासरेरिक्ता ४।१४।९।३० मारहिततिथौ कुपांबु-

| | | | | | |
|------------------|----|--------|------|------|------|
| कीटभि | ३ | शिरः | १शुभ | ८ | १शुभ |
| कज्जलं | ३ | गल | १शुभ | ३ | १शुभ |
| अन्नरु | १२ | मध्यः | १शुभ | १ | १शुभ |
| निस्तंडुलं | ४ | पुच्छ | १शुभ | ३ | १शुभ |
| ईतिभ | ५ | पुच्छा | १शुभ | १ | १शुभ |
| फणिचक्रंराहुभात् | | | ३ | १शुभ | |
| | | | १ | १शुभ | |
| | | | ३ | १शुभ | |
| | | | ४ | १शुभ | |

सिद्धबीज वापेमघाहसौ
 रवीबुधौत्यक्तौपूपास्वी
 रुतापुंलभेबीजवापः-
 शुभः५ मूर्ध्नित्रीणिगले
 त्रयंचजररेधिरस्थानिच
 द्वादशः स्यात्पुच्छेभच
 तुष्टयंचहिरतोभानांस्थि
 तंपंचकं कीटकज्जल
 मन्नरुद्धिर्गधिकानिस्तं

दुलत्वं क्रमात्स्यादीति प्रभवं भयं च पुषितो बीजोत्पिकाले क
 भात् पूर्वलिखत् चक्रे एवरविभाज्जणयेत् चंद्रो लगे गुरुः केंद्रे
 कर्मलग्नयोः शतभदृष्टयोः शतभशकुने पृथ्व्यादिपूजोत्तरं रोः रेः
 हः तिः अनुः उः ३ एषु भेषु चं बु जी श वासरे २।१२।६।८ लग्ने
 शुभं च त्वं चैव सुंधरे देवि शीतपुष्पफलप्रदे नमस्ते मे शतभंकृत्यं
 कृपि मेधा करी शुभे ॥ कुदालक कृत्यं ॥ हलप्रवाह सुहृत् हलचक्र
 शब्दौ अथ स स्यां कुरोपः ॥ हः चिः स्वाः उः ३ मूः धः रोः मूः पुष्यः
 अश्विः अनुः मः एषु भेषु शतभवासरे विरिक्त तिथौ ॥ अथ सस्य
 वृक्षलतानां वापनं सेचनं च ॥ अश्विः रेः मूः अनुः पुः मूः धः रोः चिः
 स्वाः उः ३ शुभवारारेशुभतिथौ ॥ अथ कुल्याबंधनं ॥ स्थिरः मैत्रः
 एषु भेषु स्थिरलग्ने २।५।८।११।४।१०।१२ भौमरहितवारं ॥ अथ
 कुल्यामूलबंधनं ॥ अथ धः शः हः तिः अनुः मः शुभवासरे शुभति
 थौ स्थिरलग्ने वारिबंधनं शुभम् अथ धान्यमध्यात्तृणछेदसु
 ॥ चरक्षिप्रः एषु भेषु रः चं बु जी श वासरे विरिक्ता मा ४।६।१४
 १३० दिने चरतनौ १।४।७।१० शुभं ॥ अथ क्षेत्रे करीषादिक्षेपणं
 ॥ चरः मूः आः पूभाः तिः एषु भेषु शतभवासरे विरिक्ता मा ति ४।६।
 १४।३० थौ शतभम् ॥ अथ क्षेत्ररक्षोटज ॥ अथ मैत्रः एषु भेषु
 पंचकहीनेषु मः रः वारौ वर्जयित्वा कृः विः रहितदिने विरिक्ते शुभः
 ॥ अथ धान्यछेदः ॥ रेः हः मूः अः पूकाः अनुः मः मूः ज्येः एषु भेषु
 शु जी वारयो रिक्ता मारहित ४।६।१४।३० तिथौ तथा सिंहलग्ने
 चंद्रयुते अथवा पूः ३ मः उः ३ मः ज्येः आः अः धः कृः मूः तिः

ह.चि.स्वा. एषु भेषु विभौमशानिरिक्तामासु ॥ अथधान्यसंग्रहः ॥
 ॥ रो.उ.३.ति.भ.ज्ये.मू.रे.ह.अश्वि.वि.अ.अनु.पु.चि.वि.ए
 षु भेषु जी.र.च.श.चारेषु रिक्तामारहिततिथौ स्थिरलग्नेषु ॥
 अथजीवसंग्रहः ॥ ह.चि.पु.स्वा.रे.अ.ध.एषु भेषु जी.चारेषु
 श.क्र.चारेषु स्थिरलग्ने ॥ अथजीवबंधनं ॥ रो.रे.मू.स्वा.ह.मू.
 पूषा.उ.३.पूषा.एषु भेषु श.मचारे विरिक्तामातिथौ ॥ अथधान्य-
 स्थापनं भ.पु.म.ज्ये.उ.३.एषु भेषु श.मचारे मीनलग्ने अष्टमशुद्धे
 तनौ ॥ अथनिक्रमणं धान्यानां उ.३.रो.ध.श.एषु भेषु श.मचा-
 सरे श.मतिथौ श.मलग्ने च ॥ अथकणमर्दनं ॥ अनु.अ.मू.रे.
 म.पूषा.उषा.ज्ये.रो.एषु भेषु श.मतिथौ श.मचासरे श.मलग्ने
 च ॥ अथतृणरज्जुभिर्धान्यबन्धः ॥ स्वा.मू.ह.रे.पूषा.उषा.पू.
 भा.उभा.रो.मू.एषु भेषु सतिथौ श.मः ॥ अथधान्यानामानय-
 नं ॥ ह.चि.स्वा.उ.३.मू.ध.रो.मू.ति.अश्वि.अनु.म.एषु भेषु श.
 भौचासरे ॥ अथस्थलांतरेधान्यस्थापनं ॥ चि.पूषा.रो.मू.श.
 उषा.श.मचासरे ॥ अथसपाद्यन्नादिपाकक्रिया ॥ मू.चि.अनु.
 वि.रू.मू.उ.३.रो.ज्ये.रे.चरलग्ने विनापक्षरंधतिथिं विनाशानि वि-
 ना ॥ अथकोष्ठादिषु धान्यस्थितिः ॥ मू.पु.रे.अनु.अ.ध.श.अ
 श्वि.ति.रो.उ.एषु भेषु सतिथौ सू.च.रू.श.चारे ॥ अथधर्मक्रि-
 याजपहोमरुद्रानुष्ठानरूपा मू.रे.चि.अनु.ह.अश्वि.ति.अमि-
 स्वा.मू.अ.ध.श.उ.३.रो.एषु भेषु श.मचासरे ३।६।१।१२ लग्नेषु
 एवाचरे च कर्तव्यं रुचले सति श.मतिथौ अथपितृतर्पणं शस्त

सवः॥ तिथ्यः शुक्लदिरीत्या सैकाकार्यवारयुता चतुर्भि
स्तष्टाशेषे०।३ भुवि वन्हिवासः सौरव्याय एक१ शेषे स्वर्गवा
सः प्राण नाशदि २ शेषे पातालेवासः अर्थनाशः इदमपि पू
र्वोक्तेष्वनावश्यकम् ॥ अथ शत्रुबंधनं ॥ मं. श. वारयोः वृद्धयो
गे वृद्धस्वरे शंखत्वादृकाणो १२।४ अंत्यः वृश्चिकस्याद्यमध्ये
एषु ४ दृकाणेषु शुभं ॥ अथ भैत्रिसु० ॥ शक्रे ७ जीवे १ वा ७
शनौ १ शुक्रे वा २ शनौ १ सितेश्च भतिथौ शक्रभासरभयोः आ.

कष्टाचली.

| अ. | भ. | क. | रो. | मू. | आ. | पु. | ति. | अ. | मं. | पु. | उ. | ह. | वि. | भानि. |
|-------|-------|---------|-------|-------|-------|--------|-------|-------|--------|-------|-------|-------|------|-------|
| ६ | ११ | ६ | ७ | ३० | मू. | ७ | ७ | मू. | २० | मू. | ७ | १५ | ११ | दिवसा |
| भोजनं | भोजनं | स्वर्गं | पुतं | मिहं | मिहं | वित्तं | तेऽलं | भोजनं | वृश्चि | भोजनं | भोजनं | मिहं | मिहं | मिहं |
| स्वा. | वि. | अं. | ज्ये. | मू. | पु. | उ. | अ. | ध. | श. | पू. | उ. | ह. | ० | भानि. |
| मू. | १५ | स्वि. | मू. | न. | मू. | ३० | ११ | १५ | ११ | मू. | ७ | स्वि. | ० | |
| भोजनं | भोजनं | भोजनं | भोजनं | भोजनं | भोजनं | भोजनं | भोजनं | भोजनं | भोजनं | भोजनं | भोजनं | भोजनं | ० | मू. |

अस्ते ज्ये. श. भ. पू. ३ वि. य. क. एषु भेषु सू. मं. श. वारे ४।६
१४।६।१२ तिथिषु त्रयाणां योगे रोगे मृत्युः ॥ अथ सर्पदंष्ट्रे फ
लं ॥ भ. अस्ते. मू. क. चि. आर्द्रा. म. एषु सर्पदंशने मृत्युः ॥
अथ रोगसुक्तस्य स्नानं ॥ रे. पु. उ. ३ रो. म. स्वा. अस्ते. एभ्यो
विनारिक्तातिथौ ४।६।१४ चंद्रशुद्धिरहिते चं. श. भिन्नया
रेचलमे ३।११।१४।७।१०।५।६ शक्रभैः ॥ अथौपधिस्नानं ॥

लाजा कुट फुल प्रियुंगु मुंथा गौर सर्षप हल्दी दारुहल्दी लोभ्र ए
भिः ॥ अथरोगनिर्मुक्तस्यवर्हिगमनं ॥ अश्विः मृः पुष्यः अनुः
पुः रेः हः अः धः शुभवासरे शीर्षेदयलग्ने २।१।६।४।३।१० अ
धनराश्वरूपभादीनां लिंगांड छेदनमुः रेः तिः हः स्वाः अः धः ए
पुभेपुरविभौमयोः ॥ अथतैलिककर्म ॥ अश्विः रेः हः चिः अनुः
ज्येः धः पुः तिः एपुभेयुशुभचारे विरिक्तमाऽयोगेषु शुभराशौ ल
ग्ने शुभग्रहयुक्तकेन्द्रे ॥ अथतैलिकचक्रं इक्षरसादियंत्रच
क्रं च सूर्यभात् गणना ॥ अथोपलविदारक कर्माह तयातक्षाः

| तैलिकचक्रम्. | | |
|--------------|--------|---------|
| ७ | शंगे | संपत् |
| ३ | अंत | शोक |
| २ | तले | विपत् |
| ७ | कर्णे | धनम् |
| ३ | दारुयु | क्रद्धि |
| ५ | संभार | सखं. |

॥ हः चिः मिश्रः स्वाः दारुणा ए
पुभेयु १३।८।११।१२ आसुति
थिषु अशुभग्रहचारे चरलग्ने
खलखेटयुते पाषाणलोह म
णिकाष्ठ विदारणचक्रम् अथ
कुभकारकर्मणि भादिशुद्धि पुः
हः मृदुः ज्येः रेः अः स्वाः रोः एपुभे
पुशुभसूर्यचारे चरलग्ने जलचरल
ग्नयुक्शनौ ॥

| उपविदारिणाचक्र | | | कुण्डलचक्र | | |
|----------------|-----------|---|------------|---|-------|
| २ | शुभ | ४ | अधः | ५ | शुभम् |
| ५ | शुभ | ४ | पूर्व | ५ | शुभम् |
| ५ | भुशुम् | ४ | दक्षि | ५ | शुभम् |
| ५ | शुभम् | ४ | पश्चि | ५ | शुभम् |
| ५ | चतुर्विंश | ४ | उत्तर | ५ | शुभम् |
| ५ | ० | ४ | कुम्भ | ५ | शुभम् |
| ५ | ० | ४ | दंड | ५ | शुभम् |

अथो कुलालचक्रं रचिभात्.
अथ लोहकारकर्मस्वा ज्येः मृः
चिः आः भः कः रोः एपुभेयुः संश
चारे स्थिरलग्ने शुभतिथौ शुभम् ॥

अथमणिकार कर्म भ. कृ. ध. ज्ये. स्वा. रो. चि. आ. वि. एषुभे
 षु र. भौ. शनिवारे स्थिरलग्ने ॥ अथनापितकर्म ॥ चर. ज्ये.
 चि. लग्ने. रे. मृ. एषुभेषु शभवासरे लग्ने च शभयुते उषोऽग्नि
 ते काले शभनारयाविरक्ता मातिथौ ॥ अथमालिककर्म
 ॥ पूषा. चर. अश्वि. ति. म. चि. मृ. एषुभेषु चंजी. श. वासरे न
 रराशौ लग्ने पापेषु कटकभिन्नेषु ॥ अथपलगडकर्मणिभा
 दि. ॥ ध्रुव. चि. अ. क्षिप्र. ज्ये. रे. एषुभेषु र. मं. वृ. श. वासरे स्थि
 रोदये चतुर्थदशमयोः शभयोगे ॥ अथतंतुवायकर्म ॥ चर.
 मृदु. क्षिप्र. रो. ज्ये. एषुभेषु र. चं. श. जी. वासरे शभग्रहाणां
 राशौ लग्ने ॥ अत्रैवशूचिककर्म शभदं प्रोक्तं ॥ अथचित्रकर
 कर्महि ॥ क्षिप्र. पु. पूषा. चि. अनु. स्वा. मृ. अ. ध. श. एषुभेषु
 र. चं. श. वासरे शभतिथिलग्नौ ॥ अथचर्मकार्यकार्ये ॥ मृ.
 पूशरे. वि. ज्ये. आ. मू. ध. ह. चि. एषुभेषु श. र. श. चारे ॥ अथ
 जायाजीववलययौकर्म ॥ चर. स्थिर. मैत्र. चि. मृ. व्या. ति. मृ.
 एषुभेषु र. जी. श. वासरे शभलग्ने ॥ अथव्याधदासकौटिक
 आत्यवशापिनांक ॥ पू. ३ स्वा. वि. श. भ. तीसरा. उग्र. एषुभेषु
 र. मं. श. वासरे पापलग्ने ११ पापग्रहे ॥ अथस्नेच्छकर्मणि
 शु. ॥ आ. मू. अस्त्रे. भ. पूषा. उभा. वि. एषुभेषु च. श. श. वा
 सरे पापलग्ने पापयुक्ते ॥ अथशिलेष्टिकाकारयोः कर्म ॥ ज्ये.
 मृ. धीर. रे. लग्ने. अ. मि. अ. चि. एषुभेषु र. जी. श. वासरे शुभ
 तिथौ ॥ अथचौरकर्म पूषा. उभा. दारुण. उग्र. चि. वि. मयारहि

तैष्वेषु भेषु. र. श. श. भौ. चारे रिक्ता जयातिथिषु शकुनप्राच
 ल्ये ॥ निर्ग्रन्थचार्वाकयोः कर्म ॥ चल. मृ. अश्वि. चि. एषु भेषु बु.
 चं. श. चारेषु. जया पूर्णातिथौ चरल ग्ने श. भा. क्रांते ॥ अथ लि-
 पिकरकर्म ॥ चर. मू. ह. वि. मृ. आ. अ. एषु भेषु श. जी. बु. गलग्र
 ह रहितदिने केंद्रं १।४।७।१० गते जीवे २ बुधे ११ शुभे ६ पापेश. भ
 ग्रह लभे ॥ गलग्रहास्तु ॥ चतुर्दश्यादि च १४।१५।३०।१ त्वारि
 सप्तम्यादि दिनत्र ७।८।९ चं चतुर्थी चैकतः प्रोक्ता अष्टावेते
 गलग्रहाः ॥ अथ पल्लीवाशिनां कर्माह ॥ अ. य. श. यु. लघु. वि.
 ज्ये. मृ. पू. भारे. एषु भेषु बु. र. चं. एषां चारे ३०।८ रिक्ता ४।९
 १४ रहिततिथौ ॥ स्वर्णकारकर्म ॥ चल. मिश्र. वि. मृ. लघु. ए
 षु भेषु चं. जी. श. र. भौ. एषां लग्ने चं. जी. युक्ते ॥ अथ ब्राम्ह
 ण कर्माणि ॥ अध्यापनं १ अध्ययनं २ दानं ३ याजनं ४ यजनं
 ५ प्रतिग्रहः ६ ॥ क्षत्रियस्य ॥ अध्ययनं १ दानं २ यजनं ३ ॥ वै
 श्यस्य ॥ व्यापारः १ शूद्रस्य गोद्विजशुश्रूषा १ अंत्यजानां ॥
 सर्वाणि निषिद्धानि स्युः ॥ यद्यहर्गजस्तत्तत्कर्म सिद्ध्यति त-
 त्तत्कर्मकाले ॥ अथैषां स्वभावकृत्या न्याह ॥ शमः दमः सत्यं-
 आर्जं वं क्षमा. शौचं. तपः. ज्ञानं. कथा. स्मरार्चनं. तीर्थ. आस्ति
 क्यः. सत्संगः. यज्ञः. व्रतं. ब्राह्मणानां ॥ शौर्यं. बलं. धैर्यं. धृतिः. धृ-
 तिः. मृधं. ईश्वरता. विद्या. सुदीक्षा. दानं. क्षत्रियाणां ॥ वाणिज्यं. गो
 जीवनं. कर्षणं. वैश्यानां ॥ द्विजसेवा. ब्राह्मणाजयाधर्माचरणं
 शूद्राणां स्वभावकर्म हित्वा अंत्यज एव भवति ॥ अथ विप्रकृत्ये

शतद्विमाह. ति. रो. ह. श्र. मृ. उषा. एषु भेषु र. जी. शु. वारे लग्ने
 रिक्तामारहिततिथौ ॥ अथ सप्तत्रयिकर्मरंभे ॥ मिश्र. ज्ये. ह.
 श. उ. ३ श्र. अश्विरे. अनु. एषु भेषु र. मं. चं. जी. जयापूर्णाति
 थौ सुयोगे ॥ अथ वैश्यकृत्येभादि ॥ श्र. ध. पु. ति. मृ. अश्वि.
 चि. अनु. मृ. एषु भेषु शु. जी. बु. चं. शतभतिथौ कुयोगराहित्यं
 ॥ अथ शूद्रकर्मरंभेषु धिः ॥ पू. ३ उ. ३ अश्वि. आ. चि. अनु.
 मृ. स्वा. ध. रे. एषु. षेषु बु. चं. शु. वारे विपर्वरिक्ते ॥ अथैषां च
 तुर्णालिप्तशतद्विमाह ॥ पुंलग्नेस्वग्रहदृष्टयुते ३।६।११ अशु
 भैः केंद्रे १।४।७।१० शतयुते शीर्षोदयलग्ने शतभाधिक्षितेशु भा
 य ॥ अथ धूर्तकार्ये ॥ ध. स्वा. ज्ये. म. हं. वि. भ. श. पू. ३ ति. एषु भेषु
 श. जी. चं. वारे नंदा १।६।११ पूर्णा ५।१०।१५ तिथौ ११।६।८ लग्ने शु
 भं ॥ अथ मल्लयुद्धसु ॥ अश्वि. मृ. रे. क्रव. एषु भेषु मं. बु. र. वारे
 जया ३।८।१३ तिथौ ४।५।१० लग्ने ॥ अथ सर्पग्रहणविद्यारंभः ॥
 ह. चि. अनु. रे. पू. ३ म. वि. कृ. एषु भेषु ॥ अथ मंत्रग्रहणम् ॥ आ
 श्वि. रो. स्वा. वि. ह. ज्ये. उषा. उषा. एषु भेषु वै. आ. का. आश्वि. मा
 र्ग. वै. फा. एषु मासेषु चं. श. वर्जितवारे. २।५।७।१०।१३।१५ तिथु
 शु अष्टम्यां संक्रांतौ रविचंद्रग्रहेषु माघोपिविहितः त्रिविधायग
 ताः पापाशुभाः केंद्रगाः ॥ अथ शिल्पविद्यारंभः ॥ मृ. रे. चि. अ
 नु. उ. ३ रो. ह. अश्वि. ति. अभि. स्वा. पु. अ. ध. श. एषु भेषु बु. वृ.
 लग्ने १० चं. बु. जीव. वर्गे ॥ अथ फारसीतुरुष्कविद्यारंभः ॥ ज्ये.
 अश्ले. मृ. पू. ३ रे. भ. कृ. वि. आ. उषा. श. पापचासरे स्थिरे लग्ने ॥

॥ अथ जैन विद्यारंभः ॥ पू० ३ अनु० भ० स्वा० पु० अ० ध० श० एषु भेषु
जया पूर्णातिथौ सू० शु० वासरे शतभलग्ने ॥ अथ शयने दिक्फलं
॥ पूर्वैलक्ष्मीः दक्षिणे सुखं पश्चिमे चिंता उत्तरे हानिः ॥ अथ परी
क्षादीनां विवादीनां ह० पु० अ० ज्ये० ति० एषु भेषु ८११४ रहिततिथौ
भद्रा श० मं० विना जन्मनक्षत्रमासरहिते जन्मनक्षत्रतः १०११११५
नाडिनक्षत्रमासरहिते जन्मराशितः ८ सूर्यचंद्रौ त्यक्त्वा स्थिररहि
ते लग्ने नवांशे च शशिगुरुताराशय्यौ ॥ अथ मंथनं ॥ अश्वि० कृ०
मृ० ति० म० पू० फा० ह० वि० अनु० मू० पू० पा० अ० अ० पू० भा० एषु भेषु शुभ
वासरे अमारहिततिथौ ॥ अथ गोदोहनं ॥ भ० पु० अ० म्ले० स्वा० ज्ये०
श० एषु भेषु विषमदिने ॥ अथ सेवासु ॥ ह० अश्वि० ति० अभि० मृ०
रे० वि० अनु० एषु भेषु सू० बु० वृ० श० चारे शतभलग्ने र० मं० ११११० सति
अथ अभिसाध्यकृत्यं वि० कृ० मृ० रे० रो० ति० ज्ये० उ० ३६ अनु० अ०
स्वा० उ० पा० पु० अश्वि० ध० एषु भेषु चं० बु० वृ० श० चारे ११४१७१०१६
१५१ सू० चं० मं० वृ० ३१६११ बु० श० श० ॥ अथ नूतनसंमार्जनी ॥ मृ०
स्वा० अश्वि० पु० ति० ध० वि० ज्ये० अनु० अ० एषु भेषु चं० श० जी० चारे शु
भतिथौ परमत्रयः शंखज्येष्ठपंचकगत्वात् ॥ अथ पंचकं तत्कृत्यं
च ॥ धनिष्ठोत्तरखंडादारभ्य रेवत्यंतं पंचकं अथवा धनिष्ठामा
रभ्येव अत्र प्रेतदाहं दक्षिणगमनं ॥ शय्याचितानं गृहगोपनं
काष्ठादिसंग्रहो गोमयसंग्रहश्च वर्ज्यः तृणसंग्रहः केचिदत्र
अवगमप्यंगीकृत्य निषेधयंति ज्योतिःसागरे छेदनं संग्रहं
हं चैव काष्ठादीनां नकारयेत् अवगादौ बुधः पट्टेन गच्छेदक्षि-

णांदिशं ॥ अग्निदाहो भयंरोगो राजपीडाधनक्षयः क्रमाद्
 निष्ठादियुक्तयेतृणादिसंग्रहे अग्निभी. कली. रोगः दंडः
 अर्थहानिः क्रमादस्वादेषु पूर्वार्द्धेनाति दोषायदाह तक्षण
 संग्रहे धानगोपनशय्यायांसंपूर्णवासवंचर्ज्यं केप्याहुः सं.
 कटे पंचनाडिकाः क्रमा ३।१।२ ध्वनिष्ठादीनांचर्ज्या ॥ अपरे
 वृद्धपंचकंचाहुः ॥ धनिष्ठापंचके चंद्रे सूर्ये पैत्रादिकंचके ॥ छे
 दनादिने कर्तव्यं गृहार्थं तृणकाष्ठयोः पंचकमृते दाहे च शांतिपु
 त्तलौ पंचकदाहे पुत्तलविधिः शांतिर्न पंचकमृते अश्विन्यां दा
 हे शांतिः पुत्तलदाहो न एव भरण्यामपि शांतिः चत्वारः पुत्तलाद
 र्भमयाः स्थाप्याः दाहयितव्यश्च सूतकांते शांतिः कांस्य पात्रं-
 घृतंच तिलगोहिरण्यदानंच वासवे वस्त्रं शते गुडं पूभा. स्वर्णं उ
 भा. गोद्वयं रेव सुवर्णं वास्त्रं वा दद्यात् कल्पोक्तां शांतिं कुर्यात् ॥
 अथ पुत्तलदाहः ॥ सूतकमध्ये यथासंभवं वर्षाभ्यंतरे याम्यायं
 ने वर्षानंतरं सौम्यायने शुक्लपक्षे सू. चं. बु. च. वारेषु मू. ज्ये. आ.
 अश्ले. पू. ३५. म. रे. श. एभ्यो विना त्रिपुष्करं विनान्यूनं अधिमासगु
 रुशुक्रास्तभद्रावैधृतिसमुदायेऽपि न कार्यम् ॥ अखिलकर्मणि ॥
 भादि ॥ व्ययाष्ट १२।० शुद्धेजन्मराशिभ्यां ३।६।१०।११ उपचये
 लग्ने शतभद्रयुते चंद्रे पीदृश्ये वसविरंभाः सिध्यन्ति ॥ अथ गंडां
 तं ॥ तच्च त्रिविधं तिथिभ. लग्नस्वरूपं तिथ्यंतं. द्विघटिमांतं ॥
 ३ यदि त्रयं लग्नांतार्धघटी ॥ ३० त्याज्यं. नाक्षत्रमातरं तिथिजं
 पितरं लग्नजमात्मानं क्रमतो हंति दिवाजं पितरं रात्रिजं मातरं

संध्याजमात्मानं हंति नक्षत्रगंडे तिथिगंडे संध्यायां मातरं रात्रौ तातं दिवा स्यात्मानं लग्नगंडे संध्यायां तातं रात्रावात्मा

अश्विन्यादीनां तारास्वरूपम्.

| अ. | भ. | रु. | ते. | मृ. | आ. | पु. | ति. | आ. | म. | पू. | उ. | ह. | वि. | भाति |
|----------|----------|---------|--------|---------|---------|---------|-------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|
| ३ | ३ | ६ | ५ | ३ | १ | ४ | ३ | १ | ५ | २ | २ | ५ | १ | तारा |
| अश्विमुं | ज्येष्ठं | मृगश्रि | शक्रं | एलास्यं | मृगश्रि | मृगश्रि | वाणं | ज्येष्ठं | ज्येष्ठं | ज्येष्ठं | ज्येष्ठं | ज्येष्ठं | ज्येष्ठं | ज्येष्ठं |
| स्वा. | वि. | अश्वि | ज्ये. | मृ. | पु. | उ. | अश्वि | अ. | ध. | श. | पू. | उ. | दे. | भाति |
| १ | ४ | ३ | ३ | ११ | २ | २ | ३ | ३ | ४ | १०० | २ | २ | ३२ | तारा |
| विंशं | तेजः | विंशं | कुंडलं | सिंहपुं | गजदंतं | मंचकं | अश्वि | विंशं | मृगश्रि | ज्येष्ठं | ज्येष्ठं | ज्येष्ठं | ज्येष्ठं | ज्येष्ठं |

नं दिवा मातरं हंति शौनकीये पुत्रोपदिपितुर्गंडे दिवा चैव प्रजायते कन्यकाजननं रात्रौ मातृगंडे तथैव च संध्ययोर्धनगंडे च प्रसूतिर्यदि जायते विनाशो जायतेशीघ्रं मध्यमं तद्विपर्यये यत्र गंडे भूरक्षुते महादोषकरं भवेत् शतभयहसमायोगे ईषच्चुम्भकरं भवेत् एवमेव दिनक्षयव्यतीपातव्याघातविधिष्वैधृतिशूलगंडे अतिगंडपरिधयमघटब्रह्मदंडमृत्युयोगसंक्रांतिशिनीवालीकुहूदशी. ३० कृष्णचतुर्दशी सोमरपितृसमजननं भूमिधाचंद्रसूर्योपरांगेषु जातः शांत्यर्हो भवति अथात्यरिषु दः गंडजातानां परित्यागः शांतिः वरमासादर्शनं वेति त्रयः यक्षाः विवाहे मृत्युः जातके कुलकष्टं यात्रायां धननाशः अन्यकर्मणि कार्यनाशः गंडांते साधारण्येन १६ पलमितकांश्यपात्रस्थितां

राजतचंद्रप्रतिमांश्वेतपुष्प १००० सहस्रैरभ्यर्च्यतांतिलपात्रं
चब्राह्मणाय कल्पोक्तप्रकारेण दद्यात् ॥ अथोभुक्तमूलवि-
चारः ॥ दृहस्यतिः ज्येष्ठांत्यघटी १ मूलाद्यघटी २ द्वयं ज्येष्ठांत्य
घटिकार्धमूलार्धघटिकाद्यं लघुः ज्येष्ठांत्यघटी १ मूलादौ घटि

अथोभुक्तपुरुषस्यांगघटीन्यासः

| मूर्ध्नि. | मुखे | कर्णे | बाहो | हस्ते | हृदि. | नाभौ | गुह्ये | जानु | पाद. | अंग. |
|------------|--------------|---------|------|-----------|-------|------------|--------|--------|------|--------|
| ५ | ७ | ४ | ८ | ३ | ९ | २ | १० | ६ | ६ | घटि. |
| नेत्रेभ्यो | विष्णुर्भ्यो | महादेवा | सिं. | हस्तिभ्यो | मं. | ब्रह्मभ्यो | सिं. | मेधावि | सिं. | फलानि. |

मूलोद्भूत कन्यांगविभागः

| मू. | मु. | सं. | ल. | वा | ह. | गु | अंश | जानु | पाद | अंग. |
|---------|---------|--------|---------|--------|--------|---------|---------|----------------------|--------|-------|
| ८ | ६ | ५ | १४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ | १० | घटी. |
| पशुनाशः | धनहानिः | धननाशः | मौलिकृश | विनाशः | दशार्ध | आयिकामा | पशुनाशः | ज्येष्ठांत्य नाशः | वैयव्य | फलानि |

मूलरक्षविचारः

| मूल | सं. | लवा | शारवा | पत्र | पुष्प | फल | शितवा | अंगा. |
|---------|--------|---------|-------------|------|-------|------------|---------|-------|
| ७ | ८ | १० | ११ | १२ | ५ | ४ | ३ | घ. |
| मूलनाशः | वशनाशः | मातृकृश | मातृलक्ष्मि | गना. | मं. | लक्ष्मीवा. | लक्ष्मी | |

मूलफल.

मूलवास.

| १ | २ | ३ | ४ | पादा. | आषा | भाद्र. | आश्वि | माघ | स्वर्ग. |
|--------|----------|--------|------|-------|-----|--------|-------|-------|---------|
| ० | ० | ० | ० | फल | आ. | का. | वै. | वै. | भूमौ |
| वितना. | मातृनाशः | धननाशः | अंग. | | का. | मार्ग | वैशा | ज्ये. | पानाले |

मुहूर्तसिंधू.

(५५)

गुदितंकुर्थात्पूरयेत्तीर्थवारिणा कूर्चहेमसमायुक्तंमूलपल
वशोभितं स्वस्तिकोपरिविन्ध्यस्यक्षीरद्रुमसुपल्लवैः द्रोणघ्नी
हीअनिक्षिप्यईशान्यांचनिवेदयेत्। पंचरत्नानिनिक्षिप्यस
र्षेणधिसमन्वितं अर्चितंगंधपुष्पाद्यैः श्रीरुद्रं च जपन्स्पृशे-
त् इत्यादिमंत्रैः पंचामृतं पंचगव्यं पंचत्वक्पंचपल्लवाः सप्त
मृदः पंचरत्नानि सप्तधान्यानि शतमूलं दशमूलं वा कलशे नि
क्षिप्य नक्षत्रदेवतारूपं वणे निविधाय पंचगव्यं गोमूत्रं गो-
मयं २ क्षीरं ३ दधि ४ सर्पि ५ गजमदं ६ पंचरत्नं वज्रं १ मौक्ति
कं २ वैडूर्यं ३ पुष्करागं ४ इंद्रनीलं ५ पक्षेतु रजतं १ कांचनं २ ता
म्रं ३ विद्रुमं ४ तीर्थवारि ५ पंचत्वक्पल्लवै उतुंबर १ वट २ अश्व
त्थ ३ फुल्ल ४ आम्र ५ दशमूलं कुष्ठ १ मांसी २ हरिद्रा ३ सुरा ४
शलेयं ५ चंदनं ६ चच्चा ७ चंपकं ८ मुस्ता ९ मृदः १० अश्वस्था
न १२ गजस्थान २ वल्मीक ३ संगम ४ न्हद ५ गजद्वार ६ गोष्ठ ७
तिल १ माष २ यव ३ व्रीहि ४ गोधूम ५ प्रियंगू ६ चणक ७ श
तौषधीनामानि बर्हि शिरवा १ हरिक्रांता २ सहदेवी ३ पुनर्न
वा ४ शरपुंरवा ५ वराही ६ काकजंघा ७ लक्ष्मणा ८ तुंबिका
९ कर्कधु १० कर्पूरा ११ कारवल्लीका १२ कर्कोटिका १३ चक्रांका
१४ श्वेतार्क १५ व्याघ्रपत्र १६ रुदंती १७ अश्वगंधा १८ मुश
ली १९ गिरिकर्णिका २० इंद्रवारुणी २१ अपामार्ग २२ शंखपु
ष्पी २३ कुमारिका २४ सल्लुकी २५ गंधारी २६ निगुंडी २७ देव
दारु २८ वट २९ शमी ३० फुल्ल ३१ पलाश ३२ अश्वत्थ ३३ चत

घटिकाक्रमः ॥ अथात्र किमपि परामर्शः ॥ बादरायणः ॥ सार्य
 नैर्ऋतिगंडांतविषकन्यादियोगजा नस्युरुक्तफलं लभेयदित
 द्वांगदाग्रहाः मूलसार्यादिजंदौष्ट्यं स्यादपश्यति लभपे सक्
 रे ज्ञे च विचले श्च भद्रदृष्टि विवर्जिते किंच पितृमात्र रिष्टमपि मू
 लजनने तदैव यदार्कशानीदिवा जन्मनि ओजराशिगौनचंद्रशु
 क्रौसमराशिगौन ॥ पितृमातृग्रहौ नस्तोययोगसमराशिगौ ॥
 कूर्मचामले ॥ आद्यः षष्ठस्त्रयोविंशो द्वितीयो नवमोष्टमः अष्टा
 विंशश्च मूलस्य मुहूर्तादुःखदा जनौ रवि युक्ता श्विनी सौम्यादित्य
 हस्तादिकं त्रयं मैत्रं च रेवती ज्येष्ठा तदा मूलं न दोषकृत् रवौ अ
 श्वः मृः पुः हः चिः स्वाः अनुः रेः ज्येः गते मूलौ न दोषाय तृतीया
 दशमी षष्ठी शनिभौमसमन्विता शक्राच्चतुर्दशी मूले जातः संह
 रते कुलं शाक्रे १५ पक्षं च गंडांते मूले चाष्टसमा मता मासानां
 नवकं सार्येत्यजेत्संदर्शनं शिशोः भुक्तमूलं र्क्षजं बालं षणमासं
 नावलोकयेत् भुक्तसार्यं र्क्षजं दिनानि २७ सप्तविंशतिः अंत्ये
 पिशांत्यादिकं विधाय पिता लोकयेत् शांतिमुहूर्तः सद्दारे
 सन्तिथौ सद्दे गुरुपुष्ये सुलग्ने चंद्रबले तत्तद्गंडांतदिने न्यस्मि
 न्वादिने अथ सामान्येन मूलशांतिरन्येषां शांतिश्च अथातः
 संप्रवक्ष्यामि मूलजातहिताय च मातापित्रोर्धनस्यापि कुलशां
 तिहिताय च ॥ सुसमेभू प्रदेशे तु मंडलं फारयेद्बुधः पुण्यगिर्मर्म
 भित्तैस्तोयैः प्रोक्षितायां क्षितौ ततः तत्रोदकुंभं सुशुद्धं रक्तं च
 एव विवर्जितं अरुणं मूलं निर्गुणं पूरयेन्निर्मलां भसा वस्त्राव

द्वितं कुर्यात्पूरयेत्तीर्थवारिणा कूर्चहेमसमायुक्तं मूलफल
 शोभितं स्वस्तिकोपरिविन्ध्यस्य क्षीरदुग्धमुपलुप्यैः द्रौणाघ्री
 अनिक्षिप्य ईशान्यांच निवेदयेत् । पंचरत्नानि निक्षिप्य स
 षड्विधसमन्वितं अर्चितं गंधपुष्पाद्यैः श्रीरुद्रं च जपन् स्पृशे-
 त् । इत्यादि मंत्रैः पंचामृतं पंचगव्यं पंचत्वक्पंचपल्लवाः सप्त
 मृदः पंचरत्नानि सप्तधान्यानि शतमूलं दशमूलं वा कलशे नि-
 क्षेप्य नक्षत्रदेवतारूपं वर्णेन विधाय पंचगव्यं गोमूत्रं गो-
 मयं २ क्षीरं ३ दधि ४ सर्पिः ५ गजमदं ६ पंचरत्नं वज्रं १ मौक्ति
 तं २ चैडूर्यं ३ पुष्करागं ४ इन्द्रनीलं ५ पक्षेतु रजतं १ कांचनं २ ता-
 म्रं ३ विद्रुमं ४ तीर्थवारि ५ पंचत्वक्पल्लवे उवुंबर १ वट २ अश्व
 थ ३ प्लक्ष ४ आम्र ५ दशमूलं कुष्ठ १ मांसी २ हरिद्रा ३ सुरा ४
 तलेयं ५ चंदनं ६ वच्चा ७ चंपकं ८ सुस्ता ९ मृदः १० अश्वस्था
 न ११ गजस्थान २ बल्मीक ३ संगम ४ नृदं ५ गजद्वार ६ गोष्ठ ७
 तिल १ माष २ यव ३ व्रीहि ४ गोधूम ५ प्रियंगू ६ चणक ७ श-
 तोषधीनामानि बर्हि शिरवा १ हरिकान्ता २ सहदेवी ३ पुनर्न-
 वा ४ शरपुंरवा ५ वराही ६ काकजंघा ७ लक्ष्मणा ८ तुंबिका
 ९ कर्कंधु १० कर्पूरा ११ कारवल्लीका १२ कर्कोटिका १३ चक्रांका
 १४ श्वेतार्क १५ व्याघ्रपत्र १६ रुद्रंती १७ अश्वगंधा १८ मुश-
 ली १९ गिरिकर्णिका २० इन्द्रवारुणी २१ अपामार्ग २२ शंखपु-
 ष्पी २३ कुमारिका २४ सल्लुकी २५ गंधारी २६ निगुंडी २७ देव-
 दारु २८ वट २९ शमी ३० प्लक्ष ३१ पलाश ३२ अश्वत्थ ३३ चूत

त३४ उदुंबर ३५ जंबु ३६ नंदीवृक्ष ३७ वेतस ३८ पुन्नाग ३९ अर्जु-
न ४० शाक ४१ बकुल ४२ अशमंत ४३ शाल ४४ ताल ४५ त-
माल ४६ पारल ४७ शतपत्र ४८ मधूक ४९ शिरीष ५० श्रीवृ-
क्ष ५१ वृहतीद्वयं ५२ बला ५३ अतिबला ५४ पाठा ५५ नाग-
बला ५७ जाति ५८ चकुल ५९ केतकी ६० कदली ६१ मातुलुं-
गी ६२ जयंती ६३ यवानी ६४ पुंडिका ६५ द्रोणपुष्पी ६६ कुंभी ६७
श्रीपर्णी ६८ दमन ६९ चंपक ७० पद्मकं ७१ कांचनपुष्पिका ७२
सिद्धेश्वरी ७३ बदरी ७४ राजवृक्ष ७५ धव ७६ कुंद ७७ सुचुकुं-
द ७८ गोजिह्वा ७९ क्षीरकंदुका ८० दाडिमी ८१ बीजपुरी ८२
ब्राह्मी ८३ आमलकी ८४ भुंगराज ८५ अधोमुरगी ८६ मत्स्या-
क्षी ८७ अटसूषीका ८८ तरंगिणी ८९ गुडूची ९० निशा ९१ शत
मूला ९२ चाकुची ९३ काकजंघा ९४ चर्वरा ९५ तुलसी ९६ कुश
९७ काश ९८ इक्षुमूलं ९९ सर्वपमूलं १०० अत्राभेचोक्तवृक्षा-
णांसहृक्षाणांसमाहरेत् मूलनामानिगृहीयाच्छ्रुताभावेवि-
शेषतः शांत्युक्तप्रकारेण शांतिं कुर्यात् मूलादिजातायाः क-
न्यायाविशेषतः ॥ मूलजाश्वसुरंहंतिव्यालजान्तदंगनां मा-
हेंद्रजाग्रजंहंतिदेवरंतु द्विदेवजा ज्येष्ठायां अश्लेषायां चैव ए-
कनक्षत्रजननेपि शांतिः चतुर्दशीशिनीवालीकुहूदर्शनांशां
तयोविधेयानिबंधेभ्यः व्यतिपातादिषु चापि इति नक्षत्रप्र-
करणं २ अथसंक्रांतिप्रकरणम् ॥

संक्रांतीनांसंज्ञा.

| ३ | ९ | ८ | ११ | १८ |
|----|----|----|----|-----------|
| २ | ५ | ८ | ११ | विष्णुपद. |
| २ | ५ | ८ | ११ | विष्णुव. |
| १० | ११ | १२ | १ | सोम्यापन. |
| २ | ३ | ४ | ५ | ६ |
| ७ | ८ | ९ | १० | ११ |

दिनस्यप्रथमत्रयंशेमेपादिसंक्रमणोनृपजान्हन्ति मध्यत्रयंशेद्वि
जान् परत्रयंशेपैश्यान् संध्यायांशुद्रान् निशाप्रथमेपिशाचान्
द्वितीयेनक्तंचरान् तृतीयेनटान् चतुर्थेपशुपालान्हन्ति सूर्योद
येसकललिंगिजनंहन्ति दिवाजसंक्रमेनर्थकलहो रात्रौसुभि
क्षं संध्ययोर्दृष्टिः १०।४।१।२।१२ संक्रांतयोनिशिसुरवदा. ३।५
।६।७।८।११ एतादिवाशभदाव्यत्यये व्यत्ययदाः मेपादिवा तुलां
रात्रौ तदाशभं चम्यांतिथौतुलासंक्रांतिस्तस्यामेवयाचन्मेषसं-
क्रमेशभं न्यूनातिचारं दुर्भिक्षंराष्ट्रभंगंजनक्षयं कुजार्काकिरीरे
संक्रमेदुर्भिक्षादयः॥ अथपुण्यकालनिर्णयः॥ संक्रांतिसम
यादुभयत्र१६ षोडशघटिकापुण्यकालः रात्र्यर्धात्पूर्वेसंक्रमेपू
र्वदिनार्धोत्तरं रात्र्यर्धात्परंसंक्रमेआगामि दिनार्धपर्यंतं पुण्य
कालः रात्र्यर्धेसंक्रमेपूर्वापराह्नांतिसपूर्वार्धयोः पुण्यं कर्मकस्यो
विशेषः अर्धरात्रात्परं रात्र्यसंक्रांतिर्भवति तदा तस्मिन्नेव दिने
मध्याह्नोत्तरं पुण्यं अर्धरात्रतः पूर्वैद्यदिसौम्यसंक्रांतिर्भवति त
दापरदिनेपुण्यं अत्रापिविशेषः अर्धविंबास्ताभिनाडीप्रमाणा-

सायंसंध्या अर्धबिंबोदयात्पूर्वत्रिनाडीप्रमिताप्रातःसंध्या.
यदि सायंसंध्यायांसौम्यायनंभवति तदातस्मिन्नेवदिनेपुण्यं ।
यदिप्रातःसंध्यायांयाम्यायनंभवति तदापरदिनेपुण्यं यदिदि-
नेसंक्रमेसतितदा ४।५।२।११।८ एषामादौपुण्यकालः१।७
मध्येकालःपुण्यस्य६।३।६।१२।१० एषामन्तेपुण्यकालःस्वष्टका-
लानयनंषष्टि६० अर्धबिंबग्रहभुक्तिभक्तं संक्रांतिनाड्योविलधर्म-
कृत्ये सर्वेषांयुक्त्यः१६।१।१३।१।३।१।४।४।६।८।८ रव्यादिनां अ-
धायनांशसंस्कृतसंक्रांत्यानयनं ॥ अयनांशाःषष्टिनिघ्नाभा-
नुभुक्तिविभाजिताः लब्धेनोनाभवेयुस्ताश्चलारव्यातीवपुण्य-
दा ॥ अथान्नैवायनांशज्ञानं ॥ भूनेत्रवेद ४।२१रहितशाकः—
स्वाशांश १० हीनितः षष्टिभक्तोयनांशाख्याः सौराश्चालन-
चालिताः नवधरविराशयर्धसुता यथा शको १८०४ भूने-
त्रवेद ४२१ रहितः १३८३ स्वाशांश १३८।१८ हीनित १२
४४।४२ षष्टि६० भक्त २।४४।४२ अयनांशकाःप्रतिमासे-
४।३० विकलाद्यद्धिः अथसंक्रांतौविरुद्धायांस्नानंतगर १
सरोरुहपत्र २ हरिद्रा ३ श्वेतसर्षप ४ लोध ५ सर्वासुसंक्रांति-
षुसाधारण्येन.

प्रत्येकसंक्रांतिषुस्नानम्.

| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ |
|-----------------|---------------|-----------------|---------------|------------------|-----------------|---------------|-------------------|-------------------|---------------|--------------|---------------|
| कुंकु. रोचनं | कुंकु. एला | उशीरं पद्मक. | रोचनं वाल. | पुत्रकं रोचनं | हरिद्रा वाल. | रोचनं अगरं | त्रिपंगु स्फटि | प्रवाल मौक्तिक | रोचनं वाल. | अंधिय एला | रुपूरं कलि |
| मांसी | सिद्धा | कुष्ठ | सुस्ता | सुस्ता | कुष्ठ | कुष्ठ | मांसी | कुष्ठ | पद्म | केशरं | एला |
| मुरा | रोचनं | रोचनं | मुष्ट | मांसी | मांसी | पद्मक. | पत्रक. | रोचनं | कुष्ठ | जानि पत्र | मांसी |
| चंदन. | चंदन. | अंधिय. | बोलेय. | लण. | चंदन. | उशीर. | रोचना. | धत. | उशीर. | रोचन. | चंदन. |
| वाला. | पेते. | कुंकुम. | चंदनं | चंदनं | रोचनं. | लक. | अशुरु | पद्मक. | पत्रक. | ० | पद्मक |
| हरिद्रा. | गोमुत्र. | अम्ल | हरिद्रा. | ० | ० | हरिद्रा. | सुस्ता. | मुरा | हरिद्रा. | ० | वालकं. |
| कर्पूर. | ० | ० | कुष्ठ. | ० | ० | सल. | कुष्ठ. | मांसी | वाल. | ० | वन. |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | उशीर. |

अथ रविसंक्रांतौ करणपरत्वे वाहनचरन्नादयः

| | | | | | | | | | | | |
|---------|---------|--------|-----------|--------|--------|----------|----------|--------|--------|---------|---------|
| वव १ | बालव २ | कौलव ३ | तैत्तिल ४ | गर्ज ५ | वणिज ६ | विष्टि ७ | शकु ८ | नाग ९ | चतु १० | किं. ११ | करणा |
| सिंह | व्याघ्र | गराह | गधा | गज | महि. | अश्व | श्वा. | मे. | गौ. | णायु. | वाह. |
| खेत | पीत. | हरि | पांडु | रक्त | ईषल | रुष्ण | चिन्न | कंब | तम्र | मेघव. | वासां. |
| गुप्त. | गरा | स्वडू | दंड | धनु | तोम | कुंज | पाश | अंकु. | शस्त्र | बाण | आयु |
| अन्न | पापस | भिक्षा | भिक्षा | पकान | वृग्ध. | दधि. | विमान | गुड | घृत | शर्करा | तक्ष्णा |
| कस्तुरी | कुंकुम | चंदन | मृगम. | गोरोच. | महाव. | विला. | हरिता. | कज्जु | काला | रूपूर | तेपा. |
| देवता | भूत. | सर्प. | पक्षी. | पशु. | मृग. | व्याहण | क्षत्रि. | वैश्य | शूद्र. | संकर | |
| नगरकै. | जलव. | वकुल | केतकी | बिल्व. | अर्क. | दूर्वा | कर्पूर. | मातति | गुलाब | गुल्हड | उष्ण |
| शर. | निवि | उत्थित | सुप्त. | निवि | निवि. | निवि. | उत्थित | स्वप्न | सप्त | उत्थि. | अवस्था. |
| सम | सम | इष्ट | श्रुति | सम | सम | सम | इष्ट | श्रुति | अनि | इष्ट | कला. |

संक्रांतिमुहूर्तः

रविसंक्रांतिभानु

तुलासंक्रांतिफल.

| | | | | | | | | |
|-------------------|--------|--------|-------|---------|---------|-------|--------|-----------|
| उ ३ रो. वि. पु. | सं. २६ | मु. २५ | ७ | शर्षि | भूयाल. | ६ | शिर | मानं. |
| सु. रे. वि. अनु | सं. | मु. | ३ | मुखे | पंडितः | ५ | मुखे | वैरं. |
| ह. अवि नि. अ | सम | ३० | ५ | हृदये | धनलाभ | ४ | हृदय. | लाभं. |
| प. कृ. मि. पू. ३५ | सं. | ३० | आस्ते | वधूं | लाभ. | १० | हस्ते | भोगं. |
| ज्ये. अस्ते. आ. | जघ. | १५ | ३ | वामे | भिक्षा. | २ | चरण | आसं. |
| स्वा. भ. | | | ३ | द. पादे | यात्रा. | इदम | परवि | संक्रांति |
| | | | ३ | वागा | मृत्यु. | भाज्ज | नभानु. | |

सुहृत्सिंधू.

(63)

[illegible]

| त्रिकोणचक्रम् | | | |
|---------------|----|----|---------|
| १ | १० | १९ | प्रवासः |
| २ | ११ | २० | भोगला. |
| ३ | १२ | २१ | ज्वरः |
| ४ | १३ | २२ | अग्निभी |
| ५ | १४ | २३ | तापः |
| ६ | १५ | २४ | संपत् |
| ७ | १६ | २५ | विजयः |
| ८ | १७ | २६ | मृत्युः |
| ९ | १८ | २७ | अर्थासि |

तृ काकिन्यां वर्गशुद्धौ च वादे द्यूते स्वरोदये मंत्रेषु न भूवरणे नाम
राशेः प्रधानता जन्मन ज्ञायते येषां तेषां नाम्नो गवेष्यते नाम च
प्रसुप्तो येन जागर्तियेन गच्छति शब्दितः तत्र नाम्न्यादि मोषणौ
ग्राह्यस्तस्माद्गुणनिर्णयः बहूनीयस्य नामानि न रस्यस्युः कथंचन
तस्य पश्चाद्भवं नाम ग्राह्यं स्वरविशारदैः यवनास्तु यत्र स्थितः शीत
करो नराणां तजन्मराशिं ससुदाहरंति यथा तथा येषु स्वर्गाः सलग्नः
स्थितान्ते सप्तकुतो भवंति अतो ह्यराशिर्मनुजः अथ कुत्र कोराशि
ग्राह्यः भोगादौ लग्नं योज्यं राजकार्ये कर्म तथा चंद्रमंशमकार्ये
षु संध्यामादौ च भौमं विद्याभ्यासे बुधर्क्षं च विवाहे गुरुमंशमृतं शु
क्रं पुंगुमं प्रयागे च दीक्षायां शनिमं बुधैः अथात्र शतपथारव्य
मवकहडचक्रम् ॥

लभेत्तथा क्रमम् क्रमेण प्रथमदश
मैकोनविंशभेषु प्रवासः इत्याद्यपरत्रापि
बोध्यम् रविभौममादियुत संक्रांतौ
दुर्भिक्षादयः शेषवारेषु शुभं इति सं-
क्रांतिः ३ अथ गोचरं तच्च जन्मरा
शोर्नामराशोर्वा विवाहे सर्वमंगल्ये-
यात्रादौ ग्रहगोचरे जन्मराशोः प्रधा
नत्वं नामराशिं न चिंतयेत् देशे ग्रा
मे गृहेषु ध्वंसे वा यां व्यवहारके ना
मराशोः प्रधानत्वं जन्मराशिं न चिंतये

शतपथम्.

| | | | | | | | | | | | | | | |
|-------|-----|-----|-------|-----|-------|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| अ | भ. | रु. | रो. | पृ. | आ. | पु. | नि. | अ. | म. | पू. | उ. | ह. | वि. | भा. |
| बु. | लि. | अ. | ओ. | वे. | कु. | के. | हु. | डि. | म. | मो. | टे. | पु. | पे. | मा. |
| चै. | लु. | इ. | व. | गो. | य. | को. | है. | हु. | मि. | ट. | तो. | प. | पो. | पा. |
| चो. | ले. | उ. | वि. | क. | ड. | ह. | हो. | डे. | मु. | टि. | प. | ए. | र. | पा. |
| ल. | ओ. | ए. | उ. | कि. | छ. | हि. | उ. | डो. | मे. | डु. | पि. | उ. | रि. | पा. |
| स्वा. | वि. | अ. | व्ये. | मू. | श. | उ. | अ. | अ. | ध. | श. | पू. | उ. | रे. | भा. |
| रु. | नि. | न | नो | पे | श्रु. | आ | जु | सि. | ग. | गो. | से. | ड | दे. | पा. |
| रे. | तु. | नि | य | यो | ध | जो | जे | खु. | गी. | सा. | सो. | पे. | दो. | या. |
| ये. | ते. | नु | यि | म | फ | ज | जो | खे. | गु. | सि. | द. | रु. | च. | या. |
| न. | तो. | न | यु | भि | ट | जि | ख | खां | गे | मु. | दि. | अ. | वि. | पा. |

अथनवपादैः प्रत्येकं राशयः

| | | | | | | | | | | | | |
|-----|-----|-----|-----|------|-----|-----|-----|-------|-----|------|------|-----|
| ये. | रु. | मि. | क. | सिं. | कं. | तु. | रु. | ध. | प. | कुं. | मां. | रा. |
| बु. | इ. | क. | हि. | म. | टो. | र. | तो. | ये. | भो. | गु. | दि. | अ. |
| वे. | उ. | कि. | ह. | मि. | प. | रि. | न. | यो. | ज. | गे. | ड. | अ. |
| चो. | ऐ. | कु. | है. | मु. | पि. | रु. | नि. | भ. | जि. | गो. | य. | अ. |
| ल. | डो. | य. | हो. | मे. | पु. | रे. | तु. | भिजु. | जु. | स. | झ. | अ. |
| लि. | व. | ड. | ड. | मो. | प. | गे. | ने. | भु. | जे. | मि. | अ. | अ. |
| लु. | वि. | छ. | डि. | ट. | ए. | न. | नो. | ध. | जो. | चु. | दे. | अ. |
| लं. | तु. | के. | हु. | टि. | उ. | नि. | र. | फ. | लु. | से. | शं. | अ. |
| लो. | वे. | सो. | डे. | हु. | पे. | तु. | पि. | ट. | लो. | सो. | च. | अ. |
| अ. | वो. | ह. | डो. | टे | पो. | न. | यु. | भं. | सा. | द. | नि. | अ. |

अथगोचरफलं चेद्यश्च.

| सू. | चं. | मं. | बु. | वृ. | शु. | श. | रा. | के. | ग्रह. |
|-----------------|----------------------|----------------|------------------|----------------|------------------------|------------------|--------------|--------------|-------|
| स्थान नाश. | अन्न लाभ | शत्रुभी | बंधं. | भय. | क्षयं | भंशं | हानिं | रोगं | १- |
| भयं. | वित्तना | धनना. | धनं | धनं | धन | कलेशं | नैरयं | वैरं | २ |
| श्रियं | द्रव्यं | धनं | शत्रुभी. | भयं | सुखं | लाभं | धनं | सुखं | ३ |
| मानक्ष यं. | कृषिरो ग | शत्रुभी ति. | धनला | अर्थना | धनं | शत्रुहृदि | वैरं | भीति. | ४ |
| दैव्यं | कार्यना | धनना | माद्य | स्वयं | पुत्रं | पुत्रादि ना. | शोकं | शुचं. | ५ |
| रिपुनाश | वित्तला भ. | धनं | स्थिति | शुचं | शत्रुहृदि | लाभं | विनां | वित्तं | ६ |
| पात्रां. | द्रव्यला | धनना. | पीडां. | भूपमा. | शोकद. | शेषं | कलि. | गतिं. | ७ |
| पीडां. | अपमृ- त्क. | भयं | धनला | मृत्युरो | धनद. | पीडां | असुं | गदं | ८ |
| पुण्यना श. | रूपभ य | शुचं | धनना. | सुखं. | लाभं | धनना | पापं | पापं. | ९ |
| कर्मसि द्धि. | सुखं | शुचं | सुख | दैव्यं | असुख | वैमनस्य | वैरं | शोकं | १० |
| लाभ | धनं | लाभं | अर्थ | धनं | धन | विनां | सुखं | यशः | ११ |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| द्रव्यना | रुजं | धनना | धननाशं | पीडां | धनं | अनर्थ | हानि | वैरं | १२ |
| ३१११ ६११० | ३१६ १०११ ११११० | ३१६ ११११० | ३१६१६ ६११० | ३१११ ६१७ | १११८ ११११३ ११११३ | १११३ ६ | ३१११ ६११० | ३१११ ६११० | शुभा. |
| ३११६ १११११११ | ३११०६ १११११११ | ३११११६ | ३११०६ १११११११ | ३११८ १११११० | ३११८ १११११० | ३११११३ १११११३ | ३११११३ | ३११११३ | वैधः |

सुहूर्तसिंधू.

(६५)

| रधिवेधः | | | | चंदवेधः | | | | | | भौ. | श. | रा.के. |
|---------|----|----|----|---------|-----|-----|-----|-----|-----|-----|----|--------|
| र. | र. | र. | र. | चं. | चं. | चं. | चं. | चं. | चं. | भौ. | श. | रा.के. |
| ६ | १० | ३ | ११ | १० | ३ | ११ | १ | ६ | ७ | ६ | ११ | ३ |
| १२ | ४ | ९ | ५ | ४ | ९ | ८ | ५ | १२ | २ | ९ | ५ | १२ |

| बुधवेधः | | | | जीवेधः | | | | भृगुवेधः | | | | | | | | | | | |
|---------|---|---|---|--------|----|---|----|----------|---|----|---|---|---|----|---|---|----|----|---|
| २ | ४ | ६ | ८ | १० | ११ | ५ | ३ | ९ | ७ | ११ | १ | ३ | ४ | ५ | ८ | ९ | १२ | ११ | |
| ५ | ३ | ९ | १ | ८ | १२ | ४ | १२ | १० | ३ | ८ | ८ | ७ | १ | १० | ९ | ५ | ११ | ६ | ३ |

इदं च ग्रहाधिष्ठित राशितोवेधमाहुः अपरे जन्म राशि-
तो नाम राशितो वा विपरीतवेधे शुभाशुभ वैपरीत्यं
यथा ६ सूर्यः शुभः चेन्न द्वादश शनिवर्जितः कोपि ग्रह
श्चेत्तत्र तदानशुभः १२ सूर्यः अशुभः चेद्वि ६ पुगतः
शनिवर्जितग्रहो न ग्रहाश्चैन्नाशुभः

| साधारण्येन गोचरम्. | | | | | | | | | |
|--------------------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|--------|---------|--|
| सू. | चं. | भौ. | बु. | जी. | भृ. | श. | रा.के. | ग्रहाः | |
| ३।६ | १।२।३ | ३।६ | २।६ | २।५।७ | १।२।३ | ३।६ | ३।६ | शुभाः | |
| १०।११ | ५।६।७ | १०।११ | १०।११ | ६।११ | ६।११ | १०।११ | १०।११ | | |
| १।२।५ | ० | १।२।५ | १।३ | १।३ | ५।६ | १।२।५ | १।२।५ | पूज्याः | |
| ७।९ | | ७।९ | ५।७।९ | ७।१० | ७।१० | ७।९ | ६।७ | | |
| ४।८ | ४।८ | ४।८ | ४।८ | ४।८ | ४।८ | ४।८ | ४।८ | निंयाः | |
| १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | | |

अथ रज्यादिषु विरुद्धेषु स्नानोपधयः

| सू. | चं. | भौ. | बु. | रु. | शु. | श. | रा. | के. | सूर्य. | चंद्र. |
|-------|---------|-----------|-------------------------|---------------|------|--------|---------|---------|--------|--------|
| केशरं | पंचांगं | चंदनं | श्री कर्मसिं हसिं | सिंहा | वालक | गला. | लोभ | निलस | निल | वालक |
| अहि | सर्पिक | विल | पुकर | अहि | गला. | कज्जल | मनस | मुस्ता | कमल | शमी. |
| मधु | गजमद | हिंगुलि | असन | मधु | मंड | निल | गजमद | कस्तुरी | वीरणा | सत्कमल |
| पद्मक | विल. | प्रियंगु | मुक्ता | नीरं पत्तक | केशर | असन | कस्तुरी | गजमद | देवदाह | निल. |
| गला | मुक्ता | गला | गोरोब | मालती | कमल | रोध | वालक | वालक | सर्प | देवदाह |
| ममसि. | कमल | मंसि. | होदक | चमेलि | मनसि | मुक्ता | मुक्ता | लोभ | मधु. | केशर |
| उसीर | शुक्ति. | रक्तपुष्प | पंचगव्य | मालति | . | गजमद | विल | संयम | शमी. | सिंहा |
| गाला | शंख | वालक | . | धव्याप | . | . | केशर | करक | शंख | वृष. |
| हंसार | . | नागंका | . | . | . | . | लोहित | मुडुचि | वृष. | मधु. |
| . | . | जग्रायुष | . | . | . | . | वृष | . | भंगा | नागंका |

अथैषां धारणमणयः

| | | | | | | | | | | |
|--------|--------|--------|-------|---------|-------|------|-------|-------|---|---|
| मारिक | मुक्ता | प्रवाल | गारुल | पुष्पाण | हिरक | नीलं | गोमद | संयु | . | . |
| प्रवाल | रुप्यं | प्रवाल | सर्प | मुक्ता | रुप्य | लोह | लोहित | लोहित | . | . |

सुहृत्सिंधुः

(६७)

तदर्चनादादिजदेव वंदनाच्छेयस्कथाकर्णितोमरवेक्षणात् हो
माज्जपादागमपाठदानतो नपीडयंत्यंगभृतः स्वगामिनः अष्ट
वर्षो तं बालानां फलं पितरि विवाहोर्ध्वं स्त्रियाभर्तारि फलपाको
बोध्यः ॥ अथ ग्रहणो गोचरं ॥ तच्च जन्मार्क्षे महादेव कष्टदं जन्म
र्क्षदशमे एकोनविंशे भेदग्रहणमपि कष्टदं जन्मसूर्याक्रांतराशौ चेद्गुरुः

| शानिस्त्रानम् भौमादियुतो सामान्यः | | | | | | | | | |
|--------------------------------------|-----------|--------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|
| ग्रहस्थानाः | | | | | | | | | |
| वासरक | हरिद्रा | सूर्यः | भु | भौ | शु | रु | शु | शु | शु |
| वृषा | रामी. | रक्त | मृ | मृ | मृ | मृ | मृ | मृ | मृ |
| अंजुज | कमलं | गुरु | गुरु | गुरु | गुरु | गुरु | गुरु | गुरु | गुरु |
| सर्पप | शंखपुष्पी | शुक्र | शुक्र | शुक्र | शुक्र | शुक्र | शुक्र | शुक्र | शुक्र |
| पंचवर्ग | गुडुची. | शुक्र | शुक्र | शुक्र | शुक्र | शुक्र | शुक्र | शुक्र | शुक्र |
| पंचवर्ग | आम्रप | शुक्र | शुक्र | शुक्र | शुक्र | शुक्र | शुक्र | शुक्र | शुक्र |
| पंचवर्ग | लुगा. | शुक्र | शुक्र | शुक्र | शुक्र | शुक्र | शुक्र | शुक्र | शुक्र |
| पंचवर्ग | नागकेश | शुक्र | शुक्र | शुक्र | शुक्र | शुक्र | शुक्र | शुक्र | शुक्र |
| | मिदार्थ | शुक्र | शुक्र | शुक्र | शुक्र | शुक्र | शुक्र | शुक्र | शुक्र |
| | चंदन. | शुक्र | शुक्र | शुक्र | शुक्र | शुक्र | शुक्र | शुक्र | शुक्र |
| | पद्याक | शुक्र | शुक्र | शुक्र | शुक्र | शुक्र | शुक्र | शुक्र | शुक्र |
| | वासरक. | शुक्र | शुक्र | शुक्र | शुक्र | शुक्र | शुक्र | शुक्र | शुक्र |

पितृपक्षल्लेशदः चंद्राक्रांतराशौ मातृपक्षनाशाय पितृपक्षविनाशाय
य सूर्यस्थाने भवेद्ग्रहः मातृपक्षविनाशाय चंद्रस्थाने भवेद्ग्रहः हो
रायां ग्रहणं चेन्महारोगं मरणं वा जन्मभयपूर्वापरभयोरपि ग्रहणं रो-

गादिकरं राज्याभिवेकभेचेद्ब्रह्मणंतदाराज्यभंगंमित्रनाशं मरणंवा
तथासप्तमवर्षे ७।१६।२५ शपंचविंशतिमित भेषपिग्रहणंकष्ट
दं तदर्थंजपहोमशांतयः नागदानंवाविधेयं निबन्धोक्तम्॥

जन्मराशेः सकाशात् ग्रहणफलम्.

| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ |
|------|--------|-------|-------|------|--------|--------|--------|------|------|------|-------|
| घातः | शक्तिः | श्रीः | अश्वः | रतिः | सूर्यः | मङ्गलः | शुक्रः | मानः | शुभः | शनिः | श्रीः |

अथ ताराबलमाह ॥ रुध्वाष्टम्यूर्ध्वतो ग्राह्यं दशहंतारका
बलं ॥ परतोऽङ्गबलं ग्राह्यं सर्वमंगलकर्मस्तु जन्मसंपद्विपत्
क्षेमप्रत्यरिः साधको वधः मैत्रातिमैत्रतारास्त्युस्तारां नामस
हस्रफला ताराबलेन हीनोऽपि चंद्रः शक्रबलीशुभः शक्रभं
ताराबलं कृष्णं यदि चंद्रोऽप्यनिष्टदः न बलं शशिनः कृष्णो शक्र
बले ताराबलं न वै याते स्वामिनिदेशं जाया प्रकरोति सर्वका
र्याणि अत्रापि तारापतिर्वीर्यमेव वदंति पक्षद्वितयेऽपि के-
चित् केचिच्च ताराबलयुक्तमिदं दोर्बलं सदा देयमिति ब्रुवंति रु
ष्णोऽपि पक्षे विधुर्वीर्यमेव भवेत्स धानं न तु तारकायास्तुःस्थः कृ
शो वापतिरेव यद्वत्सर्वाणि कार्याणि विधापयति विहाय ता
राबलमौषधीशः पक्षद्वयेऽपि फलं न यस्मात् अप्राप्य जाया
नुमतं हिलोकेन कार्यसिद्धौ पुरुषः समर्थ इत्यादिवचोभिः सं
शयो भवति तथापि पूर्वोक्तमेव रमणीयम् जन्मभादि न मांतं

गणयेत्ताराभवन्ति.

| जन्मनक्षत्रात्ताराचक्रं दानं चासां | | | | | | | | | | | | | | | |
|------------------------------------|-----|-----|-------|------|-----|-----|-------|------|-----|-----|-----|-------|------|-----|----|
| ज. | सं. | वि. | क्षे. | प्र. | सा. | व. | मै. | आ. | ज. | सं. | वि. | क्षे. | प्र. | ता | रा |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | मा | |
| म | शु | ऽशु | शु | ऽशु | शु | ऽशु | शु | ऽशु | म | शु | ऽशु | शु | ऽशु | शु | |
| ॐ | ० | ॐ | ० | ॐ | ० | ॐ | ० | ० | ॐ | ० | ॐ | ० | ॐ | ॐ | |
| सा. | व. | मै. | आ. | ज. | सं. | वि. | क्षे. | प्र. | सा. | व. | मै. | आ. | ता | रा | |
| १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | भा | नि. | |
| शु | ऽशु | शु | शु | म | शु | ऽशु | शु | ऽशु | शु | ऽशु | शु | शु | शु | भा | |
| ० | गु | | ० | शाक | ० | गुड | ० | लूण | | सु | | ० | ० | दा | |
| | ति. | | | | | | | | | ति. | | | | | |

अथ तारायाः परिहारः प्रथमारुतौ मृत्युविपत्त्यस्य रयो वर्ज्याः द्वि
तीयारुतौ विपत्त्यसि मृत्युपूर्णा क्रमात् प्रथमचरणा चतुर्थतृ
तीयचरणा वर्ज्याः तृतीयारुतौ सर्वास्ताराशुभाः तारा
बलतश्चंद्रश्चंद्रबलाद्भास्करस्तस्य बलतः सर्वे रवेदाः सवला
स्तत्रापि चांद्रमेव वरम् अत्राहु गोचरः स्वतंत्रो न तत्र चांद्रप्र
धानं अथ चंद्रबलं चंद्रेस्वोच्चत्रिकोणगोमित्रक्षणे तारादौ स्थ
मपि न जन्मभात् ६।५।२ शुक्लेशुभरुघो ३ शुभः सितादौ रा
चंद्रे पक्षे शुभः सकलः रुघो दुष्टे चंद्रे सकलः पक्षः शुभः व्य
त्यये व्यत्ययंतयात्रचक्रम्.

जन्मराशोः सकाशाच्चंद्रफलं

| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ |
|--------|---------|----------|---------|---------------|-----------------|--------------|--------|---------|------------------|-----|--------|
| पुष्टि | भुखं | लाभ | रोग | कार्य- ना. | द्रव्याग- म. | राज्या- न | मरणं | भयं | कपिस्ता- धनं. | लाभ | व्ययं. |
| ज. | | | | | | अथषड्गानि. | | | | | |
| जन्म | | | | | | राज्ञामधिका. | | | | | |
| जन्म | कर्म | संघा | सामु | विना | मान | देश | जाति | इति | ० | | |
| मूलक. | कर्मता. | बुंधुना. | सुर्यता | देहना. | मनस्ताप | देशना | जेतिना | श्रीना. | फलं. | | |

केत्यारार्कियुतं भौमचक्रभेदेन दूषितं हृतमुल्कोपरागाभ्यां स्वभा-
वान्यत्वमागतं पीडितं भवति निरुपद्रुतभौनिरामयः सुरवभाद्रुष्टी
पुर्वलान्वितः षडुपद्रुतभोचिनश्यति त्रिभिरन्यैश्च सहावनीश्वरः शुभ
योगेश्वरं विवाहोर्ध्वगर्भसंस्कारभिन्ने कर्मणि भर्तृगोचरेण स्त्रि-
यावलं नृनार्यैः पाणिग्रहणादिविधौ तस्मिन्निर्बलं चिंतनीयं त-
था कुटुंबे स्वामिनो र्थाज्येष्ठस्य सेनायां मपि स्वाभिनः पाणिग्रहां-
गादिविधौ नृनार्यैः पित्रोरद्वयं द्रमसोर्विचिंत्यं राशौ बलं नेतुरगार-
काणां तथा नृगानां च युधि ध्वजिन्याः अथ चंद्रवलं केषु न किमपि
त्याह्नदोहदस्य विचारे तथा भिक्षोः तथोपात्ता ध्वरस्य सहस्रं चं-
द्रव्रतकर्तुश्च साध्वसाधुवानचिंतनीयं चंद्रवलं नदोहस्यामृतपिं-
डसारं भिक्षोरुपात्ता ध्वरदैवतस्य सहस्रं चंद्रव्रतकर्तुराधौरसाधुवा-
साधुनचिंतनीयं अथ चंद्रावस्थाः गतनक्षत्राणि अश्विन्यादीनि ६०
षष्टिगुणितानि वर्तमाननक्षत्रस्य स्पष्टभुक्तघटीयुतानि ४ चतुर्गुणि-
तानि ४५ पंचचत्वारिंशद्भक्तानि लब्धं गता अवस्थाः स्ताश्च प्रया-
स १ नाश २ मरणं ३ जय ४ हास्य ५ रतिः ६ क्रीडित ७ सप्त ८ भुक्त ९ ज्व

सुहूर्तसिंधू.

(७१)

२१० कंय ११ स्थिरता १२ मेषस्थे प्रवासाद्याः वृषगेनाशाद्याः मिथुन
गेमरणाद्यागएनीयाः अत्रे प्ये वम् केचित्सर्वराशिषु प्रवासादिगण
नामोद्गुः आह्वगवस्थो विधुस्तादृक् फलं ददाति तेषु दिवसेषु अत्रगत
नक्षत्रघटिकाः षष्टिधा ६० अश्विन्यादिषु स्पष्टा योज्याः तान्श्रवर्तमा
न भघटिकाः षष्टि ६० गुणिता भभोगभाजिताः स्पष्टाः स्युर्यथा चै
ता भवंति तथा विषघटिस्पष्टीकृतौ विवाहे वक्ष्यते.

प्रवासादिफलम्.

| प्र. | ना. | म. | ज. | हा. | र. | क्री. | सु. | भु. | श्व. | कं. | स्थि. |
|--------|------|--------------|----|-------|------------|-------|---------------|-------|------|------|-------|
| प्रवास | पनना | मृत्युभ य | जय | पिलास | रति लाभ | सुरं | निद्रा कलि | भोजनं | तापं | हानि | सुरं |

अथोच्चावश्यके निथ्यादीनां दानं.

| ति. | रा. | भे. | नाड्यं | पुनो | चंद्रे | भद्रा | तारा. | शुज्या. |
|--------|------|-----|--------|--------|--------|-------|-------|---------|
| तंदुळ. | रत्न | गोः | स्वर्ण | स्वर्ण | शंख | धान्य | लवण | दाना. |

गंत्यराशेः प्राक्फलं.

समयतः फलदा.

| सू. | चं. | भो. | पु. | रु. | शर. | श. | सू. | चं. | भो. | पु. | रु. | शर. | श. |
|-----|-----|-----|-----|-----|-----|----|-----|------|-----|-----|-------|-------|------|
| ६ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | आदौ | अंते | आदौ | सदा | मध्ये | मध्ये | अंते |

रत्नन्यासः

| | | |
|---------|--------|---------|
| हं पु. | प्र रा | आ. चं. |
| पन्ना. | हति. | स्मृति. |
| रु. पु. | सु. | भो. दु. |
| पुन. | मणि. | गुनी. |
| रु. रा. | श. प. | गुह. ज. |
| लसर. | नील. | नद. |

चक्रम.

| सू. | चं. | म | चं. | रु. | शर. | श. | रा. | के. | प्रद. |
|---------|----------|-------|---------|--------|--------|--------|-----|-------|--------|
| मान | अन्न | अतिभी | सन्नि | पत्तला | सख | दुःख | . | . | मामभफल |
| पूजातोष | सर्वकर्म | संगा | शास्त्र | विनाह | यात्रा | दीक्षा | पाप | क्रयं | रुज. |

राहुकेतवोगा रुत्रयं प्राक्फलदाः ग्रहदोष्यपरि
हारायोर्मिकाजन्मभोपस्मिन्वारेतत्फलं तथा क-
स्यकस्यग्रहस्यबलेन किंकिंकार्यमिति बोधना
यचक्रन्यासः क्रमेण अथ गोचराय बोध्या

र्थसर्वतोभद्रादिचक्रन्यासोन्यस्यते.

वेधज्ञानायसर्वतोभद्रम्

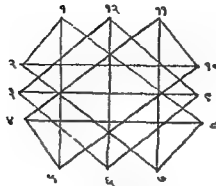
| अ. | क. | रो. | सु. | आ. | फु. | ति. | अ. | आ. |
|-----|-----|-----|----------|---------|--------|-------|----|-------|
| भ. | उ. | अ. | व. | क. | ह. | उ. | ऊ. | म. |
| अ. | ल. | लृ. | २ | ३ | ४ | लृ. | म. | पू. |
| रे. | चं. | १ | डो. | नं. मं. | डो | ५ | ८ | उ. |
| उ. | द. | १२ | वि. श्र. | पू. श. | भ. वु. | ६ | प. | ह. |
| पू. | स. | ११ | अ. | ज. वृ. | अ. | ७ | र. | वि. |
| श. | ग. | रे. | १० | ६ | ८ | रे. | त. | स्वा. |
| ध. | ऊ. | ख. | ज. | भ. | य. | न. | ऊ. | वि. |
| ई. | अ. | अ. | उ. | ह. | मू. | ज्ये. | अ. | इ. |

भ्रमोऽक्षेक्षरैरहानिःस्वरेव्याधिर्भयंतिथो राशिवेधेमहाविघ्नं
 पंचविद्धोनजीवति वेधश्च भरण्यकारौदृषभंचनंदांभद्रां
 तकारंभ्रयणंविशारवां तुलांचविद्धेदनलक्ष्मिगःवकारमौ
 कारमुकारदास्त्रे स्वातिरंकारंमियुनंचकन्यामभिजिदंच रो
 हिणीस्थः वेधप्रकारश्चरोहिण्यांचयदावक्रस्तदावेधोश्चिनी
 गतः रोहिण्यांचयदाशीघ्रोवेधः स्वात्यांतुयामतः रोहिण्यांच
 यदामंदोविद्धंस्यादभिजित्तदा श्रभवेधे श्रभम् पापवेधे-
 दुष्टम्.॥

मुहूर्तसिंधू.

विषताकी

(७३)



यथाराशिगान्ध्याहान्दत्याराशौविद्वेभयार्त्तयःग्रहास्तुतद्वि
नगादेयायद्विचमपेक्षितंरुभाशुभफले.

सूर्यकालानलम्.



अर्कभतःस्वनायभंयत्रसमायातंतादृक्फलंतलेक्रमात्चिंतायधयति
बंधःशृंगद्वयेरुभंगौशूलेषुमृत्युंशेषेषुजयलाभाभीष्टार्थसि-
द्धयइदंगदेवादेरणेग्रयाणेचिंतनीयम्.

चंद्रकालानलम्.



त्रिशूलसंस्थं निधनाय नूनमन्तर्बहिस्थं च जघाय इदमपि वर्तमानं नक्षत्राज्जन्मभातं नाम भातं वा गणनीयं गदप्रयाणयात्रादिषु विचारणीयम्.

| रविचक्रम् | | चंद्रचक्रम् | | भौमचक्रम् | |
|-----------|----------------|-------------|----------------|---------------------|----------|
| १ | भूष | १ | धनं | ३ | सुरवं. |
| ४ | विदेश. | ३ | शुभे. | ४ | क्लेश. |
| ४ | विदेश. | २ | भयम् | १० | पीडाभयम् |
| ४ | दरिद्र. | ४ | गमनम् | ४ | लाभम्. |
| ४ | दरिद्र. | ६ | लाभ. | ३ | कष्टं. |
| ५ | लक्ष्मी. | ४ | विभु. | ३ | स्तरवं. |
| ३ | भोगवान् | ५ | साम्य | जन्मभा द्वौ भातं ग | |
| जन्मभा | सूर्यभातं गणये | २ | स्तरवं. | रायेत् कलं ध्येयम्. | |
| कलं क्र | माह्वेयम्. | जन्मभा | हर्तमानं यावत् | गणयेत्. | |

बुधचक्रम्.

जीवचक्रम्.

शक्रचक्रम्.

| | | | | | |
|--------|--------------|--------|------------|-------------------------|---------|
| ३ | धनम् | ४ | नृपती | ३ | कांति |
| ३ | स्तरवम् | ३ | धनम् | ८ | स्तरव |
| ८ | अस्तरवं | ४ | मृत्यु | २ | रोग. |
| १ | स्तरवम् | ६ | भयरोगी | ५ | जयम्. |
| ५ | लाभ | ५ | धनस्तरवे | ६ | भयम् |
| ६ | लाभ | १ | सुरवम् | ३ | निधनम्. |
| १ | कष्टम् | ४ | धनलाभ. | जन्मभा द्वौ भातं गणयेत् | |
| जन्मभा | बुधभातं गणये | जन्मभा | जीवभातं गण | | |
| येत्. | | येत्. | | | |

मुहूर्तसिंधू.

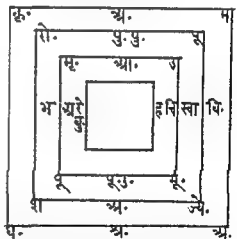
(७५)

| शनिचक्रम्. | | शनिचक्रम्. | | राहुचक्रम्. | |
|------------|------------|--------------------------|----------------|---------------------------|----------------|
| ५ | धनम् | १ | मु. भोजनम् | ७ | अर्थहानि. |
| २ | नृपति | ४ | देह लाभ. | ५ | सन्ताप. |
| ८ | दुःखम् | ६ | पदोऽपर्वट. | ३ | भयम्. |
| ३ | स्तरवम् | ४ | वावा. रोग. | २ | रक्तिकार्ष्यं. |
| ३ | दुःखम् | ५ | हृदि श्रीः | १ | कुभोजन. |
| २ | कष्टम् | ३ | मस्त राज्यं | ५ | मृत्यु. |
| शनिभा | ज्जनिभातंग | २ | नेत्रे स्तरव. | १ | नाश. |
| एष्येत् | | २ | गुह्ये मृत्यु. | ३ | प्राणनाश. |
| | | शनिभाज्जन्मभातंगएष्येत्. | | राहुभाज्जन्मभातंगएष्येत्. | |

कैतवचक्रम्

| | |
|---|-----------------|
| २ | नेत्रे. शोक. |
| ५ | सुखे. लाभ. |
| ३ | मस्त. राज्य. |
| ४ | देह. यश. |
| ४ | वा. ह. भय. |
| १ | नाभौ. नाशः |
| २ | गुह्ये. मृत्यु. |
| ६ | पादयो. धननाश. |

कौटवचक्रम्.



अत्रचक्रे क. ति. अश्ले. घ. वा. भ. स्वा. वि. अनु. अभि. अध. अशि. भ. १२ एतानि बहिः रो. पू. फू. का. कि. ज्ये. उ. श. रे. एता निप्रकारे मृ. आ. उ. ह. मू. पू. पा. पू. भा. उ. भा. एतानि मध्ये अ स्मिन्बहिः पापयोगे शतं अतः पापयोगे कष्टं विस्तरमन्यतो ध्येयमिति इति गोचरम् ४ अथ संस्कारकल्लोलः ५ ॥

तत्रादौ प्रथमार्त्तवफलमाहः क्रमाद्वरतिथियोगभ समयमा
सलभादीनां फलबोधाय प्रत्येकं चक्राणि

| तिथिफलानिः | | | | | | | वारफलानिः | | |
|------------|------------|-----------|----------|---------|----------|---------|-----------|----------|----------|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | सं. | मं. | भौ. |
| सुभगा | भाष्यवती | सुताद्या | विधवा | धनाद्या | फौषाभा. | धनाद्या | विधवा. | सुतापला | आरपहनी |
| ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ |
| पाषा. | प्रीतिशुता | सुताद्या. | दुर्भगा. | दात्री. | जुञ्जली. | सुभुवा. | कन्यासू. | पुत्रिणी | जुञ्जली. |

अथ नक्षत्रफलानिः

| | | | | | | | | | |
|--------|----------|----------|---------|---------|-----------|----------|---------|--------|---------|
| सं. | मं. | भं. | सं. | मं. | भं. | सं. | मं. | भं. | सं. |
| शुचती. | जुञ्जली. | जुञ्जली. | पतिवती. | पतिवती. | भर्तृपिया | सुताद्या | धनाद्या | सुभुवा | दोषशुता |
| १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ |
| सुभगा. | सुभगा. | नित्या. | नित्या. | विधवा. | विधवा. | धनाद्या | धनाद्या | मारका | मारका. |
| २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ |
| शुचती. | शुचती. | शुचती. | शुचती. | शुचती. | शुचती. | शुचती. | शुचती. | शुचती. | शुचती. |

भगोप.

योगफलानिः

करणफलम.

| | | | | | | | | | |
|--------|-------|--------|----------|-----------|---------|---------|-----------|---------|---------|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० |
| नाश | संभता | पमदा | पुत्रिणी | सैरिणि | श्यामदा | पुञ्जली | भर्तृपिया | पुञ्जली | पुञ्जली |
| ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| विधवा. | असुरं | विधवा. | पुञ्जली | नक्षत्रजा | ० | ० | ० | ० | ० |
| २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |
| विधवा. | असुरं | विधवा. | पुञ्जली | नक्षत्रजा | ० | ० | ० | ० | ० |

मुहूर्तसिंधू.

(७७)

मासफलानि.

| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ |
|--------------|--------------|-----------------|-----------------|---------------|----------------|---------------|----------------|----------------|------------------|---------------|-------------|
| पुन- वती. | रेगि- णी. | मृता- पत्या. | धना- न्विता. | दुर्भ- गा. | तप- स्विनी. | अत्या- यु. | बहु- प्रजा. | पुंश्च- ली. | पुत्रा- द्या. | श्रीम- ती. | विध- वा. |

रुद्रफलम्.

| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ |
|-----------------|----------------|--------------|-----------------|-------------|--------------|-----------------|-----------------|------------------|--------------|----------------|----------------|
| आत्म- हत्या. | पुत्रि- णी. | कन्या- प. | मृता- पत्या. | विध- वा. | कन्या- प. | बहु- पुत्रा. | पुष्ट- कर्म. | पुत्रा- द्या. | सुरि- नी. | एक- पुत्रा. | सम्प्र- जा. |

समयफलम्.

| पूर्वा | मध्या | अप | संध्या | पूर्वा. | मध्यरा. | अ.रात्री | सर्व. | संधि. |
|----------|-------|----------------|--------|---------|---------|----------|----------|-------|
| पुत्रवती | रुभा. | स्वैरि- णी. | वैशा | विधवा | बंधा | दुर्भगा. | दुर्भगा. | ००० |

॥ नीलवस्त्रे विधवा पीते भोगिनी हृदयस्त्रे पतिव्रता शीर्णव-
स्त्रे पतिद्वेषा शोभनवस्त्रे सुभगा देवस्थाने पितृस्थाने निंद्यस्था-
ने अन्यस्थाने चांडालस्थाने मार्गे च निंद्यफलम् ॥ वर्णफल-
म् ॥ शुक्ले सुपुत्रा शशशोणिता लक्तकमे कन्यापुत्रवती नी-
ले मृतप्रजा कर्बुरे स्वयं म्रियते पिंगले मृतप्रजा रुष्णे विधवा पां-
दुरे काकबंधा पीते स्वैरिणी गुंजाभे सुभगा सिंदूराभे कन्याप्र-
जा ॥ अथ शोणितप्रमाणं ॥ शोणिते बिंदुमात्रे स्वैरिणी
अत्यः शोणिता वरा बहुशोणिता दुर्भगा ॥ अथैषां प्रति-
प्रसवः ॥ गुरुशुक्रयुते लग्ने प्रेक्षिते वात्र पुष्पजं निंद्यफलं स-

मस्तुतुनाशमेतिशभंभवेत् पुष्पंदृष्टानिंदितेभेयदिस्याच्छां
 तिकुर्यादंगनानांचपूर्वं तत्संयोगंचलुभावर्जयेद्युर्थाचद्वयः
 शस्तभेचैवदृष्टम् ॥ अथास्याविधिः ॥ अलंकृतामार्त्तवसें
 युतांचगेहेशभेदीययुतेनिवेशयेत् तिलागुडापूपयुतंचपूगं
 स्त्रीभ्यश्चदद्यात् द्विजमत्रपूजयेत् आरोपयेत्दिमांपुंजेस्व
 क्षतानांसुमंत्रिते पुण्याहंवाचयित्वातु ब्राह्मणान्मोजयेत्सु
 धीः ॥ अथास्याःशुद्धिः ॥ भर्तृस्पृस्याचतुर्थेन्हिदैवेपिअ
 चपंचमे ॥ अथशांतिःकल्योक्ता ॥ धृतदूर्वातिलाक्षतैरष्टोत्तर
 शतंजुहुयादिति स्वर्णगोभूदानंच विस्तरस्त्वन्ननिबंधेभ्यः ॥
 अथास्याधर्माः ॥ आर्तवाभिषुतानारीनैकवेश्मनिसंअयेत्
 नस्यांत्यजनसंस्पर्शस्पर्शकुर्यान्नकस्यचित् स्ववाक्यंआवये
 न्नैवनकुर्पाहंतथावनं नकुर्पादार्त्तवेनारीग्रहाणामीक्ष्णंतथा
 अंजनाभ्यंजनेस्नानंप्रवासंचर्जयेत्ततः नखादिक्लृप्तनंरज्जुता
 लपत्रादिवंधनं ओदनंनैवमुंजीततोयंचांजलिनापिचेत्
 स्नानंशौचंतथागानंरोदनंहसनंतथा दिवास्त्रापंचिशेषेरात
 थावेदंतथावनं मैथुनंचतथामांसंवाचिकंदेवतार्चनं वर्जये
 त्सर्वयत्नेननमस्कारंरजस्वला रजस्वलांगसंस्पर्शभाषणं
 चरजस्वला त्यागंचैवचवस्त्राणां वर्जयेत्सर्वयत्नतः स्नाता
 न्यपुरुषंनारी नस्पृशेत्तुरजस्वला विलोकयेदुमाकांतंब्रह्म
 कूर्चंततःपिबेत् पूर्वपश्येदुतुस्नातांपादृशनरमंगना तादृ
 शंजनयेत्पुत्रमतःपश्येत्स्वकंपतिम् ॥ अथरजोदर्शनस्नानं ॥

॥ ह. स्वा. अश्वि. मृ. अनु. ध. उ. श. रो. ज्ये. एषु भेषु शतभतिथौ
 शतभासरे शतमल्लग्नशीघ्रगर्भलभते ॥ अथगर्भाधानं ॥
 त्रिविधगंडांतं जन्मतारां सू. भ. अ. रे ग्रहणदिने व्यतिपात
 वैधृति आध्ददिन दिवापरिधाद्यर्धं उत्पातहतभं जन्मराशिनो
 षष्ठमभं पापग्रहस्य भवनं भद्रापूर्वदिन ४।६।१४।६तिथि
 शु संध्यायां. सू. मं. श. वासरात् रजोदर्शनाच्चतुर्थरात्रौ नशु
 भा. उ. ३. सू. ह. अनु. रो. स्वा. अ. ध. श. एषु भेषु १।४।७।१०।५
 १६ शतभैः ३।६।११ पापैः सू. मं. गु. इष्टे लभे विषमराशिनवांश
 केचंद्रेशतभं वि. पु. ति. एषु मध्यं ॥ अथात्र किमपि विशेषः ॥
 आधानादिगर्भसंस्कृतौ स्त्रिया गोचरोपि स्त्रियोजन्मदिने आ
 धानं न तद्यानिशीथे पितया च रोदये तथा लग्ननाथे सूर्यांशुगे
 तथा षष्ठ्यां च नयायात् युग्मासु पुत्रा जायन्ते स्त्रियोऽयुग्मासु

अतुरात्रीणां फलानि.

| ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ |
|--------------|---------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|
| पुत्रः शक्रः | कन्याः पुत्रः | पुत्रः शक्रः | कन्याः शक्रः | पुत्रः शक्रः | कन्याः शक्रः | पुत्रः शक्रः | कन्याः शक्रः | पुत्रः शक्रः | कन्याः शक्रः | पुत्रः शक्रः |

| १५ | १६ | रात्रय. |
|--------|--------------|---------|
| कन्याः | पुत्रः शक्रः | फलानि. |

अथात्र शक्रास्तादिषु विशेषं उ
 त्सवेषु च सर्वेषु सीमंतं अतुजन्मसु
 सुरासुरेज्ययोश्चैव मोक्षदोषो न विद्यते
 अनेनैव मलमासेपि कार्यम् स
 न्नियोगशिष्टत्वात्.

॥ अथ पुंसवनं ॥ २ द्वितीये तृतीये वा मासि पुंसवनं भवेत् अ
 क्लेगर्भे भवेत्कार्यं सीमन्तेन सह्यथा इदं च प्रतिगर्भकर्तव्यं
 हू. मू. अ. पू. मृ. ति. अनु. अश्वि. पू. भा. एषु मेषु रिक्ता ४
 ११४। ६ प्रतिपत् पर्याने तिथौ सू. भौ. जी. वासरे मिथुनर
 हिते पुंलगे सत्त्वामिके शतभौ ६। ८। १२ वर्जितैः पापैः ६। ११। ३
 जीवे ५। ६। ११। ४। ७। १०। ११ गते पुंसवनं शतभं अत्र पराशरः
 वैश्यशूद्रयोः सप्तमे मासि प्राह रेवतीं चाधिका भेषु अथ पुं
 सवने चारफलं मृत्युश्च सौरेस्तनूनि निरिंदौ मृतप्रजापूंसव
 ने बुधस्य काकारव्यवंध्या भवती ह शक्रैस्त्री पुत्रलाभोरविभौ
 मजीवे ॥ अथात्रैवेषु अनवलोभनारव्यं संस्कारमुक्तं ॥ अ
 थ सीमन्तः ॥ ३ चतुर्थे वा षष्ठे मासि मासाधिपतौ सबले दंपत्यो
 श्वं द्रातारा शुद्धौ. ति. हू. पु. अ. मृ. रे. रो. उ. ३ एषु मेषु ४। ८। ६।
 ६। १२। ३० रिक्ता तिथौ शक्ये ४। १४ शतभा र. भौ. जी. वासरे रु
 ष्यापक्षे १० स्यंतं पुंलगे शतभेषु ५। ६। ११। ४। ७। १० पापेषु ६। ११। ३
 चंद्रे १२। ८। ११। ६ वर्जितैः जन्मलग्नराशिभ्यामष्टमभिन्नलग्ने पाप
 एकोपि ८। ५। १२ गर्भपातदः लग्नादष्टमरा शीशकेंद्रगः शुभवी
 क्षितः यद्यदष्टममस्योक्तं दोषमाशक्यपोहति केचित् पुंसवने
 भेषवेदं कथयंति इदं च ऋक्षस्य मध्यमपादद्वये कार्यं दिवैव
 कार्यैः संस्कारावुभौ वैश्यशूद्रयोर्निश्चयि इदं च स रुदेव का
 र्यं अत्र भोजने प्रायश्चित्तमप्युक्तं ॥ अथ अधिका गर्भिणी ध
 र्माः ॥ अंगारभस्मास्थिकपालचुल्लीशूर्पादिकेषूपविशेन्न-

नारीसोलखलाद्येदृषदादिकेच यंत्रेतुषांयेनतयोपविष्टा-
नोमार्जनीगोमयपिंडकादौ कुर्यान्नवारिएष्यवगाहनंसा अंग्गा
रभूत्पाननरैर्लेख्यैस्समांकलिवपुर्भगमथानकुर्यात् नोमुक्त
केशीधिवंसाथवास्याङ्गुक्तेनसंध्यावसरेनशोते नामंगलंया
क्यमुदीरयेत्सा शून्यालयंरक्षतलंनयायात् कटुतीक्ष्ण
कषायाणि अत्युष्णालवणानिच आयासंचव्यबायंचग
र्भिणीवर्जयेत्सदा गर्भिणीकुंजराश्वादिशैलहृस्यादिरोह
रां व्यायामंशीघ्रगमनंशकरारोहणंत्यजेत् शोकंरक्तपि-
मोक्षंचसाहसंकुक्कुरासनं व्यवसायंदिवास्वापंरात्रौजाग
रणंत्यजेत् हरिद्रांकुंकुमंचैवसिंदूरंकज्जलंतया कूर्पासकं
चतांबूलंमंगल्याभरणंशुभम् केशसंस्कारकवरीकरकर्ण
विभूषणं भर्तुरायुष्यमिच्छंतीधारयेद्गर्भिणीसदा केचिन्न-
धारयेदितिग्राहुः परंचहुवाक्यविरोधाच्चोपेक्ष्य एतेनियमाः
सीमंतोर्ध्वमवश्यमनुसर्त्तव्याः गर्भिणीपतिधर्माः मुंडनंपिं
डदानंचप्रेतकर्मचसर्वशः नजीवत्पितृकःकुर्याद्गुर्विणीपतिरे
वच आध्वभोजनमपिनकर्तव्यं सप्तमाच्मासात् मुंडनश
ब्देनैवकर्त्तननिषेधोपि पिंडदाननिषेधस्तु पित्रोःपिंडदान-
भिन्नविषयः समुद्रस्नानंचापिनिषिद्धं तीर्थयानंच तच्चग
याव्यतिरेके अत्रसीमंतेजन्मभविष्यदः चान्नान्नभुक्तौव्रतचंध
नेच राजाभिषेकेखलुजन्मधिष्ये शतभंवनिष्टंसततंविवाह
सीमंतयानादिषुमंगलेधितिवसि प्रोक्तेः ॥ अथविष्णुपूजा॥

॥ अथ पुंसवनं ॥२ द्वितीयेतृतीयेवामासिपुंसवनं भवेत् व्य
 क्ते गर्भे भवेत्कार्यं सीमन्तेन सह यथा इदं च प्रतिगर्भकर्तव्यं
 हू. मू. अ. पू. मृ. ति. अनु. अश्वि. पू. भा. एषु. मेषु रिक्ता ४
 ११४।६ प्रतीयत् पर्येनेतिथौ रू. भौ. जी. वासरे मिथुनर
 हिते पुंलग्ने सत्त्वामिके शक्रभौ ६।८।१२ वर्जितैः पापैः ६।११।३
 जीवे ५।६।११।४।७।१०।११ गते पुंसवनं शक्रभं अत्र पराशरः
 वैश्यशूद्रयोः सप्तमे मासि ग्राह्ये रेवतीचाधिका भेषु अथ पुं
 सवने वारफलं मृत्युश्च सौरेस्तनूनि निरिंदौ मृतप्रजापुंसव
 ने बुधस्य काकारव्यवंध्या भवती हस्तक्रेस्त्रीपुत्रलाभोरविभौ
 मजीवे ॥ अथात्रैवैषु अनवलोभनारव्यं संस्कारमुक्तं ॥ अ
 थ सीमंतः ॥३ चतुर्थे वाषष्ठे मासि मासाधिपतौ सबले दंपत्यो
 श्वद्रातारा शुद्धौ. ति. हू. पु. अ. मृ. रे. रो. उ. ३ एषु भेषु ४।८।८।
 ६।१२।३० रिक्ता तिथौ शक्रवले ४।१४ शक्रभा. र. भौ. जी. वासरे रु
 ष्यापक्षे १० स्यंतं पुंलग्ने शक्रभेषु ५।८।११।४।७।१० पापेषु ६।११।३
 चंद्रे १२।८।११।६ वर्जितैः जन्मलग्नाशिभ्यामष्टमभिन्नलग्ने पाप
 एकोपि ८।५।१२ गर्भधातदः लग्नादष्टमरा शीशकेंद्रगः शुभवी
 क्षितः यद्यदष्टममस्योक्तं दोषमाश्रय्य पोहति केचित् पुंसवने
 भेषवेदं कथयन्ति इदं च त्रयस्य मध्यमपादद्वये कार्यं दिव्यैव
 कार्यैः संस्कारावुभौ वैश्यशूद्रयोर्निश्चयि इदं च सकृदेव का
 र्यं अत्र भोजने प्रायश्चित्तमप्युक्तं ॥ अथ अधिकां गर्भिणी ध
 र्माः ॥ अंगारभस्मास्थिकपालचुलीशूर्पादिकेषूपविशेन्न-

नारीसोलरयलाद्येदृषदादिकेच यन्त्रेतुषाद्येनतयोपविष्टा-
नोमार्जनीगोमयपिंडकादौ कुर्यान्नवारिएयवगाहनंसा अंग-
रभूरपाननरवैर्लिखेत्स्मांकलिवपुर्भगमथानकुर्यात् नोमुक्त-
केशीविवंसाथवास्याहुक्तेनसंध्यावसरेनशेते नामंगलंवा-
क्यमुदीरयेत्सा शून्यालयंरक्षतलंनद्याथात् कदुतीक्ष्ण-
कषायाणि अत्युष्णतलवणानिच आयासंचव्यबायंचग-
र्भिणीवर्जयेत्सदा गर्भिणीकुंजराश्वादिशैलहर्म्यादिरोह-
णं व्यायामंशीघ्रगमनंशकरारोहणंत्यजेत् शोकंरक्तपि-
मोक्षंचसाहसंकुक्कुरासनं व्यवसायंदिवास्वापंरात्रौजाग-
रणंत्यजेत् हरिद्रांकुंकुमंचैवसिंदूरंकज्जलंतथा कूर्पासकं-
चतांबूलंमंगल्याभरणंशुभम् केशसंस्कारकबरीकरकर्ण-
विभूषणं भर्तुरासुव्यमिच्छंतीधारयेद्गर्भिणीसदा केचिन्न-
धारयेदितिप्राहुः परंवहुवाक्यविरोधाच्चोपेक्ष्य एतेनियमाः
सीमंतोर्ध्वमवश्यमनुसर्त्तव्याः गर्भिणीपतिधर्माः मुंडनंपिं-
डदानंचप्रेतकर्मचसर्वशः नजीयस्वितृकःकुर्याद्गुर्विणीपतिरे-
वच आध्वभोजनमपिनकर्तव्यं सप्तमान्मासात् मुंडनश-
ब्देनैवकर्त्तननिषेधोपि पिंडदाननिषेधस्तु पित्रोःपिंडदान-
मिन्नविषयः समुद्रस्नानंचापिनिषिद्धं तीर्थयानंच तच्चग-
याज्यतिरेके अत्रसीमंतेजन्मनिषेधः चालान्भुक्तौव्रतचं-
नेच राजाभिषेकेखलुजन्मधिष्यं शूभंत्वनिष्टंसततंविवाह-
सीमंतयात्रादिषुमंगलेधितिवसि प्रोक्तेः ॥ अथवियुपूजा॥

अष्टमेमासि अ.रो.ति.एषुभेषुशुभलमेशुभवासरेशुभमतिथा
यष्टमशुद्धेविधेयमिति अथसूतिकायाः सूतिग्रहप्रवेशः ॥

मासेशाः

| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० |
|-----|-----|-----|----|-----|----|-----|-----|-------|----|
| शु. | मं. | शु. | र. | चं. | श. | बु. | लप. | चद्र. | र. |

रो.सु.पुष्य.म्या.श.पु.रे.ह.ध.ह.३ अनु.चि.अश्वि.एषुभेषुशु
भवासरेशुभमतिथौ रिक्ताषष्ठ्यष्टमावर्जितेशुभलमेशुभेषुकेंद्र
गेषुपापेषुत्रिषडायगेषु शुभांशेषुभट्टैश्च अथसूतिकागार
म् ॥ दशाहंसूतिकागारमायुर्वैश्वविशेषतः बह्निनातिदुका
लातैः पूर्णकुम्भैः प्रदीपकैः सुशलेननथावारिवर्णकैश्चविशेषतः
पुण्याहवाचनपूर्वकं प्रवेशयेत् ॥ अथजातकर्म ॥ श्रुत्वाजातं
पितापुत्रंसचैलंस्नानमाचरेत् एतच्चरात्रावपिकर्तव्यं आध्या
दिचद्वेस्नाकर्तव्यं तत्कालेभावेसूतकांतेपिकर्तव्यं तदोन्न
त्रादिकंतु मृतु.ध्रुव.चर.क्षिप्र.एषु.भेषु.शुभवासरतिथौ ल
भेचगुरुशुक्रयोः केंद्रगयोः कर्तव्यम् ॥ अथजातकर्मनित
रकृत्यम् ॥ लग्नं निरीक्ष्य तत्स्थग्रहदौस्थ्यपरिहाराद्यग्रहदा
नं जपं वा कुर्यात् जातमात्रस्य मूलाद्य उत्पन्नस्य मुरं वमात्रोक्त्यं
स्नायात् ॥ अथजन्मदेवतानां पूजनादि ॥ प्रथमेहनिषष्ठेवा
दशमेचैव सर्वदा त्रिधा शौचं न कुर्वीत सूतकेषु त्रजन्मनिचकारा
संचमाष्टमयोरपि तत्र प्रथमेह्नि आभ्युदयिकं ॥ पंचमेजन्मदा
षष्टिकयोः पूजनम् दशमेबलिदानं अष्टमेअन्नदानं ॥ अथ-

स्नानपानम् ॥ उ०३ रो० अश्वि० रे० पु० ति० अनु० ह० चि० मृ० ध० अ० श०
 शतमतिथौ शतभासासरे स्थिरलमे ॥ अथ सूतिकापथ्यम् ॥
 अन्वप्राशनोक्तमेतिथौ च दुर्योगादिविना ॥ अथ सूतिकाका-
 थः ॥ मैषज्यगादिने वारेनक्षत्रे च दुर्योगरहिते च शिशोरपि ॥ अ-
 थ सूतिकास्नानम् ॥ ह० मृ० अनु० रो० रे० अश्वि० उ०३ स्वा० एषुभेषु
 रिक्तारहिततिथौ पंचमशुद्धलमे शुभग्रहयुते दोषवर्जितेशुभ-
 वासरे अथ शतभिषकस्नानफलं स्नानं कुर्वन्ति यानां र्पश्चंद्रेश
 नभिषक्ताते समजन्मभवे युक्ता विधवा तुर्भगाभृशं यदा शत-
 भिषकस्नानं नारीणां यदि जायते पूजयेत्स्वामिनं भक्त्या आ-
 त्मनः सदसत्कृतम् ॥ अथ नामकर्म ॥ सूतकांते नामकर्म
 कर्त्तव्यं स्वकुलोचितम् व्यासः नामधेयं दशम्यां तु केचिदि-
 छन्ति सूरयः द्वादश्यामादुरन्येतुमासे पूर्णेतथापरे अष्टादशे
 हनितथा वदन्त्येके मनीषिणः बृहस्पतिः द्वादशे दिवसे वापि
 जन्मतो दिवसे शक्ये षोडशे विंशतौ चैव द्वाविंशे चर्णतः क्रमा-
 त् मृ० रे० चि० अनु० उ०३ रो० ह० अश्वि० ति० अभि० स्वा० पु० अ०
 ध० श० एषुभेषु शुभदिने व्यतीपातसंक्रांत्यमा पक्षाच्छिद्ररि-
 क्ता पूर्णार्थे धृतीशकुनिविधि करणादीन् वर्जयित्वा शुभलमे शु-
 भांशेषु मशुद्धौ स्थिरलमे ॥ १२ सर्वे न शुभाः सौम्याः १।५।७
 १०।५।८ पा० ३।६।११ पाचंद्रताराबले पितृपुत्रयोः दिवा पूर्वा
 ण्ह एव कर्त्तव्यं तच्च वर्णक्रमेण शर्मवर्मशुभदासांतं विधेयं ॥
 अथ वा जन्मनामासनामकं मासनामानि ॥ कृष्णो नंतो न्यु

तश्चक्री वैकुण्ठोऽथ जनार्दनः उपेन्द्रोऽयत्तपुरुषो वासुदेवस्तथा
 हरिः योगीशः पुंडरीकाक्षो मासनामान्यनुक्रमात् अत्र
 मार्गशीर्षादिश्चैत्रादिर्वाक्रमः नाक्षत्रनामाधिकार्यमभिवा
 दनार्थं तच्च यस्मिन्नेयदक्षरंतदक्षरादिकं रोरेममृज्ये विषु
 वद्धिरादौ दांत्ये च पांत्यश्च एणाश्वयुष्यशेषेषु नाम्योः कपरस्य
 रौत्यः स्याद्धारदीर्घः सविसर्गद्विष्टः अपरे कुले देवतासंबद्ध-
 माहुः अपरे गुरुसंबद्धमाहुः सर्वेषु तद्वक्षरं याचतुरक्षरं यावि
 वर्जयेदंतलकाररेफं दक्षिणैकणै कथयेत्पितामृतकांतकर
 णेतुमलमासशुक्रास्तादिविचारो न कर्तव्यः अतिक्रान्तकाल
 करणेतु सर्वे विचार्यम् ॥ अत्र कुमारीणां विशेषः ॥ कन्या नदी
 पर्वतपादपानां नाम्नी तथा पुष्यभयक्षिनाम्नी लताभुजंगारख्य
 रत्नांत नाम्नी प्राज्ञो न कुर्याच्च हिताय नित्यं अथ प्रथममासे
 पुदंतजननफलं क्रमात्.

चक्रम्.

| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | सास |
|---------|---------|--------|------|---------|---------|--------|------|---------|---------|--------|------|---------|
| मृगशिरा | आर्द्रा | मिथुना | मकरा | मृगशिरा | आर्द्रा | मिथुना | मकरा | मृगशिरा | आर्द्रा | मिथुना | मकरा | मृगशिरा |

जन्मकाले एव स दशान् आत्मानं पितरं मातरं च नाशयति ऊर्ध्वपं-
 क्तौ दंतागमे विहिता विहितकालयोरपि स्वपित्रादिहा तदर्थं शांति
 विधेया कल्पोक्ता अथ दोलारोहणं ॥ रविद्युग्भात् ५ नैरुज्यंत
 तः ५ मृत्तिततः ५ कृशताततो व्याधितः ७ सौरख्यं १११२१६१३२
 एषु दिवसेषु शुभवासरे मृरेः वि-अनु-ह-अश्वि-पुष्य-अभि-उ-३

मुहूर्तसिंधु.

(८५)

रो एषु भेषु रिक्ता मारहितं तिथौ चरल ग्नेश भैः ४।११।७।६।१०।५।६
 अश भैः ३।६।११ श भ यु ग्ल ग्ने ॥ अथ खद्वारो हणं ॥ मृदुः क्रवः
 क्षिप्रः एषु भेषु रिक्ता मारहितं तिथौ श भ वा सरे १०।१२।१६।२२ प्रा क्षि
 र सं बालं हरि स्मरण पूर्व कं न्य सेत् अथ वा १२ बालानां १३ कुमारो
 रणां ॥ अथ दुग्ध पानं ॥ उ० ३६ चि० अ० च० रे० अशि० म० स्वा० श० पु
 ति० रो० मृ० अनु० एषु भेषु ६।१।६।१४।८।३० रहित तिथौ विष्टि स्थि
 र करणानि वर्जयित्वा आशु भ योगान् वर्जयित्वा कृष्ण दशम्यो
 र्ध्वं वर्जयित्वा मासादूर्ध्वं पूर्वान् हे मध्यान् हे दिवा वल राशिषु रा
 हु रुद्र योगिनी सुरवं वर्जयित्वा चर योगिन्याश्च योगिनी चरयो
 गिन्यो यात्रायां वेक्ष्यते राहु रुद्रौ च के ध्ये यौ.

| राहु चक्रम्. | | | | | | | |
|---------------|------|--------|------|--------|--------|------|----------|
| सू. | चं. | मं. | बु. | बृ. | शु. | श. | |
| पू. | द. | प. | उ. | पू. | द. | उ. | दिशा. |
| रुद्र चक्रम्. | | | | | | | |
| ७॥ | १५ | २२॥ | ३० | ३७॥ | ४५ | ५२॥ | ६० घट्य. |
| पू. | उत्त | आग्नि. | नैऋ. | दक्षि. | पश्चिम | वायु | ईशान दि. |

॥ अथ सूर्यावलोकनम् ॥ तृतीये मासि श भ वा सरे श भ तिथौ -
 श भ भेषु चंद्र तारा शुद्धौ चतुर्थे मासि अग्नि म्यं द्रस्य दर्शनं ॥ अ
 थ निक्रमणं ॥ उ० फा० नृ० चि० उ० पा० अ० च० उ० फा० ने० अशि० अनु०
 पु० ति० रो० एषु भेषु श क्त य क्षे कृष्णे प्यं त्यत्रिकं विना रिक्ता ४।६
 १४।६।८।१२।३० दीन् वर्जयित्वा अश भ योग विष्टि श कुन्या दीन्या

जयित्वा २।८।१ लग्नांस्तथाचांद्रं वर्जितव्यं शुभलभेशुभवा
 सरे श्रुभांशेष्वमशुद्धेषु भूमेः ११।४।७।१०।५।६ पापैः ३।६।११
 स्नापितं कृतस्वस्त्ययनं बालं देवतालये नीत्वा तत्र देवतोसंपूज्य
 पुनर्मातुलादिग्रहं नयेत् ॥ अथ कच्छाबंधनम् ॥ शुकले पक्षे
 हं चिः स्वाः विः अनुः उः ३ रोः पुः अश्विः मः रेः श्रुभवासरे सत्तिथौ
 ॥ अथ भूस्युपवेशनं कटिसूत्रबंधनं च ॥ पृथ्वीवराहं चाभि-
 पूज्य भौमबले पंचमेमासि उः रोः मृः ज्येः अनुः अश्विः तिः अभिः
 रिक्ता रहिततिथौ श्रुभवासरे स्थिरे लभेवाले क्षुद्रघंटिका बंधनं
 कृत्वा भूमायुपवेशयेत् मंत्रः रक्षेन्नयसुधे देवी सदा सर्वगतं श्रु-
 भम् आयुः प्राणं निखिलं निक्षिप्य च हरिप्रिये चालामो इमा-
 नि स्थापयेत् वरुण शत्रु लेखनी पुस्तक स्वर्णरूप्य यद्वा लो-
 गृहहाति तैराजीवी भवेत् ॥ अथान्नप्राशनं ॥ चालानां षष्ठः
 मासादारभ्य सममासेषु कन्यकानाम्पंचममासादारभ्य विषम-
 मासेषु कार्यं मृः रेः चित्राः अनुः हं अश्विः तिः अभिः स्वाः पुः अ-
 धः शः उः ३ रोः एषु भेषु २।३।५।७।१०।१३।१५ तिथिषु शुभवासरे
 मीनमेघोलग्नौ त्याज्यौ जन्मलग्नराशिभ्यां अष्टमभिन्ने लग्ने
 १।५।७।१०।५।६ शुभैः ३।६।११ पापैः १० श्रद्धे ६।६ रहिते चंद्रे-
 जन्मभ्रूक्षमश्रुभं इति केचित् गर्माधानादिसंस्कारे तथान्न
 प्राशने शिशोः तत्र गुरुशुक्रास्तमलमासादिदूषणां ॥ अ-
 थात्र विशेषः ॥ जन्मर्क्षे श्रीक्षयं विद्यात्कर्मर्क्षे चापि सौख्यकृत्
 ॥ आधानर्क्षे च बालानां भोजनं रोगनाशनं मिष्टान्नमुग्जीव

सुहृत्सिंधूः

(८७)

वनिशाकराभ्यांशक्रेणवाग्मीरविणादरिद्री कुजेनरोगीश
 शिजेनभोगीक्षीणासुरादित्यसूतस्यचारे अर्कांगारकमंदा
 नांयाराश्यापिशुभाचहाः यदिचाराधियस्तिष्ठेत्स्वोच्चमित्रगृ
 हेतदा सुर्वीक्षितश्च जीवसौम्यसिताचांद्रेष्काणादिवसांश-
 काश्चभव्याः चंद्रार्काकजासृजामंशभाः २।११।७।६।५।४।
 १० राशयः शुभाः १।८ मेष वृश्चिकेवज्यौ केंद्रत्रिकोणगैः शतभैः
 पापे स्त्रियघृलाभगैः १२।६।८ एषु चंद्रोनशुभः लग्नस्योनीचगश्च
 निंद्यः रघोलग्नैकुपीधरणितनयेपित्तगदाभाक् शनौवातव्याधिः
 कृशशशिनिभिक्षाटनकरः बुधेज्ञानीभोगीत्यशनसिचिरायुः सु
 रगुरोविधौपूर्णैयज्वाभवतिचनरः सत्रदइह अत्रलग्नपदेन १
 १२।६।८।१।४।७।१० भावागृहीतव्यादितिकेचिदाहुः अनुरा
 थांरविदिनंषष्ठींच निंदयंति इतिचबहुसम्मतं ॥ अयतांबूलभ-
 क्षणं ॥ उ०१रो०मृ०रे०चि०अनु०ह०अश्वि०ति०भि०अ०मू०पु०ज्ये०
 स्या०ध० एषुभेषु ३।६।६।१०।११।१२ लग्नेषु सौम्यग्रहाणांचारे १।
 ४।७।१०।६।५ शतभैः ३।६ पापैः सार्धमासद्वयसमयेन्नाशनेवा
 ॥ अथकर्णवेधः ॥ १२।१६ दिनेततो६।७।८ मासिततोवियमय
 र्षे चैत्र०पौ०चातुर्मास्यंविना जन्ममासरिक्ताअमा अवमादिन
 समवर्षे जन्मतांरा १।१०।१६ विना अ०ध०पु०मृ०रे०चि०अनु०ह०
 अश्वि०ति०भि० एषुभेषुशुभवासरेष्टमशुद्धूलग्नौ १।४।७।१०।६।५
 शतभैः ३।६।११ पापैः २।७।६।१२ लग्नेषु गुरुपुतेषुकर्णवेधः शु
 भः सौवर्णी राजपुत्रस्य राजतीविप्रवैश्ययोः शूद्रस्यचायसीसू-

मुहूर्तसिंधू

(८९)

सूनोश्चौलादिनाशयेत् उक्तंच प्रचेतसा यस्यमांगलिकंकृत्यं
तस्थमातारजस्यला तदासमृत्युमाप्नोतिपंचमंदिवसंविना ज्ये
ष्ठापत्यस्यनज्येष्ठइतिकेचित्जन्ममासेपिनिषेधः उक्तंच योज
न्ममासेक्षुरकर्मयात्रांकार्गस्थवेधंकुरुतेतिमोहात् नूनंसरो-
गीधनपुत्रनाशं प्राप्नोतिमूढोवधबंधनादि अथात्रविशेषः २।
४।६।७।१०।१२ लघ्वेषुलघात्सतमेरवौमृत्युः भौमेचशुक्रेसौरयं
विनाशः मंदभाग्यशनैश्चरे त्रिकोणकंदकेषुशुभैर्यावलोत्तम
गुरौचूडायोगः १२ गतेशुक्रेलग्नगे १० रवौकेंद्रगेगुरौचूडायो
गः ॥ अथवाशनौ ४ कर्क ५ सिंहगयोर्बुधशुक्रयोः २।३ चष-
मिथुनाद्यन्यतमेरवौयोगः ॥ ११ रवौ १२ बुधे १ शुक्रेकेंद्रगेचंद्र-
चूडायोगः ॥ अनिष्टगोपिशुभांशगोलभालोकिगुरुणादृष्टः शु
भावहोभवति ॥ अथसामान्यसौरसु ॥ चैलोदितवारभे
सौरदिनादनवमदिने संध्यारिक्तापर्वरात्रिआसनरहितभु-
क्ता अभ्यज्यचन तथायज्ञेविवाहे पित्रोर्मरणेकारामोक्षेहि
जाज्ञयाचक्र्यात् सौरैप्राणहारात्याज्यामघांमैत्रंचरोहिणी उ
त्तराकृत्तिकावाराभानुभौमशनैश्चराः अक्षौरेपिचनक्षत्रेकर्त
व्यंबुधसोमयोः तत्रापिचनकर्तव्यंसकृन्मूलानुराधयोः चं
द्रशुद्धिर्यदानाक्षितारायाश्चविशेषतः अक्षौरेपिचनक्षत्रेक-
र्तव्यंबुधसोमयोः प्राणान्सौरैहंतिगुरुःशुक्रःशुक्रंधनंरविः
आयुरंगारकोहंतिसर्वहंतिशनैश्चरः राजकार्यनियुक्तानां
राणांरूपजीविनां शमद्भुलोमनस्वच्छेदेनास्तिकालविशोधनं

षट्कृतिकाः पंचमघस्त्रिंशे त्रैत्र्याम्हाष्टकोयश्चतुरुत्तरोश्च क्षौ
 रंसवर्षचतुराननोपिनप्राणितीतिस्फुटः प्रवादः ॥ अथराज्ञां
 अश्रुकर्म ॥ नृपाणां पंचमेदिने क्षौरे नक्षत्रे श्मश्रुकर्मविहितं
 यदा पंचमदिने क्षौरमक्षत्राभावस्तदा तन्नक्षत्रस्यामिनो मुहूर्त-
 त्कार्यं ॥ अथ संन्यासि प्रभृतीनां क्षौरकर्म ॥ पूर्णमावस्ययोः
 संन्यासिनां विधवायास्तु सदा ॥ श्रद्धादिविचारस्तु नोपेक्षि-
 तः ॥ अथाक्षरारंभः ॥ उत्तरायणे ५ पंचमेव गणेशसरस्वती
 कुलदेवान्नत्वाभ्यर्च्य ह. पु. स्वा. अनु. ज्ये. रे. आशिषि. चित्रा. अ.
 एषु. भेषु. शु. जी. बु. वासरे सन्तिथौ २।३।५।१२।११ उभय ३।६।८
 १।१२ त नायं शोच शक्ये पक्षे च ग्रहमशुद्धे लग्ने कुंभमासं विना-
 शुभः अथात्र चक्रं रविभात् ॥ अथ मंगलं कुरार्यणं ॥ शुभ

| | | |
|---|--------|--------|
| ३ | मध्ये | मृत्यु |
| ४ | विंदौ | भीति |
| ५ | प्रणवे | शुभं |
| ६ | ने | भयं |
| ७ | मे | शुभं |
| ८ | सौ | शुभं |
| ९ | धूम्री | शुभं |

वासरतिथिभोदयेषु चंद्रताराशुद्धौ
 च विधेयं ॥ अथोपनयनसुहूर्तम् ॥
 विप्राणां गर्भतो जन्मतो वा ८ वर्षे वा ५
 वर्षे सत्रियाणां ६।११ वैश्यानां ८।१२
 द्विगुणगौणं ब्रह्मवर्चसकामस्य कार्यं
 विप्रस्य पंचमे राज्ञो बलार्थिनः षष्ठे वै
 श्यस्यार्थार्थिनो षष्ठे अत्र फलश्रवणा

त्काम्यत्वं वस्तु तस्तु आपस्तंबः गर्भाष्टमे ब्राह्मणमुपनयेत् गर्भे
 कादशे राजन्यं गर्भद्वादशे वैश्यं तस्मिन् द्विगुणे तद्गौणं उत्तरायणे
 तत्र कन्याविवाहे कुमारस्योपनायने गुरुबलं २।५।७।८।११ अष्ट १०

सुहूर्तसिंधूः

(९१)

६।३।१ पूज्यः ४।८।१२ निंद्यः गुरुबलादपिकालचलंबलवत् कुमा-
रस्योपनायने विवाहेऽपि रविबलं ३।६।१०।११ श्रेष्ठः १।२।५।७।८
पूज्यः ४।८।१२ निंद्यः २।५।८ त्रयोदशाहात्परतः शुभः उत्तराय-
णेऽप्राभाटशुद्धे दशम्यंतं चैत्रे मासिरसौ मीने विचलेऽपि गुरोर्वदोः
व्रतबंधः प्रशस्तः स्याच्चैत्रे मीनगते रवौ शुद्धिर्न विद्यते यस्य वर्षे
प्राप्तेष्टमे यदि चैत्रे मीनगते भानौ तस्योपनयनं शुभम् गोचराद्य-
कवर्गभ्यां यदि शुद्धिर्न विद्यते तदोपनयनं कार्यं चैत्रे मीनगते र-
वौ ॥ गुरुणा गलग्रहोऽपि निविद्धः ॥ प्रदोषे निश्चयनध्याये मंदेक-
ष्योगलग्रहे मधुंघिनोपनीतस्तु पुनः संस्कारमर्हति प्रदोषस्तु सर्व-
मासेषु तृतीयाषष्ठीद्वादशीनां क्रमात् १।१॥-२ एकसाधैर्द्विप्र-
हररात्रौ चतुर्थीसप्तमीत्रयोदशीप्रवेशः अनध्यायास्तु प्राभा-
टशु १० ज्येष्ठः २ पौषः ११ माघः १२ तथा १४।१५।३०।१।८ संक्रांति-
श्च पुनर्वसौ न ब्राह्मणस्य व्रतं न श्यास्तु नर्वसौ इति वचनात् व्रते
रोगबाणमपि निंद्यं ॥ व्रते मासफलं ॥ माघे मासिमहाधनो धन-
पतिः प्राज्ञो बलं फलं गुणे मेधावान् भवति व्रतोपनयने चैत्रे च वेदा-
न्वितः वैशारथ्यैः सुभगः सुखी पदपतिर्ज्येष्ठे वरिष्ठो बुधः प्राधा-
दे च महाविपक्षविजयी ख्यातो महापंडितः ॥ चारफलम् ॥ मे-
धां भानुदिने पटुः शशिदिने चंद्रात्मजैर्धौ धिताम् पंचत्वं कुजमंद-
योर्भृगुसूते वाग्मी च लीयान् बुधः षड्कर्मानिरतः सुरवी सुरगु-
रो विद्वांश्चिरात् पुनरो धिष्ण्ये पापनिपीडितेन ह्रिस्वगोमूढोगता-
युर्भवेत् ॥ अत्र विशेषः ॥ तस्माद्गृहेभ्यः कालत्वाद्दूरी संवत्स-

रः परः शांतिग्रहाणां कर्तव्यान्तुसंवत्सरस्य साव्रतकाले तु संप्रा-
 पेयस्य शतध्विर्न विद्यते कृत्वा च शक्तिः पश्चाद् विधेयं मौं जि-
 वधनं शरत्प्रीत्यवसंतेषु व्युत्क्रमात्तु हि जन्मनां मुख्यसाधार-
 णां तेषां तपोमासादिपंचसु ज्येष्ठमासे विशेषेण सर्वज्येष्ठस्य चै-
 वहि उपनीतस्य पुत्रस्य जडत्वं मृत्युरेव वा विवाहे चोपनयने
 जन्ममासं विवर्जयेत् विशेषाज्जन्मपक्षंतु वसिष्ठाद्यैरुदाह-
 रं जातं दिनं दूषयते वशिष्ठोत्तरौ च गार्गी नियतं दशात्रिः जा-
 तस्य पक्षं किल भागुरिश्च शेषाप्रशस्ताः खलु जन्ममासि जन्म-
 मासनिषेधेऽपि दिनानि दशवर्जयेत् आरभ्य जन्मदिवसाच्छुभाः
 स्युस्तिथयः पराः यच्च कृष्णपक्षवर्चांसि श्रेष्ठार्थकता बोधका-
 नि तानि तु द्वितीयसंस्कारविषयकाणि अनध्यायस्य पूर्वोक्त-
 र्जनध्यायात्परेहनि व्रतबंधं विसर्गं च विद्यारंभं न कारयेत् ॥ अस्य
 विभागः ॥ व्रतस्य पूर्वोक्तनिष्ठकालोत्पत्तिनिष्ठकारी यजुषां च दू-
 नां तदन्विदौष्ट्यं खलु सामगानां मथर्वणानां मपरेन्विदौष्ट्यं अ-
 ष्टकासु च सर्वास्तु युगमन्वंतरादिषु अनध्यायं प्रकुर्वीत तथा-
 सोपपदास्वपि अयने विषुवे च सिताज्येष्ठे द्वितीया च आश्वि-
 ने दशमी सिता चतुर्थी द्वादशी माघे एताः सोपपदाः स्मृताः य-
 तु वृद्धगर्गः अनध्यायेऽपि कुर्वीत यस्तु नैमित्तिको भवेत् सप्तमी
 माघशुक्ले तु तृतीया चाक्षया तथा फाल्गुनकृष्णतृतीया च व्रत-
 बंधेश्च भातया तथा कृष्णप्रतिपदि चैवं सर्वप्रायश्चित्तार्थोपन-
 यनविषयं स्वाध्यायवियुजोद्यक्षाः कृष्णप्रतिपदादयः प्राय-

मुहूर्तसिंधू-

(९३)

श्रित्तनिमित्तेतु मेखलाबंधनेमता इतितेनैवोक्तेः तथाजन्मभइ
 वजन्मभात् १०।१६।१८।२३।२५ एतन्मितभेषुशुभं नाचरेदिति
 आचार्यसौम्यकाव्यानां वाराः शस्ताः शशीनयोः वारौतौ मध्यफ
 लदाधितरौ निदिताग्रते सर्वेषां जीवसर्वज्ञ वाराः शस्ताग्रते तथा
 चंद्राकौ मध्यमौ सौमबाहुजयोः कुजः अस्तंगतस्य सौम्यस्य
 वारो यज्यो द्विजन्मनां कृष्णे चंद्रस्य वारसरः ॥ अथ नक्षत्राणि
 ॥ अश्विः ह. पुष्यः ५ भिः ५ ३ रौः ५ म्ले. स्वा. पु. अ. ध. श. मू. मृ. रे.
 चि. अश्वि. पू. ३ कुत्र चिज्येष्वापि गृहीता स. चं. बु. बु. शु. वारेषु अ
 स्तबुधस्य वारो यज्यः २।३।५।१०।११।१२ तिथिषु केनचित्पृष्ठ्य
 पिशुभाप्रोक्ता शक्यते पक्षे कृष्णे यंचम्यंतं अपराह्णे न त्रिधा विभ
 ज्यदिवसंतत्रादौ कर्म वै वैदिकं द्वितीये मानुषं कार्यं तृतीये शेतु
 पैतृकं ॥ अथ लग्नशुद्धिः ॥ श. च. चं. लग्नेशः ६।८ न शुभाः चं
 द्रभार्गवौ लग्नाद्वादशेन शुभदौ १।५।८ पापानशुभदा भवन्ति.
 ६।८।१२ सौम्या नशुभाः ३।६।११ पापाः शुभदाः पूर्णचंद्रो वष
 कर्कगतो लग्ने श्रेष्ठो न्यथानयस्मिन्कस्मिन्नाशौ चंद्रः शुभनवां
 शे चेन्नदाग्रती विद्यानिरतः पापांशके चंद्रे दरिद्रः यदि कर्कशे
 तदा दुःखसहित यदि अ. पु. नक्षत्रगचंद्रः कर्कशगस्तदा
 धनवान् भवेत् वेदेशवारे लग्ने च सद्गुले सत् सप्तशलाकाच
 के वेद्योपि द्रष्टव्यो भे वेदेशशारवशयोर्बलं शारवाधिपतिचार
 अशारवाधिपचलं शिशोः शारवाधिपति लग्नं च दुर्लभं त्रि
 तये चटो वर्णो धिपते बलोपेते उयनीतक्रियाहिता सर्वेषां च गु

| वेदस्वामिनोवेदभानिच. | | | | |
|----------------------|----------|-----------|------------|----------|
| ऋग्. | यजुः | साम | अथर्वः | वेदः |
| जीव. | शक्र. | मंग. | बुध. | स्वामिनं |
| अस्ते. ह. | रे. ह. | अश्वि. | सू. रे. ह. | भानि. |
| चि. स्वा. | अनु. सू. | ध. ति. ह. | अश्वि. | |
| सू. पू. | पुति. | उ. ३ आ. | पू. १ नु. | |
| सू. आ. | उ. ३ रो. | अस्ते. | पु. ध. | |

रौ. सूर्ये चंद्रे च ब
लशालिनि जी
वे भृगो रिपुग्रहे
विजिने च नीचे
स्याद्देदशास्त्र
विधिना रहितो
मनुष्यः अथ

राजां कुष्ठिकाबंधः चैत्ररहितव्रतोक्तमासतिथ्यादिषु भौमा
स्तेन अथ केशान्तसमावर्तने ॥ केशान्तं षोडशे वर्षे चैलो-

| वर्णचक्रम् | | | | | |
|------------|---------|-------|-------|---------|------|
| ब्राह्म | क्षत्री | वैश्य | शूद्र | म्लेच्छ | वर्ण |
| जीव. | सूर्य | चं. | बु. | श. | स्वा |
| शक्र. | मंग. | | | | मी. |

क्तदिवसे शक्रं
व्रतोक्तदिवसादौ
हिसमावर्तनमि
ष्यते ॥ अथा

आपरोविशेषः ॥ क्षितिकं यनकालतो व्रते न भसस्तारकपा
तकालतः न बंधुर्ग्रहतो शुचंद्रयोरगभिद्यामधु गश्चितं बुधाः
प्रथमामरुंडमूर्तिभृद्गने केतुरुदेति चेत्तदा व्रतकृत्यमसि
धिलब्धिवत्स्मृतमाहायन मागमां चकैः अत्रागभिद्यामधु
गपदेन मासत्रयं बोध्यते गर्गस्तु ग्रहे रविंद्वारवनिप्रकंपकेतु
द्गमोल्कापतनानि दोषे व्रते दशाहानि वदन्ति तज्ज्ञास्त्रयो
दशाहानि वदन्ति केचित् चंडेश्वरस्तु दाहे दिशां चैव धराप्र-
कंपेव ज्ञप्रयाते च विदारणे च केतौ तथोल्कापतनादि दोषे च

ग्रहाशफलं.

| र. | चं. | मं. | बु. | शु. | शु. | श. |
|------|-----|-------|------|-------|-----------|--------|
| कुरः | जटः | पापीः | पटुः | यज्वा | दीक्षितां | मूर्खः |

असदग्रहाः ३१ ६११
 सदुपकारफलं कुर्वन्ति
 षड्यगं लग्नस्य चिन्तनी
 यं चंद्रकूरास्तनौनेष्टाः

सर्वे नंदे व्यये कविः सितेन्दुलग्नपाः षष्ठे मौंजिविद्यासूक्तकर्मसु लभे
 भानुरपिशभदः शुभदो बलवात्मानुर्लभगोदशमस्तथा सर्वशा-
 रवाधिपो भानुस्सर्वेषां व्रतबंधने चंद्रः स्वोच्चगोपिलग्ने निषिद्धः
 नारदः स्वोच्चसंस्थोपि शीतांशुर्व्रतिनो यदिलग्नगः तं करोति शि-
 शुंनिः स्वंसततं क्षयरोगीणां सितेपक्षे भवेद्यज्वास्यभेतुंगे विशेष
 त इति बृहस्पतिः अनयोर्विरोधे बृहस्पतिवचनमेव समंजसं ब-
 हुसंमतत्वात् अपरे तु केंद्रगं भानौ व्रतिनो वंशनाशनं भौमेशिष्या
 चार्यधिनाशनं संदेतुलगदाः राहुवृत्तविनाशं केतावपीति सु-
 हूर्तसमये स्वस्वक्षेत्रप्रेषस्ततो गान्धर्व्युपदेशः स एव देवारंभः ॥
 अथ महानाम्नीव्रतं ॥ तिथिनक्षत्रवारांशवर्गोदयनिरीक्षणं
 चैल्यत्सर्वमाख्यातं सगोदानव्रतेषु च ॥ अथ समावर्तनं ॥
 अथात्र कांश्चिद्योगान्प्रदर्शयितुं चक्रं न्यसेत्,

मुहूर्तसिंधू.

(९७)

| चक्रम्. | | | | | | | | | | | |
|---------|------------|--------|------|---------|-------|-------------|----------|----------|-----|----|---------------------|
| सू. | च. | मं. | बु. | रु. | शु. | श. | रा. | के. | वे. | व. | ग्रहा. |
| १२ | ० | ० | २ | कें. | १२ | ० | ० | ० | ० | ० | वेदज्ञः |
| ६ | ० | ३ | ० | कें. | ११ | ० | ० | ० | ० | ० | पट्टज्ञः रुमावृभ |
| ० | ० | ० | ० | कें. को | १० | मौन वया. | ० | ० | ० | ० | धनीः |
| ११ | शुंडशे | ० | १ | ० | १० | ० | ० | ० | ० | ० | धनीः |
| ५ | ५ | ० | कें. | कें. | कें. | ० | ० | ० | ५ | ० | धनी प दितः |
| ० | ० | २ | ० | ० | ० | २ | ० | ० | ० | ० | विद्याना शः |
| ० | ० | १२ | ० | ० | ० | १२ | ० | ० | ० | ० | बंधदो |
| ० | मु. हशे | ० | ० | १ | त्रि. | ० | ० | ० | ० | ० | वेदविद् |
| ११ | ११ १० | ६ ५ | कें. | कें. | कें. | ११ १० | ११ १० | ११ १० | ५ | ५ | शुभा. |
| १२ | ० | भीह | ० | ० | ० | १२ | ० | ० | ० | ० | विद्याहा त्रि. |
| ० | ६ | | | | ११ | लमे शोपड | ६ | | | | मालाहा त्रि. |
| १ | ० | १ | ० | ० | ० | १ | १ | १ | ० | ० | मरणं. |
| ११ | ० | ० | १० | ० | १ | ० | ० | ० | ० | ० | धनीः |
| ११ | ० | ११ | ० | ० | ० | ११ | ११ | ११ | ० | ० | सौरज्यं |
| ११ | ० | ११ | ० | ० | ० | ११ | ११ | ११ | ० | ० | जडः |

व्रतनक्षत्रे भौ.रा.वारभिन्न तदाचंद्रविशुद्धौ मध्याह्नकाले उत्त
रायणे च ॥ अथ चतुर्वेदगमनशुद्धिः ॥ चरलभेव्रतोक्ततिथिभो
दयेषु ॥ अथ वज्रात्मत्यागमने शुद्धिः ॥ स्थिरलभेव्रतोक्तभे शकभ
वासरशुद्धौ च ॥ अथ राज्ञां च्छूरिकाबंधः विवाहोक्तमासेषु

शक्रपक्षे वृत्तोक्तशतद्वौ सङ्गो दयेष्टमशतद्वौ २५।८।१।१।१०
 शतभैः ३।६।११ परैर्बिभृयात् तस्माच्च आयामं विस्तरेण गुणयि
 त्वाष्टभिः शोषयेत् क्रमेणैकादिसेवे.

| फलम्. | | | | | | | | |
|-------|----|----|----|----|----|----|----|-------|
| १. | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | शेषा. |
| १. | २. | ३. | ४. | ५. | ६. | ७. | ८. | शेषा. |

॥ अथविद्यारंभः ॥ उत्तरायणे आश्विने बुधप्रावत्ये गरेशगि-
 रावभ्यर्च्य हं वि. स्वा. शु. ध. श. पू. ३ मृ. आ. पु. ति. ५ स्ले. मू.
 अश्वि. रे. अनु. शुक्ले पक्षे २।३।५।६।१०।११।१२ तिथिषु ७।१३ वा
 कृष्णे आद्यन्यंशेन ध्याय पर्वाणि विहाय बु. जी. शु. वासरे ५ क
 भौमलग्रान्वर्जयित्वा द्विमूर्त्तिलग्नेषु ३।६।११ पापेषु ५।८।१।४।
 ७।१० शतभेषु पापभिन्नपंचमे अष्टमशतद्वैचरे लग्ने भ्रमस्थिरेजा
 व्यभवति. सर्वविद्यारंभः अनध्यायस्य पूर्वपरदिवसौ चापि व-
 र्जनीयौ केयां चिन्मते न सार्प्यमपि निंद्यं बोध्यम् बुधवारे ३।६।ल
 ग्ने बुधलग्ने बुध होरायां बुधांशे च विद्यायोगः सोमवारे हस्ते मे बु
 धांशे चरे लग्ने र. चं. बु. युक्ते विद्यायोगः बुधवारे हस्ते मे बुधहो
 रायां बुधांशके गौ बुधे हिलग्नौ विद्यायोगः कन्यालग्ने बुधे प
 रमोच्चगोरविद्युक्ते बुधवारे च विद्यायोगः चंद्रविचारयोर्मृगह
 स्तभयोः कर्कसिंहलग्नयोः बुधांशके योगौ बुधे चर्गात्तमे शुर्व
 शे बु. र. शु. केन्द्रगेषु १३ तिथौ १२ लग्ने विद्यायोगः कर्कलग्ने पंचमे

सुहूर्तसिंधूः

(९९)

शेगुरुलभेगुरुवारेंगुरुहोरायां पुष्यर्क्षेवागीश्वरोयोगः विद्या
रंभेषुधस्तूदितःसवलश्चापेक्ष्यः पूर्वोक्तचक्रंमातृकारव्यमन्त्राः
पिपीक्ष्यं ॥ ज्योतिःशास्त्रसु ॥ मू.पु.ति.अ.रे.ह.श.ऽश्वि.एषु
भेषुशुभतारायांशनिभौमंविनाशुभेलग्नेपंचमेशुध्वे ॥ अ.
थगणितविद्यारंभः ॥ श.पू.भा.ऽनु.ऽऽर्द्रा.रो.रे.ह.ति.एषुभे
षुशुभतिथौ बु.वृ.वासरे ॥ अथज्याकरणन्यायवेदस्मृतिध-
र्मशास्त्रारंभणं ॥ उ.३.रो.पु.ति.अ.ह.ऽश्वि.श.स्वा.एषुभेषुस
तिथौ ॥ अथवाधर्मशास्त्रपुराणारंभः ॥ ह.चि.स्वा.वि.अनु.
पू.रे.अश्वि.मृ.श.अ.ध.एषुभेषुसतिथौ ॥ अथवैद्यगारुडवि
द्यारंभः ॥ ह.चि.स्वा.नु.पु.अ.ध.श.मू.रे.ऽश्वि.ति.श्वे.अ.मृ.
एषुभेषुसतिथौ रूचं.मं.वारेज्येष्ठाहीनेगारुडि ॥ अथसारव्य
वेदांतयोर्मु.पू.३३.३अ.ध.मृदु.क्षिप्र.आ.रो.एषुभेषु शुभवा
सरसतिथौ ॥ अथनाट्यशास्त्रसु ॥ ह.ति.पू.फा.मृ.ज्येऽनु.उ
षा.अ.स्वा.ध.श.रे.एषुभेषुशुभवासरे ॥ अथलिप्यारंभः ॥ रे.
ऽश्वि.अ.ऽनु.आ.पु.ति.ह.चि.स्वा.एषुभेषुशुभतिथौशुभवा-
सरे ॥ अथधनुर्विद्यारंभः ॥ ऽनु.ति.म.मृ.एषुभेषु८।१२तिथौ
शुभवासरे अन्येतु ह.चि.स्वा.वि.ऽनु.ज्ये.मृ.आ.अ.पू.पा.पू.
फा.ऽश्वि.मृ.रो.ति.श.एषुभेषुशु.र.मं.वासरेसतिथौ ॥ अथ
शिल्पशास्त्रसु ॥ स्थिर.चर.मृ.आ.एषुभेषुशु.जी.बु.र.चं.
वारेषुअनध्यायभिन्ने ॥ अथतंत्रशास्त्रसु ॥ अ.मृ.म.उफा.
वि.एतन्नक्षत्रयुद्धासेषुतथाआश्विनेवैदिकानपिअनध्याय-

व्यतिरिक्तदिवसे मंत्रारंभः ॥ यस्यदेवस्यतद्वारे तद्देवक्षमंत्रा
दिकं दारुणे आ.ति.ज्ये.ऽश्वि.अ.स्वा.वि.ऊ.३रो.एषुभेषु ६।१३
।५।१०।१५।२। ३।१२तिथिषु जी.बु.र.वारेषु केनचित् शक्रोप्यं-
गीकृतः ॥ अथजैनधर्मारंभः ॥ ऊ.षा.ऽश्वि.मृ.स्वा.सु.ति.अ.

प्रयोगादिप्रारंभेचक्रं सूचयामास ॥

| | | |
|---|--------|-----------|
| १ | मस्तके | सिद्धिहा |
| १ | पुर्व | सिद्धिः |
| २ | कंठः | कालकृत् |
| ४ | हस्तौ | रिपु. |
| ४ | उरः | इष्ट. |
| ३ | उदरं | धनहा. |
| ३ | कटि | साधनाफलं. |
| ३ | चरणं. | साधनाफलं. |

ध.श.एषुभेषु जयापूर्णाति
थौ मं.बु.श.वासरे शक्रमल
ग्ने ॥ अथपारायणसु. ॥
दारुण उग्र एभ्योरहितभेषु-
श.भिन्नवारे ऽगलग्रहे पंच
मनवमयोर्नरराशौ एति ॥
अथपुराणश्रवणमुहूर्तं ॥
रिक्ताचर्ज्यतिथौ मं.श.भिन्न

वारेषु मृदुः ध्रुव.क्षिप्र.चल.पू.३ एषुभेषु चरेलमे शक्रमकेंद्रगे
द्वादशीभिन्नतिथौ रामायणं प्रातर्दशघटिपर्यंतं न इतिसंस्का
रः ५ अथविवाहः तत्रानाश्रमीनतिष्ठेत् इतिवचनात्समाव
र्त्तनोत्तरंविद्याभ्यासादनंतरंगुरौ वरंदत्वा तदाज्ञयागृहीभवेत् त
त्रप्रथमंवरं पुंस्त्रिणादिद्युतंकुलीनंगुणिनं चलशालिनंमार्गयेत् ततो
दैवज्ञं फलपुष्प कनकादिभिरम्यर्च्य विवाहंपरीक्षयेत् शुभेलमे
शुभशकुनेविवाहसिद्धिः व्ययेशोलभेलमेशोव्ययेविवाहः स्थि
रलमेपायान्क्रान्तेन चंद्रः प्रश्नतनुतः ३।५।७।११।१० जीवदृष्टः ७
मंचंद्रलमेशौ कन्यालाभाय १ सप्तमेशचंद्रौ वरलाभ ४।७।२लमे

मुहूर्तसिंधू.

26013

(१०१)

पु शक्रपुतदृष्टेषु कन्यालाभः समलभे चंद्रशक्राभ्यां हृष्टेषु ते
कन्यासिः पुंलभे पुंग्रहपुतेक्षिते चरासिः रुध्याभ्यां प्रश्नलभ्यात्म
राशौ चंद्रे वापायदृष्टेषु मेवासंबंधभंगः प्रश्नलभ्यादष्टमे चंद्रे च वर्षे
मरणं चंद्रे लभे भौमे ७ शीघ्रं मृतिः क्षीणेंदु भौमशानिरविः एषामे
कोपि १ लभे मरणाय क्रूरे ७ पंचवर्षे ररस्य मृतिः प्रश्नः ७ रविमृतप्र
जां १ लभे पुंश्चली क्रूरे १ क्रूरः सप्तभिरद्वै ररणं शनिभौमौ सप्तमासै
र्मृतिः गुरुबुधौ दीर्घायुषं ५ गौपुत्रान् ७ गौधनं कुरुतः लभ्याद्वा
चंद्रे अष्टमे द्वांतरे मृतिः लभे क्रूरः सप्तमे भौमः अष्टभिरद्वै रंडा ल
भ्यात् ५ चमः पापः शत्रुदृष्टो नीचगोचा मृतपुत्राया कुलटाया तत्रा-
दौ चरणौ पयोगाष्टकं चक्रैः प्रदर्श्यते समासेन चर्णोचश्यं तथा ता-
रायोनिश्च ग्रहमैत्रकं गणकूटं भूकूटं च नाडिचैते गुणाधिकाः च
र्णादिपुगुणातारतम्यं यथाक्रमं द्येयं अथ वा स्वराशिसंरज्या

| वर्णचक्रम् | | | | |
|------------|----|-----|-----|--------|
| ब्रा. | स. | वै. | शू. | वर्णा. |
| १२ | १ | २ | ३ | राश |
| ४ | ५ | ६ | ७ | य |
| ८ | ९ | १० | ११ | |

वश्यम्.

| द्विपद | चतुष्पद | जल | सर्प |
|--------|----------|-------|--------|
| मि. क | मे वृ सि | कु मी | |
| तु. य. | ध. उ. | य. क | रश्मिक |
| ३ ध. | १ ध. | ५ ध. | |

दंपत्यो ४ वैदासानृशेषैश्वर्यं
अत्येवमध्यं स्त्रीराशौ तुल्ये-
धिके वाधमं अत्र चरेधिकृव
र्णो १ गुणः समवर्णे अर्धगुणः

हीनवर्णे गुणाभायः फलं च व
र्णाधिके चरे उन्नमाप्रीतिः सम
वर्णे सरज्यं हीने वैरं ॥ अथ यशं
॥ द्विपदराशेः सिंहं हीनं सर्ववश्याः
जलचराभक्ष्याः सिंहस्य सर्वे च-

26013

सुहृत्सिंधू.

श्याः वृश्चिकं विना चर शः रूरीराशौ च श्वे २ गुणाद्वयं भक्ष्ये
१ गुणः ॥ अन्यथा गुणाभावः ॥ अथ तारामाह ॥ कन्यक्षा
द्वरभं चरभात्कन्यक्षं गणयित्वा ८ तप्ते ३।५।७ शेषे १ सत्

| ताराचक्रम्. | | | | | | | | | |
|-------------|---|---|----|----|----|----|----|----|-------|
| ३ | ५ | ७ | १२ | १८ | १६ | २१ | २३ | २५ | २७ भा |

उभयत्रैतद्विन्नशेषे गुण
त्रयं ३ अन्यतरत्रं शभे १॥
साध्वै उभयत्रा शभशेषे

शून्यं गुणः अथ योनिमैत्रमाह अतिवैरोदासीन्यमैत्रातिमै

| योनयः | | | | | | | | | | | | | |
|-------|----|--------|------|-----|------|------|-----|------|----|------|------|-----|------|
| अश्वि | भर | कृत्ति | रोहि | मृग | पु | म | उफा | ह | वि | अनु | पूषा | उषा | ध |
| श | रे | ति | मृ | मृ | श्ले | पूषा | उभा | त्वा | ति | ज्ये | अ | भि | शुभा |

एषां वैरम्.

| | | | | | | | | | | | | | |
|-------|----|--------|------|-----|----|-----|------|-----|----|------|------|------|------|
| अश्वि | भर | कृत्ति | रोहि | मृग | पु | म | उफा | ह | वि | अनु | पूषा | उषा | ध |
| मृग | पु | म | उफा | ह | वि | अनु | पूषा | उषा | ध | शुभा | शुभा | शुभा | शुभा |

आणां ग्रहणं तथा वैक
यो नो ४ गुणाः एतदेवाति
मैत्रंगोमेवादीनां मैत्रं तत्र ३

गुणाः अश्वमेषादीनामौदासीन्यं तत्र २ गुणौ शून्यकमार्जरा
दीनामपि वैरमत्रैको गुणः गोव्याघ्रादीनां महद्वैरं तत्र गुणाभावः
एकयो नावपि विशेषं गर्गः एकयोनिषु कलहो गजयोः सिंहयोः
शुनोः महद्वैरैपि समतामहिषस्य कपेस्तथा केचित्स्वभावतः कू
राः केचिच्छांतास्तथा समाः योनिसत्त्वाद्भजं तत्र स्वसीलं च त-
थामिथः सद्भूते योनिवैरं मृत्युदं च परित्यजेत् तत्र चेद्ग्रहयोः स

सुहृत्सिंधुः

(१०३)

रच्यं नातिदुष्टं विदुर्बुधाः योनिर्वैरं सदात्याज्यं स्त्रीपुंसोर्भिन्नलिं
गयोः एकलिंगजयोः प्रोक्तं मध्यमं नातिदोषदं ॥ अथ ग्रहमैत्रकम् ॥ ५

| मैत्रीचक्रम्. | | | | | | | |
|---------------|--------------------|----------------|---------------|----------------|---------|----------------|--------|
| सू. | चं. | भौ. | बु. | जी. | शु. | श. | ग्रहा. |
| मं. च. जी. | सू. बु. | सू. चं. बु. | सू. शु. | सू. चं. भौ. | बु. श. | शु. बु. | मित्र. |
| बु. | मं. बु. शु. शं. | श. शु. | मं. बु. श. | श. | भौ. बु. | बु. | समा. |
| श. श. | . | बु. | चं. | बु. शु. | सू. चं. | सू. भौ. चं. | शत्रवः |

राश्यधियत्योरेकत्वे मैत्र्यांवा ५ गुणाः सममैत्रे ४ गुणाः मित्रश
त्रुत्वे ३ गुणाः समत्वे २ गुणौ समशत्रुत्वे १ गुणः ४ उभयशत्रुत्वे ०
यपेशयोर्मियोभावोदं पत्यो स्तादृशो भवेत् दुष्टकूटं शुभं मैत्र्यां
सद्भावैरपिशस्यते राशीशौ सुहृदौ स्यातां जन्मकाले यदा तदा क
र्त्तव्यं तत्कालमैत्र्येति अथ गणकूटम् ६ एकगणे षट् गुणाः देव

| गणचक्रम्. | | | | | | | | | |
|-----------|------|-------|-----|-----|-----|-------|----|-------|---------|
| अ. वि. | मृ. | रे. | ह. | ति. | पु. | शु. | अ. | त्वा. | देव. |
| रू. ३ | उ. ३ | आ. | रो. | भ. | . | . | . | . | मनुष्यः |
| रु. | मं. | स्ते. | वि. | श. | वि. | ज्ये. | प. | सू. | राक्ष. |

मानुष्ये ४ गुणाः देवराक्षसे २ गुणा इयं मनुष्यराक्षसे गुणाभा
वः स्वगणे चोत्तमा प्रीतिर्मैत्री स्यान्नरदेवयोः असुरासुरयोर्वैरं
मृत्युर्मानुषरक्षसोः रक्षोगणो यद्दिनरोच्यगणाकुमारी सद्राशि
कूटरवगमैत्रभयोनिशुद्धिर्द्युतिस्तत्र शुभदं करपीडनं स्याद्वा
मभ्युवांस्वयदानहिनाडिवेधः सद्भूकूटं योनिशुद्धिर्द्युहसरच्यं

वश्यत्वादपीष्टदम् शौनकः वर्गवैरं योनिवैरंगणवैरं नृदुःकरदुः
 पकूटफलसर्वग्रहमेत्रेण नश्यति नारदः स्त्रीविष्णादाद्यनव-
 केस्त्रीदूरमिति निंदितं द्वितीये मध्यमं प्रोक्तं तृतीयेन वकेन भम्
 अथ वर्गः - स्ववर्गात्पंचमेशत्रुः शत्रुर्धर्मिन्न एव च उदासीनस्तु

| वर्गास्तदीशाश्च | | | | | | | | |
|-----------------|------|------|------|------|------|------|------|--------|
| अ. १६ | क. ५ | च. ५ | ट. ५ | त. ५ | प. ५ | य. ४ | श. ४ | वर्गा. |
| गोम. | विज. | सिं. | गो. | गो. | गो. | गो. | गो. | गो. |

तीयस्तु वर्गभेद
 स्त्रियामतः ए
 पुपुंजि वर व

गेश्च भेषु गुणाः १ अश्वभेषु गुणाभावः ॥ अथ पष्ठाष्टके दयं ॥
 पष्ठाष्टके गोमिथुनं प्रदेयं कांस्थं सरौप्यं नवपंचमेव देयं च वस्त्रं
 कनकाश्च युक्तं द्विद्वान्यदशे ब्राह्मणतर्पणं च निषिद्धमेतत्केशांति
 कृत्वादानं यथोदितं ततो द्वाहं प्रकुर्वीत प्रशस्तशकुनादिषु ॥ अ
 थ मेलकापवादः ॥ आजौ जिता संधिलब्धा प्रीत्या दत्ता तथा ध्य
 रे स्वयमेवागता कन्या नैवास्ता शतद्विमेतको बहूनामेकजाता
 तां कन्यकानां करग्रहे ज्येष्ठाया मेलकं वीक्ष्यं लब्ध्वा नानैव चिंतयेत्
 अत्रैकाग्र्यं यथा बहु कन्यादाने इदम् न तु कन्याद्वयदाने तस्य नि
 षिद्धत्वात् कन्याद्वयं नैकस्मै आसुरादिविवाहेषु राशिकूटं न चिं
 तयेत् तथा व्यंगातिवृद्धानां दुर्भगानां पुनर्भुवं ॥ अथ ग्रात्या
 ग्रात्यविचारः ॥ गुरोः षोडशभिर्निद्या मध्यमा विंशतिस्तथा श्रे
 ष्ठं त्रिंशद्गुणं यावत्परतस्तूतमोत्तमं ॥ सङ्गकूटे ॥ निद्यं गुरोर्विंशति
 भिर्मध्यमाणाधिरूपकैर्मतम् तत्परैः पंचभिः ३० श्रेष्ठं ततः श्रेष्ठत
 रंगुरोः ॥ अथैवं ज्ञातगुणायां निश्चयमुहू ॥ मृ. ह. मू. म. अनु.

सुहृत्सिंधू.

(१०७)

रो.उ.३ स्वा.वि.ध. अश्वि.अ. एषुभेषु सद्गारे सन्निधौ, सुलभं
चंद्रवले मिसान्निध्ये स्नातां पुण्यामरोगिणिं तत्कालोपस्थिते
कन्यापितातुभ्यं प्रदास्यति यदित्थं पतितौ न स्यात्सर्वदोषविवर्जि
तः तुभ्यं कन्यां प्रदास्यामि हि जदेवाग्निसन्निधौ, तुभ्यं कन्यार्थि
नेवाचा कन्यादानं प्रयच्छति तन्निश्चयार्थमदूतं गृहाण साक्षतं फ
लम् ॥ अथ कन्यावरणम् ॥ पंचांगशुद्धिर्दत्तचंद्रताराबले उवा
च. पू.३ अ. ध. रे. अनु. एषुभेषु शुभचारतिथौ प्रत्यङ्मुखः कुमारीं व
श्येत् शुभलभेशुभैः ५।८।१।४।७।१० प्रापैः ६।३।११ उपत्य
गत ३।६।१०।११ जीवेशचीं पूज्य वस्त्रालंकारसौभाग्याष्टकानि
कन्यकायै वरो वरपुरोधायां दद्यात् ॥ अथ वरवरणम् ॥ शुभदि
ने उ.३ कृ. रो. पू. एषुभेषु शुभवासरे सन्निधौ, शुभलभे कन्याया
तापुरोहितो वा वस्त्रयज्ञोपवीतादिभिर्वरणं कुर्यात् सौभाग्याष्ट
कंचोभयववाससिबन्धयेत् हरिद्रा १ मधुपुष्पाणि २ गुडं ३ क्षीरं
४ तंदुलाः ५ धान्याकं ६ मुद्रिका ७ गुंजा ८ इदं सौभाग्याष्टकं ॥ अ
थ विवाहसमयनिर्णयः ॥ कन्यकानां विवाहाय दुर्गानंतरं समव
र्षेषु गुरुशुद्धिचशेन शुभः पुरुषाणां विषमवर्षेषु विशुद्धौ सत्यां
विवाहः शुभः उभयोः कन्यावरयोश्चंद्रशुद्धौ विवाहः व्यासः
अष्टवर्षाभवे द्वौरीनववर्षाचरोहिणी दशवर्षाभवे कन्याद्वादशे
रुषतीमिता दशवर्षव्यतिक्रांता कन्याशुद्धिचिवर्जिता तस्याता
रेंदुलभानां शुद्धौ पाणिग्रहोमतः प्राप्ते च द्वादशवर्षे यः कन्यां न प्र
यच्छति मासि मासिरजस्तस्य दातापि वतिनिश्चितम् पितापिता

महोभातापितृव्योमातुलस्तथा पंचैतेनरकंयांतिदृष्ट्वाकन्यार-
जस्वलास् नारदः नजन्ममासेजन्मर्क्षेनजन्मदियसेपिवा ना
द्यगर्भस्तस्यापिदुहितुर्वाकरग्रहः जन्मर्क्षेपरिणीतास्यात्क
दाचिद्धर्तुवल्लभा आधानेकर्मणोरूढासततंपतिवल्लभा जन्म
निमासिविवाहः शुभदोजन्मर्क्षजन्मराशौचजन्मनिलभेदिय
सेशुभदोपिनजन्मगेशशिनिजन्मर्क्षेजन्ममासेचतारायामथ-
जन्मनि जन्मभेजन्मलभेचभवेत्कन्यापतिव्रता जन्ममासेचपु
त्राद्याधनाद्याजन्मभोदये जन्मभेहिभवेद्यदाकन्याहिध्रुवसं
ततिः जन्मोदयर्क्षमासेक्रियते मांगल्ययौष्टिकं कर्म अशुभंचदं-
तिचार्याः श्रुतिवेधेक्षौरयात्रासु गुरुः ज्येष्ठेनज्येष्ठयोः कार्यं
नृनार्याः करपीडनं तयोरेकतरेज्येष्ठेनज्येष्ठोदोषमावहेत्
वराहः द्वौज्येष्ठौमध्यमौग्रोक्तापेकज्येष्ठःशुभावहः ज्येष्ठत्रयं
नकुर्वीतविवाहेसर्वसंम्मतम् ॥ अन्यावश्यकेसूर्यैरुक्तिकास्थं
त्यक्त्वा ज्येष्ठायाः कन्यायाज्येष्ठवरस्यज्येष्ठेविवाह इतिकेचित्
भारद्वाजस्तु ज्येष्ठयोर्मार्गेपिनिषिद्धे मंगलं मार्गशीर्षे तथाज्ये
ष्ठेक्षौरंपरिणयंव्रतम् आद्यगर्भदुहितोस्तु यत्नतः परिवर्जयेत्
परंचेदंदाक्षिणात्यप्रसिद्धम् ज्येष्ठायाः कन्यायाज्येष्ठपुत्रस्यवि
वाहएव न कर्तव्यः कृतेतयोर्निधनंपुत्रविवाहान्निषेधैरुषेकुले क
न्याविवाहः षणमासमध्येन शुभः विवाहाद्भूतं सुडनं न शुभम् व
ताचूडानेष्टावधूप्रवेशात्सुताचिनिर्गमोनेष्टः सुवत्सरभेदेन शुभः
नारदः पुत्रोद्वाहात्परंपुत्रीविवाहो न क्रतुत्रये न तयोर्व्रतमुद्वाहा

मुहूर्तसिंधू.

(१०९)

मंडनादपिमुंडनं सहजयोर्भ्रात्रोऽसहोदरकन्यकेनदेयेसहोद
रभ्रात्रोःषण्मासमध्येविवाहो न विवाहमंगलं समाप्तिं यावत्सि
त्तक्रियाना मंगलसमाप्तावश्यमेवकर्तव्यं उक्तंच महालयगे
याश्चाद्धेमातापित्रोः क्षयेहनि सोद्वाहोषिप्रकुर्वीतपिंडननिर्वपणं
सुतइति गौरीगुरुवलेदेयारोहिणीभास्करस्यच कन्यावलेधि
धोर्देयान्वलीतनुवीर्यतः अत्रनवमाब्देकन्याविवाहस्यभिद्यत्ने
नकथंरोहिणीसंज्ञकायाःफलतारतम्यम् अत्रोच्यते नवमपूर्व
सपाद्शरत्रयेखिलयुगेषुरवंगेश्वयथाबलैः शरसमेषुम ८ सप्त
मयोः कलौवल्लिभिरिष्टकरश्चकरग्रहः अनेनवचसाग्रहगोचर
शुद्धौ ५।८।७।८।१०।११ वर्षेषुसपादेषुकरग्रहः यतः भवति
सांघिमहेश ११।३ समाधिकासपदियासततंहिकुमारिकामलि
तदानफलात्तुयथागुणेनतदनेहसितामिति नोद्वहेत् अत्रविष
मवर्षेमासत्रयानंतरं समवर्षेमासत्रयांतंविवाहः ॥ अथगोचरे
॥ अरिमीणाकगौऽवासिनोरविशुद्धिं ॥ द्रविडमालवदक्षिणां
ध्रुवलिमुष्णजागुरुशुद्धिं ॥ मगध सिंधुमरुजाशक्रजीवशुद्धिं
हिमाद्रितटजाण्वसाश्चकुरुषु रवीज्ययोः शुद्धिंसकलदेशजा
श्वद्रशुद्धिंसमीच्छंती यमद्वादिविचारणा गोचरादिविचारणां
वर्णिकानामेवनान्येषां अत्रशुक्लेज्ययोरुदयकालो गृहीतः त
थापि अतिपातिषुकार्येषुराज्ञातकर्मकारिणांविवाहादंतिका
र्याणि मौस्येपि गुरुशक्रयोः शांत्यादिकंकृत्वाविधेयं विधेयमेव
शांतयः कल्योक्ताध्येया ॥ अथमेलकेविशेषः ॥ अज्ञातज-

चानां नृणां नामभेपरिकल्पयेत् तेनैव चिंतयेत्सर्वराशिकूटादि
 जन्मवत् जन्मभंजन्मधिष्ण्येन नामधिष्ण्येन नामभं व्यत्ययेन
 यदा योज्यं दंपत्योर्निधनं भवेत् एवं स्वाभिसेवकादीनां ध्येयं भा
 मिनीजन्मनक्षत्रद्वितीयेपतिजन्मभं न शुभमर्तृनाशायकथितं
 ब्रम्हयामले प्रथमं सेव्यनक्षत्रं द्वितीयं सेवकस्य च न सेवास्त
 स्थिरास्तस्य जलबुद्बुदवस्त्रिये भ्रष्टाग्राहकजन्मर्क्षं प्रथमं भ्र
 णदस्य भम् द्वितीयं भ्रष्टे संबन्धो न कर्त्तव्यः कदाचन कदाचिद्
 व्यलौभेन क्रियते नैव लभ्यते पार्वतिप्राणनाथेन प्रोक्तं डामा सं
 ग्रहे ग्रामभं प्रथमयस्य द्वितीयं जन्मभं भवेत् न ग्राह्यं सर्वथा ग्रामो
 यतः प्राणार्थनाशदः अथ किमपि विशेषः भोजदेशे तुलावृष
 गंत जीवे विवाहो न सुराजदेशे धनुर्मीनगशुक्रे विवाहो न फालगुन
 शुक्ले मीनार्केऽपि विदर्भकंबुकुरुकर्णाटके विवाहः शुभः समुद्रतीरे रे
 वामहीनद्योरंतराले कापिलारव्यं भूमंडलं तत्र मिथिलायांच मीनार्
 कः धनुर्मीनार्कयोर्विवाहः शुभदः अंधे मागधे च पौषे च शुक्रा
 र्को वा शुभदः ॥ अथ विवाहमासाः ॥ नारदः माघं फालगुनवै
 शाखज्येष्ठमासाः शुभावहाः कार्तिके मार्गशीर्षश्च मध्यमौ निर्दि
 ताः परे व्यासः माघफालगुनवैशाखे यद्यदा मार्गशीर्षके ज्ये
 ष्ठे वा षाढमासे वा शुभगाविनसंयुता आवणो वा पिपौषे वा क
 न्याभाद्रपदे तथा चैत्राश्वयुज्कार्तिकेषु यातिवैधव्यतां लघु के
 चित् चैत्रपौषौ वर्ज्यौ ३० मासानाहुः आपस्तंबः सर्वर्तवो वि
 वाहस्य पराशरः सूर्यतुर्वर्जयित्वा सर्वकालं सूर्यतुर्वर्षा

शरच्च अपरेशैशिरौपरिहाय आदिममंतिमंवा अत्रमाय
 फालगुनाषाढवर्जं नवमासासुरज्यः कालः रात्रौतुद्वादशस्व
 पिकुर्यात् वौधायनसूत्रेपि सर्वमासाविवाहस्यशक्तचित्तपस्त
 पस्यानिवर्जयेत् सर्वकालमेकेविवाहमिच्छन्ति इतित्वास्तरा
 दिविषयं यात्स्योवर्षमनूनमिच्छति तथारैभ्योयनं चोत्तरे श्री-
 वासंतुमृतंविहाय मुनयोमांडव्यशिष्याजगुः चैत्रंप्रोत्थपरा
 शरःपरिणयेत्यौषं चदौर्भाग्यदंत्वाषाढादिचतुष्टयं नहितदा
 कैश्चित्प्रदिष्टं बुधै रित्यादिविरोधे गृह्यसूत्रज्योतिषां किंविधेयं
 माघादिविद्ययः शूद्रादियराः ज्योतिषेयतः सूत्रे उदगयन आ
 पूर्यमाणपक्षे इत्यादिसूत्राणां बाधायोगात् देशभेदेषु भाद्र
 कार्तिक आश्विना अपि विहिताः ॥ अथ नक्षत्राणि विवाहस्य.
 रो. मृ. म. उ. फ. ह. स्वा. अनु. मू. उषा. उभा. रे. अथ तिथि
 यः मासांते पंचदिवसास्त्याज्या रिक्ता च माघमी अमावा-
 श्यं च वर्जयित्वा केचित्कृष्णाष्टमीं विवाहे स्वीकुर्यन्ति अथ गराः
 चाराग्रशस्ताः शक्रभरवेचराणां सूर्यार्किवारोरवलुमध्यमौ तोत्या
 ज्यः सदाभूमिसुतस्य चारः कामार्कतिथ्योरपितौ प्रदोषौ अथ
 विवाहे दशमहादोषाः लक्षा १ यात २ युति ३ चेध ४ जा मित्रः
 ५ बुधपंचक ६ एकार्गल ७ उपग्रहः ८ आतिसाम्य ९ दग्धाति-
 धि १० अथ यात २ हर्षण वैधृति साध्यगंडं गृह्यती यात एषां
 योगानां मंते यन्नक्षत्रं तत्पातेन पतितं स्यात् ॥ अथ युतिः ३

(११२)

मुहूर्तसिंधू.

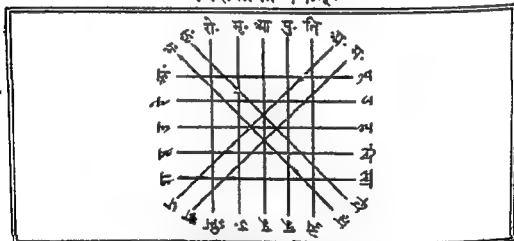
तत्रादौलत्ताज्ञानम्-१

| सू. | च. | भौ. | बु. | ह. | शु. | श. | रा. | ग्रहा. |
|-------|------|------|------|------|------|-----|-------|--------|
| १२ | ७ | ३ | २२ | ६ | २४ | ८ | ६ | संख्या |
| पननाश | शुभं | भुति | शुभं | शुभं | शुभं | नाश | पिनाश | फला. |

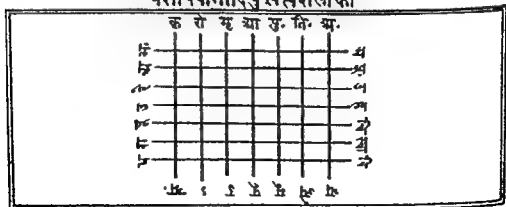
विवाहभयुति. ३

| सू. | च. | भौ. | बु. | ह. | शु. | श. | रा. | के. | ग्रहा. |
|---------|------|--------|------|------|--------|------|------|------|--------|
| दरिद्रं | शुभं | मृत्यु | शुभं | शुभं | वैधव्य | नाशः | नाशः | नाशः | फलानि |

पंचशलाका चक्रम्.

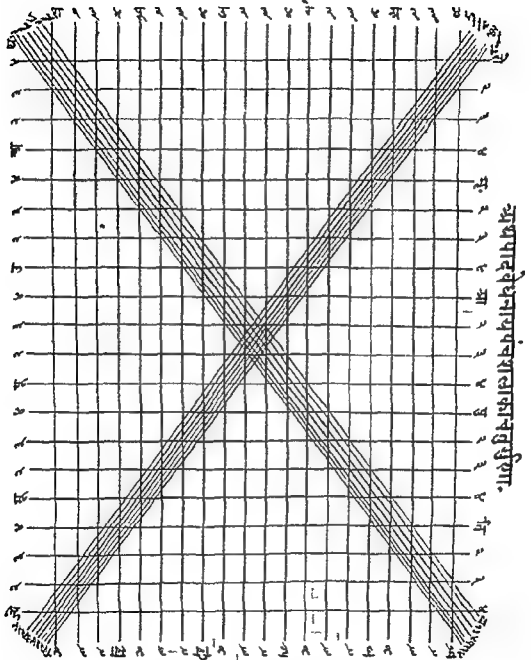


यत्तोपवीतादिषु सप्तशलाका



सुहृत्सिंधू.

(११३)



अथपादवेधनायचशलाकानुर्गुणा.

योग्यहोयत्रतत्रतन्यस्यविचारयेत् यस्यनामाक्षरंविद्धमंशाचक्रेग्रहेणतु कू
रेरिष्टंशुभेहानिद्यादौमृत्युर्नसंशयः क्रूरोभयस्थितेमृत्युः शुभाशुभेर्विघ्नः॥

पादवेधायसप्तसलाकाः

शुभोभयस्थितेवेधे व्याधिपीडाचबन्धनं अत्रयस्मिन्यादे वेध
स्सएववर्ज्यः परंतु पापवेधे सकलवर्ज्यं शुभवेधे पादमात्रवर्ज्यं
माहुः विद्धवत् दग्धज्वलितधूमितभानिवर्ज्याणि तानितुक्कुरवि
मुक्तं दग्धं कूरयुतं ज्वलितधूमितं पुरतः वित्येज्वलिते दग्धे सधू-

सुहूर्तसिंधू.

(११५)

मितेचापि चंद्रर्क्षे यात्राप्रवेश मंगलविवाह कर्माणि नेष्यन्ति ल
तायांतुरेव पत्समश्चरणोवर्ज्यः शक्रभायां पापायां नक्षत्रएववर्ज्यः
लक्षापातयुतानि सुराज्यकच्छशंखमालवेदुष्टानि युतिर्निद्यास
र्वत्र अथ जामित्रारव्यंदोषम् ५

जामित्रचक्रम् ५

| | | | | | | | | | | | |
|------|-------|----|------|-----|------|----|-----|-----|-----|----|-----|
| रो | सु. | म. | उफा. | ह | स्वा | भु | सू | उपा | उभा | रे | विन |
| अनु. | ज्ये. | ध. | इभा. | उभा | अ | रु | पु. | पु. | उफा | ह | न |

विवाहभाच्चतुर्दश १४ भंजामित्रं लभाच्चंद्रा न्मदनभवनगेरयेदेजामि
त्रं तदेववाणा श्रुगलवगेपिभवेत् शक्रे १।५।८।११जामि

जामित्रफलम्.

| | | | | | | | | |
|-------|---------|--------|--------|--------|---------|---------|-------------|------|
| रु. | चं. | भो. | जु. | पु. | श. | श. | रा. | यहा. |
| विधवा | ससपत्नी | बंध्या | दुष्टा | मान्या | दुर्भगा | वेश्या. | गर्भस्त्रार | फलम् |

वारणचक्रम् ६

| | | | | | |
|----------|------------|---------|---------|----------|------------------|
| १७ २६ | ११ २९ | ४ २३ | ५ २४ | १० ३६ | गतांश |
| रोग. | अग्नि | नृपति | चौर | मृत्यु | नामा |
| व्रते | ग्रहप्रवेश | सेवा | यात्रा | विवाह | वर्ज्या. |
| रथो | भोमे | शनो | भोमे | गुप्ते | कारवर्ज्य |
| रात्रो | दिवा | दिवा | रात्रो | संध्या | सम्प्रव ज्ये. |

त्रदोषोनभवतिजीवे
५।८।१।५।१०जामित्र
दोषोन॥ अथवाणा
रथ्यो दोषः॥६ कुत्रक
स्मिन्वा त्याज्यं॥ रोग
मृत्युसदात्याज्योसंध्य

योर्वालिहैर्जनैः तत्रापिचलनंचेद्वलाव्यंतत्रनिष्फलम् वा
रेषुकेचिद्देनत्याज्यतामाहुः नवत्ततशेषकैक्येसशल्योभव-
ति सचाति निंद्यफलः अत्रकेचित् लभंविवाहस्यविवाहगत
तिथिपुयोज्यंइदंपूर्वोक्तमाहुः परंचैतन्मर्मादार्तरचासिनामे

(११६)

मुहूर्तसिंधू.

वज्रयोग्य एषु विरुद्धे योगेषु सूर्यनक्षत्रात्साभिजिद्विषमेधि

एकार्गलम्

| वि. | गं. | शू. | गं. | व्या. | व. | व्य | प | वै | योगा. |
|-----|-----|-----|-----|-------|----|-----|---|----|-------|
|-----|-----|-----|-----|-------|----|-----|---|----|-------|

वाहनक्षत्रे एकार्गलः एकार्गलः समांघ्रिश्चेत्तत्र लग्नं विवर्जयेत् अ
पिशक्रेज्यसंयुक्तं विषसंयुक्तदुग्धवत् शुभैकार्गले तस्मिन्पादे एव
दोषः पौषैकार्गले समांशो विषमांशो भवर्जनीयमेव मालवादिदेशेषु ए

उपग्रहदोषः

| ५ | ८ | १० | १४ | ७ | १९ | १५ | २१ | २२ | २४ | २८ | न. |
|---------|------|-------|--------|--------|----------|------|--------|-------|------|-------|----|
| विद्युत | शूलः | अशानि | निषातः | भूकंपः | निर्घातः | दंडः | भूकंपः | वज्रः | मोहः | केतुः | |

तेष्विंदुसमेतेषु कुर्यात्कर्मनशोभनं परमिदमपि समांशयो रविचंद्रयोः
पूर्वाण्हेदंडदोषः स्यादपराण्हेतुमोदकः उल्कास्यादर्धरात्रेतुं कंपो हो
रात्रदूषकं एतेषां च ज्योतिषाः ७।१२।१०।६ मासदग्धास्तु तिथिष्वरुतं

दग्धास्तिथयः

| वै. | वै. | ज्ये. | आ. | आ. | भा. | आ. | का. | मा. | पौ. | मा. | फा. |
|-----|-----|-------|----|----|-----|----|-----|-----|-----|-----|-----|
| १ | ६ | ४ | ८ | ६ | १० | ८ | १२ | १० | २ | १२ | ४ |

तिथिगंडः

क्रांतिसाम्यम्.

| ५ | १० | १५ | तिथयः |
|---|----|----|----------------|
| १ | १ | १ | घट्य- तिमा. |
| १ | ६ | ११ | तिथयः |
| १ | १ | १ | अदिष्यत्वा |

| | | | |
|---|---|----|----|
| | १ | १२ | ११ |
| १ | — | — | — |
| २ | — | — | — |
| ४ | — | — | — |
| | ५ | ६ | ७ |

यन्मंगलादि
कं तत्सर्वचाश
मायानिघ्नीष्ये
कुसरितो यथा

दग्धायां तिथ्या वषिषा दोषज्यः ॥

मुहूर्तसिंधुः

(११७)

तिथिगंडः

गंडांतं मृत्युदं प्रोक्तं यात्रोद्वाह
दिकर्मस्तु तिथ्यादीनां संधि-
दोषं निहंतिलाभस्थाने संस्थि-
तः शीतरश्मिः चोद्यदिकार्धम्.

क्रांतिसाम्यम्.

समदंडयोगोरविचंद्रयोः क्रांति
साम्यसंभावना तच्च महागणि
नैकसाध्यमिदानीं गंडशुभयोग
योः सन्निधाने भवति तस्मादपि सू-
क्ष्मः पातः हर्षणोत्पादितुं चंडायुधः

भगंडः

| ज्यं | रे | अ० | भानि |
|------|----|----|---------|
| २ | २ | २ | १ घट्य |
| मू० | १३ | म० | भानि. |
| २ | २ | २ | १३ घटि. |

लग्नगंडः

| ४ | ८ | १२ | लग्न. |
|----|----|----|----------|
| २० | ३० | ३० | पक्षः ते |
| ५ | ९ | १ | राशि. |
| ३० | ३० | ३० | १३ घटी. |

यमदंष्ट्रा अंतिमभेषु मूलादि
षु पूर्वेषु घोराभिधः इदमपि
चंद्रेश्वरे चालाभगते शुभ
म् ॥

मृतिप्रदं भित्तयं गंडांतयोगे जन्म
नि यथा दुष्टफलं तद्वद्वात्रायां
विचिंत्य परं शुभसुतलाभे दोषो
त्यो भवति.

विषनाडी.

| अ० | भ० | रु० | रो० | मू० | आ० | पुं० | नि० | अ० | म० | पू० | उ० |
|-----|-----|-----|-----|-----|-------|------|-----|----|----|-----|----|
| ५० | २४ | ३० | ४० | १४ | २१ | ३० | २० | ३२ | ३० | २० | १० |
| ह० | वि० | ला० | वि० | अ० | ज्ये० | मू० | रू० | उ० | अ० | प० | श० |
| २१ | २० | १४ | १४ | १० | १४ | १५ | २४ | २० | १० | १० | १० |
| पू० | उ० | रे | | | | | | | | | |
| १५ | २४ | ३० | | | | | | | | | |

एतत् घटिकोत्तरं च तस्मिन् घट्यो विषघट्य एतत्

द्विप्रमाणेन यथा पंचांगात्कस्मिंश्चिद्दिनेभभोगंबुध्वा पुनः प
द्विप्रमाणेन तद्यदीसंगु एयभयोगेन भजेत् ताः स्पष्टा भवन्ति न
दग्रे च तस्मै विषयस्य विषयटिकोक्त भवकोनक्षत्रगतैष्ययोगसं
गुणिताः स्वरस ६० हतः स्पष्टाः स्युस्ता घटिकाश्चतुष्टयंतया वि
षनाड्युत्थंदोषं हन्ति सौम्याक्षगशशिमित्रहृद्यो यथास्वीयवर्गगो

अधसूर्यचंद्रक्षयोः २० मुक्तेवातादयः

| ० | १ | ४ | ६ | १० | ११ | १५ | १८ | १९ | २० | श्रुता |
|-----|-----|-------|-----|-----|------|-----|------|------|-------|--------|
| वात | मेघ | अग्नि | वृष | चैत | मृति | रोग | वज्र | कुलि | क्षति | योग |

लग्नप्रोपिवा तत्तद्योगेषु तद्वयं भावीति चंद्रेजीवे वा सवले न प्रभव
तुं भवन्ति वाताक्षर्यः ॥ अथापरे दोषाः कुलिकदुर्मुहूर्तादयः पूर्वार्धा
योक्ता वज्रर्जजन्मनक्षत्रगे पापे विवाहश्चांतको यमः अत्र राहुकेतोः शनि

रयादीनां फलानि भावेषु.

| सू. | चं. | भौ. | बु. | वृ. | शु. | शं. | रा. | ग्रह. |
|-------------|--------------|--------------|----------------|-------------|----------|------------|---------|-------|
| मृत्क १ | नाश १ | मृत्क १ | प्रीति १ | लक्ष्मी १ | योग १ | स्वच्छंद १ | शानिव १ | १ |
| नैस्त्वं २ | संपत् २ | शोक २ | सुखि २ | कन्याप २ | धनं २ | कदशान २ | ० | २ |
| धनं ३ | पश ३ | धनं ३ | गुणी ३ | सम ३ | सुरापा ३ | बलभा ३ | ० | ३ |
| भावद्वानि ४ | बंधुरादि ४ | भावद्वै ४ | बंधुपूजा ४ | परा ४ | महत् ४ | विशील ४ | ० | ४ |
| पुत्रकष्ट ५ | कन्यापत्न ५ | सुखिना ५ | सुतालाभ ५ | इष्टाप्ति ५ | मानं ५ | आधि ५ | ० | ५ |
| धनम् ६ | धनुभि ६ | लक्ष्मीला ६ | नैसपत्न ६ | मद्यं ६ | निधनं ६ | श्रीः ६ | ० | ६ |
| भावद्वानि ७ | सापत्न्य ७ | मृति ७ | पुत्रहर्षि ७ | विरक्ति ७ | सर्वना ७ | मृति ७ | ० | ७ |
| निरागु ८ | प्रव्रज्या ८ | वशनाश ८ | मृति ८ | पाषाणक्त ८ | व्यय ८ | कृतव ८ | ० | ८ |
| श्रयाहा ९ | कन्याधन ९ | स्त्रीहर्ष ९ | धर्मला ९ | धर्मपात ९ | धर्म ९ | गर्भपात ९ | ० | ९ |
| व्याप १० | धनभि १० | यामन १० | दृष्टीला १० | भूरीला १० | गुण १० | धुतागति १० | ० | १० |
| अपरागम् ११ | लाभ ११ | पुत्रादि ११ | राष्ट्र ११ | सौख्य ११ | संपत् ११ | वैषय ११ | ० | ११ |
| रोग १२ | दास्य १२ | नृपभी १२ | स्त्रीहर्षि १२ | विपत्ती १२ | धनना १२ | सुरापा १२ | ० | १२ |

मुहूर्तसिंधू.

(११९)

वत्फलंबोध्यम् अथांशफलम् ऊटावृषांशोधनिनीनितंविनी
 प्रमेदिनीमीननवांशकेभवेत् अवोचदेनं किलशौनकोमुनिः कर्का
 शकोदास्तपत्रमूढा तुलामिथुनकन्यांशाः शक्रभांशाधनुरंशोपिशु
 भः वर्गेत्तमः सूर्योपिशुभः तनुपेस्तंगतेनाशोदंपत्योरंशयेतथा सङ्क
 रेशेचहानिः स्यादंशेचंद्रयुतेमृतिः अथलग्नशुद्धिः सुरयमंतुर्य
 सुद्धाहेष्टादशंघित्तनाशकृत् जन्मभाज्जन्मलग्नाद्दामृत्युदंलग्नमष्टमं
 चतुर्थसगुणं देयं द्वादशं चगुणाधिकं सगुणं चाष्टमं लग्नं त्याज्यमं
 रांतथाष्टमं जन्मक्षजन्मलग्नाभ्यांरंध्रेशावष्टमौचयौ विलग्नसंस्थि-
 तानेतांतद्राश्यंशानपित्यजेत् तत्र अलिच्छामष्टमौचेद्वयतस्तदानदो
 षः यदिजन्मेशरंध्रेशयोर्मेत्रीतदाप्यष्टमंनदोषकृत् अथवाजनिष्ठ
 ग्राहमाधिपतिः केन्द्रेतदापिदोषो नशुभर्वाक्षितश्चेत् त्रिविक्रममते
 शास्त्रं चं मं १ लग्नेयज्याः चंशुः लग्नेशध्रुवयज्याः सूर्य ८
 सप्तमेयज्याः जीवचंद्रौसप्तमेसंमौ चंमं बुधः शुः लग्नेशाः ८ अ
 ष्टमेयज्याः सर्वाचार्यमतेनतुल्ययेशानिःखेपनिजस्तृतीयेभृगुस्त
 नौचंद्रयत्नानशक्ताः लग्नेरुक्विग्लौअरिषौमृतौग्लोर्लग्नेर्दशुभा
 रश्चमदेवसर्वे ॥ अत्रविंशोपकानचनं ॥ द्वौद्वौ २ तभृगवोः पंचेदौ ५
 रामा ३ जीविरयौतथारामार्धरामा ३ ॥ शरामंकेसार्धेकैकविंशोपकाः
 व्याघ्राष्टधृसुरविकेतुतमोर्कपुत्रास्यायाणिः क्षितिस्ततोहि
 गुणायगोत्रः सप्तव्ययापूरहितोत्तगुरुस्ततिनाह सप्तत्रिपद्व्य
 यग्रहान्वरिद्वत्यशस्तः ॥ अथकर्त्तरी लग्नाहानुहिनांशोर्वा
 पापावज्वनृज्यूयचार्यस्थौकर्त्तरीसंप्रोक्तामृत्युदारिद्र्यशोकदाः

अव्ययस्य धनस्थोपोल्लम्भांशसमाशत्वे महाकर्त्तरी अथ कर्त्त
 र्यपवादः तापेवशीघ्रौयदिवक्रचारौ न कर्त्तरी चेति पितामहो-
 क्तिः पापयोः कर्त्तरिकर्त्रोः शत्रुनीचगृहस्थयोः यदि चास्तमितौ पा-
 पिकर्त्तरी नैव दोषदा त्रिकोणकेंद्रगैः शरभैः स्त्रिलाभगोयदाश
 शीतदानदोषकर्त्तरी च दंतिबादरायणः नहिकर्त्तरि जो दोषः सौम्य
 योर्यदि जायते शरभग्रहयुते लग्ने कूरयोर्नास्ति कर्त्तरी एकार्ग-
 लोपि ग्रहपातल्लज्यामित्रकर्त्तृर्द्युदयास्तदोषाः नश्यंति चंद्रार्क
 बलोपपन्ने लग्ने यथा कस्म्युदये तु दोषाः ॥ अथ गोधूलिः ॥ च
 तुर्यमभिजित् शुभसुदयस्काञ्चिसप्तमं गोधूलिकंतदुभयं विवाहे पुत्र
 पौत्रदम् ॥ प्राच्यानां तु कलिंगानां सुरव्यंगो धूलिकंतं अभिजित्स
 र्चदेशेषु सुरव्यंदोषविनाशकृत् मध्यं दिनगते भानौ मुहूर्ते अभि-
 दाह्यः नाशयत्यखिलां दोषान् पिनाकी त्रिपुरं यथा परमस्मि
 न् अभिजिति अष्टमगतभौमचंद्रौ च ज्यौ गोधूलिके चंद्रबलंसमी
 क्ष्यं २।३।११ दिगुणाग्रगते चंद्रे गोधूलिः शरभदामता चेन्न लग्ने
 च्छुद्धलगतं दागोधूलिकामता शरद्धलग्नसमालाभेन गोधूलिः
 शरभप्रदा कुलिकं कान्तिसाम्यं च चंद्रलग्नाष्टैरिगं यदि गोधूलिके
 लग्ने न तां कुर्याच्च धूलिकाम् भृशः गोपैर्यष्ट्या हतानां खुरपुटद-
 लितायाति धूलिर्दिनांते सोऽष्टाहं सुंदरीणां विविधधनस्तारोग्य-
 सौभाग्यदात्री तस्मिन्काले न ऋक्षं न च तिथि करणं नैव लग्नं न यो-
 गः ख्यातं पुंसो मरुत्वार्यं समयति दुरितं चोत्थितं गोरजस्तु भानोः
 कुंकुमसंकाशायावत्तारकदर्शनम् यावच्च गोरजो व्योम्नि तापल्लु

गर्भवुधैः स्मृतं ॥ पिंडी भूते दिनकृतिहेमंतर्तौ स्यादधास्ते तपसम-
ये गोधूलिसंपूर्णास्ते जलधरमालाकाले त्रेधा योज्या सकल शु-
भे कार्यादौ यावद्दिनांते निशि पश्चिमायां पश्येत्तृतीयं रवि विं-
भागं तस्मात्परं नाडिकयुग्ममेके गोधूलिकालं मुनयो वदन्ति
प्राच्यां प्रायो नूनवर्णसमोजः संध्याकालं प्राहुरिष्टं न चेष्टं या-
वच्छांतिर्गोरजो नोभ्युपैति तावल्लभं चित्तशुद्धिर्विवाहे मंदवारे
न कर्त्तव्यं बुधैर्लग्नं निशा मुखे गुरुवारे न कर्त्तव्यमस्तादुपरि
भास्वतः गोधूलिकं क्षत्रियादीनामेव सर्वत्राधिप गुरुदृष्टि-

| अंधादिलग्नचक्रम् | | | | |
|------------------|-----|------|-------|---------|
| अध | वधि | पंगु | कुञ्ज | संज्ञा |
| १११५ | ७१८ | ११ | ० | दिने |
| ३१४६ | ८१९ | १२ | ० | रात्रौ |
| ० | ० | ० | १०११ | संध्या |
| ० | ७१८ | ० | ० | ऽपराह्ण |

भिर्नदोषः इमानि गौडादि
देशेषु त्याज्यानि ॥ अथ
कुलदेवतास्थापनम् ॥
मृ. रे. वि. अनु. स्वा. उ. ३
रो. ह. अश्वि. ति. एषु भे-
षु शुभवासरे भद्रां विना

स्थिरलग्ने ॥ अथ सामान्यविवाहकृत्यं ॥ विवाहकृत्यं
सकलं विवाहभैर्विलोकयेन्नैव बलं हिमद्युतेः ॥ नवत्रिषष्टे
हिविवाहपूर्वतो नवर्णको मंडलतैलमंगलं ॥ अत्र प्रथमं
कन्यातैलं पश्चात्तैलं वरस्य इदं च रात्रौ प्रथमयामे के-
चिद्गोच्छिष्टतैलेन कन्यकाभिषिंचनमाहुः ततः कंकण-
बंधनं तदपि कन्यापूर्वमोचनं कंकणस्य वरपूर्वं ॥ अथ
कांजिकादिकरणम् ॥ मूलेन्द्ररुद्रश्रवणार्कपुष्यविश्वे

| स्तंभस्थापनं | | | | |
|--------------|-----|-------|-----|-----|
| ई. | वा. | नै. | आ. | दिश |
| ६१० | ६१९ | १०१२९ | २१३ | सू. |
| १० | १० | १३ | ८ | |

सचित्रानलरेवतीषु संस्थापनं कांजिककुंडिकायापारे रवे भूमिसुतस्य शस्तं दत्तनं कंडनं चैव व्यंजनं मोदकानि च यवार मंडपौ वेदी कुंकुमं वर्णकं तथा स्थिरभे स्थिरराशौ च जयानं दातिथौ शुभे वारे लग्ने नवांशे च लौणिका साधनं मतं ॥

| मेषादि राशीनां तैलसंख्याः | | | | | | | | | | | |
|---------------------------|-----|-----|----|-----|----|-----|-----|----|----|------|--------|
| मे. | वृ. | मि. | क. | सि. | क. | तू. | वृ. | ध. | म. | कुं. | मी. |
| ७ | १० | ५ | ७ | ६ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ७ | ३ |
| | | | | | | | | | | | संख्या |

अथ वेदी लक्षणं ॥ नारदः हस्तोच्छ्रितां चतुर्हस्तैश्चतुरस्त्रां समंततः स्तंभैश्चतुर्भिः सुश्लक्ष्णैर्वामभागे स्वसन्धनः मंडपोद्वासनं कार्यं समेतु दिवसे बुधैः ॥ षष्ठं तु विषमं नेष्टं मुक्त्वासप्तमपंचमौ ॥ अथ राज्ञां रवद्वा विवाहः ॥ चंद्रपंचांगसंशुद्धौ सौम्यायनविवाहभे राज्ञो गोधूलिके लग्ने खड्गोद्वाहः प्रशस्यते ॥ अथ हीनजातिविवाहे विशेषः ॥

| इजन्मभाद्रविभा | रवद्वाचक | |
|----------------|----------|-------|
| ३ | यवे | शुभे |
| ३ | मुष्टौ | शुभौ |
| ३ | मुष्टौ | शुभं |
| ३ | पक्षे | ५ शुभ |
| ३ | स्कंदे | शुभं |
| ३ | अयं | ५ शुभ |
| ३ | अस्कंदे | शुभ |
| ३ | पात्रे | ५ शुभ |
| ३ | पस्कंदे | शुभ |

अनुक्तमासतिथ्युक्षे संकीर्णानां शुभप्रदः विवाहो धनपुत्रायुः प्रीतिसौख्यकरो भवेत् ॥ अथ घर्घरणे मु० ॥ विवाह ताराश्रुतिवासवाद्यभैः सजेव चित्रामंगभैर विधमाः निशीहवाराः पतितांघ्रिभूविशांवापट्टवृद्धापनपंगलेहिताः

(१२४)

मुहूर्तसिंधुः

विषमेर्केद्वोः होरा

समेजचंद्रयोः

| | | | | | | | | | | | | |
|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-------|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | |
| १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ |
| सू. | चं. | सू. | चं. | सू. | चं. | सू. | चं. | सू. | चं. | सू. | चं. | स्वा. |
| ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० |
| चं. | सू. | चं. | सू. | चं. | सू. | चं. | सू. | चं. | सू. | चं. | सू. | स्वा. |

द्वेष्काणः प्रथम १० पंच २० नवा ३० धिपानां

| | | | | | | | | | | | | |
|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|------|-----|-------|
| मे. | वृ. | मि. | के. | सि. | का. | तू. | वृ. | ध. | म. | कुं. | मी. | रा. |
| १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |
| मं. | शु. | बु. | चं. | सू. | बु. | शु. | मं. | वृ. | श. | श. | वृ. | १० |
| २० | २० | २० | २० | २० | २० | २० | २० | २० | २० | २० | २० | २० |
| र. | बु. | शु. | मं. | वृ. | श. | वृ. | मं. | सू. | चं. | चं. | चं. | स्वा. |
| ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० |
| वृ. | श. | श. | वृ. | मं. | शु. | बु. | चं. | सू. | बु. | वृ. | मं. | ३० |

सप्तंशः समे सप्तमाद्विषमेत्यस्मात्

| | | | | | | | | | | | | |
|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|----|----|------|-----|---------|
| मे. | वृ. | मि. | के. | सि. | का. | तू. | वृ. | ध. | म. | कुं. | मी. | मानुसू. |
| १ | ८ | ३ | १० | ५ | १२ | ७ | २ | ९ | ४ | ११ | ६ | ४१७८ |
| २ | ९ | ४ | ११ | ६ | १ | ८ | ३ | १० | ५ | १२ | ७ | ८१४१६ |
| ३ | १० | ५ | १२ | ७ | २ | ९ | ४ | ११ | ६ | १ | ८ | १२५१२४ |
| ४ | ११ | ६ | १ | ८ | ३ | १० | ५ | १२ | ७ | २ | ९ | १०८१३४ |
| ५ | १२ | ७ | २ | ९ | ४ | ११ | ६ | १ | ८ | ३ | १० | २१२५४२ |
| ६ | १ | ८ | ३ | १० | ५ | १२ | ७ | २ | ९ | ४ | ११ | २५४२५१ |
| ७ | २ | ९ | ४ | ११ | ६ | १ | ८ | ३ | १० | ५ | १२ | २०१०० |

(१२६)

मुहूर्तसिंधुः

द्वादशांशाः स्वभान्

| मे. | वृ. | मि. | के. | सिं. | कं. | तू. | वृ. | ध. | म. | कुं. | मी. | मानम् |
|-----|-----|-----|-----|------|-----|-----|-----|----|----|------|-----|-------|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | २।३० |
| २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | ५।० |
| ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ७।३० |
| ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | १०।० |
| ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | १२।३० |
| ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | १५।० |
| ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | १७।३० |
| ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | २०।० |
| ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | २२।३० |
| १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | २५।० |
| ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | २७।३० |
| १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | ३०।० |

रव्यादीनामुच्चनीचत्रिकोणाः

| सू. | चं. | भौ. | बु. | वृ. | शु. | श. | ग्रहाः |
|-----|-----|-----|-----|-----|-----|----|-----------|
| ० | १ | १ | ५ | ३ | ११ | ६ | उच्चाः |
| १० | ३ | २० | १५ | ५ | २० | २० | नीचाः |
| ६ | ७ | ३ | २२ | ९ | ५ | २७ | त्रिकोणाः |
| ५ | २ | १ | ६ | ९ | ७ | ११ | |

विवाहल-

मेयःसमव-

र्गःशुभानां

चेत्तदात्रिय-

गत्ताभोना-

तिदूरेपरं

भावशुद्धिश्चेत्॥ अथलग्नसाधनं॥ तत्रेष्टकालघटिकाः पलानि
चाग्रिमसारिण्यांतदंशतन्मासीयसूर्येयोज्यपुनस्तादृशांकस-
मुदायो यत्रतत्रयथाक्रमालुग्नकलादिभिः सममायाति

मुहूर्तसिंधुः

(१२७)

[illegible]

(१२८)

मुहूर्तसिंधुः

लग्नसारिणी ७३० पलभायाः

| ० | मे. | च. | मि. | कै. | सिं. | कं. | तू. | च. | ध. | म. | कुं. | मी. | ० |
|----|-----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|---------|----|
| १६ | १० ४८ | २१ ३६ | १३ ३६ | २९ १० | २५ १७ | ३९ १० | ३७ ४ | ४३ १ | ४८ ३८ | ५२ ३५ | ५७ १७ | ० ४० | १६ |
| १७ | १८ ३४६ | ३१ ३२ | ४९ १३ | ३९ ४६ | २५ २२ | ३९ २३ | ३७ ४६ | ४३ १३ | ४८ ४८ | ५३ ३३ | ५७ ३४ | ० ४० | १७ |
| १८ | १८ ४४ | ४१ २८ | १३ ४४ | १६ ४४ | २५ ०८ | ३९ ०८ | ३७ ४४ | ४३ ४८ | ४८ २८ | ५३ ४९ | ५७ ३९ | ० ५४ | १८ |
| १९ | ४३ ४३ | ५९ २४ | १४ ३४ | १९ ४२ | २५ ५४ | ३९ ५४ | ३७ ४३ | ४३ ३४ | ४९ २४ | ५३ ४२ | ५७ ३४ | १ ५४ | १९ |
| २० | ४३ ४० | ०९ २० | १४ ०० | २० ४० | २६ ४० | ३९ ४० | ३७ ४० | ४३ ० | ४९ २० | ५३ ४० | ५७ ४० | १ ४० | २० |
| २१ | ५० ३८ | १९ २६ | १४ ३६ | २० ३८ | २६ ३६ | ३९ २६ | ३८ ३८ | ४३ ३८ | ४९ ३९ | ५४ ३८ | ५७ ३५ | १ ३४ | २१ |
| २२ | ५८ ३६ | १९ १३ | १४ ३३ | २० ३६ | २६ १३ | ३८ १३ | ३८ ३६ | ४४ १३ | ४९ १३ | ५४ ३५ | ५७ ३२ | १ ३३ | २२ |
| २३ | ५५ २४ | १९ ० | १४ ४८ | २० ३६ | २६ ५८ | ३८ ५८ | ३८ ३४ | ४४ ४८ | ४९ ५९ | ५४ ३३ | ५७ ५८ | १ ५८ | २३ |
| २४ | १४ २२ | ५९ ४८ | १५ २४ | २० २३ | २६ ५९ | ३८ ४४ | ३८ ३९ | ४४ ३४ | ४९ ३० | ५४ ३० | ५७ ३९ | १ ३४ | २४ |
| २५ | १३ ३० | ५९ ० | १५ ० | २१ ३० | २७ ३० | ३८ ३० | ३८ ३० | ४४ ० | ५० ० | ५४ ३० | ५७ ३० | १ ३० | २५ |
| २६ | १८ २८ | १० ५० | १५ २५ | २१ २८ | २७ १५ | ३८ ३६ | ३९ २८ | ४४ ५७ | ५० १८ | ५४ ४५ | ५७ २५ | १ ४८ | २६ |
| २७ | २८ ३६ | १० २२ | १५ २६ | २१ २६ | २७ २६ | ३८ २ | ३९ ३ | ४५ १३ | ५० ५२ | ५४ २५ | ५७ ३३ | १ ५५ | २७ |
| २८ | ४५ २४ | १० ३८ | १५ ४८ | २१ ४३ | २७ ४८ | ३८ ४८ | ३९ ३४ | ४५ ४८ | ५० ४० | ५५ २२ | ५८ ३८ | १ ४८ | २८ |
| २९ | ५५ २३ | १० ४४ | १५ २४ | २१ ३२ | २७ ३४ | ३८ ३४ | ३९ ३३ | ४५ २४ | ५० ४४ | ५५ २० | ५८ ३४ | १ ३४ | २९ |
| ० | मे. | च. | मि. | कै. | सिं. | कं. | तू. | च. | ध. | म. | कुं. | मी. | ० |

मुहूर्तसिंधुः

(१२९)

प्रोर्ध्वाधः क्रमालग्नं स्फुटं यत्सूर्य राश्यंशसमानकोष्ठे घट्या
 दिक्स्वेष्टघटीयुतंतत् तत्तुल्यघट्यादिभवेद्वियत्र तत्तिर्यगू-
 र्ध्वाकमितंहिलग्नं स्वेष्टघट्यादियुक्तंतत्स्पष्टघट्यादिको नितं
 षष्टिघ्नं विभजेत्याह कलाद्यंतरतः स्फुटं॥ अथ दशमोपयो-
 गिनतं॥ पूर्वनतं स्याद्दिनरात्रिखंडं दिवा निशोरिष्टघटीविहीनं
 दिवा निशोरिष्टघटीषु शुद्धं द्युरात्रिखंडं त्वपरं नतं स्यात् दिन
 रात्र्यर्धं दिनरात्रीष्टेन हीनं पूर्वनतं दिनरात्रीष्टं दिनरात्र्यर्धो-
 नमपरनतं भवति तत्र लग्नद्वयविराश्यंशकोष्ठानामंकेषु न-
 तघटिका संयोज्य क्रमात्पूर्वोक्ता देवलग्नं दशमं भवति तच्च कदा-
 चित् चतुर्थगायाति॥ अथेतरभावानां साधनं॥ लग्नोन-
 तुर्यतः षष्टांशयुक्त उस्तनोः संधिस्ततः धनभावस्ततो धन-
 भावसंधिस्ततस्तृतीय भावस्ततस्तृतीय भावसंधिः पुनः
 षष्टांशं एकोनितं चतुर्थे योज्य सुखसंधिस्ततः पंचम भाव
 स्ततः पंचमसंधिस्ततः षष्ठ भावस्ततः षष्ठ भावसंधिः पुन-
 रेकैकं भावसंध्योर्योज्य सर्वे १२ सिद्धा भविष्यन्ति

॥दशम सारिणी॥

[illegible]

मुहूर्तसिंधुः

(१३१)

दशमसारिणी.

| ० | मे. | वृ. | मि. | क. | सि. | क. | नू. | वृ. | ध. | म. | कुं. | मी. | ० |
|----|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----|
| १५ | ५८ ४८ | १० ३६ | १६ ३६ | २१ ४८ | २६ ३६ | ३० ३६ | ३५ ३६ | ४० ३६ | ४६ ३६ | ५१ ४८ | ५६ ३६ | ५५ ३६ | १५ |
| १६ | ५८ ४६ | १० ३३ | १६ ३३ | २१ ४६ | २६ ३३ | ३० ३३ | ३५ ३३ | ४० ३३ | ४६ ३३ | ५१ ३३ | ५६ ३३ | ५५ ३३ | १६ |
| १७ | ५८ ४८ | १० ३० | १६ ३० | २१ ४३ | २६ ३० | ३० ३० | ३५ ३० | ४० ३० | ४६ ३० | ५१ ३० | ५६ ३० | ५५ ३० | १७ |
| १८ | ५८ ४८ | १० २७ | १६ २७ | २१ ४० | २६ २७ | ३० २७ | ३५ २७ | ४० २७ | ४६ २७ | ५१ २७ | ५६ २७ | ५५ २७ | १८ |
| १९ | ५८ ४८ | १० २४ | १६ २४ | २१ ३७ | २६ २४ | ३० २४ | ३५ २४ | ४० २४ | ४६ २४ | ५१ २४ | ५६ २४ | ५५ २४ | १९ |
| २० | ५८ ४० | १० २१ | १६ २१ | २१ ३४ | २६ २१ | ३० २१ | ३५ २१ | ४० २१ | ४६ २१ | ५१ २१ | ५६ २१ | ५५ २१ | २० |
| २१ | ५८ ३८ | १० १८ | १६ १८ | २१ ३१ | २६ १८ | ३० १८ | ३५ १८ | ४० १८ | ४६ १८ | ५१ १८ | ५६ १८ | ५५ १८ | २१ |
| २२ | ५८ ३८ | १० १५ | १६ १५ | २१ २८ | २६ १५ | ३० १५ | ३५ १५ | ४० १५ | ४६ १५ | ५१ १५ | ५६ १५ | ५५ १५ | २२ |
| २३ | ५८ ३८ | १० १२ | १६ १२ | २१ २५ | २६ १२ | ३० १२ | ३५ १२ | ४० १२ | ४६ १२ | ५१ १२ | ५६ १२ | ५५ १२ | २३ |
| २४ | ५८ ३३ | १० ९ | १६ ९ | २१ २२ | २६ ९ | ३० ९ | ३५ ९ | ४० ९ | ४६ ९ | ५१ ९ | ५६ ९ | ५५ ९ | २४ |
| २५ | ५८ ३० | १० ६ | १६ ६ | २१ १९ | २६ ६ | ३० ६ | ३५ ६ | ४० ६ | ४६ ६ | ५१ ६ | ५६ ६ | ५५ ६ | २५ |
| २६ | ५८ २८ | १० ३ | १६ ३ | २१ १६ | २६ ३ | ३० ३ | ३५ ३ | ४० ३ | ४६ ३ | ५१ ३ | ५६ ३ | ५५ ३ | २६ |
| २७ | ५८ २६ | १० ० | १६ ० | २१ १३ | २६ ० | ३० ० | ३५ ० | ४० ० | ४६ ० | ५१ ० | ५६ ० | ५५ ० | २७ |
| २८ | ५८ २४ | १० ० | १६ ० | २१ १० | २६ ० | ३० ० | ३५ ० | ४० ० | ४६ ० | ५१ ० | ५६ ० | ५५ ० | २८ |
| २९ | ५८ २३ | १० ० | १६ ० | २१ ७ | २६ ० | ३० ० | ३५ ० | ४० ० | ४६ ० | ५१ ० | ५६ ० | ५५ ० | २९ |
| ० | मे. | वृ. | मि. | क. | सि. | क. | नू. | वृ. | ध. | म. | कुं. | मी. | ० |

तथा चानया परिपाट्या भावान्निर्मयलग्नं सप्तवर्गं शुद्धं चेन्महो-
 त्तमं लग्नं भावसमेषु ग्रहेषु फलं पूर्णसंधि समेषु फलाभावः व्या-
 सः सप्तवर्गं च षड्वर्गं पञ्चवर्गं शु भावहं चतुर्वर्गं च संग्राह्यं त्रिव-
 र्गं हानिकृद्भवेत् वसिष्ठः इष्टैश्च चेष्टादिबलोपपन्नैश्चतुर्भिर्-
 प्यं बरगैर्विलग्नं अनिष्ट षड्वर्गमपीष्टमाहुः स्वशिक्षिते गौत-
 मगालयाद्याः अथात्रोक्ता अपि स्मृत्यर्थमेकविंशतिदोषाः
 कुपंचांग भवः १ संक्रातिः २ सग्रहो विधुः ३ कर्तरी ४ षण्मृति
 लग्नचंद्रः ५ त्रैविध्यंगंडांतं ६ कुषड्वर्गः ७ भृगूरिपुगः ८ मौ-
 मः ९ लग्नास्तदोषः १० कुमुहूर्तः ११ पुंस्त्रीजनूराशिगृहाष्टम
 लग्नं १२ विषानाड्यः १३ अनुक्तभांशाः १४ एकार्गलं १५ वार
 दोषः १६ औत्पातभं १७ ग्रहएर्क्ष १८ क्रूरविद्धं १९ क्रूरग-
 म्यं २० पात २१ अन्येपिवर्ज्याः अकालवर्षा १ करकापातः २
 अतिगर्जनः ३ हिमपातः ४ प्रचंडानिलः ५ परिवेषाः ६ प्रत्य-
 र्कचंद्रः ७ इंद्रधनुः ८ तिथ्यृक्षवारभवाः कुयोगाः ९ एते पूर्वो-
 क्ताश्च सतिसंभवे वर्ज्याः अथ प्रतिकूलविचारः वरवध्वोः
 कुले विवाहनिश्चये जाते सति मरणे त्रिपौरुषे मासो-
 त्तरं विवाहः गुरुमरणेतुवत्सरादूर्ध्वं विवाहः निश्चयस्तु वा-
 ग्दाने कृते नां दीश्राद्धे जाते वा देशाचाराज्ज्ञेयं सूतकनिर्गमे
 शान्त्या वा करणीयं गुरुभिन्ने इत्युद्वाहः ६॥ अथ वधूप्र-
 वेशः ॥ नूतनपरिणीताया वध्वाः प्रथमो भर्तृगृहे प्रवेशो व-
 धूप्रवेशः सच विवाह दिवसात् २।४।६।८।१०।१२।१४।५।७।९

दिवसेषु शुभः उर्ध्वं विषममासवर्षयोः पंचवर्षात्परतः कामचारः नारदः सममासे समवर्षे यदिललना भर्तृगृहमुपयाति भर्तृहरते ह्यायुः स्वयमपिरिष्टं समाप्नोति फलोदये वधूप्रवेशो व्रतबंधमोक्षां पुंसां पुनर्दारपरिग्रहं च नाब्दे द्वितीये विदधीत विद्वान् प्राहुर्वसिष्ठा त्रिपराशराद्याः उ. ३ रो. ह. ऽश्वि. ति. अभि. मृ. रे. चि. अनु. श्र. ध. मूं. म. स्वा. एषु भेषु सू. भौ. बु. विनास्थिरलग्ने द्विस्वभावे वा पूर्णा. जया. नंदा तिथिषु विवाहमासे च केचिद्बुधमंगी कुर्वन्ति वारेषु विवाहभातिरिक्तभानि निषेधयन्ति तथा रात्रावेव वधूप्रवेश इति च कथयन्ति रात्रौ विवाहभेषास्तः सन्मुहूर्त्ने स्थिरोदयः वधूप्रवेशो नैवान्नप्रतिशुक्राद्भयं विदुरिति .

| विवाहात्प्रथममासेषु | | | | | | पितृगृहे |
|---------------------|-------|----------|---------|-----------|-----------|----------|
| ज्येष्ठे | मलमा. | आषा. | पौषे | क्षयमा. | भर्तृगृहे | चैत्रे |
| ज्येष्ठं | पतिं | श्वश्रूं | श्वशुरं | स्वयंमृता | फलं | स्वपितरं |

वधूप्रवेशः अथ भर्तृगृहात् पितृगृहागमनमुहूर्त्तदारुण. उग्र. भिन्नेषु भेषु रा. सू. भौ. भिन्नवारे सत्तिथौ लग्ने च कुंयोग राहित्ये ॥ अथ दीपमालिकायां दीपवृद्धापनं चंद्रतारावले सायं मेपलग्ने नारीकृतनीराजनं अतएव कृतोपयामोपि पुमान्गृहीत्वं वृद्धापन्नादीपदिने समेति अतो दीपोत्सवदिने चंद्रताराशुद्धावेव वधूप्रवेशद्विरागमौ कार्यौ परमागामि

दीपावल्यामव्यवहितायां न तत्र गुरुशुक्रयोरस्तादिविचारः सिं-
हगतादिविचारश्च ॥ अथ द्विरागमः ॥ सचकृतविवाहाया द्वि-
तीयवारं भर्तृगमो द्विरागमः विवाहतो विषमाब्दमासयोः मेष
वृश्चिककुंभगत रवौ शुक्लपक्षे शुभवारे वरस्य रविगुरुशुद्धौ
ह.ऽश्वि.ति.ऽभि.उ.३रो.स्वा.पु.श्र.ध.श.मृ.रे.चि.अनु.मू.ए-
षु भेषु २।३।६।१२ लग्नेषु सन्मुषदक्षिणयोः शुक्रं वर्जयित्वा बा-
लकगर्भवती नवोढा यात्रिकश्च संमुखदक्षिणशुक्लेन गच्छेयुः
गच्छंति चेत् बालो म्रियते गर्भवती स्त्रवद्गर्भा भवति नवोढा वं-
ध्या भवति यात्रिको हतार्थो भवति ॥ अथास्य प्रतिप्रसवः ॥
देशाद्युपद्रवे राजोपद्रवे दुर्भिक्षोपद्रवे विवाहयात्रायां तीर्थ-
यात्रायां राजभये वधूप्रवेशे च शुक्रदोषो न एक ग्रामेपि पि-
त्ये गृहे कुचपुष्पसंभवेपि शुक्रदोषो न रबीज्यादिशुद्धिरपि
कृताकृताकुचपुष्पसंभवे कुचपुष्पौ यदा पित्येन शुद्धिरविजीव-
योः वरस्य वध्वाकाव्यश्च सन्मुखो दक्षिणोथवा शुभे लग्ने
चंद्रवले सन्तिथौ धवसद्गानि यायान्तारीतदानस्यादोषोत्थो
धर्मसंकटात् भृगुः श्रंगीर वत्स वसिष्ठ कश्यप अत्रीणां कु-
लेपि न दोषः रेवत्यादिकृत्तिकांलं चंद्रेशुक्रौ धो भवति तदापि न
दोषः ॥ अथ नूतनवध्वाः पाककर्म ॥ मृगोत्तरातिष्यकृशानुशा-
क्रे श्रुतित्रये ब्रह्मद्विदैवपौष्णे शुभे तिथौ व्याररवौ प्रकुर्यात्
नवावधू नूतन पाककर्म स्थिरे लग्ने सुखे शुद्धे सप्तमे च बला-
न्विते रंध्रे खेटविहीने च नवोढा पाकमाचरेत् ॥ द्विरागमः ॥

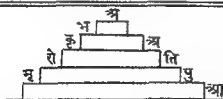
॥ अथाग्न्याधानम् ॥ ९ ॥ अग्न्याधानं दारकाले दायाद्यकाले
 वा उत्तरायणगे रवौ तथा स्वशाखाधिपोदये क्वचिदक्षिणा-
 यनेपि तथा जनके ग्रजेवोपासिताग्नौ तथा गुरुशुक्रोदये क्ष-
 याधिकमासराहित्ये जनकाग्रजयोराज्ञया च चंद्रबले रिक्ता
 रहिततिथौ शनिवर्जितिवारे ज्ये. कृ. ति. मृ. रे. उ. ३ रो. वि. एषु
 भेषु केचित् ह. चि. पु. कथयन्ति अधिकानि ११।४।१२।१०
 एतद्भिन्नलग्ने एषां नवांशेपि चंद्रोपिलग्न्येन शुभः रवि-
 वारे चेदग्न्याधानं रविर्नवमः चंद्रवारे चंद्रः पंचमः भौमे भौ
 मस्तृतीयः जीवे जीवोलाभे बुधे बुधः २।११।१०।५।३ एतद्भाव-
 गतः शुभफलो भवत्यविरताग्निः धनुर्लग्ने जीवयुते अथवा मे-
 षगर्भौमे ७।१० गते ३।६।११ गतेषु र. चं. श. राहुषु शुभो यो-
 गः अष्टमगे चंद्रे स्त्री नश्यति पापेष्टमगे स्वयं नश्यति शुभे
 ष्टमे उभयो रोगः लग्नस्वामिनि नीचे युद्धजिते च खलग्रहैर्दु-
 ष्ठांगतिं याति जीवचंद्रमंगलैः नीचैरस्तगैर्विजितैः शत्रुगृहगे
 रष्टमगैर्वा अग्न्याधानं न कुर्यात् तथा चैत्रे मेषरवावपि चतु-
 र्थग्रहरेदक्षिणायने रात्रौ च नारंभः अथ पाकयज्ञानां कालं
 नामानि च तत्तद्देदोदित भवारकालेषु पाकयज्ञाः ७ ते च अ-
 ग्न्याधेयः १ अग्निहोत्रं २ दर्शपूर्णमास्यौ ३ चातुर्मास्यानि ४
 वैश्वदेवपर्ववरुणप्रपासपर्वशाकवेधपर्वशुनासीरीयपर्व ४
 पशुबंध ५ सौत्रामणी ६ पाकयज्ञः ७ एते सप्तहविर्यज्ञसंस्थाः
 अथ सोमसंस्थाः अग्निष्टोमः १ अत्यग्निष्टोम २ उक्थ ३

(१३६)

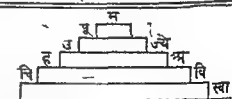
मुहूर्तसिंधुः

षोडशी ४ अतिरात्र ५ वाजपेय ६ आसौर्यामिः ७ एते सोमसं-
 स्थाः अथ पाकयज्ञसंस्थाः ७ श्रवणाकर्म १ आश्वयुजी
 कर्म २ आग्रहायणी कर्म ३ अपूपाष्टका ४ मांसाष्टका ५ शा-
 काष्टकाः ६ वर्षाष्टका ७ एते शुक्र गुर्वोरस्तेग्रहणेक्षयमलमा-
 सौसंक्रांतिश्चैतान्दोषान्परित्यज्य पाकयज्ञानाहुः सोमसं-
 स्थानमधौ निदाघे शिशिरे वेदविभौ २।७।९।१२ राशिगते
 ग्न्याधानोक्ततिथिवारभेषु ॥ अथ महाहोमः ॥ सौम्याय-
 ने दूषणमुक्तवासरे शुभतिथौ सुलग्ने पूज-नं-तिथिषु र-
 चं-बु-शु-जी-वासरे आ-श्र-रो-पूभा-ह-एषु भेष्वपि अ-
 ग्न्याधानोक्त भेष्वपि महारुद्रादिहोमान् जगुः अथ पूर्णाहु-
 तिः पूर्णातिथौ पूर्वोक्ताहुति भे शुभवासरश्चुभलग्ने ॥ अथा-
 वभृथस्नानम् ॥ नंदाजयासुपूर्णायां शुभलग्ने शुभवारे शु-
 भयोगे च अथात्र चक्रत्रयं दर्शयति

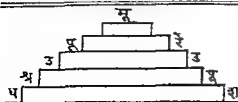
उत्तरे हयाधिप



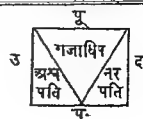
पूर्वे गजाधिप

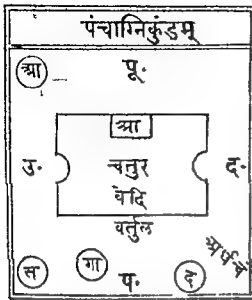


दक्षिणे नराधिप



निदर्शनम्





एषु यथा क्रमात्पापवेधे भंगं बोध्यं आधारे पराधीनः आसने नीतियुक्तो प्रधानपुरुषादे शीप्रजाशांतिकरः पहर्षे पूर्व तुल्यः सिंहसिंहद्वसंग्रामप्रियः मंत्रिणामप्यसाध्यः सिंहासने नेजस्वीभीषणाकृतिश्चलच्चित्तो महाक्रोधी प्रजा पीडाकरः

अस्मिन्पापवेधोपनिचः चंद्रे शुभावस्थागते पुंलग्ने च अभिषिक्तो नरपतिर्ब्राह्मणश्च शिव भाक् भवति अथैषु आवश्य- कविचारो वाज पेयादिकर्तुर्ब्राह्मणस्य इतरेषां तुरंगमेशस्य तुरंगमे गजेशस्य गजेनरेशस्य रथे शुद्धिर्बोद्ध्या अथैषु क्रमात् फलं शनिफलं च प्रदर्शयते

| तुरंगचक्रं तुरगभात् | | | | मज चक्रं गजभात् | | | |
|---------------------|--------|-----|-----|-----------------|--------|-----|-----|
| २ | मुख | शुभ | ० | २ | मुखं | शुभ | ० |
| २ | नेत्रे | शुभ | ० | २ | शुडा | शुभ | ० |
| २ | कर्णे | शुभ | शनी | २ | नेत्रे | शुभ | ० |
| २ | द्वार | शुभ | शनी | २ | कर्णे | शुभ | शनी |
| २ | युद्ध | शुभ | शनी | २ | मौलि | शुभ | ० |
| ८ | अंग्ठी | शुभ | शनी | ८ | पादौ | शुभ | शनी |
| ५ | उदर | शुभ | ० | २ | लागू | शुभ | शनी |
| ५ | पृष्ठे | शुभ | शनी | ४ | पृष्ठ | शुभ | शनी |
| | | | | ४ | उदर | शुभ | ० |

| रथचक्रैरविलुक्त भान् | | | |
|----------------------|----------|------|-----|
| ३ | योक्त्रो | शुभ | ० |
| ३ | नीडे | शुभ | ० |
| ३ | दडे | ऽशुभ | शनी |
| ३ | ध्वजे | ऽशुभ | शनी |
| ३ | मध्ये | शुभ | ० |
| ३ | पाष्णी | शुभ | ० |
| ३ | युगे | ऽशुभ | शनी |
| ३ | अधः | शुभ | ० |
| ३ | उर्ध्व | ऽशुभ | शनी |

दुष्टांशकेजेयदिहेल्पपत्यं तदास्य
 पूज्यं पटबंधनंयुतं मखाभिषेकोहय
 हन्तृपद्मं बलक्षयंतं ब्रह्ममात्स्या-
 त् गजेकुदेशे यदिहंस संततिर्नवा-
 जपयादिमखांत मज्जनात् पट्टा-
 भिषेकादनुवेति संगरात्सम्प्राडि
 लेशश्चयशोजयश्रियम् रथिनो

यदिनामभंशु भांगे हरिजस्तत्स्थलजो मखा भिषेकः न समाहि-
 तवन्हिना च राज्ञा क्रियते पट्टरथाधिरोहणं इति सत्रविरामम-
 ज्जनं ह्युदितं यल्लिखितं मयैतदत्र त्रिविधावनिपाभिषेककाले
 त्रिविधैतद्वलयेक्षणोपयोगः ॥ अथवानप्रस्थमुहूर्तः ॥ प्रतिपौ-
 त्रमुखं विलोक्य महामखव्रतान्निर्वर्त्य देवशयनभिन्ने अ-
 स्तवर्जिते चंद्रबले लघुः धीरः आः मृः रेः अः धः पुः हः एषु भे-
 षु शुभवारे ५।६।३।७।८।११।१२ लग्नेषु शुभेषु केंद्रगेषु ९।५।
 बुः शुः जीवयुते पूर्णाजयानंदातिथिषु ॥ अथ सन्यास मुः ॥ श्रः
 धः हः आः रेः मृः तिः उः ३ एषु भेषु रिक्ता रहित तिथौ चं बृः बुः
 सूः वारेषु २।५।८ लग्नेषु केंद्रे शुभयुते ॥ अथ दीक्षा माह पूर्वा-
 क्त भेष्वदितियुतेषु आर्द्ररहितेषु पुंलग्ने सशुभे शुभवासरे
 लग्ने आतुरश्चेत्सर्वकालं ॥ अथ स्त्रीशूद्रयोर्विशेषः पूः ३
 शः अश्विः मैत्रभेः पुः धः हः एषु भेषु शः सूः बुः शुः वारेषु विप-
 र्वरिक्तेतिथौ ॥ अथ पुष्पादिस्नानशुद्धिमाह ॥ शुद्धकाले रः चं

शु.वृ.वासरे उग्रदारुणवर्जितभे शुभलग्ने कुयोगविष्ट्यादि
रहिते आषाढ कृष्णपक्षं भाद्रपदाश्विन मासौ वर्जयित्वा कृष्ण
दशम्यंतं तथा गुरुशुक्रयोरुदये पुष्पस्नानं एकवासस्नानं
च विधेयम् इत्यग्न्याधानं ९ ॥ अथ राजाभिषेकः १० ॥ उ-
त्तरायणगे रवौ तथा वृश्चिकार्के तुलार्के कन्यार्के च सार्वभौमा-
नां मंडलाधीशानां आषाढश्रावण भाद्रपदव्यतिरिक्तमा-
से तथा मलमासक्षयमास्रहिते गुरुशुक्रोदये चंद्रबले च
भौमरविजन्मेशदशमेशानामुदये जन्मदशा साबल्ये च
दुर्गाधिपं मंडलाधीशवत् ग्रामाधीशं सदारिक्तातिथिव-
र्जिते भद्रादिकुयोगराहित्ये जी. चं. र. बु. शु. वारेषु सव-
लेषु उदितेषु भौमवारेपि क्षत्रियराज्ञोभिषेकः कैश्चन चै-
त्रोनिषिद्धः उ. ३ रो. मृ. ज्ये. ह. ऽश्वि. ति. ऽभि. श्र. ऽनु. रे.
कि. एषु भेषु ५। ६। ७। ८। ३। ११। १२ शीर्षोदये लग्ने स्वजन्मल-
ग्नराशिभ्यामुपचये ३। ६। १०। ११ पापैः ३। ६। ११ गतैः शुभैः
१। ४। ७। १०। १। ५। २ गतैः शीर्षोदयांशे गुरुलग्नकोणे १।
५। ९ भौमः ६ शुक्रः १० एदयोगे भिषिक्तो राजलक्ष्म्या मो-
दते पापग्रहे २। १२ गतैः निःस्वः १ लग्नोपगैरोगी ७। ४ सप्त
चतुर्थगैः पंदच्युतः ५ पुत्रगैः सर्वसुखहीनः १० कर्मगैर्भ्र-
ष्टोत्सवोऽमृत्युगैरनायुः १२। ८। ६ चंद्रः प्राणहापापै ३। ६।
११ जर्षि १० बुधे ४ राजलक्ष्मीसिद्धिः शुभै ५। ९। १। ४। ७। १०
। ३। २। ११ गतैः पापै ३। ६। ११ गतै ६। ८। १। १२ एतद्भावभि-

न चंद्रेणाभिषेकः शुभः ३।११ सू. श. १०।४ जीवः स्थिर-
राज्यः ॥ अथातः पत्रचक्रमाह ॥

| सूर्यभात | | | ग्रहनक्षत्रयोगे छत्रधृतिः | | |
|----------|-----------|-----------------|---------------------------|---|----------------|
| २ | तले | वत्सार्थहिनं | | ॐ | |
| ४ | स्कंदयुगे | श्रेष्ठम् | | ॐ | पुनर्वसु |
| ४ | पश्चात् | मरणम् | | ॐ | कृत्तिका |
| ४ | पूर्वं | कीर्तिवर्द्धनम् | | ॐ | उभाद्रपदा |
| २ | भद्रासने | भीतिम् | | ॐ | श्रवणं |
| ४ | चामरयोः | हितम् | | ॐ | मूलं |
| ४ | पत्रकरणे | मरणम् | | ॐ | स्वातिः |
| ३ | मौलो | सार्वभौमताम् | | ॐ | पूर्वाफाल्गुनी |

उभयचक्रशुद्धशुद्धौ अभिषेके महाराजः स्यात् अथ तत्कालाभिषेकमाह तपोधनाराधितराज्यलब्धौ तत्कालमार्यास्त्यभिषेकमृचुः स्ववंशराज्येन्यविभाजतेवा राज्यावसाने नरदेवतायाः सूर्यव्यतिरिक्तैः पंचभिरुच्चैर्नीचकुलजोपिराजा तस्याप्यभिषेकादिर्नजन्मनोभिषिक्तत्वात् दारितः छत्रमंडले भद्रशुद्धिं स्वीकरोति सत्याचार्यादयस्तु सिंहासने भद्रशुद्धिं कथयन्ति वत्सः पताकाशुद्धौ स्वीकरोति अपरे चामरे भद्रशुद्धिं

स्याकुर्वन्ति एतदग्न्याधाने गजपत्यादि पर्यायैर्दर्शितं वशिष्ट
 रैभ्यान्निपराशरादिभिरातपत्रचक्रभशुद्धौ स्वीकृतं ॥ अथ स-
 भारचनामाह ॥ शुभवासरतिथिभोदयेषु गोचरशुद्धौ धनुरा-
 कारान्त्रस्तनृपासनोदरां विदध्यात् ॥ अथ सभाप्रवेशमाह ॥
 सध्वजं गजेन्द्रमग्ने कृत्वानुरंगान्सादिनोरथान्द्वारपालान्मन्त्रिण-
 श्वपुरोहितोक्तसमये राजयोगयुते लग्ने प्रविशेत् गणेशादिपू-
 जनपूर्वकं भद्रासनादिरोहणं कुर्यात् शिल्पवर्गपुरोधसंचगो-
 भूहिरण्यादिभिः संतोषयेत् ॥ अथ दामबंधनमुहूर्तः ॥ नृपाभि-
 षेकोक्तदिने गृहनगरग्रामादिषु ॥ अथ पटमंडपमुः ॥ उ० १ रो-
 मृ० रे० चि० ऽनु० श्र० ध० एषु भेषु चं० बु० जी० शु० वासरे रिक्ता र-
 हिततिथौ ॥ अथ वितानादिवंधनमुहूर्तः ॥ शु० जी० बं० र० वा-
 सरे उर्ध्वास्यभैः शुभयुक्तस्थिरलग्ने कंटके शुभयोगे रिक्ता
 रहिततिथौ कुयोगराहित्ये ॥ अथ सेनारचनमुः ॥ स्वा० भ० ऽऽ
 श्ले० ध० रे० ह० ऽनु० पु० उ० ३ रो० एषु भेषु जया ३।८।१३ तिथिषु रु-
 भौ० वारयोः स्थिरलग्ने षष्ठे पापयुते अष्टमशुद्धे लग्ने ॥ अथ
 युवराजाभिषेकस्तु ॥ राजाभिषेकवत् ॥ अथ राज्ञांचामरछ-
 न्नदोलासिंहासनादिधारणमुः ॥ रो० उ० ३ अनु० चि० मृ० रे० ऽभि-
 ति० ऽश्वि० ह० ज्ये० श्र० एषु भेषु जयानंदातिथ्योः शुभवासरल-
 ग्ने दशमाष्टमशुद्धे इति राज्याभिषेकः ॥ १० ॥ अथ यात्रामुः ॥ ११ स्व-
 देशादितरत्रगमनं ग्रामांतरगमनं गेहाद्देहांतरगमनं वा यात्रा
 अस्यांचराज्ञः प्रतिशुक्रादिको दोषः यतो वसिष्ठः प्रतिशुक्रं

प्रतिबुधं प्रत्यंगारकमेव च अपिशक्रसमो राजा हतसैन्यो निवर्त्त-
 ते नृणां तु साधारणो दोषः यत्तु प्रतिशुक्रादिदोषोऽयं प्रथमे ग-
 मने नृणां राज्ञां विजययात्रायां प्रतिशुक्रं च दुष्यतीति वचसा
 राज्ञां दोषाभावः तन्नुच्छम् विजययात्रेत्यस्य विजयदशम्यामार-
 ध्य यात्रायामित्यर्थः तदारब्धायां प्रतिशुक्रादिदोषो भवत्येव पू-
 र्वोक्तगोत्राणां तथा रेवत्यादि मृगांत भेषु चंद्रे च दोषो न यात्रामुहू-
 र्त्तं तु ज्ञातजन्मनामेव नृणां अज्ञातजन्मनां तु प्रश्नशकुनादिभिः
 गर्गः सदशायां शुभायात्रा अष्टवर्गेशु भेसमा न्यूनात्काल-
 लग्नादौ तिथ्यादावधमामता ॥ जननराशितनूयदिलग्नगौतद-
 धिपौ यद्विधा तत एव ॥ त्रिरिपुरवायुगृहं यद्विचोदयो विजय एव
 भवेद्दसुधापतेः रिपुजन्मलग्नभमथाधिपौ तयोस्तत एव
 वोपचयस ३।६।१०।११ द्वावेद्भवेत् हिवुकेद्युनेयशुभवर्गक-
 स्तनौ यदिमस्तकोदयगृहंतदाजयः स्वजन्मभात् १।३।५।७
 तारकानेष्ट ॥ अथ यात्राभेदाः ॥ लघु १ मध्य २ दीर्घ ३ द्वादश
 योजनांतं लघु १ पंचविंशतियोजनांतं मध्या २ अतः परं दी-
 र्घा तथा युद्धयात्रा १ तीर्थयात्रा २ लाभयात्रा ३ अथ यात्रास-
 मयः ॥ सर्वासु यात्रासु शुक्रास्ते नगंतव्यम् तथा जन्मेशे जन्मद-
 शेशे स्तंगतेऽपि नगंतव्यं तीर्थयात्रासु गुरुशुक्रयोरस्तकालो-
 वर्ज्यः सिंहगुरुश्च नीचगोपिवर्ज्यः न तीर्थकामः सति पा-
 णिजायुधे नृजौ शिशौ हृद्धघने च नीचगे नरो मरार्थं गमनं प्र-
 कारयेद्विनेव कुंभस्थलग्नौ तमी गथातिथौ चतुर्थ्यामथ पंच-

मुहूर्तसिंधुः

(१४३)

| यात्रामासाः | | | | ऋतुफलम् | | | | |
|-------------|---------|----------|-----|----------|--------|------|---------|-------|
| मे. | सिं. | ध. | रवौ | श्रेष्ठा | वर्षा | शरत् | शिशिर | वसंतः |
| मि.क. | दृ. तु. | कुं. मी. | रवौ | मध्या | निद्या | शुभा | शुभा | शुभा |
| कर्क | दृश्चिक | मीन | रवौ | ऽध. | हिम | निषि | ग्रीष्म | निषि |

यात्राभान्याह

| अश्वि | पु. | ऽतु. | मृ. | ति. | रे. | ह. | श्र. | ध. | शुभा |
|------------|----------|---------|--------|-------------|-----------|-------------|--------------|-----------|-----------------------|
| रो. | उ.३ | पू.३ | ज्ये. | मू. | श. | ० | ० | ० | मध्या |
| भ. | कृ. | आ. | ऽश्ले | म. | चि. | स्वा. | वि. | ० | निद्या |
| श्र. | ह. | मृ. | पुष्य | ० | ० | ० | ० | सर्वदा | शुभा |
| पू.३ १६ | कृ २१ | म ११ | भ ७ | स्वा. १४ | वि. १४ | ज्ये. १४ | ऽश्ले. १४ | चि. ४० | आवश्यकं त्याज्यघटि |

तिथयः

| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | उभयप |
|-----------------------|------------------|------------------|-----------------|-----------------|---------------------|----------------------------|------------------|-------|----|----|----|------|
| विनाशमोदप्रतिपत्तयागु | चतुर्थरात्राभवती | अश्विनामंगमनतोषि | अनेकविधसौख्यफलं | अभीष्टफलभूमिफलं | अभिप्रेतमभिप्रेतफलं | विविधसौख्यसमिद्धिः तायः | मेघाफलागुवृद्धिः | फलाति | | | | |

दश्यां षष्ठ्यां नवम्यामुपयाति यातां शत्रोर्वशं याति शतैकदंति दानांबुसंसिक्तमहीतलोपि यो द्वादशीं प्राप्य चतुर्दशीं वा मतिं प्रयाणे कुरुते दृष्टीं वासनाशमायांत्यचिरेण राजा राजानुमा मात्यविलोमचेष्टः बृहस्पतिः सर्वाः स्युस्तिथयः श्रेष्ठाः शुक्ले त्वाद्यद्वयं विना कृष्णेप्यंत्यत्रयं चैव षष्ठीं रिक्तां परित्यजेत्

नारदः षष्ठ्यष्टमी द्वादशीषु रिक्तामापूर्णिमासु च यात्राशु-
कृ प्रतिपदि निधनायाधनाय च ॥ अथ मासेषु विशेषः ॥ चंद्र
सूर्ययोः समायनत्वे सर्वदिक्षु गमः शुभो दिवा रात्रौ च

वारफलम्

| सू. | चं. | मं. | जु. | ह. | शु. | श. | वारः |
|-----|-----|-----|-----|----|-----|----|-------|
| सू. | चं. | मं. | जु. | ह. | शु. | श. | फलानि |

दिक्शूलसमुदायेन

| ई. | | पूर्व | | आ. |
|------|--------------------------------|--------------------------|--------------------------|--------|
| | बु. श. | प्रातः चं. श. ज्ये. | चं. जी. | |
| उ. | अर्द्धरात्रे मं. बु. उ. भा. | | मध्याह्ने जी. पू. भा. | द. |
| | बु. सू. | संध्यायां सू. शु. रो. | जी. शु. | |
| वाय. | | पश्चिम | | नै. क. |

अत्रोत्तरस्यां पूर्वस्या अंतर्भावः दक्षिणस्यां पश्चिमाया
अंतर्भावः भिन्नायनत्वे दिवारविदिशं रात्रौ चंद्रदिशं
चातुर्मास्ये फाल्गुनशुक्लपक्षे च बृहद्यात्रा निषिद्धा तथा
सूर्यभौमशानिभिर्विषमैस्तथोपरागदूषितायने च समुद्र
यात्रा बृहद्यात्रा च न तथा द्विस्वभाव राशिगसूर्ये बृहद्या-
त्रान तथा २।५।८ गते सूर्ये नौयात्रान तथा भाद्रपदे वृ
हन्मध्ययात्रेन आश्विने तीर्थयात्रान

मुहूर्तसिंधुः

(१४५)

| अथवारकाल | | | वारपाशः | | | | | |
|------------------------------|-----------------------------|-------------------------------|---------------------------------|------------------------------------|--------------------------------|----|-----|-------|
| ई | पू | आ | ई. बु | पू. भी | आ. चं. | | | |
| उ. सू. | वारका. | जी. द | उ. जी. | वारपाश | सू. द | | | |
| वा. नं. | प. मं. | नै. बु. | वा. शु. | प. श. | नै. कृत | | | |
| चंद्रवासो वर्ण फ. | | | तिथिपाश | | | | | |
| ० | पू. युध १५/१८ रक्त | ० | ई. | पू. ४१३/२० २८ | आ. | | | |
| कृष्ण उ. ४/८/१२ वृत्त | चंद्रवासः | सिद्धि २१/६/१० द. श्वेत | उ. ६/१४ ९/२२ | तिथिपाश | २२/२ १०/१८ द. | | | |
| ० | चीत ३१/७/११ लक्ष्मी प | ० | वा. | प. १२/२० २८/३० | नै. क. | | | |
| योगिनी | | | तिथिकालादि | | | | | |
| ई चासु. | पू. | आ | | पू. | | | | |
| ८/३० | श्राम्ही १/९ | कोनाश ३/११ | ० | ७/८/१५/१९ २३/२४ | ० | | | |
| उ माहे २/१० | योगि नी | वाराही ५/१३ द. | उ. १/२/९ २/१०/१७ १८ २५/२६ | तिथिकाला दिच. | २५/६/१३ द १४/२१ २२/२९/३० | | | |
| चंडिका वा. १५ | इंद्राणी ६/१४ प. | वैष्णवी ४/१२ नै | ० | ३/४/११/१२ ५/४/११/२० २१/२८ प. | ० | | | |
| अथैकस्मिन्दिनेपि योगिनी योगः | | | | | | | | |
| पू. | वा | द. | ई. | प. | आ. | उ. | नै. | दिशः |
| ३ | ७ | १९ | १५ | १८ | २२ | २६ | ३० | घट्यः |
| ४५ | ३० | ४५ | ० | ४५ | ३० | २५ | ० | |
| ३३ | ३७ | ४१ | ४५ | ४८ | ५२ | ५६ | ६० | घट्य |
| ४५ | ३० | ४५ | ० | ४५ | ३० | २५ | ० | |

अथ पाशकाल घातादीनांगणितमुच्यते ॥ गतचंद्रदिनेचतुः

स्थिते स्वयमाब्ज्यंग ॥ २१४॥ ६ युते हते गजैः ८ स्वदिशित्य-
जपाशधातकेभिमुखेकालनिपातकेगमिन् अत्रगतचांद्रदि-
नेचतुःस्थापिते क्रमात् ॥ २१४॥ ६ युते अष्टशेषितेशेषांकस-
मदिशिक्रमात्पाशधातकालनिपातनानि भवन्ति अथयोगि-
नी विचारः तिथयः संमुख वामगानशस्ताः तथादक्षेष्टष्टयो-
गिनी राहुयुक्ता यस्यैकोपिशत्रुलक्षं निहन्ति कार्यसिद्धौ च
योगिनी संमुखाद्युते गमेयुद्धे च मृत्युदा अंशुभादक्षिणे भा-
गे वामेष्टष्टशुभप्रभा अत्रैकस्या एव योगिन्याः कार्यविशे-
षेण विरोधपरिहारः तादृशवाक्यसमुदायेन समरसारीय
वाक्यं यामलमूलं नरपतिमूलं वातत्रच जयलक्ष्म्या युद्धया-
त्रायां वामेऽंशुभादक्षेष्टशुभा फलार्थियात्रायां वामेष्टशुभादक्षे
ऽंशुभा शकुन इव अतएव ज्योतिर्निबन्धेऽपि रिपोर्जयार्थि-
नां याने योगिनी दक्षिणेशुभा व्यवहारार्थिनां याने वामेश
स्ता समीरिता तीक्ष्णधारासिहस्ताश्च युद्धे दक्षिणागाशु-
भा परंचेदनमनोरमं एवं च यात्राद्वैविध्यप्रसंगः चंद्रा-
दीनामपि युद्धयात्रायां वैलक्षण्यं वक्तुमुचितं नहि च तादृ-
शोपलं भः अतो न्यथा समाधिः यामिले राहुयुक्तायदा द-
क्षिणागाशुभा राहुयुतानचेत्तदान निर्बलत्वात् यत उक्तं
योगिनी राहुयुक्ता चेद्दक्षेष्टस्याच्छुभदायिका वियुता राहु-
णा सातु वामेऽपि शुभदायिका परं मन्मते विकल्प एव स-
मंजसो न च विषयविभागो निर्मूलत्वात् कल्पना मूलक

त्वेतु दोषांतरापत्रेरसक्यपरिहार्यत्वात् अथदिवारा-
त्रिविभागोयात्रायाः गुणपतितित्वावनिष्टेधिष्मेगमनंदि-
वा प्रशंसति गुणपतिधिष्मे रात्रौतिथौच गुणवर्जिते
मुनयः स्नात्वागच्छेद्विधोर्वारि अस्नात्वाबुधशुक्रयोः
अभुक्त्वागुरुभानुभ्यां भुक्त्वा भौमशनिेश्वरे अथचं-
द्रफलम् सम्मुखे अर्थलाभाय दक्षिणे सुखसंपदः पृ-
ष्ठतो मरणंचैव वामेचंद्रे धनक्षयः सर्वेदोषालयं यांति
पूर्णेचंद्रेहि संमुखे

| घटिकात्मकचंद्रवासचक्रम् | | | | | | | | |
|-------------------------|-----------------|----------|--------|-----------|----|-----|---|-------|
| पू. | द. | फ. | ज. | पू. | द. | फ. | ज. | दिशि |
| १७ | १५ | २१ | १६ | १७ | १४ | २० | १४ | घट्य. |
| दिवारात्रौचराहुचक्रं | | | | लालाटिका | | | केचिद्द्रष्ट दिक्ष्वेवेद माहुः चतु दिक्षुवहु सम्मत मिदम् | |
| ई १६ | पू ४ | आ. २४ | कृ. | रं | शु | शु. | | |
| ज. २८ | यामार्ध राहु | १२ द. | बु | ग्रागायाः | भौ | | | |
| वा. ८ | २०- फ. | ३२ नै | च च | -श. | रा | रा | | |

अथ लालाटिका॥ लालाटिकाः पूर्वदिशोऽशुभाः स्यु-
र्लग्नेरवीरिष्क भवे भृगुश्च खेस्त्रक् नवाष्टागुरगार्कि

(१४८)

मुहूर्तसिंधुः

रंगधीदुःसुरवेज्ञस्त्रिधनेसुरेज्यः उषप्रशस्ततेगर्गः शक्रुनंच
बृहस्पतिः अंगिरामनंउत्साहं विप्रवाक्यं जनार्दनः उषः का-
लो विनापूर्वा गोधूलिः पश्चिमांविना विनोत्तरा निशीथः सन् या-
नेयाम्यांविनाभिजित् अथ सर्वत्र घटिकात्मकचारे चंद्रयो-
गिनीराह्यात्मके स्पष्टानाड्यो बोध्याः अत्रयात्रालभं शीर्षो-
दयेयातुरभीष्टसिद्धि ५।६।७।८।९ कुंभो मीनौ शीर्षोदय
गावपिनिंद्यौ आतप्यकाष्ठा मुखमिष्ट लग्नं जन्मोदयेसिद्धि
करं प्रयाणं नजन्मराशेरुदये उभाभ्यां मुपचये जन्मलग्न-
स्थरविराशि द्वितीयराशौ वैशिसंज्ञकेच शुभम् दिवादिन-
वले ५।६।७।८।९।१० रात्रौ रात्रिवले २।१।९।४।३।१०
गंतव्यंचरेशुभम् व्यंगेमध्यमस्थिरेधमं येच भावालये शु-
भसंयुतास्ते ग्राह्या ४।८।२ लग्नानि श्रेष्ठानि नस्वराशिपश्य
लग्नेयात्रा अथा त्रैवरक्षक वर्धक ताननायक कारकउ-
पनायक संज्ञाग्रहाणाम् जन्मसूर्याद्वितीयगः शुभस्वेदयु-
तो राशिर्धात्रायां लग्नगश्चेद्रक्षको भवति जन्मलग्नाद्दशमगः
शुभयुतो वर्धको भवति जन्मचंद्रादुपचयगोराशिः शुभयुत
स्तान् संज्ञः जन्मन्युपचय संस्थानायक संज्ञा ग्रहाभावाश्च
संज्ञिनो बोध्याः जन्मलग्नस्थः सुखस्थः दशमस्थ एकदश
स्थश्च परस्परं कारक संज्ञकः उंगसहस्वगृहांशेकारः अ-
स्माद्दशमगः कारक संज्ञकः स्वोच्चत्रिकोण संस्थानायक सं-
ज्ञा भाग्यगता उपनायक संज्ञा रक्षका वर्धकास्य येच जन्मनि

नायकाः तेषां लग्नेषु निःशंकं यात्रालग्न्येनियोजयेत् अशस्तोपि
 भवेच्छस्तः शस्तोपि विफलायते ग्रहोराशिश्च लग्नस्थोरक्षका-
 दिप्रभेदतः दिगीश्वरो ललाटस्थो यदिवादिग्वलान्वितः वधवं
 धप्रदोयातुः केन्द्रगस्तजयार्थदः दिगीशाः सूर्यशुक्रारराह्वा
 किंदुजसूरयः दिगीश्वरे ललाटस्थे यातुर्न पुनरागमः लला-
 टेभिभयंकरोति दिनक्रत्कोशक्षयं लोहितः शत्रूणां विजयः
 शशांकतनयः सेनाविमर्दगुरुः मृत्कं भास्करनन्दनो नरपते
 र्याधिं तथा विप्रराट् एतान्येव समस्त रवेचर फलान्येकः सि-
 तोयत्सतिरिपोर्वारे विलग्नगः सौम्योपिनशुभदः मित्रवारे पा-
 पोपिशुभदः साम्नोजीवसि.

अथात्रविशेषः अपूर्णः शोकदश्चंद्रोलम्बे क्षीणस्तथारिपौः कर्क
 गोज ४।२।१ स्थितः षष्ठो निजदुष्टफलापहः सूर्यो राजभयंक
 रोति शशिना युक्तो र्थहानिभृगुः स्थानभंशकरो गुरुः शशिसु
 तः संतापदोषमहत् मृत्युं सूर्यसुतो ददाति नियतं शस्त्रात्तथाभू
 सुत तस्माच्चंद्रयुतिं विहाय मतिमान्यात्रां प्रकुर्यात्सदा भिकर्मा
 योपगोराहु प्रयाणे सत्फलप्रदः केतुर्यातव्यकाष्ठायां सन्नतामे
 शुचप्रदः अथ प्रत्येकफलम् दिनकृद्विसेतथांशके यात्रालम्भ
 गतेथवारयौ संतापयति स्मरातुरं वेश्येचार्य विवर्जितनरम् उ-
 दये शशिनांशके ह्निवाभवति गतो नचिरण दुर्मनाः प्रमदामिव
 यातयौ वनां रत्यर्थं समवाप्य कर्कशाम् भौमे दये शोह निवासया-
 त्रा करोति वंधं वधमर्थनाशं संसेविनः पापपराङ्मुखेन मनोभ-
 वार्त्तेन परांगनेव बुधस्य लग्नांशक वासरेषु यात्रानरं प्रीणयति
 प्रकामं भावानुरक्ता प्रवरांगनेव विदग्धचेष्टामदनाभितप्ता गु-
 रोर्विलग्नांशदिनेषु यात्रा हितानुबंधेष्वित कामदाच जायेव भ-
 क्तमनसो नुकूला कलाभिवृद्धैरतिदाहिताच यात्रा भृगोरंशदि
 नोदयेषु प्रीणातिकर्मैर्विविधैरथियासुं विलासिनी कामवसेनयानं
 भोगैरनेकैर्मदनातुरैव - द्युलग्नभागेषु शनेश्च यात्रा प्राणाछिदा
 दीन्प्रकरोति दोषान् अन्यप्रसक्ता वनितेव मोहान्निपेयितामन्मथ
 मोहितेन - अथ जीवमृतपक्षौ राहुयुतं भं कर्तरी संज्ञं तदग्रिम १३
 अथोदश भावि जीवपक्षः सूर्यमृतजीवपक्षे चंद्रे जीवपक्षमेयात्रा
 शुभा सूर्यचंद्रोया जीवपक्षमे तदपिशुभा सूर्यो जीवपक्षे चन्द्रे

(१५२)

मुहूर्तसिंधुः

मृतपक्षे यात्रानशुभा सूर्यचन्द्रौ द्वावपि मृतपक्षगौ तदा यात्राऽति
क्षयदायः स्थितः सस्थाई तस्य सूर्योर्धीशः यः स्थानादन्यत्र या
ति सयार्थी तत्स्वामी चन्द्रः जीवपक्षे तस्य तस्य जयः यथाराहु रधु
नानुराधायां तद्भ्रं कर्त्तरी ज्येष्ठातः भर एयंतं जीवपक्षः विशाखा तो
भानि १३ त्रयोदश मृतपक्षः कृत्तिका १५ भंग्रस्तं अत्रोभौ जीवपक्षे
संधिकरौ मृते उभयोर्हानिदाविति नरपतौ विस्तरः

| उदाहृति | | | अकुलचक्रम् | कुलचक्रम् |
|---------|----|-------|--|---|
| मृ. | क. | जी. | स्वा.भ. उल्ले धं. | पू३ उभि. ति. म. मृ. |
| वि. | अ. | ज्ये. | | |
| त्वा. | | मृ. | रे. ह. उ. पू. उ. ३ | अ. ल. वि. ज्ये. वि. |
| वि. | | पू. | | |
| ह. | | उ. | रो १। ३। ५। ७। ९। ११ १३। १५ ति. र. चं. ६. श. एषु पुद्दे. | नक्ष. मं. शु. या त. ४ ६. १२ १४ ति ध. |
| उ. | | उभि. | | |
| पू. | | अ. | यायीजयी भवति. | एषु पुद्दरं भे स्वायीजयी स्यात् |
| म. | | ध. | | |
| उल्ले. | | श. | | |
| पू. | | पू. | | |
| पू. | | उ. | | |
| आ. | | रे. | | |
| मृ. | | अ. | | |
| रा. | ल. | भ. | | |

कुलाकुलम् मू श आ रो बुधे २। ५। १० तिथयः
एषु पुद्दरं भे संधिः स्यात् कुलाकुलादिकं जीवपक्षमृतपक्षौ अवश्ययो
धयोर्विचार्य्य तथा च क्रूरयात्रायामवश्यं बोध्यं शुभायां नात्मावश्यकतायतः
कुलाकुलं वीक्ष्य यौद्दे कर्मणि सर्वदा राहुभक्तादिकं चापि वीक्ष्य तत्रै
व सर्वथा शुभायां नाति योज्यं हि योज्यं चोभय पक्षयोः क्रूरायात्रा रा
हुयले पडंगे कालचक्रके चंद्रकालानलोवापी सूर्यकालानले तथा

सुहृत्सिंधुः

(१५३)

मृगयायामपि तथा बोध्यं बुद्धिमता सदा कुलाकुलादिषु राहु
योगिन्योश्चंद्रस्य च वलं चापि विचार्य न हि कुलाकुलमेवाव
लं व्येतर सामग्रीचोपेक्ष्येति.

पौषमासादितिथयः

| पौ. | मा. | का. | चै. | के. | जे. | आ. | भा. | भा. | आ. | का. | मा. | पूर्व. | दक्षिण. | पश्चिम. | उत्तर. |
|-----|-----|-----|-----|-----|-----|----|-----|-----|----|-----|-----|--------|---------|---------|---------|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | सौख्यं | कुंवा | प्रीतिः | अर्थमि |
| २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | शून्यं | ने | ने | मित्र |
| ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | दुःखं | दुःखं | इष्ट | फल |
| ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | लाभ | सौख्यं | मं | दुःखं |
| ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | लाभ | द-प्रा. | धन | सौ. |
| ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | प्रीति | लाभ | सु | द-प्रा. |
| ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | लाभ | कलह | लाभ | दुःख |
| ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | कष्ट | सौख्यं | कुंवा | लाभ |
| ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | सौख्यं | लाभ | सि. | क. |
| १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | कुंवा | कष्ट | द-ला | फल |
| ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | सुखं | लाभ | द-ना | शु. |
| १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | शु. | सौख्यं | सु | पंचक |

धर्मार्थकामादि चक्रम्.

| | | | | | | | |
|----|------|------|-----|-----|-----|------|--------|
| अ | ति | उभे | ध | श | वि | उनु | धर्मे |
| न | पूभा | ज्ये | श्र | पू | म | स्वा | अर्थे |
| क | आ | उभा | वि | मू | ऽभि | पूभा | कामे |
| रो | पूपा | मृ | रं | उपा | उभा | इ | मोक्षे |

धर्मगेमास्करेवित्तमोक्षे
शशीवित्तगेधर्ममोक्षार्थ
गः शस्यतेकामगे धर्ममो-
क्षार्थगः शोभनेमोक्षगे-
केवलं धर्मगः प्रोच्यतेश्व
न्यंशः वारेशमैद्यांविनि

वेश्यपश्येत्प्रदक्षिणस्थानगताक्रमेण- यामार्धभोगः शनिर
स्तियस्यांतदानयायात्ककुभंतदाताम् अथसर्वांकयोगोति
थिः भवारनामाक्षरयोगेत्रिस्थेक्रमात् २-३-४ द्विभिच-
तुर्भिर्गुणितेक्रमात् ६-७-८ रससप्ताष्टभाजिते क्रमात्
०-०-० आदिशून्येहानिःमध्यशून्येभयम् अंत्यशून्येमृत्युः
स्थानत्रयेऽन्ययोगे निश्चितं मृत्युः स्थानत्रयेकं युजिजयः अ-
त्रतिथयः शुक्लप्रतिपत्तः अपरे तिथिवारभयोगैष्यं त्रिषुस्थाने-
षु क्रमात् ७-८-९ सप्ताष्टगुणशेषितं स्थानत्रयेकयोगे स-
र्वांकः अथमहाडलग्रमौ- सूर्यभाहिनभमितिः ७ सप्तत-
ष्टा २-७ शेषे महाडलः ३-५ शेषेऽभ्रमः उभावपिनिंद्यौ- अ-
भ्रमस्तयात्रायामेवनिषिद्धः महाडलस्तयात्रायंत्र हलप्रवाह
समरेचौर्येच संधौ तथा कूपारामतडागबंधनविधौ त्याज्यंसदै
वाडलम् यत्नान्नात्रशुभेषु मंगलविधौ दोषोन तस्य क्वचित् अ-
थद्विवरं दिनभंरविभाद्रपक्षं शुक्लादितिथ्यावारेणचयुतं नवीतं ७
शेषं न्येद्विवरं गमने श्रेष्ठम् अथघवाडकः रविभाहिनभंगणयि-

मुहूर्तमिंधुः

(१५५)

ला३गुणंतिथियुतं च ७ शेषितं ३ शेषे घवाडकं यात्रायां शु
भदम् ग्रहोशनौ तु गमनं बहु विघ्नदं स्यात्

| अथ विघ्न कालचक्रम् | | | योधारस्तस्याविदिक्षुः सुखं त- स्य वर्ज्येत् यात्रायां अस्य सुखं पृष्ठे कृत्वा यात्रायां ज- यः |
|--------------------|----|----|--|
| ई | शु | पू | |
| उ | | द | |
| या | मं | वा | |
| | प | कं | शु |
| | | नै | |

| केचिद्वात्रिशेष ५ घटीभ्यदिना- र्धयामांतं पूर्वाज्ज- लिताः तत्र त्रिष्य पि यात्रा न शुभ- दा | दग्धादि दिशः | | उदयातः | | | | | | | |
|---|--------------|----|--------|----|----|----|----|----|----|--------|
| | | ७ | १५ | २२ | ३० | ३७ | ४५ | ५३ | ६० | नाड्या |
| | | ३० | ० | १० | २० | ३० | ४० | ५० | ६० | |
| | इष्टहर | पू | आ | द | नै | प | वा | उ | ई | ज्येती |
| | अमम् | आ | द | नै | प | वा | उ | ई | पू | धूमित |
| | अभंग | ई | पू | आ | द | नै | प | वा | उ | दग्ध |

परिघ दंडः

कु रो मृ आ पु ति अ म
अन्यच्छ्र द्वावपि मतिमता पारि-
घोऽलंघनीयः आवश्यके श्रुत्वा
भावे तनुबले च परिघः सुलंघ्यो भवति
योगिनी राहोरपि शुद्धिश्चेत्तदा दक्षिणोत्तरयोश्च

अथ राशीनां घातचक्रम्

| - | मे | वृ | मि | क | सिं | क | तु | वृ | ध | म | कुं | मी | - |
|-----|----|-------|------|-----|-----|------|----|------|----|----|-----|------|-----|
| र | ४ | ८ | १२ | ५ | ४ | १ | ६ | १० | ७ | ११ | २ | ३ | र |
| चं | १ | ५ | ९ | २ | ६ | १० | ३ | ७ | ४ | ८ | ११ | १२ | चं |
| मौ | ५ | ९ | १ | ६ | १० | २ | ७ | ११ | ८ | १२ | ५ | ४ | मौ |
| कुं | २ | ६ | १० | ३ | ७ | ११ | ४ | ८ | ५ | ९ | १२ | १ | कुं |
| वृ | ६ | २ | २ | ७ | ११ | ७ | ६ | १२ | ९ | १ | ४ | ५ | वृ |
| शु | ३ | ७ | ११ | ४ | ८ | १२ | ५ | ९ | ६ | १० | १ | २ | शु |
| श | ७ | ११ | ३ | ८ | १२ | ४ | ९ | १ | १० | २ | ५ | ६ | श |
| रा | ८ | १२ | ४ | ९ | १ | ५ | १० | २ | १० | ३ | ६ | ७ | रा |
| के | ९ | ११ | ५ | १० | २ | ६ | ११ | ३ | ११ | ४ | ५ | ६ | के |
| मा | का | मार्ग | पौ | मा | फा | ज्यै | वै | ज्ये | उज | आ | भा | आ | मा |
| ति | नं | रू | म | ज | पू | भ | रि | नं | भ | रि | ज | पू | ती |
| नं | म | ह | स्या | उतु | सू | श्र | श | रे | भ | रो | आ | ह | न |
| यो | ह | वि | स्वा | सा | क्र | सा | प | शु | सा | व | धु | व्या | यो |
| वा | श | ध | चं | शु | श | चं | ध | श | शु | भो | क्त | शु | वा |

अथास्यविचारः

पुद्गेविवाहेच कुमारिपूजने यानेऋणराजनिषेवनेच विचिंतयेद्वा-
तफलं मनस्वी विवाहचूडादिशुभेन चिंतयेत् अथ परिघदोषनिर्मु-
क्तभानि मैत्रार्कपुण्याश्विनिभैर्निरुक्ता यात्राशुभा सर्वदिशा सुपं-
डितैः एवं विलम्बेऽपि गंतव्यकाष्ठोन्मुखेजयः दक्षिणस्थे मध्यम्-
वामस्थे हानिः पृष्ठस्थे महाभीतिः चक्रीकेन्द्रगतः अस्य वर्गचनि-
षिद्धम् जन्मराशितनुभ्यामष्टमे वास्वारिभाद्रिगुभे तदधिपालम्
गाश्चेत्तदारिष्टदायात्रा बोध्या

अथस्पष्टविदिक्ष्यपिप्रद-
क्षिणंगतासुयथाग्नेयींप्रा-
गुक्त्यारभलमेयथायाम्यै-
निर्ऋतिदिशमेवंमन्यास्व
चगच्छेत् शुभम्

| दिग्गानि- | | | | |
|-----------|----------|-----------|-----------|-------|
| सू. | द. | प. | उ. | दि. |
| १ ५९ | २ ६१० | ३ ७११ | ४ ८१२ | शुभ |
| २ ६१० | ३ ७११ | ४ ८१२ | ५ ९१३ | मध्य |
| ३ ७११ | ४ ८१२ | ५ ९१३ | ६ १०१४ | भय. |
| ४ ८११ | ५ ९१२ | ६ १०१३ | ७ १११४ | महाभय |

अथयात्रालम्नेयोगाः

| र. | चं. | भौ. | वृ. | वृ. | शु. | वा. | रा. | ग्रहाः |
|------|------|------|------|------|----------|------|--------|-----------|
| २ | १० | ६ | ४ | १ | ५ | ६ | ६ | वशीकर. |
| ११ | ० | ६ | ० | १ | पुष्टगता | २ | २ | जययोगः |
| ६ | ८ | ० | ० | १ | ० | ० | ० | जयकरः |
| २/११ | २/११ | २/११ | २/११ | २/११ | २/११ | २/११ | २/११ | जयकर. |
| १ | ० | ० | २ | २ | २ | ० | ० | जयकरः |
| २ | ० | ० | २ | ० | १ | ० | ० | जयकर. |
| १ | १ | ० | ० | ० | ० | ६ | ६ | वशीकरः |
| १० | ० | १ | १० | ० | ११ | १ | ० | वशीकरः |
| ० | ० | २/११ | वली | वली | वली | वली | ३ ६/११ | विजयद |
| २ | ७ | २ | ४ | १ | ४ | ३ | ० | वशीकर. |
| ११ | ७ | २ | १० | १ | १० | २ | ६ | विजय |
| १० | ४ | १० | ७ | १ | ७ | १० | ६ | राजाधिराज |

लग्नयोगाः

| र. | चं. | भौ. | बु. | वृ. | शु. | श. | रा. | ग्रहाः |
|--------|--------|------|------|----------|----------|------|-----|--------------|
| ० | ८ | ० | ० | १ | ६ | ० | २ | विजय. |
| ० | ७ | ० | ४ | ० | ४ | ० | ० | विजय. |
| ० | ४ | ० | २५ | ० | ५ | ० | ० | विजयः |
| ५ | ० | २ | ७ | १ | ८ | ० | ० | विजयः |
| ११ | १ | २ | १० | १ | १० | २ | ५ | विजयः |
| ० | ८ | ० | ० | १ | ७ | ० | ० | विजयः |
| ० | ७ | ० | ४ | ० | ४ | ० | ० | विजयः |
| ० | ५१२११२ | ० | वली | केंद्रं | ० | ० | ० | धनलाभः |
| ११ | ७ | २ | १० | १ | १० | २ | ६ | धनलाभः |
| ५ | ० | १०५ | ० | २ | ४ | २ | ० | धनलाभः |
| मे.वे. | ० | मकरे | ० | मकरे | ० | तुले | ० | धनलाभः |
| ११ | २ | ११ | २ | १ | २ | ११ | ११ | धनलाभः |
| ० | आषा | ० | ० | केंद्रं | १० | ० | ० | कार्यसिद्धिः |
| २ | ० | ६ | ४ | १ | ४ | ६ | ० | धनलाभः |
| २ | ११ | ६ | ० | १ | उज्ज्व. | ० | ० | सर्वार्थसि. |
| ५ | ० | २ | ७ | ५ | ८ | ० | ० | मयंसमुद्ध्यै |
| ० | १० | ० | ० | कें. | ० | ० | ० | जयमां |
| ० | ० | ० | ० | १ | वर्षातिम | ० | ० | जयः |
| ० | ७ | ० | ४ | गुरुदष्ट | ४ | ० | ० | विजयः |
| ० | ४ | ० | ७ | ० | ७ | ० | ० | जयः |
| ० | ७ | ० | ७ | ० | ७ | ० | ० | विजयः |
| १ | ७ | ० | २ | ० | ० | ० | ० | विजय. |
| ७ | ५ | ६ | कें. | कें. | कें. | ७ | ७ | महाजयः |
| २५ | ० | ३५ | ० | ० | ० | २५ | २५ | यतदः |
| २ | २ | ० | ० | ० | १ | ० | ० | जयव. |

होराप्रोक्तैराज्ञायोगैर्गन्तुः सिद्धिर्भूयोभूयात् योगैः सिद्धिर्भूपतीनां

मुहूर्तसिंधुः

(94.9)

सुधिष्यैर्विप्राणां स्याच्छाकुनैस्तस्करादे सन्मोहूर्तैः प्राकृताना-
मिहोक्ता सर्वेषां वैचित्तलम्बक्षशुद्ध्या अथयोगादयः केन्द्रत्रिको-
णस्थसितज्ञजीवैर्योगो धियोगः कथितैक्य ऐक्यात् क्षेमंच श-
श्रूह धजन्यहर्षः क्षेमारिबंधावनिलाभएषु एकेनयोगः फलं क्षेमं
द्वाभ्यामधियोगः क्षेमोरिपूणां वधः त्रिभिर्योगाधियोगः क्षेमरि-
पुवधावनिलाभानि अथविजयादशमी आश्विनादिदशमी विज-
याया भूमिपाल गमने विजयाय विष्णुधिष्यसहितायदि सास्या
द्वांछितार्थसहिता सुतरास्यात् अथविजयारव्यमुहूर्तयात्रास-
चैकादशो मुहूर्तः अथवा ईषत्संध्या मतिक्वांतः किंचिदुद्विन्नतारफ
विजयो नाम कालोयं सर्वकार्यार्थसाधक अथतिथ्यादिपुनिपिद्धे
पुल्लग्नवले सति दोहदबलेन गच्छेत्

| तिथि दाहदं. | | | | | | | | | | | | |
|-------------|-------|------|--------|---------|-------------|------|------|-------------|---------|--------|------|-------|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ |
| अर्कपत्र | तङ्कल | धन. | सक्तुक | हविष | स्वर्गसर्वा | अपुष | अनार | कमलजल | गोमूत्र | मवान | पावस | गुड |
| १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ |
| रुधिर | गुड | पावस | मवान | गोमूत्र | कमलजल | अनार | अपुष | स्वर्गसर्वा | हविष | सक्तुक | धन. | तङ्कल |
| २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ |
| अर्कपत्र | तङ्कल | धन. | सक्तुक | हविष | स्वर्गसर्वा | अपुष | अनार | कमलजल | गोमूत्र | मवान | पावस | गुड |

वारदोहदं.

| र. | चं. | भो. | बु. | वृ. | शु. | श. | म. |
|----------|-----------|-----------|---------|---------|----------|----------|-------------------|
| पूतखंड | पायस | फांजी | नमदुग्ध | दधि | दुग्धक. | तिलान्न | भक्ष्य. |
| कु.कुं. | चंदन | सुदं. | यवान् | दधि | घृतं | तैलं | चंदनं |
| तक्र | चंदन | सुद. | पुष्पं | दधि | घृतं | खिल्ल | दानं धा- म्यं. |
| घृतं | पच | गुडं | तिलान् | दधि | यवान् | मारेवान् | भक्ष्यं |
| प्रियंवद | शय्यास्तु | शस्त्रधु. | हारधुक | भस्मधु. | यष्टिधु. | कलही | कृत्यं. |
| पाटली | खेती | रक्ती | हरिती | पीती | थित्री | नीली | धार्यं. |

दिग्दोहदं.

याहनानि.

| पू. | आ. | द | मे | प. | वा. | उ. | ई. | दि. | बु. | द. | प. | उ. |
|-----|----|---|----|----|-----|----|----|-----|-----|----|----|----|
| ॐ | ॐ | ॐ | ॐ | ॐ | ॐ | ॐ | ॐ | ॐ | ॐ | ॐ | ॐ | ॐ |

प्रस्थितिदि.

दिक्षु प्रस्थानदिनानि

| राजा | सामं | इतर | पू. | द. | प. | उ. | दिश | विदि |
|------|------|-----|-----|----|----|----|------|--------------------------|
| १० | ७ | ५ ३ | ७ | ५ | ३ | २ | दिना | क्षुद्रि प्राद- क्षि. |

अथचेद्दोहदेषु भक्ष्यं चेतदाविलोकयेत्स्पर्शनं वा कुर्व्यात्. अथप्र-
स्थानविधिः सुमुहूर्ते गंधाक्षतादिपूजितमुपवीतमायुधं क्षौद्रमाम-
लकं हन्यं वाद्यारहिते देवायतनादिस्थले धनुः ५०० अथवा २०० ध-
नुर्मितं १० धनुर्मितं गेहाद्देहांतरे प्रस्थानं संप्रस्थितो यद्ग्रहमंदिरतः प्र-
यातो गंतव्यदिक्षु तदपि प्रयतेन कार्यम् दुग्धं ३ दिनं सौरं ५ दिनं.

मैथुनं ७ दिनत्याज्यं अत्यावश्यकेऽशक्तौवा क्षौर क्रोध रोदन मां
स तैल गुड मैथुनानि यात्रादिवसे त्यजेत् कृत्वाच मैथुनं रात्रौ
प्रभाते योधिगच्छति नासौ फलमवाप्नोति कृच्छ्रेणापि निवर्तते
यावद्भूतिर्याधानं यावत्कार्यं न सिध्यति यावद्वापि निवर्तते
तावद्दर्जहि मैथुनम् ऋतुकाले न दोषः श्रौतविधेः प्रावल्यात् अ-
कालवृष्ट्यावपियात्रा निषेधः साच पौषादिमासचतुष्क भवा वृष्टिः
नारदः अकाल जेषु नृपतिर्विद्युद्गर्जति वृष्टिषु त्रिप्रकारे तथोत्पाते
सप्तरात्रं तु न प्रजेत् गमने शान्तिं कृत्वा सूर्येन्दोर्दानं च अथ गमनवि-
धिः अथ शंख वेणु बीणा दुंदुभिनिद्योपवर्धितोत्साहः ध्वज च-
मरातपन्नः सितांगरागां वरोष्णीपः संतर्प्य वह्निं हविषा द्विजांश्च
गोभूहिरण्यादिभिरावृतः सन् ज्येष्ठान्नमस्कृत्य कलत्रमित्रं पु-
त्रांश्च संतोष्य नृपः प्रयायात् न त्वेष्टदेवं स्वदिगिश्चरन् च श्रद्धा समे-
तः सितमाल्यवरश्चः स्वरानुरूपं विनिधाय पादं वा दक्षिणं चाग्रत
एव यायात्- उद्धृत्य प्रथमत एव दक्षिणां घृतिं द्वात्रिंशत्पदमभिगत्य
दिश्यमानं आरोहेनिलघृतहेम ताद्यपात्रं दत्त्वा दौ गणकवराय
च प्रगच्छेत् देवगृहाद्वा गुरुसदनाद्वा स्वगृहान्मुख्य कलत्रगृहा-
द्वाप्राश्य हविष्यं विप्रानुमतः पश्यन् शृण्वन्मगलमेयात् मगलानि च पू-
र्णकुंभं ध्वजं छत्रं दीपं शंखं च चामरम् हिरण्यं शरन्नमादित्यं प्रा-
हुर्मगलमष्टकम् अथ चारपरत्वेन स्वरसु-जी-श-र-भौ-दक्षः
शुभः चंद्रशु-श-वामः निर्गमेवामः शुभः प्रवेशे दक्षः शुभः अ-
थावश्यके अभिजिदादौ पूर्वाह्णेनोत्तरे मध्याह्णे पूर्वतः अपरा-

ह्ये याम्याम्-

अथराकुनानि

| मोर | चाप | नकुल | रज्जुबद्ध | मास | सहस्र | उप्य | गन्ना | कुंभ | छत्र | मुक्तिका | कन्या | रत्न |
|------|--------|------|-----------|--------|----------|-------|---------|--------|------|-------------|--------|-------|
| उशीप | वेतोशा | मधु | सपुत्रा | शेताभि | ग्रादर्श | अज्जन | धोतवा | मत्स्य | धृत | सिहा- सन | रोदनही | पताका |
| विमा | अश्व | गज | फल | अन्न | दुग्ध | दधि | गौः | सर्प | कमल | स्वच्छ | वेद्या | वाद्य |
| २१३ | ० | ० | मधु | मेघ | अस्थ | गोरोच | भारद्वा | विधि- | वेदश | मंगल | गीत | अंकुश |
| | | | | | | | ज | का | द | श- | | |

अथापराकुनानि

| ० | वध्या | चर्म | तुष | आस्थि | सर्प | लवण | अंगार | इंधन | नपुस्त | विषा | तैल | उन्मन |
|--------|-----------|--------|-------|-----------|-------|------|--------|------|--------|------|-------|--------|
| चर्मा | श्रीफ | शत्रु | जटिल | तन्त्र्या | तृण | कुशी | कुमार | तला | वि- | ० | पतित | अंगही |
| स्तोधि | रुधिर | स्त्रो | फिरला | स्वगेह | ओगु | कुत | रुपापी | ० | तफ | पुड | यत्ना | पंक |
| विध | ऊष | गृहक | महिष | उष्णभा | रुपाह | रुई | ० | यमन | दक्षेग | कोध | गर्भव | मुंडित |
| गाली | | | | | | | | | | | | |
| आह | दुर्गास्य | अध | गधिर | स्जस्व | अल | मूषक | धूका | ० | ० | ० | मयप | ० |
| बात | | | | | | | | | | | | |

मध्यरात्रे पश्चिमां नतस्यांगारकोविधिर्नशनैश्चरजं भयं व्यती
पातो न दुष्येत यस्याको दक्षिणे स्थितः पृष्ठतो वारविं कृत्वा गच्छे
दक्षिणतो यथा अष्टौ पादा बुधे स्वान्नवधरणी सुते सप्तजीवे प-
दानि ज्ञेयान्येकादशार्के शशिशनिभृगुजे सार्धचत्वारिपादाः
तस्मिन्काले मुहूर्तः सकल गुणयुतः सर्वकार्यार्थसिद्धौ ना-
स्मिन्पंचांगशुद्धिर्न चरचरबलं भाषितं गर्गमुख्यैः कृत ४ नृ-
प १५ मुनि ७ तिथि १५ पक्ष २ द्वादश १२ रुद्रांगुलानि तु प्रोक्तः
सिद्धाश्चक्राः क्रमशो रव्यादिषु सर्वसिद्धि करी अपरे रवि २०
चंद्र १५ मं १५ बु १४ जी १२ शु १२ श १२ एतन्मितांगुला

निशंकुमूले छायागमने घटिकैकाभिजित् तत्र सर्वकार्यसिद्धिः
जातः सन् राजा व्यापारे चोत्तमासिद्धिः विवाहादिषु न औप-
ध्यादीनां च सिद्धिः अथ शकुनापशकुनविचारः आद्येपशकु-
ने स्थित्वा प्राणानेकादश व्रजेत् द्वितीये षोडश प्राणांस्तृती-
येन कचिद्व्रजेत् अत्र पूर्वोक्तोदग्धज्वलितधूमितादिविचारो-
पि शकुने मुख्यः दग्धेषु दग्धज्वलितं ज्वलत्सु फलं ज्वलिष्यत्यथ
धूमितेषु शेषेषु शांतेषु सदानराणां सिद्ध्यंनि कार्याणि सुखेन स-
म्यक् कोकिला, पल्ली, पोतकी, सूकरी, तित्तिरी, हंसी, छुंछुंदरी,
खरशब्दवामेशुभाः नयुत्तारे भये पलायने गृहादिप्रवेशे सं-
ग्रामे राजदर्शने विपरीतांशकुना शुभाः असगोह सर्पजाड
बूहा सूकर एषां यात्रासमये कीर्तनं सुमुखे नान्यमुखेन वा कीर्त-
नं शुभम् नवा दर्शनश्रवणे वानरक्रक्षाणां नाम कीर्तनं न शुभ-
म् दर्शनश्रवणौ शुभौ भवेदिडायां परिपूरितायां सर्वोपिवामः
शकुनः प्रशस्तः स्यात्पिंगलायां परिपूरितायां सर्वोप्यसव्यः
शकुनः प्रशस्तः अथाद्य शकुनम् भूषा शस्त्रयुताः समानम-
नुजा गोः पद्मनाथे गनायुक्ता पूर्णघटेन शीतकिरणेश्वाग्रह
चारी मृगः सौम्ये शस्त्रयुतानराः क्षितिसुते देवार्चिते ब्राह्मणा
शुक्ले सुंदरिवालिका हयमृगा मंदेचराः कौरवाः स्थाने वीर्य्य यु-
तार्कसीतकिरणादीनां वदेदादिमं पश्चादज्ञः सकृत्तात्प्रया-
णसमये भूषादिकानां नृणाम् अथ छिन्नाफलम् क्षुतं निषिद्धं
सर्वत्र गोक्षुतं निधनप्रदम् वामे पृष्ठे शुभम् तत्र दक्षिणाग्रे च नो

शुभप्रतियामंचपूर्वादौ क्रमात्सुतफलं विदुः विघ्नशोकः क्षतिः

दिवारात्रौ च चतुर्घटिकात्मकम्

| र. | चं. | मौ. | बु. | बृ. | शु. | का. | दिने. | घटिका. |
|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|--------|
| उ. | अ. | रो. | ला. | शु. | च. | का. | दिने. | १॥ |
| च. | का. | उ. | अ. | रो. | ला. | शु. | दिने. | २॥ |
| ला. | शु. | च. | का. | उ. | अ. | रो. | दिने. | ३॥ |
| अ. | रो. | ला. | शु. | च. | का. | उ. | दिने. | ४॥ |
| का. | उ. | अ. | रो. | ला. | शु. | च. | दिने. | ५॥ |
| शु. | च. | का. | उ. | अ. | रो. | ला. | दिने. | ६॥ |
| रो. | ला. | शु. | च. | का. | उ. | अ. | दिने. | ७॥ |
| उ. | अ. | रो. | ला. | शु. | च. | का. | दिने. | ८॥ |
| रात्रौ | रात्रौ | रात्रौ | रात्रौ | रात्रौ | रात्रौ | रात्रौ | रात्रौ | ९॥ |
| शु. | च. | का. | उ. | अ. | रो. | ला. | रात्रौ. | १०॥ |
| अ. | रो. | ला. | शु. | च. | का. | उ. | रात्रौ. | ११॥ |
| च. | का. | उ. | अ. | रो. | ला. | शु. | रात्रौ. | १२॥ |
| रो. | ला. | शु. | च. | का. | उ. | अ. | रात्रौ. | १३॥ |
| का. | उ. | अ. | रो. | ला. | शु. | च. | रात्रौ. | १४॥ |
| शु. | च. | का. | उ. | अ. | रो. | ला. | रात्रौ. | १५॥ |
| अ. | रो. | ला. | शु. | च. | का. | उ. | रात्रौ. | १६॥ |
| रात्रौ. | रात्रौ. | रात्रौ. | रात्रौ. | रात्रौ. | रात्रौ. | रात्रौ. | रात्रौ. | १७॥ |
| उ. | अ. | रो. | ला. | शु. | च. | का. | रात्रौ. | १८॥ |
| शु. | च. | का. | उ. | अ. | रो. | ला. | रात्रौ. | १९॥ |

छिकाविचार

| पू | आ | द | नेरु | प | या | उ | ई | दिश |
|---------|--------|--------|-------|-------|-------|-------|---------|--------|
| मिथ | विलब् | उत्तम | मृति | शुभ | आगम | लाभ | शुभ | रघौ |
| लाभ | विलब् | मृति | लाभ | शुभ | उत्तम | अरप | लाभ | चद्र |
| मिना | लाभ | विलब् | मृति | लाभ | विदेश | सुख | मिना | मौमे |
| सिद्धि | शरीरक | अरिष्ट | विलब् | मृति | धनना | चोरमी | मिना | बुधे |
| वित्तना | वार्ता | विलब् | उत्तम | चौर | मृति | कष्ट | शत्रुना | जीवे |
| धनसि | कष्टह | मिभाग | अर्थ | उत्तम | विल | मरण | धनना | शुक्रे |
| अर्थना | कष्टना | वार्ता | मिथ | उत्तम | शुभ | विलब् | मृति | शानौ |

लीभो भोज्यं वार्ताकलिः सुखं इंदिरामरणं सिद्धिः पीडा भोगः स्व-
 रवासुखे निष्फलं चोपविष्टस्य पूर्वतः क्षुतजं फलम् प्रागन्यपुंसः
 परतस्तत्रैक्य पुनः पुनः हृदात्कफाच्छिशोर्वृद्धाक्षतं जातवृथाज-
 गुः स्वप्नस्याद्यंतयोः वास्तं क्षुतं नो भोजनाग्रतः भोजनांते यदि भ-
 वेद्भोज्यलाभः परेहनि अंतर्वलि कुमारीच किन्नरी मद्यकारिका
 परटीचर्मकारीच निंद्यमासां क्षुतं सदा प्रयोजनेयलकृते पिजातं क्षुतं क्ष-
 णान्तहिनिहंत्य वश्यं कार्योत्सुकेनापि मनागपीदं तस्मादपेक्ष्यं न
 विचक्षणो न ओषधे वाहनारोहे विवादे वायनाशने विद्यारंभे बी-
 जवापे क्षुतं सप्तसुशोभनम् अथाश्वंगितम् मुहुर्मुहुर्मूत्रमलं
 करोति संताड्य मानोप्यनुलोमगामी अकार्यं भीतोश्च विलोचनश्च
 शिवं न भर्तुस्तुरगो विधत्ते आरोहति क्षितिपतौ विनयोपपन्नो यात्रा

नुगोन्येतुरगं प्रतिहेषितश्च वक्रगवास्पृशति दक्षिणमात्मपार्थ
 योश्चः सभर्तुरचिरात्प्रतनोतिलक्ष्मीम् अथ हस्तींगितम् भूमौ न्य
 स्तं करस्तब्धः कर्णो मुकुलिते क्षणः भीतश्च सङ्गजो याने भङ्ग कू-
 तस्खलितस्तथा अनुलोमगतिर्दृष्टो वक्रमुन्नम्य याति च बल्मीक
 स्थानगुल्मादिमथनः सिद्धिदोगजः अथ सारमेये गितम् नृत्तुरग
 करिकुंभपर्याणसक्षीरवृक्षेष्ठिकासंचयच्छत्राध्यासनो भूखला
 नि ध्वजं चामरं शाङ्खलं पुष्पितं चाप्रदेशं यदाश्वावमूल्याग्रतोया-
 तियातुस्तदा कार्यसिद्धिर्भवेदार्द्रके गोमये भिष्टभोज्यागमः शुष्क
 समूत्रणो शुष्कमेन्नं गुडो मोदकावाप्तिरेवाथवा अथ विषतरु कंद
 कीकाष्ठपापोणशुष्कद्रुमास्थिदमशानानि मूत्रावहत्याथवा यायिनो
 त्रेसरो निष्ठमारज्यातिशय्याकुलालादिभांडान्यभक्तान्यभिन्नानि
 वा मूत्रयन्कन्यकादोषकद्रुज्यमानानि चेद्दुष्टतां तद्दृष्ट्वा स्तथास्या
 दुपानं त्फलं गोस्तसमूत्रणो वर्णजः संकरः गमनमुखमुपांतहसं प्र
 गृह्योपतिष्ठेद्यदास्यात्तदासिद्धये मांसपूरणाननर्थाप्तिरार्द्रेण चा
 स्थाशुभं साग्न्यलातेन शुष्केण चास्त्रागृहीतेन मृत्युः प्रज्ञांतो लु-
 केनाभिघातो थपुंसः शिरोहस्तपादादिवक्रे अग्नो ह्यागमो वस्त्रचौ
 रादिभिर्व्यापदः केचिदाहुः सवस्त्रेशुभम् प्रविशति तु गृहं सश-
 ष्कास्थिवक्रे प्रधानस्य तस्मिन् वधः शृंखलाशीर्षवल्लीवस्त्रादिवा-
 वंधनंचोपगृह्योपतिष्ठेत् यदास्यात्तदाबंधनं लेढिपादौ विधुन्यन्तक
 णा उपर्याक्रममश्वापि विघ्रायं यातु विरोधे विरोधस्तथा स्वांगकंडू
 यने स्यात्स्वयं चोर्ध्वपादः सदादोषकृत वामं जिघ्रेज्जानुवित्ताग-

मायस्त्रिभिः साकं विप्रहोदक्षिणं चेत् ऊरुं वामं चेद्विद्यार्थोपभोगः,
 सव्यं जिघ्रेदिष्टमित्रैर्विरोधः पादौ जिघ्रेद्यायिनश्चेदयान्नां प्राह-
 र्थाप्तिर्वाछितां निश्चलस्य स्थानस्थस्य स्वोपानहौ चेद्विजिघ्रेत्
 क्षिप्रं यान्नां सारमेयः करोति उभयोरपि जिघ्रेणे हि बाह्वो विज्ञे-
 योरिषु चौरसंप्रयोगः याने भवंतो भयदाश्च पश्चात् अथ काकं-
 गितं गमने कर्णसमश्चेत्क्षेमाय न सिद्ध्ये भवति अभिमुखमुपै-
 ति विरुचिर्निवर्तयेद्यान्नाम् वामेर्वाशित्वादौ दक्षिणार्धे नुवा-
 शते यातुः अर्थापहारकारी तद्विपरीतोर्थसिद्धिकरः यदि वाम-
 एव विरुयात्, मुहुर्मुहुर्यायिनो नुलोमगतिः अर्थस्य भवति सिद्धौ आ-
 र्च्यानां दक्षिणार्धे वामः अतिलोमगतिर्वाशान्गमनस्य विघ्न-
 रुद्भवति तत्र स्थस्यैव फलं कथयति यद्वांछितं गमने दक्षिणार्धे
 रुतं कृत्वा वामे विरुयाद्यथेप्सिता वाप्तिः प्रतिवाश्यपुरोयायात्
 द्रुतमग्रे र्थागमोति महान् प्रतिवाश्यपृष्ठतो दक्षिणेन यायादद्रुतं
 क्षतजकर्त्ता एकचरणोर्कमीक्षन् विरुचंश्च पुरोरुधिरहेतुः

अथ स्वरशास्त्रमवलंब्य कतिचिच्चक्राणि

| ५ | ५ | ३ | ३ | ३ | ५ | ५ | ८ | ८ | ८ | ९ |
|---|----|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अ | आ | इ | ई | उ | ऊ | ए | ऐ | ओ | औ | अ |
| क | ख | ग | घ | च | छ | ज | झ | ट | ठ | ड |
| ट | ठा | त | थ | द | ध | न | प | फ | ब | भ |
| म | य | र | ल | व | श | ष | स | ह | - | - |

मुहूर्तसिंधुः

अत्रययोर्मठयोर्जयपराजयविलोकनं तयोर्नामाक्षराणां ह
लामचांचयोगं कृत्वा २ व्याप्तं १ शेषेतस्यजयः शून्यशेषेतस्यप-
राजयः अथवायोगे ८ तष्टे- ४।६।५।७।३।१।२ शेषेऽत्राएषा
प्रयोजेताभवेत् अथप्रकारांतरेण-

| अथप्रकारांतरेण. | | | | | | | | | | |
|-----------------|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ६ | ३ | २ | ४ | ८ | ७ | ९ | ७ | ३ | ० | १ |
| अ | आ | इ | ई | उ | ऊ | ए | ऐ | ओ | औ | अ |
| क | ख | ग | घ | च | छ | ज | झ | ट | ठ | ड |
| ढ | ण | त | थ | द | ध | न | प | फ | ब | भ |
| म | य | र | ल | व | श | ष | स | ह | - | - |

अत्रापिभठयोर्नामहलचांचयोगं १२ दशाहीनं ८ अष्टतष्टं य-
स्याधिकः शेषः स एवजेता सेनाधिपः कर्तव्यः यथारामराज-
णयोः क्रमेण २-२ आ-३ मं-६ अ-६ एषां योगः १७ राज-
णस्य २-२ आ-३ व-८ अ-६ ए-३ अ-६ एषां योगः १-
३ योगः २८ उभयत्र १२ हीने शेषौ ५।६ अष्टतष्टे राम एवजे-
ता उभयोः समशेषत्वे संधिर्वोद्धाचक्रत्रयेपि नामाद्भलांसर्व-
त्रे ह शोकानां भेदो वैलक्षण्यकारकः

अथापरमात्राचक्रम्

| ८ | ५ | ६ | ४ | ७ | १ | ३ | २ |
|------------|----|----|----|----|----|----|----|
| अग्राई. | क. | ख. | ग. | द. | प. | य. | श. |
| ई उ ऊ | ख. | ग. | द. | प. | य. | श. | स. |
| ॐ २. ३. ४. | ग. | द. | प. | य. | श. | स. | ह. |
| ओ. औ. | घ. | ङ. | च. | ज. | झ. | ञ. | ट. |
| अं अ | इ. | ए. | उ. | ऊ. | अ. | इ. | ए. |

अत्राप्युभयोः संख्यैक्ये ७ तष्टे अधिकभाक् जयी भवति पं-
चाण्डः स्वरास्ते क छ ठ ध व मुखेष्वङ्गः अव्यंजनेषु स्युर्न दा दे-
स्तिथेस्ते तिथिकपि ११ लवतोप्यंतरा भोग भाजः नाम्नावालः कु-
मारो युवसजरमृतास्त्वादिवर्णास्वरास्ते सिद्ध्युत्कर्षेयुवांतो
पचयद्वतरयोर्युध्यतां द्युए मृताचि भौमेनयोर्ज्ञाशिनोश्चगुरो
भृगोस्ते क्षेत्रेशानेरुदयिनोप्यनवांशकेजात् भारे २४ करे २१
तुपरतोतिमभानिसप्त ७ स्त्वादित्यतस्त्विद् सुरवा अपि पंच
केषु रूपा १२ द्वेषापिहायनर्त्तुषु चते तत्काय ११ भागांतराभुक्त्या
वाच्यपरेयनेत्वद्विरिमौ कृष्णान्ययोः राधेभाद्रपदे सहस्यद्वरिषा
वादेन भस्युर्मधो पौषैथैरपिशुक्र उर्ज उदयी माघांत्ययोरोस्तथा

अथैषामवांतरभोगचक्राणि-

| द्वादशवार्षिकांतः | | | | | | वार्षिकांतरभोगः | | | | | |
|-------------------|----|----|----|----|------|-----------------|----|----|----|----|------|
| अ. | ई. | उ. | ए. | ओ. | स्व. | अ. | इ. | उ. | ए. | ओ. | स्व. |
| १ | १ | १ | १ | १ | क. | १ | १ | १ | १ | १ | मा. |
| १ | १ | १ | १ | १ | मा. | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | वि. |
| २ | २ | २ | २ | २ | दि. | ४२ | ४२ | ४२ | ४२ | ४२ | घ. |
| ४३ | ४३ | ४३ | ४३ | ४३ | घ. | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | प. |
| ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | प. | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | वि. |

अत्रयस्योदये तस्यत्रिवारभोगः आदौमध्येतैश्च

| यणस्वरचक्रम् | | | | |
|--------------|-------|-------|---------|--------|
| अ. | इ. | उ. | ए. | ओ. |
| क. | ख. | ग. | घ. | च. |
| छ. | ज. | झ. | ट. | ठ. |
| ड. | ढ. | त. | थ. | द. |
| ध. | न. | प. | फ. | ब. |
| भ. | म. | य. | र. | ल. |
| व. | दा. | प. | त. | ह. |
| नरा | भद्रा | जया | रिक्ता | वृक्षा |
| मं.र. | बु.चं | बु. | शु. | श. |
| २४ | २१ | २१ | २१ | २१ |
| रे.७ | पू.५. | उ.५. | अ.५. | अ.५. |
| प्रभुव | मभा१२ | स्व१२ | शोभ१२ | |
| वाल | कुमा. | यु.वा | बृह | मृत |
| वेभामा | आ.आ | ज.से | ज्ये.का | मा.फा. |

| अयनचक्रमवांतरचक्र. | | | | | |
|--------------------|----|-----|-----|----|--------|
| अ. | ई. | अ. | ई. | अ. | ई. |
| द. | उ. | कु. | शु. | क. | शु. |
| १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | दिनाः |
| २१ | २१ | २१ | २१ | २१ | घट्टः |
| ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | वज्राः |

| ऋतुस्वरम् | | | | | |
|-----------|----|----|----|----|-----|
| अ | ई | ऊ | ए | ओ | स्व |
| ७२ | ७२ | ७२ | ७२ | ७२ | दिन |
| ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | दि. |
| ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | घ. |
| ४३ | ४३ | ४३ | ४३ | ४३ | प. |

| मासान्तरभोग पक्षांतरभोगदी- १५ राशयः | | | | | |
|-------------------------------------|----|----|----|----|------|
| अ | ई | ऊ | ए | ओ | स्व. |
| २ | २ | २ | २ | २ | दि. |
| ४३ | ४३ | ४३ | ४३ | ४३ | घ. |
| ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | प. |

अथाष्टौस्वराः नामाचः पूर्वोयः
समात्रास्वरः यथारामस्यः अः
नाम्नोहलचामैक्यं पंचभक्तं शे-
पोजीवस्वरः यथारामस्यः ओः
मात्रास्वरवर्णस्वरैक्यं ५ भक्तं

पिंडस्वरः यथारामस्य ओः मात्रास्वरवर्णस्वर ग्रहस्वरपिंडस्व-
र जीवस्वर भस्वरराशि स्वर एषामैक्यं पंचभक्तं यौगिकस्व-
रः यथारामस्य अकारः मात्रा च अः वर्णाच एः ग्रहाच्
पिंडाच् ओः भस्वि उः राश्याच् एः एषामैक्यं २५ पंचतष्टं शे-
पमेकं प्रथमोकारो यौगिको रामस्य योगाद्वादशवर्षे स्थिरवस्था

| अथ श्रीरामः स्याष्टौ स्वराः कार्याणि | | | | | | | |
|--------------------------------------|---------|------|-------|------|------|------|------|
| ए. | अ. | ए. | ओ. | ओ. | उ. | ए. | अ. |
| वर्ण | मात्रा | ग्रह | पिंड | जीव | भस्व | राशि | यौगि |
| व कः | मंत्रसि | शुभे | तेनार | शुभे | शुभे | शुभे | यौगि |
| समाप्त | होः | यने | यने | यने | यने | यने | जनम |

पिंडके व्दके भस्वरादय-
नेज्ञे याराशित्वाद्दुत्तरे
जीवान्मात्तस्वरेवस्था
ग्रहात्पक्षस्वरेतथावर्णा
दीनस्वरेज्ञेयामात्राचः

स्याद्घटीस्वरे योगाचायोगभजनं वर्णाचा सर्वमावहेत् विपे
षतस्तु संग्रामे सहि सर्वस्वरोग्रणीः विचारश्चायं नाम्न एव
बोध्यः

अत्रापिनाम्नोर्हलचामि
तिःपंचहृताअधिकाज-
यंहानामृतिंसाभ्येसंधि-
कथयति अथभूवल-
स्यसुरवंजयेद्युनिजय-
श्चघातात्स्यादाद्ययोःअं-
तिमयोर्नजयःस्वशत्रुव-

| जयपराजयम् | | | | |
|-----------|----|----|----|----|
| ३ | १ | ४ | २ | १ |
| अ. | ई. | उ. | ए. | ओ. |
| क. | ख. | ग. | घ. | च. |
| छ. | ज. | झ. | ट. | ठ. |
| ड. | ढ. | त. | थ. | द. |
| ध. | न. | प. | फ. | ब. |
| भ. | म. | य. | र. | ल. |
| व. | श. | ष. | स. | ह. |

| भूवलम् | | |
|--------|-----|-----|
| | पू. | |
| | अ. | |
| उं.ए. | ओ. | इद. |
| | उ. | |
| | प. | |

लापलाभ्यांभुवमाददीत इदंचधूतेचतुरंगे वश्यंविचार्य्यस्वी-
ययुवस्वरवत्यांदिक्षुजयः वालकुमारवत्यांघातात्-

| राशिचक्रम्. | | | रविहृत | | | चंद्रहृतदिक | | |
|-------------|-----------|------------|--------|-----------|--------|-------------|--|--------|
| ई. २।७ | हू. १।०मी | आ. १।११ | | पू. ५।७ | | ई. २।११ | | आ. ५।१ |
| उ. १२ | | र. ५ | उ. ४।५ | वामार्धम् | १।० द. | | | |
| उं. ५।३ वा. | च. ५ | ग्र. नै. ८ | | प. २।३ | | वा. ५।३ | | ६ नै. |

गूढराहु

| | | |
|-------|-------|-------|
| ई. ७ | पू. ४ | आ. १ |
| ठ. २ | | ५ द. |
| वा. ५ | प. ८ | नै. २ |

पृष्ठेर्कोयदिदक्षिणे पिपुरतःश्छायायवा
मेजयः किंत्वर्के वहती हयायिनिविधौ वा-
हस्थितेस्थायिनी छायापृष्ठगदक्षिणानि-
शिशाशीवामेग्रतोवाजयो यातुश्चंद्रवहेफ-
रस्पतुरंवे वामः शशीष्टःक्षयी चंद्रवलम् प्राचीमुदीचीवाचं-
द्वे गतेस्थायीजयी भवेत् प्रतीचीदक्षिणां प्राप्ते यायी विजय
माप्नुयात् वायुवलम् वायुःपृष्ठे दक्षिणेच वहन्सूचयतेच

मुहूर्तसिंधु

(१७३)

लम् संमुखीनश्चयामश्च भटानां भंगसूचकः

| मोहूर्तिकराहुः | | | | योगिन्यर्धप्रहरम् | | |
|----------------|--------|-------|-----|-------------------|-----|--------|
| ई. १। ११। १५ | ४। १२ | २। २८ | पू. | ७। १५ | आ. | २३ |
| उ. २२। ५ | १४। ३० | मोहू. | | २। १० | द. | १८। २५ |
| ३। ११ | १८। २७ | पा. | | ५। १३ | नै. | २१। २८ |
| ई. ८ | पू. १ | ३ आ. | | उ. २ | | द. ५ |
| ब. ७ | प. ६ | नै. ४ | | | | |

मौहूर्तिकोराहुरपियामार्धराहुरिवदक्षे पृष्ठेशुभः अर्धयाम-
योगिन्यपि दक्षे पृष्ठेशुभा दक्षे पृष्ठे योगिनीराहु युक्ताय स्यैको-
पि शत्रुलक्षं निहन्ताश्चैवं सर्वेभ्यो वलेभ्यस्तदेतत्सक्षेपोयं सर्व-
सारोभ्य धायी अथ यामार्धकालौ तावपि जयार्थी त्यागं कुर्व्या-
त् युद्धे द्यूते चापि सूर्यादिवारेषु क्रमात्तौ बोध्यौ

| अर्धयाम | | | | | | | काल | | | | | | |
|---------|-----|-----|-----|-----|-----|----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|----|
| र. | चं. | मं. | कु. | दृ. | शु. | श. | र. | चं. | मं. | कु. | दृ. | शु. | श. |
| ४ | ७ | २ | ५ | ८ | ३ | ६ | ८ | ३ | ६ | १ | ४ | ७ | २ |
| | | | | | | | | | | | | | |

अथ पापहोरा स्वराशिशत्रु ग्रहीयाहोरापि वर्जनीयाः

| शन्यंशः | | | | | | | |
|---------|-----|-----|-----|-----|-----|-----|----------|
| र. | चं. | मं. | कु. | दृ. | शु. | श. | ग्र. |
| ७ | ६ | ५ | ४ | ३ | २ | १ | यामार्ध. |
| ज. | सा. | प. | नै. | द. | मा. | पू. | दिश |

यामार्धभोगाच्छनिरस्ति
रस्यां तदानयायात्ककुभं
तदात्ताम् अथयिरुद्धया-
मार्धादिपुयुद्धे प्रहारस्थला-

| | | | | | | |
|---------|------------|----------|------------|---------|--------|-----------|
| याम | गूढज | राहोः | रकेः | चंद्रः | श-ग्रह | श-ग्र-होर |
| यामांशे | प्राग्भागे | कुचादिषु | श्रुत्यादि | आस्यादि | हृदि | मुखे |

जन्मगोचराभ्यां विरुद्धेषु.

| | | | | | | | | | | | |
|----|-----|-----|-----|-----|-----|----|-----|-----|--------|------|-----|
| र. | चं. | मं. | बु. | कु. | शु. | श. | रा. | के. | वास्तु | सूनु | कात |
| १ | १२ | ११ | १० | ९ | ८ | ४ | ५ | ६ | २ | ३ | ७ |
| ॐ | ॐ | ॐ | ॐ | ॐ | ॐ | ॐ | ॐ | ॐ | ॐ | ॐ | ॐ |

त्रिनाडिकम्

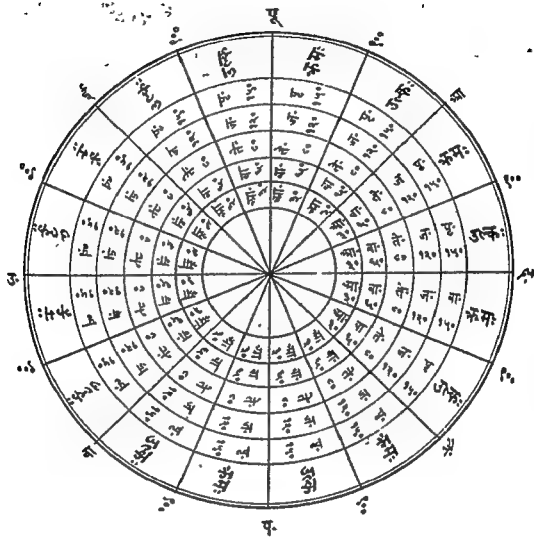
| | | | | | | | | | |
|-----|-----|-----|-------|-------|----|-----|-----|-----|----|
| आ. | पू. | उ. | अ. | ज्ये. | ध. | श. | भ. | रु. | एक |
| पु. | म. | ह. | वि. | मू. | श. | पू. | अ. | रो. | एक |
| पू. | अ. | वि. | त्वा. | पू. | उ. | उ. | रे. | सू. | एक |

यद्येकनाड्यां नामार्कचंद्रभानि प्रधनेत्याज्यानि अथ तात्कालिकनक्षत्रमाह भक्तनाड्यः ९ नवगुणाः २० विंशतिभक्ता गतभानि भवन्ति रव्यादि गतिनुतिलवार्धग्रहघटिका भवन्ति तत्तदग्रहाणां इदंच सूक्ष्मविचारे बोध्यमिति.

मुहूर्तसिंधुः

(१७५)

हंसचारफलम्



एकैकस्मिन्यत्रे एकैकस्यस्वरस्य क्रमादसवः पुनरुक्रमात् एवम-
ष्टपत्रे ७२०० असवः तेषां घट्यः २० एवमहर्निशं त्रिवृत्तिं अथ
कस्मिन्यत्रे प्राणाः पूर्वे प्राणवायोरणायचित्तं आग्नेये भोक्तुं द-
क्षिणे रूपे नैऋ- विषयाय पश्चि- मुदे वाय- गमाय उत्त- दयायै
ईशे नृपास्यदाय पत्रद्वयांतरचरे परस्थमुदे धरां बुनी शुभे महं

विमिश्रितं मरुन्मभसीदुःखदे द्वेदपत्रेकमादिनेदुवहतः शुक्लप्र
तिपदादिभिधस्त्रं हिमगुः ततोरविः ततश्चंद्रः एवमेव क्रमाक्रमप्रः
वृत्तौ प्रत्युषतः श्रेयः चेदेकनाड्यां ५ दिनममितत्वं वहतिमृतिर्भ
वेत् अर्कस्वरेमितत्ववहने एकोवहून् जयति स्वशून्ये विपक्षं कृत्वा
पिजयति दक्षवहे दक्षनगरेण वामगवहे वामनगरेण पृष्ठेजयः व्य
त्यासेन अथ दक्षवहे विषमाक्षराणि तदपिजयेः पुरः स्थितो वा
मगो बोध्यः पृष्ठगो दक्षिणो बोध्यः आसांतर्गमे वामे दक्षे वाजयः
आसानिर्गमे वामे दक्षे पराजयः नृपविलोकनगेहवेशापद्याभि
षेक सुखकर्माणि चंद्रेशुभानि च कर्माणि मज्जन वधूरतिभुक्तिं
युद्धमुख्यं अशुभकर्म च सूर्ये कर्तव्यं अंगनायाश्चंद्रस्वरे वहति
धारितत्व वहने पुरुषस्य रविस्वरे बन्धितत्व वहने चंद्रतिशीघ्रं वति
अथ सुप्ताया चंद्रनाडीं मनुजः सूर्येण चंद्रं पिबेत्कांतामामृतोर्ब
वायति कांताचेत्कांतरविंस्वचंद्रेण पिबति कांतमामृतोर्बवायति
अथ द्यूते विरोषमाह स्वरच्छाया निलार्केन्दुयोगिनी राहुभुवलैः
अन्यैश्च द्यूतमावधन्जयत्येव धनं बहु अथ जयदौषध्यः पुष्पा
र्कं धृतातालजटाकेतकदल स्वार्जूरफ तगरसधृतभुक्तानिर
शनैः शिरसि धृतावाशरन्निवारका तंडुलांघुना पाठाजटापीट-
शी अंकोला लक्ष्मणा पुंखा सर्पाक्षी शिखी मूली विष्णुकांता
काकजंघा नीली सहदेवी पाटला भुजास्य मूर्धगां भुक्ता तज्ज
ट्टेकापिवारयेत् रणे दारुणशस्त्रौघं अथ पीत कपर्दि कायां वृ-
हती रसधृष्टः पारदः सवृहतीजटः सिक्थमुद्रितः मुखे धृतो वि-

मुहूर्तसिंधुः

(१७७)

वादेजयदः चक्रमर्दगोजिह्वांशिखिचूडा-पुष्पार्कधृताभु-
जास्थमूर्धगावादजयदा अत्रकोटसर्वतोभद्रकालनलान्य-
पि विचार्याणि-अथसंग्रामेशुभंचिह्नम् जिह्वाशोषः प्रकंपश्च
तांबुले रागहीनतावर्णः सगद्गदोयस्यतस्यमृत्युरणे भवेत्
अथशुभलक्षणम् प्रफुल्लितमुजौचैवरोमांचीस्थिरदृग्भटः
धैर्योपेतः समुत्साहीविजयी सरणे भवेत् अथावश्यकेशिवा
लिखितं प्रोच्यते तत्रादौतेपांकर्मा

रौद्रादयः १७

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|--------------|--------|---------|--------------|------------|-----------|--------|-------------|----------|-------------|---------|----------|------|---------|--------|-----------|
| रौद्र | भय | मैत्र | वार्ध | जपे | पैरो | तुर | अग्नि | राव | शाल | विशि | नंद | यम | सौ | मग | कवि |
| रौद्रकर्माणि | गजवधनं | यनादिकं | स्नानप्रतिषे | सर्वार्थदं | पट्टनिषेक | शालसाध | ग्रामप्रवेश | शैरसाधनं | शुद्धकार्यं | शुभकर्म | पंचबालनं | मरणं | सगोपवेश | स्तीसग | विष्णुभास |

नतिथिर्नचनक्षत्रंनयोगकरणानिवानशूलंयोगिनीकालो न
होरानतमः सितः व्यतिपातेचसंक्रांतौ भद्रायामशुभेद्रष्टव्यंचशि-
वालेख्यंसर्वविघ्नोपशान्तये शून्येशून्यं भवेत्कार्यं विघ्नमावर्तके भवेत्
कालवेलाध्रुवं मृत्युः सर्वसिद्धिस्तथा मृते अमृतस्योर्ध्वरेखैकाका
लेरेखात्रयंतथा विघ्नस्यावर्तकंद्वंद्वविदुः शून्यस्यलक्षणः मा.फा.वै.वै.भा.भा

रथोनभाकेशवविघ्नराजो गोविंदनामानभ आरवुगामी.

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|------|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|----|-----|
| ० | । | । | । | ६ | ० | ६ | ० | । | । | । | ० | ६ | ० | ६ | ० |
| रौ. | स्व. | मै. | चा. | ज. | वै. | तु. | अ. | रा. | वा. | वि. | नं. | य. | सौ. | भ. | सा. |
| त. | त. | स. | स. | र. | र. | त. | त. | स. | स. | र. | र. | त. | त. | स. | म. |
| र. | र. | शु. | शु. | बु. | बु. | चं. | चं. | ग. | श. | जी. | जी. | भो. | भो. | र. | र. |
| उ. | उ. | अ. | अ. | रो. | रो. | ला. | का. | शु. | शु. | च. | च. | अ. | अ. | उ. | उ. |

रात्रौ नृसिंहो युगुलं नभः खं लक्ष्मीशलं वोदररामसंज्ञः

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| ० | १ | १ | ६ | ० | ० | ० | १ | १ | १ | ६ | ६ | ६ | ० | १ | १ |
| २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १ |
| र. | र. | त. | त. | स. | स. | र. | र. | त. | त. | स. | स. | र. | र. | त. | त. |
| ६ | ६ | ४ | ४ | २ | २ | ७ | ७ | ५ | ५ | ३ | ३ | १ | १ | ६ | ६ |
| अ. | अ. | रो. | रो. | ला. | ला. | शु. | शु. | च. | च. | अ. | अ. | उ. | उ. | अ. | अ. |

सोमे हरिर्विघ्नपतिः सुरेशः शून्यं च गौरीसुत विष्णुनामा.

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|-----|-----|-----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|-----|-----|-----|
| १ | १ | ६ | ० | ६ | ० | १ | १ | १ | ० | ६ | ० | ६ | ० | १ | १ |
| २ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १ | २ |
| १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | १ | १ | २ | २ |
| २ | २ | ७ | ७ | ५ | ५ | ३ | ३ | १ | १ | ६ | ६ | ४ | ४ | २ | २ |
| ला. | ला. | शु. | शु. | च. | च. | अ. | अ. | उ. | उ. | अ. | अ. | रो. | रो. | ला. | ला. |

पदं निदायां खखविष्णुः शून्यं युग्मं च नारायणविघ्ननाथो

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|-----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| ७ | ० | ० | १ | १ | ० | ६ | ० | १ | १ | १ | १ | ६ | ० | ६ | ० |
| ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १ | २ | ३ |
| ३ | ३ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | १ | १ |
| ७ | ७ | ५ | ५ | ३ | ३ | १ | १ | ६ | ६ | ४ | ४ | २ | २ | ७ | ७ |
| शु. | शु. | च. | च. | अ. | अ. | उ. | उ. | अ. | अ. | रो. | रो. | ला. | ला. | शु. | शु. |

भौमे यमो मारमणीय युग्मं युगं हरिश्चैव गजाननश्च.

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|----|----|----|----|
| ७ | ७ | १ | १ | १ | १ | ६ | ० | ६ | ० | १ | १ | ० | ६ | ० | ६ |
| ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १ | २ | ३ | ४ |
| २ | २ | ३ | ३ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ |
| ३ | ३ | १ | १ | ६ | ६ | ४ | ४ | २ | २ | ७ | ७ | ५ | ५ | ३ | ३ |
| अ. | अ. | उ. | उ. | अ. | अ. | रो. | रो. | ला. | ला. | शु. | शु. | च. | च. | अ. | अ. |

मुहूर्तसिंधुः

(१७९)

नक्तंचविघ्नंदिपदंमुकुंदपदचयं श्रीनिधिपन्नसिद्धिः

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|-----|-----|-----|-----|----|----|----|----|----|----|
| ६ | ० | ५ | ५ | १ | १ | १ | ५ | ५ | ५ | १ | १ | १ | ५ | १ | १ |
| ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १ | २ | ३ | ४ | ५ |
| १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | १ | १ | २ | २ |
| १ | १ | ६ | ६ | ४ | ४ | २ | २ | ७ | ७ | ५ | ५ | ३ | ३ | १ | १ |
| उ. | उ. | अ. | अ. | रो | रो | ला. | ला. | शु. | शु. | च. | च. | अ. | अ. | उ. | उ. |

बुधेधनुः कृष्णयमौचशौरिः शौरिधनुः शौरियमौ.

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|-----|-----|-----|-----|-----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|-----|
| ६ | ६ | १ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ |
| ३ | ३ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | १ | १ |
| ६ | ६ | ४ | ४ | २ | २ | ७ | ७ | ५ | ५ | ३ | ३ | १ | १ | ७ | ६ |
| रो. | रो. | ला. | ला. | शु. | शु. | च. | च. | अ. | अ. | उ. | उ. | अ. | अ. | रो. | रो. |

रात्रौसुवशाध्यजएवपंचयुगंस्वदामोदर कुंजरास्याः

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|----|----|----|----|----|----|----|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | १ | १ | १ | १ | ६ | ० | ० | १ | १ | १ | १ | १ | ० | ० | ० |
| ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ |
| २ | २ | ३ | ३ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ |
| ४ | ४ | २ | २ | ५ | ५ | ७ | ७ | ३ | ३ | १ | १ | ६ | ६ | ४ | ४ |
| ४ | ४ | ५ | ५ | ६ | ६ | ७ | ७ | १ | १ | ० | ० | ३ | ३ | ४ | ४ |

गुरौगोपनाथस्ततोविघ्ननाथो नभःकेशवः कुंजरास्यः

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|----|----|----|----|----|----|----|---|---|---|---|---|---|---|-------|
| १ | १ | १ | १ | १ | ६ | ० | ० | १ | १ | १ | १ | ६ | ० | ६ | ० |
| ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ |
| १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | १ | १ | २ | २गुण |
| ३ | ३ | १ | १ | ६ | ६ | ४ | ४ | २ | २ | ७ | ७ | ५ | ५ | ३ | ३ग्रह |
| ७ | ७ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | ४ | ४ | ५ | ५ | ६ | ६ | ७ | ७देता |

मिश्रायां पदं नंदजः सूर्यसूनुर्नभोमाधवश्चापमेकं हरिः

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ७ | १ | १ | १ | ७ | ७ | ७ | ७ | ० | १ | १ | १ | ६ | ० | १ | १ |
| १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ |
| ३ | ३ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | १ | १ |
| १ | १ | ६ | ६ | ४ | ४ | २ | २ | ३ | ३ | ५ | ५ | ३ | ३ | १ | १ |
| ७ | ७ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | ४ | ४ | ५ | ५ | ६ | ६ | ७ | ७ |

शुक्रे रुष्णकालश्च न्यो मुरारिर्गौरीपुत्रो गोपतिः शून्यम्

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|
| १ | १ | ७ | ७ | ० | १ | १ | १ | ६ | ० | ६ | ० | १ | १ | १ | ० |
| ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० |
| २ | २ | ३ | ३ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ |
| ६ | ६ | ४ | ४ | २ | २ | ७ | ७ | ५ | ५ | ३ | ३ | १ | १ | ६ | ६ |
| ९ | ९ | ३ | ३ | ४ | ४ | ५ | ५ | ६ | ६ | ७ | ७ | १ | १ | २ | २ |

नक्तं कालः कंसहाश्च न्ययोगपादेदं हं यामनः खंचपादौ

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|
| ७ | ७ | १ | १ | १ | ० | ६ | ० | ७ | ७ | १ | १ | १ | ० | ७ | ७ |
| १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ |
| १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | १ | १ | २ | २ |
| ४ | ४ | २ | २ | ७ | ७ | ५ | ५ | ३ | ३ | १ | १ | ६ | ६ | ४ | ४ |
| ३ | ३ | ४ | ४ | ५ | ५ | ६ | ६ | ७ | ७ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ |

शनीपदं श्रीश्च नभश्च नाको नारायणो नो हरिखं हरिखं

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|
| ७ | १ | ० | ० | ० | १ | १ | १ | १ | ० | १ | १ | ० | १ | १ | ० |
| १३ | १४ | १५ | १६ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ |
| ३ | ३ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | १ | १ |
| २ | २ | ७ | ७ | ५ | ५ | ३ | ३ | १ | १ | ६ | ६ | ४ | ४ | २ | २ |
| ६ | ६ | ७ | ७ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | ४ | ४ | ५ | ५ | ६ | ६ |

रात्रौचतुर्थपदमाधवश्च स्वविघ्नरात्रौ नृहस्त्रिचापः

| ० | ७ | ७ | १ | १ | १ | ० | ६ | ० | ६ | ० | १ | १ | १ | ६ | ० |
|----|----|----|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|
| १४ | १५ | १६ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ |
| २ | २ | ३ | ३ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ |
| ७ | ७ | ५ | ५ | ३ | ३ | १ | १ | ५ | ५ | ४ | ४ | २ | २ | ७ | ७ |
| ३ | ३ | ४ | ४ | ५ | ५ | ६ | ६ | ७ | ७ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ |

अथाश्विने कार्तिकमार्गः पौषे मासेषु अग्रिमवाक्यैः सूर्ये इत्यादिभिः गुरु सोमदिने संत्वरजश्चांगारके भृगौरविमंदबुधेष्वेतमोनाडिचतुष्टयं उद्देगात्प्रमृता रोगात्प्रभाशुभाचला स्थिराक्रमात् वारात्षष्ठो भवेत् वारोनिशास्वेवं विधिस्मृतः इत्यादिविस्तरः

सूर्येनृसिंहोद्विपदंचापं हरिर्नमोतः पदमच्युतोद्भिः

| १ | १ | १ | ७ | ७ | ६ | ० | ६ | ० | ० | ० | ० | १ | १ | १ | ७ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ |
| ३ | ३ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | १ | १ |

रात्रौपदंचापखमच्युतश्चयुग्मेयमोविष्णुस्वसिद्धिपादं

| ७ | ६ | ० | ० | १ | १ | १ | ० | ० | ७ | ७ | १ | १ | ० | १ | ७ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|---|
| २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १ |
| २ | २ | ३ | ३ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ |

(१८२)

मुहूर्तसिंधुः

सोमं धिचापं नभसीमुकुंदं नभश्च युग्मं हरिखं हरिश्च-

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|---|---|
| ॐ | ६ | ० | ० | ० | १ | १ | १ | ० | ६ | ० | १ | १ | ० | १ | १ |
| ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १ | २ |
| १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | १ | १ | २ | २ |

पदं निशायां युगखं मुरारिर्बिनायकीविष्णुनभश्च विष्णुः-

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|---|---|---|
| ॐ | ६ | ० | ० | १ | १ | १ | ६ | ० | ६ | ० | १ | १ | ० | १ | १ |
| ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १ | २ | ३ |
| ३ | ३ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | १ | १ |

भौमे महेभास्य नभश्च विष्णुखं स्या युगंगोपतिखं च युग्मं

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|---|---|---|---|
| ६ | ० | ६ | ० | ० | १ | १ | ० | ६ | ० | १ | १ | १ | ० | ६ | ० |
| ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १ | २ | ३ | ४ |
| २ | ० | ३ | ३ | १ | १ | २ | २ | ३ | १ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ |

नक्तं करिंद्रास्य रवमच्युतश्च योगश्च शून्यं बृहरीयोगो

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|---|---|---|---|---|
| ६ | ० | ६ | ० | ० | १ | १ | १ | ६ | ० | ० | १ | १ | १ | ६ | ० |
| ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १ | २ | ३ | ४ | ५ |
| १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | १ | १ | २ | २ |

बुधे धनुः श्रीकरपादयुग्मं गदाधरो योगणनाथसिद्धिः-

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|---|---|---|---|---|---|
| ६ | ० | १ | १ | १ | ॐ | ॐ | १ | १ | १ | १ | ६ | ० | ६ | ० | १ |
| ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ |
| ३ | ३ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | १ | १ |

मुहूर्तसिंधुः

(१८३)

रात्रौ च कालो हरिश्च न्य कालो गोविंद गौरी सुतश्च न्य सिद्धिः

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|----|----|----|----|----|----|----|---|---|---|---|---|---|---|
| ॐ | ॐ | १ | १ | ० | ॐ | ॐ | १ | १ | १ | ६ | ० | ६ | ० | ० | १ |
| ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ |
| २ | २ | ३ | ३ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ |

गुरौ हरिः शून्य युगं सुरेज्यः श्रीविघ्नराजो गगनं श्रीः

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|----|----|----|----|----|----|----|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | १ | ० | ६ | ० | १ | १ | १ | १ | ६ | ० | ६ | ० | ० | ० | १ |
| ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ |
| १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | १ | १ | २ | २ |

निशं ध्रिदैत्यारिखकार्मुकं च पदे मुरारिख युगं श्रीः

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ॐ | १ | १ | १ | ० | ६ | ० | ॐ | ॐ | १ | १ | १ | ० | ६ | ० | १ |
| १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ |
| २ | ३ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | १ | १ |

शुक्ररमाचापमरीदं वश्च लंबोदरः केशवश्च न्य पादः

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|
| १ | ६ | ० | १ | १ | १ | १ | ६ | ० | ६ | ० | १ | १ | १ | ० | ॐ |
| ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० |
| २ | २ | ३ | ३ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ |

नक्तं युगं श्रीपतिखं च युगं युगं मुरारिर्गगनं च युगं

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|
| ६ | ० | १ | १ | १ | ० | ६ | ० | ६ | ० | १ | १ | १ | ० | ६ | ० |
| १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ |
| १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | १ | १ | २ | २ |

(१८४)

मुहूर्तसिंधुः

शनौपदं श्रीर्नभश्च, नैव नारायणो नो हरिस्त्वं हरिर्नोः

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|
| ७ | १ | ० | ० | ० | १ | १ | ० | १ | ७ | १ | १ | १ | ० | ० | ० |
| १३ | १४ | १५ | १६ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ |
| ३ | ३ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | १ | १ |

रात्रौ पदं स्वंपदमाधवः स्वंगजाननोगोपति शून्यपादं

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|
| ७ | ० | ७ | १ | १ | १ | ० | ० | ० | ० | ० | १ | १ | १ | ० | ७ |
| १४ | १५ | १६ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ |
| ३ | ३ | ३ | ३ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ |

ग्रीष्मर्तौ ज्येष्ठापादयोः सूर्यादिवारेषु मुहूर्तत्वनारोध्याः अग्रिमकोटैः अर्के शून्यमिति.

अर्के शून्यं च रूपगो युगपदस्वहरिर्विष्णुचापंच शून्येः

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|
| ० | ० | १ | १ | ० | ० | ७ | ० | १ | १ | १ | १ | ० | ० | १ | १ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ |
| ३ | ३ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | १ | १ |

रात्रौ विश्वेरायुर्मयुगलहरियुगं युग्मरूपं च शून्यम्

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|---|
| १ | १ | १ | ० | ० | ० | ० | १ | १ | ० | ० | ० | ० | १ | १ | ० |
| २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १ |
| २ | २ | ३ | ३ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ |

सोमेचापद्वयं नो नृहरिस्वयुगलं पीतवा साच शून्यम्

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|---|---|
| ० | ० | ० | ० | ० | १ | १ | १ | ० | ० | ० | १ | १ | १ | १ | ० |
| ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १ | २ |
| १ | १ | २ | ३ | ३ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | १ | १ | २ | २ | ३ |

(१८६)

मुहूर्तसिंधुः

जीवे विष्णुः स्वचापे गगनमजितरवं अंग्रियुग्मं नृसिंहः

| | | | | | | | | | | | | | |
|---|----|----|----|----|----|----|----|---|---|---|---|---|---|
| १ | १ | ० | ० | ० | १ | १ | १ | ० | ३ | ० | १ | १ | १ |
| ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ |
| १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | १ | १ |

राज्ञोत्तररवं मुकुंदो नहिच सुरारिपुः शंभुसुनुअविष्णुः

| | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ० | १ | १ | १ | ० | १ | १ | १ | १ | ० | ० | १ | १ |
| १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ |
| ३ | ३ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ |

शुक्रयुग्मं सुरारिगगन युगमजो विभ्रराजो भगोपः

| | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ० | १ | १ | १ | ० | ० | ० | १ | १ | ० | ० | १ | १ |
| ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ |
| ३ | ३ | ३ | ३ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | १ | १ | २ | ३ |

राज्ञो युग्मगोपीपति युगगगनः श्रीपतिः स्वंपदे श्रीः

| | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ० | १ | १ | १ | ० | ० | ० | १ | १ | १ | ० | ३ | ३ |
| १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ |
| १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | १ | १ |

मंदे श्री युग्मलक्ष्मीः हरिनभः सुतिरवंपदे स्वरमाखं

| | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|
| ० | ० | १ | १ | १ | ० | ३ | ३ | ० | ३ | ३ | ० | १ | ० |
| १३ | १४ | १५ | १६ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० |
| ३ | ३ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ |

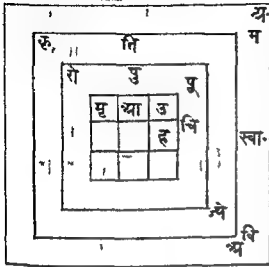
तन्मक्तं श्रीर्युगद्योनभन्वयुगहरी नैवगोविन्दश्चन्यम्

| | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|
| १ | ८ | ७ | १ | १ | ० | ० | ८ | ७ | १ | १ | ० | १ | १ | ० |
| १४ | १५ | १६ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ |
| २ | २ | ३ | ३ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | १ | १ | २ | २ | ३ |

शिवेनलिखितंयस्माच्छिवालिखितमुच्यते अत्रदिनमानंषोडशभक्तंरौद्रादिमानंभवति स्पष्टंतुहोराइवनानेयमूरव्युदयस्यावधित्वादिति अथनक्षत्रफलम् अनु-मृ-ह-ध-रे-ति-स्थितिः ज्ये-आ-धि-स्वा-रो-पुनर्यात्रा-मू-पु-वि-इत्यादि-प्रावेशिकं ध्येयमिति बोध्यम् इतियात्रा ११ अथवास्तुनिर्माणम् १२ नारदः निर्माणोपत्तनग्रामगृहादीनां समासतः क्षेत्रमादौपरीक्षेत गंधवर्णरसादिभिः श्वेताशस्ताद्विजेद्राणां रक्ताभूमिर्महीभुजां विद्यापीताचशूद्राणां कृष्णान्येषांचमिश्रिता मधुपुष्पाम्लपिशित गंधान्विप्रानुपूर्वकं मधुरंकटुकं तिक्तं कषायश्चरसाः क्रमात् अत्यंतवृद्धिदं नृणामीशानप्रागुदकपूर्वं-मनसश्चक्षुषोयत्र संतोषोजायतेभुवि-तस्यांकव्यं गृहंसर्वैरितिगर्गादिसंमतं छत्रंयंत्रंपताकावाहास्यंस्त्रीणांचदृश्यते क्रीडितंयंत्रवाहानां विद्वितत्रमहाधनम् अथसाधारणगंधाः काश्मीरीचंदनामोदकर्पूरागुरुगंधिनी कमलोत्पलगंधाचजातीचंपकगंधिनी सरलमल्लिका गंधा नागकेशरगंधिनी दधिर्क्षीराज्यगंधाच शुभगंधयुताचया सर्वेषामेववर्णानां भूमिः साधार-

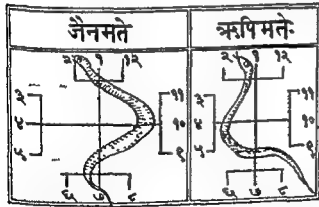
एतामता ॥ अथ भूमिजातयः ॥ ब्राह्मणीधृतगंधा
 स्याद्रसगंधाचक्षत्रिचा क्षारगंधाभवेद्द्वैत्रया शूद्राविद्गंधिनीक्षिति
 ब्राह्मणीभूः कुशोपेता शरयुक्ताचक्षत्रिचा कुशकाशयुता वैश्या
 शूद्रासर्वतृणायुता- श्वेतापीतातथा कृष्णारक्तवर्णासमन्विता-
 स्थिरोदकादृढास्निग्धा भूमिः सर्वसुखावहा शीतस्पर्शीष्मकालेतु
 वह्निस्पर्शाहिमागमे वर्षासुचोभयस्पर्शासाशुभापरिकीर्तिता वित
 स्तिमात्रं विस्तारं निर्माय विचरं भुवि निक्षिपेत्ताम्रदस्तस्मिस्तासुशि
 षासुशोभनं हीनेहानिःसमेसमं तथानिशादौ कृत्वा तु पानीयेन प्र
 पूरयेत् प्रातर्दृष्टे जले वृद्धिः समः पंके व्रणे क्षयः अथात्रादौ दुर्गारं
 भणामु- उत्तरायणेवामार्गकार्तिक आश्विनेषु मृन्मयदुर्गस्तु सदा-
 ३-६-९-१२ एतद्वाशिकेरवौ तथा च गुरुशुक्रचंद्रमसामस्ते दु-
 र्गारं भोन- तथा भौमदशेश सोमैर्दुष्टैरपि दुर्गारं भोन- तथा २।७
 १२ रिक्ता ४।९।१४।२० एतास्तिथयो- बुधभौमवारौ विऽ
 लाऽडलौ विद्वद्युक्तभानिराहुसंमुखदिक्का शुभाय राहुमुखम्
 मार्ग-पौष-मा-पूर्व-फा-चै-वै-दक्षिणेज्ये-आ-आ-पथ्यमे
 भा-आ-का-उत्तरे आ-श्र-ह-मृदुधुव ति-स्वा-श-ध-एषुभे
 पु ३।७।६ धनुः पूर्वार्धादिलग्न्येषष्टेपापग्रहे शोभनयुक्तेन्द्रे-
 अथदुर्गचक्रमाह अथत्रिरेखेवलयेचतुर्भुजे कार्शानवाहीश-
 दिशोभपंजरं कोणांशवेशांदिशि निर्गमयथा-न्यसेत्तथादुर्गविधां-
 ये शालोदितं शालनिवेशनेवरं भुक्तमाद्यैरहिता वहि-
 पारंभणो मंगलमंदमध्ययुग्दुर्गस्थभंगायविचिंत्यमन्ननु-

आरंभखाते यदि मंगलोयमोऽप्रनिश्चयः एवमेव नगरारंभेऽपि नगरनामभतोऽध्येयम् ॥



प्रवेशने भेमानवकीर्णस्तंभित
भेदुर्गमं विनिर्गमभेदून्यनिवृत्त
वृत्तं निविष्टभवेत् अथ राहुभ्रम
माह वृषार्कतो वामगत्या राहुभ्र-
मः राहुश्चान्यविदिशिरवात्तः शं-
कुनिवेश-शुभ-ईशान्ये सुखे वाय-
व्ये उदरं लूननैर्ऋत्येतदा मिदिक्
पृदाकुशून्या जैनास्तु ईशान्ये सु-

खं आग्नेय्या सुदरं वायव्यं पृदाकुशून्यादिक्



दुर्गेपुरे चौकसिमंडले ह-
रे ५ प्रपामरागारकयोः
शदिक् १२ मेः वेधादि
सर्वत्र फटेति गो २ अयं
जगादवादाय तु जैनदर्श-
नं यदैककाले निस्विलाय-

टक्रियास्याहं दशूकभ्रमणैकतांतदा भुजंगश्चान्यं घटते पटं सदा
प्रमाणातोऽत्रेति न तन्मतं धृतं भोगानुगमं दिशिरवात्तमाह त कुता
किं कः कश्चिदुवाच वेत्यपि निर्ग्रथपक्षाह तदंभवानसौ वदत्येष्वे-
तिकलादिकं हरेः अष्टपदचक्रमाह

अष्टपदम्

| मा. | आ. | का. | इ. | ऊ. | शु. | श. | र. | आ. |
|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| र. | चं. | मं. | बु. | बु. | शु. | श. | र. | आ. |
| चं. | मं. | बु. | बु. | शु. | श. | र. | चं. | मं. |
| मं. | बु. | बु. | शु. | श. | र. | चं. | मं. | बु. |
| बु. | बु. | शु. | श. | र. | चं. | मं. | बु. | बु. |
| शु. | श. | र. | चं. | मं. | बु. | बु. | श. | र. |
| श. | र. | चं. | मं. | बु. | बु. | श. | श. | मं. |
| र. | चं. | मं. | बु. | बु. | श. | श. | र. | आ. |

समीरमार्गाशपदांशपे-
टकेचरत्यहिर्वासनया
रमंदगः इत्याहकश्चित्
किलवास्तुशास्त्रविन
तेनदृष्टंभ्रमंशतुदृक्
श्रुतेः चतुर्भुजांघ्रिस्तु
चतुर्भुजेषुरौद्रादिकेष
अ फटास्थितिः स्यात्
इतिप्रमाणं प्रकटं प्र
वीर्णैरुदीरितं वासन
यापुराणैः मासति-

ध्यादिकं ग्रहसंस्थाचगेहारंभ इव ग्रामनगरारंभेषु बोध्या अ-
थग्रामस्यशुभाशुभज्ञानं स्वनामराशितः यस्यग्रामस्यराशि
२।९।५।११ गः सशुभः अथग्रामभात्सप्त७ मस्तके पृष्ठे
७ पदे ७ हृदि ७ मस्तकेधनीपृष्ठहीनः हृदिसुरवं पादेपर्यटनं
ग्रामाल्लाभादि स्ववर्गमकचटादिकं यत्संख्याकं द्विगुणं कृ-
त्वा परवर्गकसंख्यायायुतं ८ तष्टपुनः परवर्गद्विगुणं स्ववर्ग-
कसंख्यायुतमष्टतष्टं काकिण्यो भवंति यस्याधिकाग्रामस्यस
शुभः अथशाल्यज्ञानम् जलांतं प्रस्तरांतं वा पुरुषांतमथापि-
वा क्षेत्रं संशोध्य चोद्धृत्य शाल्यं सदनमारभेत् यस्मिन्भागे सौ-
म्यागृहस्य तद्व्यमादिशोत्तत्र यापायस्मिन्भागे तस्मिन्शाल्यं

विनिर्देश्यं स्मृत्यैव देवतां प्रष्टुवचनस्याद्यमक्षरं गृहीत्वा तु ततः शाल्याशल्यं सम्यग्विचारयेत् अकचटतपशहयावर्णापूर्वादि मध्यांताः शल्यकरा इह नान्ये

| चक्रम् | | | | | | | | | |
|-------------|-------------|-------------|-------------|--------|---------|--------|--------|--------|--------|
| अ | क | ग | द | त | थ | श | रु | य | वर्गः |
| पूर्व | आमे | तस्ति | नैर्ऋत | पश्चि | गोच | उत्तरे | दक्षि | मूर्ध | दिश |
| नक्षत्राणां | नक्षत्राणां | नक्षत्राणां | नक्षत्राणां | विशुभा | तुषागार | शिमशाल | गोमाल | मृकपाल | वृत्ते |
| ॥ ह | २ ह | २ ह | ॥ ह | ॥ ह | २ ह | २ ह | ॥ ह | कषमरम | हस्त |
| मृगशिर | मृग | मृगशिर | मृगशिर | मृगशिर | मृगशिर | मृगशिर | मृगशिर | मृगशिर | फलं |

रवन्यमानेयदारवाते पाषाणं प्राप्यते यदा तदापमृत्यवे चास्थिकेशांगारैर्धनक्षयः स्फुरितासशल्याच यस्मिंकारोहिणीतथादूरतः परिषर्ज्याभूः कीर्तिरायुर्धनक्षयः हस्तत्रया दधस्ताच्चेच्छल्यं यै नान्न दोषकृत् शुभं गोशृंगः

पीतमंडूकः शंखकच्छपमौक्तिकाः शक्तिश्चमलि पाषाणाः प्रशस्तारनजातयः अंगारं यैनुपंकेशमस्थिं शल्यं विचारयेत् अथ दिक्साधनं कपिशिर्षप्रमाणैश्च प्रावाणोः पूरयेद्ददं रवातंतनु समं कृत्वा ततः प्राचीं प्रसाधयेत् प्रासादे सदनं लिंदं कुं डे द्वारे विशेषतः दिङ् मूढे कुलनाशः स्यात्तस्मात्संसाधयेद्दिशः ध्रुवलं यक्र रेखायारेखांतः सौम्ययाम्यहरितौस्तः तन्मच्छपुच्छ मुरषतः पश्चिमपूर्वाभिधेर्विद्यात् अथ गृहविस्तारदैर्घ्ये एकोभिते पृक्षितादि १५ तिथ्यः रूपानितेष्टाय हते दुर्नागैः ८१ युक्ता घनै १७ अपि युता विभक्त भूपाश्चिभिः शेषमितो द्विपिडः अस्वार्थः अथाननीलांवर शर्मणोरोहिण्या

(१९२)

मुहूर्तसिंधु

सहमेलापकः सम्भवति तथा चेष्टभंरोहिणीतत्संख्या ५ एकोनि
ता ३ अनेन हितिथ्यो १५२ गुणिता ४५५ इष्टायोवृषः एतत्संख्या
५ निरेका ४ अनेनेन्दुनागाः ८१ गुणिताः ३२४ अनयोर्योगः ७८०
धने १७ युक्ताः ७९७ अस्य भूपाधिभा २१५ गः शेषं १४९ अस्य
पिंडसंज्ञा- स्वेष्टायर्क्षभवः पिंडोदैर्घ्यहृदिस्तृतिर्भवेत् विस्तृत्याल
भ्यतेदैर्घ्यं यथा लाभं यथाक्रमम् परंचैतद्गृहांतरवर्तिगृहमानमेव
अन्यथेदं पर्णशाला मुहूर्तमेव भवेत् दैर्घ्यं २४। विस्तृतिः ५
पिंडेष्टभक्ते शेष ५ आयोवृषारव्य- यतउक्तं उत्तममष्टाभ्यधिकं ह
स्तशतं नृपगृहं पृथुत्वेन अष्टाष्टेनाप्येवं पंचसपादानिदैर्घ्येण वा-
स्तुनियोविस्तारः स एव चोद्धायनिश्चयः शुभदः शालैकेपुगृहेष्वपि
विस्ताराद्विगुणितं दैर्घ्यं चातुर्वर्ण्यव्यासोद्वात्रिंशत्स्याच्चतुश्चतुर्ही
नाः आपोडशादिति परं न्यूनतरमतीवहीनानाम्- हस्तशतादधि
के मुच्छितं नेच्छन्ति व्यासात् षोडशभागः सर्वेषां भित्तिः इत्यादि
चहुविधेदंसिद्धं अभीष्टविस्तृतिदैर्घ्यैः परस्परं संगुण्याष्टतष्टे शे
षमायः यथा १५ विस्तृतिः दैर्घ्यं ३५ अनयोराहतिः ५२५ अ-
ष्टतष्टे शेष ५ वृषायः क्षेत्रफलं ५२५ अष्टगुणितं ४२०० सप्तविं
शतितष्टे शेषं १५ स्वातिभं निजभात् गृहभं वेद ४ हतं शैलत-
ष्टं धनं गृहभान्निजभं वेद ४ हतं शैलतष्टं व्ययः यथापूर्वेक्त ना-
मभात् अनुराधायाः सकाशाद्गृहभं स्वाति २५ मितं वेद हतं १०४
सप्ततष्टं ५ शेषं धनं गृहभान्निजभं ३ वेद हतं १२ सप्ततष्टं ५ शे
षं व्ययः इदमेव मुनेर्बादरायणस्य सम्मतम् विस्तारगुणितं दै-

र्घ्यं गृहक्षेत्रफलं भवेत् तत्पृथग्वसुभिर्भक्तं शेषमायोध्वजादिकं वा-
स्तुफलम् स्वेदकर्पटकोटेषु वृषः सिंहो गजः शुभः वापी कूपतडागादौ
गजो देवो विचक्षणैः आसने योजयेत् सिंहं शयने चैव कुंजरं वृषं भो-
जनपात्रे च दद्याच्छत्रादिषु ध्वजं महानसे मिशालायां गृहे चाभ्यु-
पजीविनां धूम्रं दद्यात् तथा श्वानं यवनां त्यजयोर्गृहे खरो वेद्या गृहे
योज्यो ध्वां क्षं पक्षिपति गृहे वृषसिंहगजं दद्यात्प्रसादे पुरमं दिरे
वस्त्रजे धर्मशालायां कुंभे स्तंभे ध्वजे ध्वजः गोगजे भूगृहे चैव सा-
धारणगृहेशु मे यन्त्रेश्वरश्चेत्ये सिंहं भांडागारे शुभो गजः धान्यां बु-
स्नानगोश्वेभ शालायां वृषभः शुभः ध्वजे पराश्रयं विप्राणां गजे सिंह-
हेश्वरद्वयं गजेश्वरस्य याम्यास्यं वृषे पूर्वमुखं विशः ध्वजे चतु-
र्दिक्षु द्वारं हरौ पूर्वयमोत्तरे वृषे पूर्वे गजे पूर्वं दक्षिणे इतरे धूम्रध्वां
क्षकानिरवन्दाः ब्राह्मणानां ध्वजः क्षत्रियाणां ध्वजगजवृषसिंहाः ध्व-
जसिंहगजा वैश्यस्य ध्वजसिंहौ शूद्रस्य कर्क वृश्चिकमीनानां
ध्वजायः मेषसिंहधनुषां वृषभायः तुलामिथुनकन्यानां गजा-
यः वृषकन्यामृगाणां सिंहायः शुभदः सूर्ये दुर्बले नीचे दुस्त्येया
गृहेशस्य नाशः एतादृशो चंद्रे तत्स्त्रीनाशः गुरापीटशिसुखना-
शः शुक्रे धननाशः कर्तुः चंद्रनक्षत्रे च पुरस्थिते गृहकर्तुर्गृहे स्थि-
तिर्न चंद्रनक्षत्रे वास्तुभे च पृष्ठगे रविः चौररुतसंधिः पुरः पृष्ठादि
ज्ञानं च रुतिकादिसप्तभानि पूर्वे इत्यादिध्येयं- अथ द्वाररुत्य-
म् यदुक्तं ब्रह्मशंभुना- गृहाय लब्धं नक्षत्रं यत्र नक्षत्रे च चंद्रमाः
शलाकासप्तके देयं रुतिकादि क्रमेण च वामदक्षिणभागे तत्प्रश

स्तं शांतिकारकं अग्रे पृष्ठे न दातव्यं यदीच्छेच्छ्रेयमात्मनः ऋक्षचंद्र
 अवास्तोश्च अग्रे पृष्ठे न शस्यते अथ ध्रुवादिज्ञानम् ध्रुवांकाः पूर्वे १
 दक्षिणे २ पश्चिमे ४ उत्तरे ८ दिक्षु अंकाज्ञेयाः यो द्वारो यस्मिन् दिशि
 कर्तुरिष्टस्तदंकाग्रोज्याः यथा पूर्वप्रत्यंगं कौ ५ सैक ६ ध्रुवादिगण
 नयाकांतनामाशाला- दिक्षु पूर्वादित इत्यादिनायद्भुवादिवेश्म स-
 मागतं शालाध्रुवांकसंयोगः सैकोवेश्मेत्युक्तदिशः संख्यांकलयेत्
 साचेत्संख्या १२ । १५ । ८ । १६ । ९ । ११ । १४ तदा व्यक्षरं
 नाम यदा २ । ४ । ५ । ६ । १० । ३ । १३ तदा द्वक्षरं यदा ७ त-
 दा चतुरक्षरं

| अथ ध्रुवादीनां चक्रम् | | | | | | | | |
|-----------------------|--------|--------|----------|------|--------|--------|---------|------|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ |
| ध्रुवः | धान्यः | जयः | नंदः | रघुः | कांतः | मनोरमः | सुखरः | नामः |
| १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ |
| दुर्मुखः | उमः | रिपुवः | वित्तवः | नाशः | आनंदः | विशुलः | विजयः | नामः |
| उत्तः | पू-उ | द-उ | पूर्वद-उ | प-उ | पू-प-उ | द-प-उ | सर्वदिः | हा |

अथ पिंडे नवभिर्गुणिते अष्टभिर्भाजिते आंशः ५ अस्मिन्नेव ७
 तष्टेवारः ४ पङ्क्तिर्गुणिते नवभिर्भाजिते नवांशको भवति अष्टभि
 गुणिते १२ द्वादशभिर्भाजिते द्रव्यं ४ त्रिभिर्गुणिते अष्टभिर्भाजिते
 ऋणं ७ अष्टभिर्गुणिते भैस्तष्टे १५ भं अष्टभिर्गुणिते अष्टाविंश-

मुहूर्तसिंधुः

(१९५)

तितष्टे १८ योगः अष्टभिर्गुणिते १२० स्वसूर्यैर्भक्तेऽप्रायुः ११२ प्रायु
प्यपंचतष्टे शेषं २ जलभयं इति सर्वबोध्यं वसिष्ठः एकादशयवातूर्ध्वं
यावन् हात्रिंशद्वस्तकं तावदायादिकंचित्यं तदूर्ध्वं नैव चिंतयेत्

| | | | |
|---------------------------------|---------------------------|----------|---------------------------|
| ईश प सह धा-मेदा ११३ शु | अर्ग ४ शु ८ | आ मशु | क ५११२ ३ शु आ आ विडाल |
| चर लय स्वा उ मृगमे १ ३ शु | २ ५३ नयशो | | च ५ आ द सि ५ क ५ ३ शु |
| पफ व भ म मृगफ ३ ७ वा ३ शु | न प स्वा सर्पध १९ ३ शु | | ट ५ स्वा जे आ क ४ ३ शु |

अथगेहारंभेमासफलम्
गृहसंस्थापनं सूर्ये मेघ-
स्थेशुभदंभवेत् वृषस्थे ध-
नवृद्धिः स्यात् मिथुने मरणं
ध्रुव कर्कटेशुभदं प्रोक्तं सिं

हेभृत्य विवर्धनं कार्मुके तु महा हानिः मकरस्थे धनागमः कन्यारोगं
तुलामौरव्यं वृश्चिके धनवर्धनं कुंभे तु रत्नलाभस्यात् मीने सप्तभया
यहं पाषाणेष्व्यादिगेहानि निद्यमासेन कारयेत् तृण दारुगृहारंभे
नास्तिकालविशोधनम् अत्रापि चातुर्मास्यो वर्जनीय एव अथगे-
हारंभः उ. ३ रोमृ. रे. चि अनु श. स्वा. ध. ह. ति. एषु भे-
षु सू. मं. विना १।४।९।८।१४।३० आभ्योधिना चरभि-
नेलमे शुभयुक्ते च ३।६।११ पापैः १।४।७।१०।९।५
शुभैः ८।१२ पापामृत्युदा भवन्ति गृहारंभेति थि फलम् द्विर्ताया
पंचमी पूर्णा तृतीया पष्टिका तथा सप्तमी द्वादशी चैव दशम्येकाद-
शी तथा त्रयोदशी पंचदशी तिथयः स्युः शुभावहाः दारिद्र्यं प्र-
तिपत्कुर्या चतुर्थी धनहारिणी अष्टम्युच्चाटनं चैव नवमी शरत्र-
यातिनी दर्शराजभय शेषं भूते दारविनाशनम् अथवारफलम्॥
सूर्यागारुवाराशा वैश्वानरभयप्रदा इतरग्रहवारांशा सर्वकामार्थ

(१९६)

मुहूर्तसिंधुः

सिद्धिदाः अथ वृषभचक्रं

अथवार्कधिष्णादभैः

७ रुद्रैः ११ दिग्भिः १०

रुक्तं ह्यसत्सत्गृहे का

ष्टविचारः नूतनेनूतनं जी

र्णेजीर्णे जीर्णेनूतनं च शुभदम् अन्यवेशमस्थितं दारुनैवान्यस्मि
 न्नयोजयेत् नतत्रयसतेकर्त्ता वसन्नपिन जीवति इष्टिकालोष्टपा-
 पाणामृत्तिकाजीर्णमायसं तृणपत्रं बुधैर्नव्यमेव गृहे मार्गाद्यन्य
 तरस्थानस्थितवृक्षसंपूज्य प्रार्थयेत् यानीह भूतानि वसंतितानि व
 लिंगं गृहीत्वा विधिवत्प्रयुक्तं अन्यत्र वा संपरिकल्पयंतु क्षमंतु तान्यथ
 नमोस्तुतेभ्यः दारुणां निघानिघादिकंच देशानुसारात् अथ शि-
 लास्थापनं अधोमुखैर्भैविदधीतरपातं शिलास्तथैवोर्ध्वमुखैश्च प-
 ट्टं तिर्य्यङ्मुखैर्द्वारकपाट्यानां गृहप्रवेशो मृदुभिर्ध्रुवैश्च अधोमु-
 खैश्च नक्षत्रैः कर्तव्यं भूमिशोधनं मृदुध्रुवैः शुभं कुडमित्युक्तं विश्व
 कर्मणा सूत्रशंकु शिलान्यासादिकान् कुर्यात् अथ रचनविधिः
 पूजापूर्वकं अत्रस्थिता भूमिसुरादिनागा भूतानि चान्यत्र समा अ
 यंतु गृहं करोम्यत्र भवत्प्रसादात् सुखंसमेधे ह मितीर्य्य रचन्यात् ग
 ऐशादीन् संपूज्य कलत्रास्थापनांतं लोहदंडं च संपूज्य भैरवं तद्दि
 व्पालं च पृथिवीं वास्तुं च ओं शिवो नामासीति मंत्रेण लोहदंडं प्रपू-
 जयित्वा शिवं ध्यायन् बलेन लोहदंडेन निरखनेत् यावदंगुलं बिभ्रति
 तावत्पुरुषां स्थितिः तंच दंडं लोहितवरश्च छन्नं ब्राह्मणा यददेत् स्वन

| शीर्षे | अ- पादे | पृथादे | पृष्ठे | रक्तुसी | पुच्छे | वाङ्कु | वृत्ते | स्थान |
|--------|------------|--------|--------|---------|----------|--------|--------|-------|
| ३ | ४ | ४ | ३ | ४ | ३ | ४ | ३ | मानि |
| साहः | शून्यं | स्थिर | श्रीः | लाभः | स्वामिने | नाशः | पीडा | कलं |

नफलंशिरः खनेर्विनाशः स्यात्मातृपित्रोश्चपृष्ठके रत्नीपुत्रनाशःपुच्छे
तु गात्रेपुत्रविनाशनं कुक्षौसर्वसमृद्धिस्त्याहनधान्यसुतागमः इदम-
पिचामकुक्षौ उर्ध्वभागत्रयं कृत्वाह्यधोभागद्वयंतथामध्येनाभिषिजा-
नीयादितिप्राहपराशरः यदावामपार्श्वेनपूर्वशिरः शेतेतदापश्चि-
मेपुच्छं दक्षिणेकोडं उत्तरेपृष्ठयोर्ध्वं २४।२३।१६।१२ विप्रादी-
नां त्रांकुमानं स्वर्णादियुतं पूजितंचप्रशस्तं वृक्षोद्भवंकुर्व्यात्सूत्रनि-
पातं मध्यांगुल्याथवाप्रदेशिन्याधिप्रः शीर्षेक्षत्रोवक्षः वैश्यश्चोरुं
शूद्रमादौ स्पृष्ट्वा प्रदक्षिणारेखांकुर्व्यात् सूत्रछेदेमृतिः कीलेबाड-
मुखेज्याधिपीडनं गृहेशस्थपतीनांचस्मृतिलोपेधनक्षयः कुंभेक-
रच्युतेमृत्युरुपसर्गोपवर्जिते स्कंधभ्रष्टेशिरोरोगी भग्नेदुर्वचने
वधः अथशिलान्यासः नंदाभद्राजयारिक्तापूर्णाः संज्ञकाः शि-
लाः पूजापूर्वकं स्थापनीयाः ताश्च एकविंशैश्चतुर्हिनैरर्धाधार्दि-
स्तरोच्चकं विप्रादीनां देवांबुगेहे परितोजिनांगुष्ठाः षमुन्नताः वि-
स्तारेर्कांगुलाः केचिद्विंशेबुनिपिरिक्तकाः सर्वैपध्यासतमृदा
स्नापयित्वा र्चयेच्चताः अथवास्तुस्थानं - वास्तुचैशानतोविप्रे
क्षत्रादावभितोन्यसेत् ॥ सूत्रमिति शिलान्यासं स्तंभस्यारोप-
णंच पूर्वदक्षिणयोर्मध्ये कुर्यादित्याहकारयपः केचिदग्नेय्येत्तं
भस्थापनमाहुः वराहस्तु दक्षिणपूर्वे कोणो कृत्वा पूजान्यसेत्पथ-
मांशेषाः प्रदक्षिणेन केचित् अग्निर्वसतिकाद्येपु तद्दिशिप्रथमं
सदान्यसेत्काष्ठमयंस्तंभं काष्ठकृत्येज्यंविधिः छत्रत्वंगंधयुत
कृतधूपविलेपनं समुत्थाप्य स्तंभस्तथैव कार्योहारोच्छ्रायः प्रय

त्वेन- स्तंभोपरि यदि उलूककाक गृध्रादि पक्षिणः व्यालादयश्च ति-
 ष्ठन्ति तदा कर्तुं न शोभनं तस्मात् स्तंभोपरि छत्रं शारवां फलवती तु वा
 धारयेदथवा वस्त्रं व्रधे रत्नादि निक्षिपेत्- अलिंदनिर्व्यूह विनिर्गमा
 द्याश्चतुर्दिशं ये गृहभूषणाय आर्यादिकं तेषु न चिंतनीयं यतो न ते-
 वास्तु परिग्रहाः स्युः अथांगुलमानं षडक्षतैराजमिहां गुलं भवेत्स-
 माक्षतैर्वैष्णवमैशमंगुलं यवोदरैरष्टभिरत्र तत्करोजिनांगुलैस्तै-
 श्वधनुश्चतुष्करम् प्रासादकुंडादिकं पीठवेदिकां द्विजालयेषु स्पृ-
 तमाजमंगुलं जलाशयारामविधौ नृपालये निधौ हितं वैष्णवमन्य-
 दन्यगम् अथ स्वप्नपरीक्षणं यत्र गृहं नगरं वा विधातुमिष्यते त-
 त्र कलत्रं स्थाप्य स्नातः शुचिर्निराहारः पूजयेत्कनकैर्महीं शय-
 नं तत्र कुर्वीत शुभस्वप्ने शुभं वदेत् पाशवोरेण तां नीता निरीक्षेदं-
 तरिक्षणाः अधो मध्योर्ध्वगानृणां गतिस्तुल्यफलप्रदाः अथ वे-
 धमाह नीचस्थाश्चातरे पूर्वतुंगस्था परदक्षिणे तिर्यक्स्थाः सर्वदि-
 ग्भागे पीडयन्ते पुरवासिनः उच्चस्थं हि च नीचस्थं सदा माम् गृहं
 त्यजेत् विषाग्निवज्रवद्बोध्यं दक्षिणास्यां न वंगृहं कोणाग्रे चान्यगे-
 हस्य कोणं न शुभं भवेत् तथा गृहार्धसंलग्नं कोणं न शुभं भवेत् को-
 णवंशस्य कोणोच्चकोणात्कोणांतरं पुनः तत्कोणवेधगंगेहं व्या-
 धिदारिद्र्यकारकं समोच्चकोणभूमिस्थाः कोणवेधगता गृहाः पी-
 डयन्ते सर्वदिग्भागे विस्तृतेर्द्विगुणान्न हि पूर्वोत्तरे नीचगता उच्चस्था
 दक्षिणापरे तिर्यग्गताः सर्वदिशं भागे पीडा च हा गृहाः दक्षिणे यो-
 जनं तुंगं पश्चिमे चार्धयोजनं तदर्धमुत्तरे नीचं तदर्धपूर्वदिक्स्थितं

एतद्देधं नृपाणां च गृहाणां कथितं द्विजाः विशेषेण द्विजातीनां प्रमा
 णं कथयाम्यतः गजोर्ध्वाक्षोर्ध्वजोर्ध्वम् उच्चस्थं पातयन्ति हि श्वावृषो
 राशभोनीचं सिंहः सर्वत्रगं हरेत् प्राच्यानीचे विप्रगेहं शतं वै दंडा
 न्विद्देदुत्तरस्यां सपादं पश्चात्तुंगे द्वे गते सार्धं एव चाम्येक्षत्रस्य द्विनि
 म्नविशोर्ध्वं प्राग्वेधो दशदंडः स्वाच्छतं चाम्येतु पश्चिमे दंडविंशति
 कः सौम्ये खदस्त्राः शूद्रसत्त्वनांदक्षिणतो दृग्विषये भवनवरे रथक्ष
 यो गणादोषः सुतमरणं प्रेष्यत्वं भवति सदा तत्र वासितुः पुंसः अथोप
 वेधः प्राच्यां पिप्पलराजवृक्षविवरा याम्ये मठमंदि रं पूक्षः कंठकि
 निं वक्रूपगहना विध्यन्ति वारांतरे चारुण्यामपि पुष्करं मठवटौ धो-
 रास्यकं चोत्तरे रवातो दुंवरकोलुकाः फलद्रुमानेष्टाश्मशानादिकाः
 आसन्नः किल कंठ कोमिभयदः क्षीर्यर्थनाशप्रदः पुन्यात्यै फलिनः
 शिवादि सदनं गेहाधिपार्तिप्रदं वाणवेधात्यं न वेधः मार्गेत्तरे न-
 दीपारेपिनवेधः शुभवृक्षाः नारिङ्गपूगफनसामलदाडिमीभिर्जा
 तीसरागशतपत्रिकमल्लिकाद्य- यन्नालिकेरमधुरेष्टफलद्रुमास्ते
 मार्गेपि हर्षजनकाः किमुतो गृहेषु बिल्वदाडिमकेशरैर्मध्यगैरपि
 हर्षजनकाः किमुतो गृहेषु बिल्वदाडिमकेशरैर्मध्यगैरपिनवेधः अ-
 थ कस्य हस्तेनायादिस्माभिहस्तप्रमाणेन ज्येष्ठपत्नी करेण च ज्येष्ठ
 पुत्रकरेणापि कर्मकारकरेण च अनामिकांतं हस्तं स्यादूर्ध्वं चाहोः
 शरांशकः अथ भूमिसुप्तज्ञानं प्रद्योतनात्यं च नगां कसूर्यनवेडप
 द्विंशमितानि भानि ५ । ७ । ९ । १२ । १९ । २६ महीप्रसुप्ता तु तदां
 शुनून् तडागकूपादि गृहं न कुर्यात् अथ राहोर्मुखपुच्छादिज्ञानं-

| द्वारचक्रं | | |
|------------|------|----------|
| ४ | उपरि | राज्यम् |
| ८ | कोणे | उद्देगः |
| ८ | शाखा | लक्ष्मीः |
| ४ | अधः | श्रियम् |
| ३ | म | मृत्युः |

द्वारस्योपरि यद् द्वारं द्वारस्यान्यस्य स-
मुपरे व्ययदंतत्तदान्यच्च न कर्तव्यं शु-
भेक्षिभिः

| देहलीचक्रम् | | | | | |
|-------------|---------|--------|---------|------|------|
| शिरः | कोणे | शाखा | दंष्ट्र | मध्य | |
| लक्ष्मी | उद्देगः | सौख्या | मृ | सा | भानि |
| | | | | | फ. |

| गृहभागचक्रम् | | | | |
|--------------|------------|------|--------|--------|
| ई देवता | सर्वपत्न्य | लानि | मंथन | पाक |
| औषधी | | | | घृत |
| उ. भागार | | | | शयन |
| मैथुन | | | | पुतीष |
| भा. भाग्य | रोदन | मौजक | विद्या | शस्त्र |

| |
|-------------|
| क्षारं |
| मिष्टं |
| शिला |
| क्षारं |
| स्वादु |
| जल |
| भा. भा. भा. |
| स्वादु |
| खट्व |
| जल |
| स्वादु |

| | |
|----|----|
| १६ | १८ |
| २० | २२ |
| २४ | २६ |
| २८ | ३० |

गृहमध्ये रूप विचारः

| | | |
|-----------|------------|-------------|
| ई. पुष्टि | उ. देवार्थ | आ. पुत्रनाश |
| उ. सुख | अर्थलप | स्त्री नाश |
| शशुबीडा | संपत् | गृहपति नाश |

| दिशावा०० | | शताशुः०० | |
|----------|-----|----------|-----|
| र. | गु. | जी. | र. |
| गु. | म. | जी. | जी. |

स्वोच्चे शुके लग्ने वा गुरौ वेदमगते पिवा
शनौ स्वोच्चे लाभगे वा लक्ष्म्या युक्तं चि-
रं गृहं द्यूनां वरे यदैकोपि परांशस्थो न

हो गृहं अर्द्धांतः परहस्तस्थं कुर्याच्चिदृणापोवली पु-
ष्यध्रुवेन्दुहरिसार्पजलैः सजीवैस्तद्वासरेण च कृतं सु-
तराज्यदं स्यात् तद्वीनापितस्त वसुपाशिशिवैः सशुक्रैर्वारैः

| अशोति०० | |
|---------|-----|
| जी. | चं. |

तस्यचकृतं धनधान्यदंस्यात् सारैःकरे ज्यांत्यमघांचुमूलैः कौ
जेहिघेऽमाग्निसुतार्तिदंस्यात् सङ्गैः कदाचार्यमतक्ष हस्तैर्ज्ञैः
व वारेऽर्चुस्वपुत्रदंस्यात् अजैकपादहिर्बुध्दशक्रमित्रानिलांतकैः
समंदैर्मंदवारेस्याद्रक्षोभूतद्युतंगृहं अथदुष्यनिर्माणं- श्रवत्रये
धिनीपुष्येऽनुराधारोहिणीमृगे हस्तत्रये पुनर्भेत्ये अतरेपद्वयेऽस्म
सत् अथगेहोपकरणं पू. भा. आ. रो. पुष्य. उ. न. अधि. एषु मे-
षु स्थिरलघ्ने शुभवासरे सतिथौ सत् गृहस्य द्वाष्टिकापातनं चयनं
सुधालेपंच लघु. ध्रुव. ज्ये. रे. मृ. अ. एषु मेषु श. र. वारयोः स्थि
रलघ्ने शुभलभसतिथौ अथचित्रकर्म ह. वि. स्वा. अनु. रे. मृ.
अधि. अ. ध. श. पु. रो. ती. पूषा. एषु मेषु १।९।११ तिथिषु
शुभवासरे पुंलघ्ने तत्रापि वराहशार्दूलशिवापृदाकवोगृध्राभि
धोल्हककपोतवायसाः शशैणगोधादिबकादिपत्रिणोपिचित्रि
तानोशरणेशुभावहाः गृहेनसमायणभारतावहं चित्रं कृपाणा
वहमिद्रजालवत् शिलोच्चया रण्यमयं यदासुरं भीष्मं कृताक्रं-
दनकं त्वनंबरं- एतदपि मठप्रासादादिषु गृहमंदिरे च शुभ-
दं- अथगृहांगणेशुभवृक्षाः पुन्नागश्चंपकोशोकः पिप्पलीदाडि-
मीशमी बकुलस्तिलकोद्राक्षापिचुमंदोमरोजपा नारिकेरंतथा
जाती पाटला गेहमल्लिका मल्लिका पूगबंधुकाः पनसः सरसीरु-
हं एते गृहांगणेशुभवृक्षाः आरोप्या मंगलप्रदाः अथगृहांगणेशु
भवृक्षाः मातुलुंगं स्तुहीरं भाहरिद्राचमुनिद्रुमः एते दुःस्वप्रदा
गेहे संजातारोपिता अपि अथगेहात्मनिदिशं वृक्षारोपः न्यग्रोधंते-

पयेल्याच्यामवाच्यांचाप्युदुंबरं उदग्दिशिच कर्कं धुं प्रतीच्यांकु जराश
नं वेधस्तु पूर्वस्थिते पिप्पले बोध्यः अथ देवालयमठाद्यारंभः गृ-
हारंभोक्तनक्षत्रैर्मटं कुर्यात्तु साधिमैः सर्वदेवालयं तैस्तैः पुनर्भैः
श्रवणाच्चितैः अथ जैनालये प्रसादरी णामारंभः पूर्वाद्राभरणी
पुष्ये रोहिण्यांचास्थिरोदये शुभाहे जैनगेहस्य प्रासादर्यः कृताः
शुभाः अथ पुरग्रामदुर्गादीनां निर्माणम् प्राकारपत्तनग्रामनिर्मि-
तो सूत्रसाधनं प्रशस्तस्याच्छुभेकाले गेहारंभोक्तभादिषु अथात्र
विशेषः पर्वतोपरिसिंहायः श्रेष्ठः श्रंषुचृते गजायः श्रवणिगह्वरे
वृषायः ध्वजः सर्वत्र शुभः व्ययोना अपरेपिशुभाः प्राकारपूर्गेह
भकर्तृतारयोः सभाजनंदो ग्रहवहिलोकयेत् अथ प्रतोलिकार-
चनम् स्यात् ज्येष्ठः पुः मृदुः क्षिप्रचर एषु भेषु स्थिरलग्नेषु भयुक्ते-
द्रेः रः चं जीः शुः वारेषु सतिथौ वत्से पुरोगे पृष्ठगते च प्रतोली
रचनश्रेष्ठं नराहौचंद्रे च संमुखे प्रतोली कृतिर्वैकृति दायिनी ॥

अदुर्गं पुर्व्यां राहुचंद्रवत्सान् विचारणी-
या तथा भमपिन विचार्य अथ पुरवासि-
नम् ३।२।१०।११।१ एतद्वाशिगुरवौ
पौषादिपङ्के मार्गः अधिनयोर्वाष्ट्यधिकसं-
क्रांतौ या सिंहभिन्नगुरो अस्तवक्र नीच
रहिते मलक्षयमासहीने तथा शुक्रचंद्र
योः सफलयोः तथा दुष्टयोगमद्राकरणां
रिक्ताशान्मं बुधाः वाराः उग्र मिश्रः -

| रविभातप्रतोली चक्रम् | | |
|----------------------|--------------|--------------|
| ३ ५ शुः | ४ ५ मः | ५ ५ अः |
| ६ ५ शुभः | ७ ५ शुभः | ८ ५ शुभः |
| ९ ५ शुभः | १० ५ शुभः | ११ ५ शुभः |
| वत्सचक्रम् | | |
| १२ ५ वत्स | १३ ५ वत्स | १४ ५ वत्स |
| १५ ५ वत्स | १६ ५ वत्स | १७ ५ वत्स |
| १८ ५ वत्स | १९ ५ वत्स | २० ५ वत्स |

स्वा. दारुण एतानि वर्जयित्वा स्थिरलग्ने शुभे केन्द्रे पापैः ३।५।१०

११। जीवे ४ चंद्रे १०।२ ग्राम पुरकरणं शुभमाहुः यत्सचक्रमुद्धोच
तथा ग्राम पुरकर्तुर्दशमे सचले सति यद्यत्र प्रतोली विधीयते पूर्वो-
क्तभैरविधेया द्वारादिप्रपंचस्तु विनैव शुद्धिं वि-
धेयः अथापरं यत्सचक्रमाहरविभात्.

| गृहवत्सचक्रम् | |
|---------------|-------------|
| ३ | सुरवम् |
| २ | पापं कष्टं |
| ४ | धनं |
| ३ | आयः |
| ३ | रुक् |
| २ | सुरवम् |
| २ | धैर्यम् |
| ४ | दारिद्र्यम् |
| २ | भयं |
| २ | मरागम् |

अथैषां विवेकः शालपुरे
चाष्टविभागभेदो दिग्भाग
भेदो मठमंदिरादौ भेदापं
डत्रासुरधाग्निधीरैरन्य
त्रचाद्वादशयत्सचक्रे-गृ
हभेदाः मृन्मयं हर्म्यं
पर्णकुटं ३ अयाणामेक
धा एव करणं तथापि भेदः
हर्म्यं राहुचंद्रौ संसुरवौ यज्यौ पर्णकुटे चन्द्रो न

| पुरग्रामे वत्सचक्रम् | | |
|----------------------|-----------|-----------|
| ३ | मत्त | सुरवम् |
| ४ | अपदो | उद्वासः |
| ४ | पु-पदो | स्थैर्यम् |
| ३ | पृष्टे | लक्ष्मीः |
| ४ | वा-कुक्षौ | भयम् |
| ४ | द-कुक्षौ | धनम् |
| ३ | पुच्छे | भयम् |
| २ | नसि | मृत्युः |

विलोकनीयः मृन्मयेऽपि चन्द्रो न विलोकनीयः राहुस्तु विलोकनीयः इय
मेव प्रपात्राश्रमहृद्मंदुरादिषु सर्वे विलोक्य केचिद्द्वारविचारं दे-
वालयेनेच्छन्ति इति वास्तु रचनं १२ अथ गृहप्रवेशनं सचद्विविधः
अपूर्वस्सपूर्वश्च नये अपूर्वः यात्रादिनिवृत्तौ सपूर्वः नारदः अथ
सौम्यायने कार्यं नवपेदमप्रवेशनं विधाय पूर्वदिक्से वास्तु पूजां ब-
लिक्रियाम् वास्तु पूजाम कृत्वा यः प्रविशेन्न वमंदिरे रोगान्नाना
विधान्क्लेशान्भुते सर्वसंकटान् अकपाटमनच्छन्नमदत्तबलि

भोजनं गृहं न प्रविशेद्दीप्तिमांश्चिपदामापदं हितत् माघ-फा- वै-
ज्ये- आपाद पूर्वव्यंशे मृ-रे-चि-अ-नु-उ-३ रो-दुषुभेषु जन्मलग्न
जन्मराशिभ्यामुपचयल-३।५।१०।११ स्थिरे रिक्ता ४।९।१४
३० विनासूर्यभौ-चन्दिवाणं चरलग्नं च विहाय चतुर्थ्याष्टिमशुद्धे
आवश्यकं चतुर्थं शुद्धे जन्मराशिजन्मलग्नाभ्यामष्टमराशौ न पू-
र्णातिथौ पूर्वद्वारे नंदायां दक्षिणद्वारे भद्रायां पश्चिमे जयायामुत्तर
द्वारे प्रवेशः शुभः अथ प्रवेशविधिः कृत्वा विप्रान्सजलकलशं
चाग्रतो धामतोरकः स्नातः स्रग्वीधिमलवसनो मंगलैर्जन्यघोषः
व्याप्तैर्यत्नात्कथित शकुनैर्द्वारमार्गेण राजाहर्ष्यपुष्पप्रकररुचि-
रं तोरणं तद्व्यं विशेच्च भूरिपुष्पनिकरं सुतोरणं तोयपूर्णकलशो
पशोभितं गंधपुष्पवलिपूजितामरं ब्राह्मणध्वनियुतं विशेद्गृहम्
पश्चात्कांचनरूप्यवस्त्रकुसुमैः संपूजयेत् सादरं दैवज्ञं सहशि-
ल्पिभिः सहगुरुन्वंधूस्तथान्यान्पि गत्वावेशमपुराणधर्मकथया
सार्धं वसेत्सज्जनैः रात्रौ धर्मविधाविशुद्धहृदयो निद्रानिषेधेदसौ
अन्यच्च वधूप्रवेशो न दिवा प्रशस्तो राजप्रवेशो न निशि प्रवास्तः
दिवा च रात्रौ च गृहप्रवेशः सत्कीर्तिदः स्यात्त्रिविधप्रवेशः अथ
जीर्णगृहप्रवेशः मार्ग-का-आ-इदमपि ति-स्वा-धरा नूतनोक्त
मुहूर्तेऽपि प्रवेशः शुभः आवश्यकं वास्तादिविचारो न अथ प्रवेशो त्या-
ज्याः चैत्रोमासः कुजाकौ च रिक्तादग्धास्त्वमामृतिः दुष्टचंद्रइमे
त्याज्या नवगेहप्रवेशने- अथाभ्युदयिककर्माणि- कन्यापुत्रवि-
वाहे च प्रवेशे नववेशमनि नामकर्माणि बालानां चूडाकर्मादिकेतथा

सीमंतोन्नयने चैव पुत्रादिमुखदर्शने नांदीमुखपितृगणं पूजये-
त्प्रयतो गृही अथ गृहप्रतिष्ठा मु- मृ- रे- चि- अनु- उ- १

| अथरविभातप्रवेशकुंभचक्रं | | | | | | | |
|--------------------------|--------------------------|--------------------------|--------------------------|--------------------------|--------------------------|--------------------------|--------------------------|
| १ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ३ | ३ |
| मृ- ति- मृ- ति- | मृ- ति- मृ- ति- | मृ- ति- मृ- ति- | मृ- ति- मृ- ति- | मृ- ति- मृ- ति- | मृ- ति- मृ- ति- | मृ- ति- मृ- ति- | मृ- ति- मृ- ति- |

रो- ह- अग्नि- अभि- स्वा- पू- श्र- ध- श-
मू- एषु भेषु धास्त्वर्चनं भूतबलिंचकारये-
त् लमात् १।४।७।१०।९।५ शुभैः
५।३।११ पापैः अथ देवारांजलाश

यप्रतिष्ठा मृ- रे- चि- अनु- ह- अग्नि- ति- अभि- स्वा- पू- श्र- ध-
शउ- ३ रो- एषु भेषु रिक्तां ४।९।१४ विना भौमं विना उत्तराय-
णे जीव चंद्र शुक्रं दृश्येलग्नेशुक्लपक्षे यस्य देवस्य प्रतिष्ठा कर्तव्यां
तत्त्वामिफ तिथी भवारेषु मुहूर्ते वा स्थिर लग्ने सिंहसूर्यप्रतिष्ठा कुं-
भे ब्रह्माकन्यायां विष्णुः मिथुने शिवः द्विस्वभावे देव्याः चरे योगिनी
प्रभृतयः स्थिरलग्ने सर्वेषां प्रतिष्ठा कार्या पुष्ये ग्रहाणां गणेशाय ह
सर्प भूतादयः रेवत्यां जैन धर्मस्य श्रवणे प्रतिष्ठा कार्या अथ पु-
र ग्रामप्रवेशः मृ- ति- अनु- स्वा- उ- ३ रो- चि- रे- ध- श- एषु भेषु
सू- भौ- विना रिक्तां विना अथ जित्तस्य शत्रो पुरप्रवेशः पिशा
खा रुतिका पूभोत्तरापादाभिषेकतथा शनौ वार्के जित्तस्यारे विज-
यी नगरं विशेत् यात्रानिवृत्तौ गृहप्रवेशः षष्ठ्यष्टमी विष्णुदिना
निरिक्तां विहाय ५।८।१२।४।९।१४ चित्रोत्तररोहिणी च मृगां
त्य मैत्रेशानिषित्सितेज्य निवृत्त्यगेहं प्रविशेत्प्रयाणात् अथ गुणगु-
णार्जनं यस्य पुनर्वसु पूर्वमुजंगमः करनिशाकरशंकरदेवतैः सह-
रि वाक्पतिभिः सह पितृयागुणगुणार्जनमेभिरभिषितम् अथा

अविशेषः यदिङ्मुखं गृहद्वारं तद्द्वारक्षेत्रं गृहं विशेत् दिवा प्रवेशः
 शुभदः सुपुत्रपौत्राभिष्टुभ्यै निशि भास्करेण द्वोः बलेन मत्स्यं ध्वजया स
 रस्य रात्रिं विना सूर्यतिथौ च रात्रिं प्रवेशे शनौ चौरभूतभयं तृणागारं
 तु सर्वदा विशेत् सर्वग्रहैर्हि मुक्तं प्रवेशभंशस्य ते प्रयत्ने न कैश्चि
 त्सौम्यसमेतं शुभदं परिकीर्तितं मुनिभिः अथ लग्नफलम् मेघे
 यानं धदेव्याधिधान्यहानिर्मृगे गृहे विशतां कर्कटे नाशः शेषलग्नेषु
 शोभनं निदिता अपिशुभ्रांशमेतास्तौलिमेघमकराः सकुलीराः कर्तुरोपचयगात्रविलम्बे राशयः शुभफलाश्च भवन्ति व्याधिहा
 धनहाचैव वित्तदोषं धुनाशकृत् पुत्रहा शत्रुहा स्त्रीघ्नः प्राणहा पिष्टकप्रदः सिद्धिदो धनदश्चैव व्ययदो जन्मराशितः प्रवेशलग्नस्य फलं जन्मराशेः प्रकीर्तितं केचिद्दारेषु रविमप्याहुः मासेषु
 भावणमार्गशीर्षे शुभे आहुश्चैत्रं निन्दमाहुः नक्षत्रेष्वभिनीं च शुभासाहुः केचिच्चंद्रं साधारणं कथयन्ति परमत्र नगरप्रवेशे प्रवेशे एवमेव गृहप्रवेशे तु रविर्निन्द्य एव चंद्रसाधारणः शनिर्निन्द्यफलं उभयत्र बोध्यः

भावफलं गृहारंभ प्रवेशयोः

| र- | चं- | भौ- | बु- | जी० | शु- | श- | . |
|-------------|------------|------------|-----------|--------------|--------------|------------|----|
| विद्युद्भीः | जलभीः | अग्निभीः | आरोग्यं | आयुः | निधिं | गृहभंगः | १ |
| धनभीः | धनं | नेत्ररुक् | धनं | धनं | श्रीः | हानिः | २ |
| सुरवं | सौभाग्यं | लाभं | सुरवं | सुरवं | वित्तं | धनं | ३ |
| मित्रपैरं | सुरवं | शत्रुभीः | भोगः | स्थैर्यं | स्थैर्यं | वैरं | ४ |
| पुत्रपीडां | बुद्धिं | विपत्ती | विद्या | पुत्रवृद्धिं | पुत्रवृद्धिं | पुत्रात्भी | ५ |
| सुरवं | शत्रुभी | यशोवृद्धिं | शत्रुनाशः | यशः | मध्यः | शत्रुनाशः | ६ |
| कान्तापैरं | भोगं | भार्यानाशः | सौभाग्यं | निचं | स्त्रीलाभं | दारदोषः | ७ |
| मृतिं | मृत्युः | कुलक्षयः | आयासः | कष्टं | कष्टं | भयं | ८ |
| धर्मक्षयं | सौरव्यं | विघ्नं | यशः | सिद्धिः | अन्नं | अधर्म | ९ |
| मध्यः | लाभं | कर्मनाशः | सन्मानं | राज्यं | राज्यं | शून्यं | १० |
| सुरवं | लाभं | लाभं | द्रव्यं | धनं | श्रीः | श्रीः | ११ |
| क्षतिं | दारिद्र्यं | राजदण्डं | अयः | सिद्धिः | सद्वयः | व्यसनं | १२ |

अहेर्वासो गके राहौ केतौ भूतादिभिर्गृहे शेषं भावफलं ज्ञेयं राहुके लो
रिनारिवत् अथ रवेर्वा मादिविचारः लग्नात् प्रागादितो दिक्षु द्वौ द्वौ रा-
शीनि योजितौ एकमेकं न्यसेत्कोणे सूर्यं वामे विचिंतयेत् रं द्वात्सुत्रा-
द्दनाद्वाया ८।५।९।११ त्वंच स्वर्के स्थिते क्रमात् पूर्वाशादिमुखं
गेहं विशेषा मो भवेद्यतः अथ नूतन नगरग्राम प्रवेशः मा-फा-चै-
ज्ये-आ-आ-कार्ति-मार्ग-मासेषु श-स्वा-ति-ध-उ-२ रो-श-ह-

मृ. रे. चि. अनु. एषु भेषु शुभयोगतिथ्योर्भौमरहितवासरे स्थिरलमे
मीनवर्जितद्वितनुषु च केन्द्रधी शुभे शुभयुते १।४।७।१०।५।९
वृषे पापयुते ११ स्वले दशेशवले च चंद्रजीवबलाभ्यां च अथ नाना
विधं हस्ते भिन्यां वृषतुरंगमशाला निर्माणप्रवेशौ ज्येष्ठायां गज
स्य अभिजिच्छ्रवणयोर्भाडागारं पूर्वापादायां प्रपा पूर्वाफाल्गुनी रो-
हिण्यो हट्टकरणप्रवेशौ अथ गृहोपस्करं ति. आ. अश्वि. ह. श्र-
उ. ३ रो. एषु भेषु अतिजंरालीयितानं च कोष्ठादिकं तल्पस्थिति म-
हानसस्थानं चुल्लिश्च जलस्थानं मघा. मृ. ह. ति. पूषा. उ. ३ रो. पु-
अनु. धश. एषु भेषु शु. जी. सो. वासरे भद्रारिक्ताभिन्नातिथौ जलो-
दये जलस्थापनं गृहे शुभं भवति अथ देवालयमठयोर्निमाणप्रवेशे
पु. अश्वि. ह. शु. शुभा. आद्यौ विहाय मठे क्षुद्रदेवता अथ स्तु. पू. ३
आ. शुभः विशेषं चान्न उत्तरायणे गुरु शुक्रोदये शुक्लपक्षे चंद्रवले उ-
षा. म. जीवे एतद्रहिते मकरसिंहजीवेन तथारिक्ता ४।९।१४ भ-
द्राकरणप्रतिपददर्श ३० त्यक्ताह. अश्वि. ति. अभि. उ. ३ रो. पु-
रे. अनु. श्र. घ. एषु भेषु जी. बु. वारयोः पुंलगे रुध्रगमूर्तिस्थापयेत्
अथ शिवस्थापनं अभि. श्र. आ. अस्ले. ति. एषु भेषु श. र. जी. वा-
सरे पूर्वोक्तकुयोगरहिते मिथुनलगे भौमवारे च अथ ब्रह्मस्थापनं ति
अभि. रो. श्र. एषु भेषु र. जी. बु. वारे सुयोगे ११ कुंभलगे अथ देवीग-
णस्थापनं मृ. आ. मू. श्र. ह. एषु भेषु र. जी. श. वारे द्विस्वभावलगे.
३।६।९।१२ अथ रामरूपगणान् अथ रविस्थापनं पूषा. रे. अनु. उ. फा. ए-

पुंभेषु रविवारे सिंहलग्ने अथ स्कंदगणेश शिवगणस्थापनमाह
 रे-आ-पु-भा-उभा-एषुभेषु र-शु-श-भौ-वारे मिथुनवृश्चिकलग्ने
 अथ हनुमत्स्थापनमाह स्वा-श्र-आ-ह-एषुभेषु र-चं-मौ-जी-वारे
 स्थिरलग्ने अत्रैव मरुद्गणस्थापि अथ चरुपिगण सप्तर्षिस्थितिभेषु
 अ-ति-एषुभेषु जीववासरैश्चंद्रवासरैश्च ९।१२ लग्ने शुभयुक्ते द्वे अ-
 थ लोकपाल धनिबुधे कन्यालग्ने च अथ यक्ष आ-मू-एतयोर्नक्षत्र
 योः शु-श-र-वारे चरलग्ने च अथानुक्तदेवस्थापन-मृ-अ-ति-ह-ए-
 षुभेषु चंद्रजीववारयोः सिंहलग्ने जीवदृष्टे दोषरहितदिवसे अथपि
 तुगण भ-रो-मृ-अ-एषुभेषु र-चं-जी-वारे रिक्तारहित तिथौ वृश्चि-
 क रहितस्थिरलग्ने अथ जैनविंश-स्वा-पू-अ-ध-श-धि-अधि-एषु
 भेषु बु-शु-चं-र-वारे जयापूर्णातिथ्योः चरलग्ने अथोपसंहारः अथ
 यस्य देवस्य प्रतिष्ठाविधेया तस्य वारे तस्य भे तत्तिथौ लग्ने च शुभ
 योगयुतौ मासादि शुद्धा होमादिकंतु तत्तत्प्रदायानुसारेण विधाय
 कर्तव्यम् देयनिवेशनं गृहनगरदुर्गग्रामनिवेशनं च उत्कापाते भू
 कंठे दुर्दिनेन विधेयं तथा योगिन्यां शूलकाले पाशे चंद्रे च पृष्ठगते ग्र-
 तोमहदनिष्ठं स्यात् तथा यात्रोदितशंकुना विलोमगा गृहप्रवेशादि
 पु-शुभाः इति वेशप्रतिष्ठादि १३ मिश्रकलोल अथ ग्रहाणां जन्मतिथि
 वारक्षानि सप्तमीभरणीसूर्ये चन्द्रे चित्रात्रयोदशी उषाभौमे च दशमी
 धनिष्ठानवमीबुधे जीवोत्तरफारुद्रज्येष्ठानवमीभार्गवे पौष्ठाष्टमीश-
 निर्जातो पूर्णिमाराहुसंभवः अमावास्यां केतुजातो तिथिभंगगृहजात-
 कं ग्रहजन्मे विवाहं च विद्याभ्यासं कृषिः क्रिया प्रवेशं च प्रवासं च प्र-

मुहूर्तसिंधुः

(२११)

तिष्ठाव्रतदीक्षाणां वाणिज्यं च विवादं च सेवादीनां क्रमेण च वर्जये-
त्सर्वकार्येषु जन्मर्क्षतिथिर्वर्जयेत् विवाहेऽपि च वैधव्यं प्रवासे मरणं
ध्रुवं गृहप्रवेशोदाहः स्यात्सेवाभवति निष्फला चैत्यध्वंसप्रतिष्ठायां
व्रतध्वंसश्च दीक्षति विद्यारंभे च मूर्खत्वं कृषिश्च निष्फला भवेत् भ-
स्मत्वं वरत्रकार्येषु मुनिभिः परिकीर्तितम् अस्य देशाचाराद्व्यवस्था
योध्या अथ गोचरोक्तमपि ग्रहांगविभागभेदं वितन्यते.

| रविचक्रम् | | | | | | | | | | | |
|-----------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|
| ६ | ६ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ६ |
| रा.पा. | रा.पा. | रा.पा. | रा.पा. | रा.पा. | रा.पा. | रा.पा. | रा.पा. | रा.पा. | रा.पा. | रा.पा. | रा.पा. |
| मस्तक | मस्तक | मस्तक | मस्तक | मस्तक | मस्तक | मस्तक | मस्तक | मस्तक | मस्तक | मस्तक | मस्तक |

| चंद्रचक्रम् | | | | | |
|-------------|--------|--------|--------|--------|--------|
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| रा.पा. | रा.पा. | रा.पा. | रा.पा. | रा.पा. | रा.पा. |
| मस्तक | मस्तक | मस्तक | मस्तक | मस्तक | मस्तक |

| भौमचक्रम् | | | | | |
|-----------|--------|--------|--------|--------|--------|
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| रा.पा. | रा.पा. | रा.पा. | रा.पा. | रा.पा. | रा.पा. |
| मस्तक | मस्तक | मस्तक | मस्तक | मस्तक | मस्तक |

| बुधचक्रम् | | | | | |
|-----------|--------|--------|--------|--------|--------|
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| रा.पा. | रा.पा. | रा.पा. | रा.पा. | रा.पा. | रा.पा. |
| मस्तक | मस्तक | मस्तक | मस्तक | मस्तक | मस्तक |

| जीवचक्रम् | | | | | |
|-----------|--------|--------|--------|--------|--------|
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| रा.पा. | रा.पा. | रा.पा. | रा.पा. | रा.पा. | रा.पा. |
| मस्तक | मस्तक | मस्तक | मस्तक | मस्तक | मस्तक |

| भृगुचक्रम् | | | | | | | |
|------------|-----|-----|------|-----|-----|------|-----|
| ५ | २ | ४ | ७ | ३ | २ | ४ | भा. |
| मृग | मृग | हृद | गौरी | हृद | हृद | गौरी | अं. |
| मृग | मृग | हृद | गौरी | हृद | हृद | गौरी | क. |

| शनिपादचक्रम् | | | |
|--------------|------------|------------|--------|
| २१७११० | चन्द्रेसति | ताम्रपाद. | मध्यम. |
| ११५१११ | चन्द्रेसति | स्वर्णपाद. | मध्यम. |
| २१५११९ | चन्द्रेसति | रौप्यपाद | शुभ |
| ४१८११२ | चन्द्रेसति | लोहपाद. | अशुभ. |

अथशुभाशुभयोगाः सूर्यात्सप्तम-

केचक्षे भस्मयोगं विनिर्दिशेत् यत्किंचित्क्रियते कर्म तत्सर्वं नाशतां
 व्रजेत् भस्मयोगः द्वौ प्रहरौ घटिकायामौ द्वौ यामौ घटिकाधिकौपि
 जयोनामयोगोयं सर्वकार्याणिसाधयेत् ईषत्संध्या मतिक्रम्य किं
 चिदुन्मित्र तारकः विजयोनामयोगोयं सर्वकार्याणिसाधयेत्
 विजययोगः मूलैर्क सिद्धिः श्रवणैश्च चन्द्रे भौमोत्तरा भाद्रबुधेभिभा-
 नि दैत्ये गुरौ चाम्य मृगोर्किं वायुयोगे षसिद्धे च भवन्ति सिद्धिः इ-
 षसिद्धियोगः मैत्रे द्वितीयात्रितयोत्तराणि पंचम्यपि च्यं करमूलस-
 त्त षष्ठी च ब्राह्म्यं नल विश्वकर्मा त्रयोदशी स्याद्यमकर्तृयोगः य-
 मकर्तृयोगः सप्तमी गुरुपुष्ये च एकादशी मृगुरेवती अष्टमी श्र-
 वणो भानुर्नवमी चंद्रोहिणी भौमे प्रतिपदा चित्रा द्वितीया चोत्त-
 राबुधे शनौ चतुर्दशी स्वाति हंसयोगः शुभावहः हंसयोगः सार्धा
 ष्टपादौ शनिशुक्रचन्द्रे एकादशैर्के गुरुसप्त सौम्ये दशश्च भौमेन
 वदेह छायां भवेत्तदा स्याद्भवत्यर्थसिद्धिः अर्थसिद्धियोगः सू-
 र्ये मघा विशारंवाच चन्द्रे मूलं च वासवे भरणी कृत्तिका भौमे बुधे-
 चोत्तरफाल्गुनी जीवे च रेवती चांद्रं मृगुजे स्वाति रोहिणी शनौ श-

तभिषाहस्तो यमदंष्ट्रं विवर्जयेत् यमदंष्ट्रयोगः द्वितीयापुष्यसं-
योगे तृतीयाचोत्तरात्रये चतुर्थीहस्तसंयुक्ता अष्टमीचैव रोहिणी
नवमीच मघाचित्रा दशमीरेव चाश्विनी आर्द्रा युक्तचतुर्दश्यां यम
दंडं विवर्जयेत् यात्रामलानं बहुकुष्ठरोगं राज्याभिषेके नृपतिर्पि-
नाशं ग्रामे गृहे वास्तु कृतंच येन षण्मासमध्ये मरणं भवति -
यमदंडयोगः मित्रारवौ विश्वशशी युक्तं कुजे धनिष्ठांतकजाय-
ते बुधे जीवे अपांपत्यपुरंदरः सीतौ सौरी सुकर्माय कुटुम्बयोगः
मृत्युर्पिवाहे गमने च कष्टं क्षौरे च रोगं व्रतबंधहानिं शोकं तु यात्रां
गृहमर्थनाशं भव्ये पुष्ट्येषु विवर्जनीयः कुटुम्बयोगः रवौ अ-
पांपत्य निशाकराश्विनी कुजे मृगं सार्पिषु धो नियोजयेत् हस्ते गु-
रुर्मेत्रसिते च संयुते उषाशनौराक्षसयोगवर्जयेत् राक्षसयोगः
अर्धमासो दशाहानि विपक्षीदिवसा दशमासपदं मंगलादीनाम
तीचारः प्रकीर्तितः अतीचारगते जीवे वक्त्रीभूते शनैश्चरे हाहा
भूतं जगत्सर्वं राजानो युद्धकर्मकाः यत्र प्रज्वलितो वह्निर्दाहंतत्रै-
व कारयेत् यस्मिन् राशौ गताः खेटाः फलंतत्रैव कारयेत् अतीचा-
रगताः सौम्याः क्रूरा वक्रव्यवस्थिताः दुर्गभंगं राष्ट्रमंगं प्रजामारी
प्रवर्तते प्रतीचारग्रहाः भवेद्दिमूलं प्रतिपत्तिथौ चेत्तथांतकं स्या
च्छरसंज्ञकायां कृशानुभं स्याद्दसुसंज्ञकायां रोहिण्यपि स्याद्ब्र-
ह्मसंज्ञकायां तथा दशम्यां भुजगः प्रकीर्तितो ज्वालासुरवीमंच भवं-
तितारकाः एतद्वियोगोद्भवकोनजीवे दसेत्तदोच्चाटनतां प्रयाति
ज्वालासुरवीनैव विदंतियेवै वृथा हि पंचांगधरानरास्ते अथ कि-

मपि वर्षोपयोगिकश्च्यते तत्रजन्मवत्सरं अभीष्टवत्सरे शोधये-
पंगताब्दोभवति तच्चत्रिधास्थापितं ५।२।६ पंचद्विषड्भिर्गुणितं
४ चतुर्भक्तं तस्मिञ्जन्मवारघटिपलादिकं योजयित्वा वारेषु सप्त
तष्टं तस्मिन्वारे घट्यादिके वर्षप्रवेशस्तत्रलग्नं विवाहोक्तरीत्यानि
र्मायग्रहान्संस्थाप्य फलं श्रूयात् तत्रसौगम्यायगताब्दानामिष्ट
सारणीनिदर्श्यते क्रमतः

वर्षेष्टसारिणी

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|-----|
| ग. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | ग. |
| वा. | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | वा. |
| घ. | १५ | ३१ | ४६ | २ | १७ | ३२ | ४८ | ४ | १९ | ३५ | ५० | ६ | २१ | ३७ | ५२ | ८ | २३ | घ. |
| प. | ३१ | ३ | ३४ | ६ | ३७ | ९ | ४० | १२ | ४३ | १५ | ४६ | १८ | ४९ | २१ | ५३ | २४ | ५५ | प. |
| वि. | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | वि. |
| ग. | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ग. |
| वा. | १ | २ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | वा. | |
| घ. | ३८ | ५४ | १० | २६ | ४१ | ५७ | १२ | २८ | ४३ | ५८ | १४ | ३० | ४५ | १ | १६ | ३२ | ४७ | घ. |
| प. | २७ | ५८ | ३० | १ | ३२ | ४ | ३५ | ७ | २९ | १० | ४२ | १३ | ४५ | १६ | ४८ | १९ | ५१ | प. |
| वि. | ० | ३० | ९ | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | वि. |
| ग. | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ग. |
| वा. | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | वा. | |
| घ. | ३ | १८ | ३४ | ४९ | ५ | २१ | ३६ | ५२ | ७ | २३ | ३८ | ५४ | ९ | २५ | ४० | ५६ | २१ | घ. |
| पा. | २२ | ४४ | २५ | ५७ | २८ | ० | ३१ | ३ | ३४ | ६ | ३७ | ९ | ४० | १२ | ४३ | १५ | ४६ | पा. |
| वि. | २० | ० | २० | ० | २० | ० | २० | ० | २० | ० | २० | ० | २० | ० | २० | ० | २० | वि. |

यत्संख्याको गता वृत्तत्कोष्टांकान्यथाक्रमं विलिख्य जन्मवारा-
दिकं योजयेत् ताजिकेराश्यधीशाहोराद्रेष्काणादीनां अधि-
पाः पूर्वोक्ता एव दृक्काणेशाहदेशास्त्रिराश्यधिपास्त्रिंशां-
शाधिपाश्चभिन्नाः

मुहूर्तसिंधुः

(२१५)

| हृक्काणचक्रम् | | | | | | | | | | | | त्रिराशिपाः | | | | | | | | | | | | | |
|---------------|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-------------|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| मे | कु | मि | क | सि | क | तु | वृ | ध | म | कु | मी | रा | मे | कु | मि | क | सि | क | तु | वृ | ध | म | कु | मी | रा |
| १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | अ | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | अ |
| कु | वृ | वृ | कु | श | श | च | मं | कु | कु | श | श | अ | र | श | श | वृ | च | मं | श | मं | कु | च | च | मी | रा |
| २० | २० | २० | २० | २० | २० | २० | २० | २० | २० | २० | २० | अ | २० | २० | २० | २० | २० | २० | २० | २० | २० | २० | २० | २० | अ |
| र | च | मं | कु | कु | श | श | र | च | मं | कु | कु | अ | र | च | मं | कु | कु | श | श | च | मं | कु | च | च | मी |
| ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | अ | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | अ |
| श | श | र | च | मं | कु | कु | श | श | र | च | मं | अ | श | श | र | च | मं | कु | कु | श | श | च | च | मी | रा |

| हृदाचक्रम | | | | | | | | | | | | | विषम | | | | त्रिंशंश | | | | सम | |
|-----------|-----|-----|----|------|----|-----|-----|----|----|-----|-----|-----|------|----|----------|-------------|-----------|---------|-----------|--|----|--|
| मे. | वृ. | मि. | क. | सिं. | क. | तु. | वृ. | ध. | म. | कु. | मी. | रा. | ५ | मे | क- मे | सिं- सिं | वृ- वृ | क- क | क- मी. | | | |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | मे | सिं | वृ | क | मी. | | | |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | कु | ज: | ५ | कु | क: | | | |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | श | नि: | ५ | वृ | ध: | | | |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | वृ | ह: | ५ | जी | | | |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | वृ | ध: | ५ | श | | | |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | शु | क: | ५ | कु | | | |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | | | |

तत्रलघुग्रहान्स्थाप्य पंचाधिकारीन्यासान्कुर्यात् जन्मलग्नपतिः १ अक्षलग्न
पतिः २ मुंथाधिपः ३ त्रिराशिपतिः ४ दिवारविभयः ५ रात्रौचन्द्रभयः ५ एषु ल-
ग्नलोकीबलवांश्च वर्षराट् तत्रमुंथानयनंगताद्देशेषु जन्मलग्नसंख्यां यो-
ज्य १२ तष्टे शेषराशौ मुंथाताजिकदृष्टिस्तु-
दृष्टिचक्रम्

| | | | | | | | | |
|--------|--------|---------|---------|-----|-----|------|------|--------|
| ९ | ५ | ३ | ११ | ४ | १० | १ | ७ | स्थानः |
| ४५ | ४५ | ४० | १० | १५ | १५ | ५० | ५० | कला |
| मित्र | मित्र | अपमित्र | अपमित्र | अरि | अरि | क्षत | क्षत | फलः |
| मेतापक | मेतापक | शुभा | शुभा | कुर | कुर | कष्ट | कष्ट | नाम |

ततोदशानयनं गताब्देषु स्वीयजन्मर्क्षसंख्यां ह्यूनानां योज्य ९ तद्वत्क
मात् दशेशाः आ-चं-भौ-रा-जी-श-बु-के-शु-यो-दि-१८ ३० २१ ५४
४८ ५७ ५९ २९ ६० गः ३६० योगिनीदशातुगताब्दे स्वीयजन्मभ-
संख्यां संयोज्य- अष्ट ८ तष्टे त्रियुक्ते शेषं योगिन्यः मं-पिं-ध-भा-
भ-उ-सि-सं-^{दि१० २० ३० ४०} अथ पताकिचक्रम् प्रवेशाब्दं नवतष्टं शेषराशौ जन्म
राशितश्चंद्रः षड् तष्टे शेषराशौ विलोमं राहुः सरलं भौमः अन्ये ग्रहा
श्चतुर्भिस्तथा ग्रहा बोध्याः तन्नरवि विद्वेशोकः भौमविद्वेकष्टं बुध
विद्वेशुभं जीवविद्वेशुभं शुक्रविद्वेशुभं शनिविद्वेभयं राहुकेतुभ्यां
विद्वेमहाभयं पताकिरचनाचरेरवाभयं पुर्वपरायतं स्यात्तन्मध्यत
श्चोत्तर याम्यभेदात् द्वाभ्यामुभाभ्यामिलिते थतिर्यक् शृंगे भवेद्वा
दशधा पताकी मासफलम् दिनफलं च ताजिकेभ्यो ध्येयं अत्रा-
पि पंचवर्गीत्य शालादिकं च विस्तरतो नालेखि० अथ प्रणविचा-
रः तत्रादौ सामान्यविचारः योभावः स्वामिसौम्याभ्यां दृष्टो युक्तो
यमेधते पापदृष्टयुतो नाशः मिश्रैरेवं विनिर्दिशेत् किंच ग्रहसाव-
ल्ये दृष्टेराधिक्ये च फलाधिक्यं तेषां निर्बलत्वे दृष्टेरभावे फलात्पत-
म् अथ सिद्धसिद्धिविचारः प्रणालये शुभग्रहे शुभवर्गे शीर्षे द-
ये शुभदृष्टे कार्यसिध्यति पापग्रहे पापवर्गे पृष्ठो देवपापदृष्टेन सि-
ध्यति मिश्रे कष्टसिद्धिः मिश्रे बलाधिकेन सिद्ध्या सिद्धिः लग्नस्वा-
मी लग्नं पश्यति कार्येषः कार्यं पश्यति लग्नेशः कार्यं कार्येशो लग्नं
लग्नेशः कार्येशं कार्येशो लग्नेशं प्रत्येकं च द्रष्टव्यं षट्सु योगेषु संपू-
र्णसिद्धिः लग्नेशो लग्नं पश्यति कश्चिच्छुभग्रहः पश्यति तदा पंच

विंशोपकासिद्धिः लभेशोलम्पश्यति शुभोनपश्यतितदा दशविंशोपकासि-
 द्धिः शुभः स्वामिश्च पश्यतस्तदा पंचदशविश्वेसिद्धिः त्रयः शुभाः पश्यं-
 तितदा सप्तदशविंशोपकं चत्वारः शुभालम्पश्च पश्यतितदा पूर्णं
 कार्यं कूरेक्षण हीनंचेत् अथ पुत्रपुत्रीप्रश्नः लभेशपंचमेशौ य-
 दि पुंराशौ पुंवर्गेस्तस्तदा पुत्रः समवर्गे तदा कन्या विषमराशिगौ जीव-
 सूर्यो पुत्रदौ समराशिगाश्चंद्रकुजभृगवस्तदा कन्या भृगुचंद्रौ पंचमौ
 कन्या तावेव यत्र कुत्रापि स्थित्वा पंचमालोकवंतौ पुत्रः तावेवानीचा-
 स्तमितौ लाभपुत्रः लग्नसुतलाभपुसौ म्ययुते पुदश्मगुरौ पुत्रः द-
 क्षस्वरे पुत्रः वामे कन्या लग्नादिषमभावगशनौ पुत्रः समभागश-
 नौ कन्या लग्नं विनाचरे राशौ विषमे पुत्रकृच्छ्रनिः समे स्त्री राहु-
 रप्येवं जातनाशकरो हिंसः नारीपितृगृहे पृच्छतितदा पितृगृहना-
 माक्षराणि भर्तृगृहे भर्तृनामाक्षराणि ते पुशुक्लादिति धिसंख्यां यो-
 ज्य त्रिभिर्भागिन एकशेषपुत्रः द्विशेषे कन्या शून्ये शून्यं गर्भमास-
 पृच्छा लग्नभुक्तनवांशौ भुक्ता मासाः भोग्यनवांशौ भोग्या लग्नाद्यतम-
 स्थाने शुक्रस्तावतो मासाः शेषः दशमादिपुशुक्ले पंचमादृष्टनाश्च
 यथा प्रश्नकालीनचंद्रद्वादशांशकराशिगते चंद्रं प्रश्नकालीनलग्न-
 नवांशतुल्यवेलायां प्रसवो वाच्यः इदं च सर्वमनुपातेन यथोक्तक-
 रणेन पलादिकंचेष्टं निरंतरमायातिगर्भे किं भविष्यति विषमवर्ग-
 स्वामि शुभयुग्दृष्टे पुंय हृदष्टे पुत्रः अन्यथा कन्या मम संततिर्भवि-
 ष्यति लग्नेशः पंचमे पंचमेशोलग्ने तत्र वर्षसुतोद्भवः तावुभायष्टम-
 गौ यावद्दृह्युतौ तावतां नशः पुत्रेशो राहुकुजाभ्यां युतः पुत्रहान

स्मिन् राहु कुज मध्यगे पापाक्रांते स्तनिर्वले पिशनिरुच्यो भ्युदि-
तो बुधशुक्रचंद्रद्युते सितो दिव्यपुत्रदः वलीशुभः पंचमगः पुत्रः
दः क्रूरजितस्स एव तन्नाशदः पंचमेरपयोगे दृष्टौ वैकः पुत्रः भौ-
मेन त्रयः गुरुणा पंच सोमेन कन्याद्वयं बुधेन कन्या चतुष्कं भृगौ
कन्यापदं शनौ कन्यासंतकं शुभदृष्टौ जीवनमन्यथा न वृषसिं
हकन्या वृश्चिकराशयो लग्नचंद्राभ्यां पंचमगा अल्पसंततिदाः
यदि स्वर्क्षगौ सूर्यशनीचंद्रबुधौ चारं भ्रगौ स्तस्तदा रघीपंध्या-
गुरुभृगुरंभ्रगौ मृतप्रजा कुजे रंभ्रगे स्त्रवद्गर्भा हिला धनुर्भग-
गतैः शशांकमाहेयचंद्रात्मजदैत्यपुत्रैः अग्रे स्थिशूलं प्रसव-
श्च पश्चादग्रेण पश्चाच्च धनुर्धरस्थैः सूर्य भृगूरंभ्रगौ पापावित्तस्त-
तव्यवगाया प्रथमसंततिर्धियतेऽन्या जीवति बुधगुरु भृगुभिः
स्वराशिभिर्लग्नसुतजाया धर्मलाभैः पापहीनैर्धनीपुत्रः दक्षि-
णकुक्षिगे गर्भे पिप्रायः पुत्रः वामगे कन्या मध्योदरे पंडः कुक्षिः
हृयगे यमलं एवमेव गोमहिष्यादिषु अथ यमलं योगः पंच-
मस्थितं ग्रहयुग्मं सर्वग्रहैर्दृश्यते चेन्मिश्रं प्रभलमे चत्वारिग्र-
हयुग्मानि चेत्संतति तदा युग्मप्रसवः मित्रेण सह प्रीतिर्भविष्य-
ति बालग्रे शलाभेशयोरित्यशाले मिथः स्नेहदृष्टौ बालग्रे शला-
भेन लाभेशे लग्नगे वामे त्रीत्यादीशराफेन ॥ अथैतदुपयोगि-
नौ सुथशीलमूसरिष्यौ ॥ शीघ्रे ल्यांशके मंदे बह्वशके पूर्वोक्त-
ताजिकदृष्टौ च दीप्तांशांतरेपि मंदे इत्यशाले भवति विलोमे
मूत्रारिष्यः त्रिधा वस्थोयं भवति पूर्णवर्तमान भविष्य भेदात्-

कलादि हीने पूर्णः दीप्तांशांतरेवर्तमानः शीघ्रं न्यलये मंदे न्यरा-
शौभविष्यः उभयोः शुभस्वर्क्षतुंगगयोर्यथोक्तफलदः दीप्तां-
शास्तु क्रमाद्रव्यादीनां २१५ चं १२ भौ ८ बु ९ शु ७ श ७ रो-
गी जीविष्यति वा शुभे सु १।४।७।१०।५।० जीवनं निर्वल-
लभ्यता वष्टमपतौ बलिनिमरणं चंद्रे ६।८ मृतिः लाभेशः शुभो-
क्षितो लाभेश उदितो मृत्युपो दुर्बलस्तदा जीवनं लभ्यलाभेश लाभ-
शु बलवत्स्वजीवनं रोगनाशश्च मृत्युपतौ केन्द्रगेवालमेशे ६।८
नष्टे वा चंद्रे च निर्वलेमरणं पापकर्त्तरिभे चंद्रे केन्द्रगेवामृतिः
पृष्ठोदये लभे तुर्व्यंकूरविले मृतिः चरराशौ लभगे पृष्ठे वा के-
न्द्रे च सौम्ययुते जीवनं शुभेषु लभसुतगे पुवाचंद्रे उपचयगे पि-
३।६।१०।११ शुभेषु केन्द्राष्टवित्तगेषु जीवनं ॥ अथ लाभः ॥
चंद्र लाभेश लाभेशालभवित्तत्रिकोणगाः दृष्टिमंतो मिथः प्र-
दुर्नितरां लाभदायकाः सौम्याः केन्द्रत्रिकोणगालाभदाः पापास्तत्र
गाविघ्नदाः सौम्या उच्चगालभवित्तदशमगानवमगृहं शुभदृष्टं चे-
ल्लामः शुभेनवमे गुरौ लभे रवौ दशमे लाभः शुभे सप्तमायगतं पि पूर्णं
चंद्रो लाभगतः सौम्यस्तुंगो धने पि वा शुभो वालाभगस्तुंगे लाभदत्त-
क्षेत्रं नृणां लमेशे लभे लाभे लाभेशे सप्तमेशे उदिते लाभः चंद्रशु-
क्र बुधानामे कोपि लाभेशे क्षितो लाभे च लाभो भूयात् उच्चेशु क्रं न्य-
स्मिन्वा गृहे लभतुर्वलाभगे लाभः चरे लभे शुभैर्बुते लाभः नवने शुभ-
दृष्टे ध्येवं लाभे लाभेश चंद्रेण त्रिकोणस्थ ग्रहे र्वापी क्षिते लाभः सौ-
म्याः कोणे पापा उपचये लाभः सौम्या उपचये पापा कोणे हानिः गुरु

लग्नेभृगुः सप्तमे चंद्रस्तु र्ये सप्तमे वा सद्यो लाभः लग्नतृतीयदशमा
 चगाः शुभालाभः लग्नेशालाभेशयोः सर्वग्रहाणां बालाभे दृष्टिर्लाभदा
 लग्नेशधर्मशौ शुभदृष्टिबुतौ लग्नेशोवाचं द्रक्ष्यगः कोणे लाभदः चं
 द्रो लग्नपतिर्वापि धनपत्याग्रतो यदि तदान धनलाभस्त्यादिपरीतो-
 हिलाभदः धनेशोलग्नै लग्नेशोवाधने शुक्रेंदुगुरुधनेशोवाधने भूरि
 लाभः लाभेलाभेशसंदृष्टे लाभेशुक्रे गुरौ विधौ लाभो मयति भाग्ये
 वा धने वाचं द्रयोगतः ॥ अथ नष्टलाभः ॥ एकादशं विचार्यं पु-
 ष्चंद्रे लाभं भवने वा शुभयुते क्षिते नष्टं लभ्यते लग्नद्विपंचतुर्याय
 गतेषु शुभेषु लाभः क्रूरेषु तत्रत्येषु न लाभः लग्नेशेशुभे क्षितयुते
 लाभः क्रूरयुते न लग्नेशसप्तमशयोगे कष्टालाभः सप्तमेशोलग्नैश
 सहिते लग्नगे लाभः लग्नेशसप्तमगे न लाभः सशुभे पूर्णचंद्रे द्विती-
 यतुर्यगे लाभः सार्के चंद्रे सप्तमगे न लाभः सप्तमेश्वरे वक्रे पिन लाभः
 चंद्रक्रूरयुतैः पिन मेपालिकन्या कर्कराशयः शुभवीक्षिता दशम-
 गालाभः जीवा दष्टमगः सौम्योनष्टग्रमे न्यधिष्ण्यगेशीघ्रं नष्टस्य
 लाभस्त्यादींस्ते रवेऽपि विशेषतः पतितधनलाभप्रभः धनेशलग्नै-
 शचंद्राणामित्यशालेतेषां सप्तमस्थे बाललग्नगधनेशस्य धनगेत्य-
 शाले बालभ्यते लग्नद्विपंचतुर्यसूर्यचंद्रयोर्वतु र्या द धः स्थत्वे वा
 सूर्य दृष्टे वा न लाभः जीवेन भृगुणा वा दृष्टे पूर्णचंद्रे लग्नगे वा बलवति
 शुभग्रहे लाभमुपयाते वा द्रुतं नष्टलाभः शुभदृष्टे शीर्षे दिये लग्नै वा
 लाभः ॥ चौरहृतिप्रभः ॥ सौम्याकेंद्रोपचंयवित्तगालाभाय पा-
 पास्तत्रस्थिता हान्यै पूर्णे दुर्ज जीवभृगूणामेकोपि लग्नगो लाभः

चंद्रोयत्रतिष्ठतितद्रूपं स्वामिना दृष्टं चेच्छाभः लग्नेशे सप्तमगे सप्तमे-
 शोलग्नगलाभः उभौ सप्तमे मुखशीलिनोलाभः तौ लग्ने मुखशीलि-
 नौ चौरः स्वयमागत्यार्थं प्रयच्छति सूर्ये लग्नगे चंद्रे स-
 प्तमगे नलभ्यम् कर्मेशलग्नेशयोरित्यशाले चौरः पलायते सप्त
 मेशे केंद्रे चौरोन्यत्रगतो नहि गतास्त्रिधर्मस्वामिभ्यामित्यशालिनि स
 प्तपेलग्नेशसप्तमपयोर्मिथोलग्नैच दृष्ट्यभावे निर्बले वालग्नपे चौरोरा
 शैर्धर्मपयेत् दशमेशलग्नेशयोरित्यशाले राजतो धनं नलभ्यं लग्ने-
 शदशमेशयोरित्यशाले स्वल्पोलाभः लग्नचंद्रयोः शुभयोगे क्षणा-
 लाभः धनेशरंघ्रेशेत्यशालेलाभः तयोरित्यशाले लग्नेशदशमेशयो-
 र्दृष्टौ चौरधनं राजा गृहीत्वा चौरं च बध्नाति रेघ्रेशकर्मेशेत्यशाले नृपथौ
 रसाहाय्यकृत् धनेशे सूर्यप्रविष्टे चौरः प्राप्तः उदिते धनेशे किंचिद्दद्या
 त् प्रश्नकाले चंद्रे क्रूरक्षेत्रगे चौरहृतं वाच्यं अथ चंद्रे सौम्ययुतेऽयुते
 वानचौरहृतं चंद्रे स्तपे वास्तंगते चौरो धनच नलभ्यते ॥ लग्नाच्चौरज्ञा-
 नं ॥ मेषे द्विजः वृषे क्षत्रियः मिथुने वैश्यः कर्के भूद्रः सिंहं वज्रः कं-
 न्यायां रत्नी तुले पुत्रभ्रात्रादि वृश्चिके सेवकः धनुषि भ्रातृपत्नी वान-
 करे वैश्या कुंभे मूषकः मीने भूतलं ॥ दिग्ज्ञानं ॥ लग्ने चंद्रे माघि
 तुर्ये उदीची सप्तमे प्रतिची दशमे वाच्यां स्थिरवर्गे वर्गोत्तमे गतं न त-
 न्नैव स्थितं स्वकीयश्चौरः तत्र प्रथमदृक्काणोदारे द्वितीये गृहमध्ये
 तृतीये गृहपश्चिमे बलादथात्केन्द्रगादिग्याच्या प्रागादिनाथाः आ-
 शुभं राशः चं बुवु केंद्रे ग्रहाभावे लग्नराशितो दिक् १।५।९
 माक् २।६।१० दक्षिण ३।७।११ प्रत्यक् ४।८।१२ उदक्

विवादप्रश्ने ॥ लग्नपेमंदगतौ बलवतिकेन्द्रगतेवादीजयति स-
 त्तमपेतादृशे सति प्रतिवादी मंदेशस्य चंद्रलग्नेशाभ्यां मित्रदृशे स्य
 शाले शीघ्रं वादशांतिः लग्नेशसप्तमेशयोर्यो वक्रः स सभायां दुर्घ-
 लः अनयोर्यो दशमेशदृष्टो यो वा सूर्येऽथ शाली यो वा स्वोच्चगः केन्द्र
 पेनेत्यशालि नृपतिस्तत् पक्षपूरकः स्यात् शनौ दशमेशे बलिनिके
 द्रगे कुजदृष्टे भौमे दशमस्थे न्यायो न पूर्व्येतत्प्रत्युत दंडमादद्याद्वाजा
 गुरौ भृगौ वा तथा सति धर्म्योन्यायः बुधे दशमगे मिप्रितन्यायः सूर्ये द-
 शमस्थे स दंडः चंद्रे स शुभे दशमस्थे शुभोन्यायः लग्नपचंद्रयोर्दश
 मेशेने शराफे दीर्घोऽक्षकटकः श्रनीचास्ते क्रूरलग्नेवादी नोजयति सप्त
 मगे प्रतिवादि नोजयः उभयत्र क्रूरेन कलहनिवृत्तिः परंतयोः क्रूरयो-
 र्यो बलवान्माघिस इतरं नेष्यति लग्नसप्तमव्यतिरिक्तभवनस्थयोः क्रूर-
 योर्मिथो दृष्टौ पूर्णायां सत्यां वादिप्रतिवादिनौ घुरिकाभ्यां ग्रहरबंदी
 मोक्षे मृत्युयोगे मोक्षः शुभयोगेन अष्टमेशे कंठकस्थे यावद्दर्शनमोक्षणं
 वित्तयेतु र्यगे दीर्घबंधः बलीचंद्रो गुरुर्बालमेशसहितो बंधदः कर्कषिना
 चंद्रो मोक्षदः स्थिरे चंद्रे लग्ने च बंधः चंद्रे व्ययगे मोक्षः अस्तंगते लग्ने शेष
 चतुर्थगे मरणदः लग्नपस्य केन्द्रपेनेत्यशाले लग्नेशकेन्द्रपतिषु केन्द्रेषु न
 मोक्षः शुभानां कंबुले शुभैरित्यशाले बालमेशचंद्रयोः शुभसहितत्वे वा-
 चिरात् लग्ने शेषापोक्तिमस्थे द्वादशेशे पापदृष्टे न मोक्षः लग्नपरं धेशयोरि-
 त्यशाले चतुर्थभवनं जाते मरणं चंद्रस्य पापैरष्टमेशेनेत्यशाले वा चतुर्थ
 भवने मृतिः लग्नचंद्रौ चरस्थौ शीघ्रमोक्षः चंद्रे कर्के चिरान्मोक्षः मकरगेपि
 चंद्रे चिरान्मोक्षः स्थिरे चंद्रे चिरान्मोक्षः द्विः स्वभावे द्रुतं परं यदि बंधनः

कालेनचंद्रमादिस्यभावगः लग्नस्यचंद्रस्यवातृतीयभवनधर्मस्थग्रहेण
 तृतीयधर्मपतिनावासह तृतीयभवनमध्ये इत्थशालेव्यचेशलग्नेशाभ्यां
 दशमभवने इत्थशालेवानवमलग्न पतिभ्यां तृतीयभवनेवेत्थशालेवास्त
 स्येनमोक्षः चंद्रेशानिभौमयुतेक्षितेकेन्द्रगेवं धनताडनदुःखानिसप्तम
 शुभः शुभं दृष्ट्वा लग्नपंपश्येत्तदायेनवन्द्यः स एव मोचयेत् लग्नेशे त्रिनवमगे
 त्रिनवम पाभ्यामित्थशालिनिवास्ययंमोक्षः केन्द्रवर्जं गुरुं स्थे चंद्रे सौम्य
 स्वराशिगेनच दृष्टे सुखंमोक्षः सप्तमेशुभक्षितेनवमस्थे सुखंलग्नेशः सप्त
 मपंसुदृष्ट्वा पश्येद्वाजान्याचंकुर्यात् अरिदृष्ट्या अन्यायं ॥ अथवृष्टिप्रश्ने
 ॥ चरशोषः स्थिरे २४ दिनोत्तरं वृष्टिः कर्कसीनकन्यानामन्यतमराशौ दश-
 मे पूर्णचंद्रे गुरुभृगुबुधयुते भूरिजलं जलराशौ लग्ने द्वित्रिंशत् वृष्टिः लग्ने-
 शो द्वित्रिंशः सप्तमः २७ दिनोत्तरं पूर्वतो वृष्टिः २५।७।८।१०।११।१२ जल
 चरराशयः शोषाः शुष्काः शुक्रविधूजलग्नहौ भौमशानिसूर्याः शुष्काः बुध
 गुरुमिश्रौ शुभेक्षितयुते जलराशौ लग्ने चंद्रे भृगोवाकेन्द्रकोणगे वा सौम्याः
 जलराशिगेषु द्वित्रिकेन्द्रस्थेषु शुक्ले च पक्षे सुवृष्टिः सौम्यास्तुर्यगावृष्टे पा-
 पादुर्भिक्षदाः सुरवेचंद्रभौमभृगुलग्नेषु वृष्टिः चंद्रभौमशानिपिचन्द्रभौमसू-
 र्येषु दुर्भिक्षं आर्द्रस्पर्शजलर्यमुद्यमः जले समीपोपवेशनं पानीर्यशदोच्चा
 रो वृष्टिशकुनानि चंद्रार्काभ्यां ७ शुक्रशानी वृष्टये लग्नात् २१।८।२।३ शुक्रश-
 नी वृष्टिदौ ॥ दूरस्थोजीवति मृतो वा ॥ लग्ने च चंद्रवा २५।८।८ नीचगे वा स्ते वा
 छिद्रपेनेत्थशाले वामृतः शुभैरदृष्टे चंद्रे वक्रगेनेत्थशाले भौमे दशमगे मृतः
 निर्वलाः सौम्याः पडष्ठव्ययगाः सूर्यचंद्रौ शुभेक्षितौ सपापौ मृतिः सपापपट्टोद-
 येलग्ने पापाः केन्द्रकोणाष्ठव्ययगाः सौम्या दृष्टा मृतिप्रदाः सूर्येन च मगे न्यरा
 तः तुर्योपरिस्थेन वमेन चंद्रमापादित्थशालं कुरुते शुभेक्षितः सौम्यैर्युतो वा प-

रदेशस्थितः सुखीचजीवत्यथसौख्यमेतिसपापैशुभैरयुतदृष्टवानवमगेरो
 गीतस्मिन्नमगेमरणम् ॥ अथसुष्टिप्रश्नः ॥ प्रश्नकाले यदि कोपि ग्रहः स्वांश-
 स्थो यदि लघ्नभिकोणे पश्यतरे स्वांशं पश्यति तदा धातुर्वाच्चा अथ यदि स्वयं
 परांशस्थ तत्रैव ॥ ५॥ १९ वर्तमानस्वांशं पश्यति तदा जीवः परांशस्थः स्वयंतत्रापि
 वर्तमानपरांशं पश्यति चेत्तदा मूलं अजरशौलमगे धात्वादयानवांशकगणनया
 समराशौलमगे जीवमूलधातवेन वांशकयशात् तत्रापि पापांशे धाम्यो धातुः
 सौम्यांशे धाम्यः मिथुनतुलायना कुंभचापपूर्वार्धेषु जीवा द्विपदास्तेषां देव
 रपक्षिणो मेदाः मेषघृषसिंहचापात्य भागेषु चतुष्यदाः कर्कालिघृषमीनाः स-
 रिस्तृपाः तत्रापि मीनो द्विपात् शेषा बहुपदाः कर्कमकरमीनेषु मूलं जलजेषु ज-
 लजं इतरेषु स्थलजं वलिनौ केन्द्रो पगतौ रविभौमो धातुकारकौ प्रश्नेषु चंद्रौ
 मूलकरौ शनिगुरु शुक्रास्तथा जीवं अपरंचरुर्ध्वं पश्यति जीवं मध्यं पश्यति
 धातुं अधः पश्यति मूलं ऊर्ध्वं गं स्पृशन् जीवमध्यांगं धातुं अधो-
 गं मूलं जीवबुधौ जीवमरविशुक्रौ मूलं इतरेषु धातुं च द्वाशीन-
 वांशेषु धस्तद्वाशोर्या योनिः सैव चिंतनं लग्नेशे बलवति स्वात्मचिंता
 एवं तत्तद्भावे शेषवलिषु तत्तद्भावानां चिंतनं ॥ अथ कथासुरतः ॥
 शुक्रभौमरविषु सप्तमेषु अन्यांगनया जीवे स्वयांशशिज्ञयोर्वे-
 त्रययाशनौ संकरजया आरुतिवयो वर्णादिकं चंद्र इव अथवा
 लग्नांशाधिपतिलग्नेशांशपत्यो मिथो मित्रदृष्टौ देहसपं एवं यद्य-
 द्भावेशेन सह मैत्री चंद्रदृष्टि च तत्तद्भावे स्य बुद्धिः अथवा लग्नांश
 कमेव लग्नं प्रकल्प्य ग्रहानपि अंशकगतानेव स्थापयित्वा धातु
 मूलादिकं कथयेत् अथवा प्रश्नाक्षरं पङ्क्तुगुणितमष्टभिर्युतं सप्त-

मुहूर्तसिंधुः

(.२२५)

तदंशेषे धातुमूलादिकं बोध्यं अथवा एकविंशाक्षरं जीवं धातुवर्णास्त्रयोदश एकादशाक्षरं भूलं अधिके चिंतनं मतं तत्रचक्रम्.

| जीवाक्षरादिः | | |
|--|--|---|
| जीवाक्षराः | धातुक्षराः | मूलाक्षराः |
| अ.आ. इ. ए. ओ. अ.क.र.व.ग.घ.च.छ.ज.झ. ट.ठ.ड. ठ.प.श.ह.२१ | उ. ऊ. अं. त. थ. द. ध. प. फ. ब.भ.व.स.१३ | ई. ऐ. औ. ड. अ. ए.न. म. र. ल.व. ११ |

सभागतप्रभकर्तुमुखात्फलनामाक्षरेषु शेषामधिक्यं तां चिंतां जानीयात्.

| उत्तरोत्तरादि | | | |
|--|---------------------|-----------|-----------|
| उत्तरोत्तरं | अधराधां | उत्तराधरं | अधरोत्तरं |
| उत्तरस्वर मक्षरं च | अधरस्वर मक्षरं च | अन्यतमे | अन्यतमे |
| शुभं | नाशः | शुभमध्यः | अधमशुभ |
| क. ग. च. ज. ट. ड. त. द. प. य. य. ल. श. स. अ. इ. उ. ए. ओ. उत्तराः | | | |
| ख. घ. छ. झ. ठ. ड. ध. ध. फ. भ. र. व. य. ह. आ. ई. ऊ. ऐ. औ. अधराः | | | |

उत्तराधरादिकः

| १ | २ | ३ | ४ | ५ |
|----------|----------|-------------|----------------|----------------|
| अ. ए. क. | आ. ए. ख. | इ. ओ. ग. | ई. औ. घ. ङ. | उ. ऊ. ड. ज. ए. |
| च. ट. त. | छ. ट. थ. | ज. ऊ. द. व. | ठ. ध. भ. क. ह. | न. म. अं. अ. |
| प. श. | फ. ख. | ल. स. | | |
| शुभाः | मध्याः | शुभमध्याः | मध्यशुभाः | अशुभाः |
| उत्तर | अधर | उत्तराधर | अधरोत्तर | दग्धः |

अष्टौ पक्षाः

| संयुक्त | असंयुक्तः | अनभि | अभिहित | आभिधा | आलिं | आभिधु | दग्धः |
|----------|-----------|------|-----------|-------|------|-------|-------|
| संयुक्तः | असंयुक्तः | अनभि | अभिहित | आभिधा | आलिं | आभिधु | दग्धः |
| शुभं | दोषदं | शुभं | गवुवर्धकं | शुभं | शुभं | मध्यं | अशुभः |

द्विचतुर्थ्यभिन्ने तृतीयपंचमौ शत्रू संयुक्तेन शुभं सर्वं असंयुक्ते नमभ्य-
मं अभिहिते स्वल्पलाभः स्यान्मरणं चाभि धूमिते अनभिहिते च वि-
ज्ञेया आद्यंते दुःखसंपदः आलिङ्गिते शुभं सर्वं रुद्धसौरव्यं च धू-
मिते दग्धे विनश्यते सर्वपक्षाष्टानां विनिर्णयः

शुभाशुभं

| अ. ए. | आ. ए. | इ. ओ. | ई. औ. | उ. ऊ. अं. अः | खराः |
|--------------|---------|---------------|----------|--------------|-----------|
| प्रथमाक्षराः | द्वितीय | तृतीय | चतुर्थ | पंचमाः | षष्ठी |
| वर्तुलाः | दीर्घा | चतुष्कोण | त्रिकोण | गोलाः | आकारः |
| शुक्ला | रुष्णा | रक्ताः सखिद्र | नीला | बहुवर्णा | वर्ण |
| दिन | रात्रिः | दिन | रात्रि | दिन | दिनरात्रि |
| पूर्व | दक्षिणा | पश्चिम | उत्तरा | पूर्व | दिश |
| पुत्र | कन्या | पुत्र | कन्या | पंडः | पुत्रादि |
| स्वग्राम | परग्राम | स्वग्राम | चपलभिन्न | स्वग्राम | ग्रामाः |
| शुभ | दुष्ट | शुभ | भयदा | शुभ | शुभा |
| लाभ | अलाभ | लाभ | वामनआला | लाभ | लाभाः |
| गृहजाः | वन्या | गृहजाः | दूरगाः | गृहजा | ग्राम्याः |

गर्गमनोरमाक्तं

| | | | | | | | | | | | |
|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|
| अ-२ | आ-१ | इ-४ | ई-५ | उ-६ | ऊ-७ | ऋ-८ | ॠ-९ | ऌ-१० | ॡ-११ | ए-१२ | ऐ-१३ |
| ओ-१४ | औ-१५ | अ-१६ | अ-१७ | क-१८ | ख-१९ | ग-२० | घ-२१ | ङ-२२ | च-२३ | उ-२४ | ज-२५ |
| ऊ-२६ | अ-२७ | ट-२८ | ठ-२९ | ड-३० | ढ-३१ | ण-३२ | त-३३ | थ-३४ | द-३५ | ध-३६ | न-३७ |
| प-३८ | फ-३९ | ब-४० | भ-४१ | म-४२ | य-४३ | र-४४ | ल-४५ | व-४६ | श-४७ | ष-४८ | स-४९ |
| ह-५० | ॠ-५१ | ॡ-५२ | ॢ-५३ | ॣ-५४ | ।-५५ | ॥-५६ | ॥-५७ | ॥-५८ | ॥-५९ | ॥-६० | ॥-६१ |

वर्गवर्णप्रमाणेन सस्वरं ताडितं मिथः पि-
डसंज्ञाभवेत्तस्य यथा भागेस्तु कल्पना सि-
ध्यसिद्धीकृत्वा भाग्यां लाभालाभौ जयाज-
यौ धातुमूलं तथा जीवं जीवं मूलं च धातु-
कं कालाकमायुषा लोभं गुरुपात्रसेव
येति संकीर्णकलोल-१६ ॥ वर्षशुभाशु-
भज्ञानं ॥ मेष संक्रांतिलभेशो मेषसं-
क्रांत्यनंतरा मापूर्णिमान्यतर प्रवेशल-
भेशो विलभगौ केंद्रगो शुभदृष्टौ शुभेत्यं
शालिनौ सकलवत्सरसुखदौ पापार्दितेभ-
यं पापैरित्यशालै केंद्रभयने पुजाते पाप
दृष्टियोगे महर्घगदश्च अथ जन्मलघात्
प्रतिवर्षं शुभाशुभं जन्मोदयाद्वा स्वदज
प्रवेशोलभं हि यद्वा गतं शुभाशुभं तद्वा-
य वृद्धिं प्रकरोति तस्मिन् वर्षे नृणां पापयु-
तं तदन्यथा १ देहसुख २ धनलाभ ३
कुटुंबवृद्धि ४ मित्रसुख ५ पुत्रातिधन

श्रीरामोक्तचक्रम्

| | |
|-----------|-------------|
| श्रीराम | स्थानलाभः |
| सीता | धनं |
| लक्ष्मण | कार्यसिद्धि |
| विभीषण | सर्वलाभः |
| कुम्भकर्ण | मरणम् |
| रावण | नक्षत्र |
| भंगद | राज्यम् |
| सुग्रीव | बंधुलाभः |
| केकई | कार्यनाशः |
| भरत | अभिषेकः |
| अर्जुन | कल्याणः |
| सुलक्ष्मण | कार्यना- |
| इतुमान | कार्यसिद्धि |
| जाम्बवान् | दीर्घायुः |
| नारदः | फलहः |
| गृहः | प्रियदर्शनः |
| देवा | फलानि |

उपराजय ७ स्त्रीसुखं ८ मृत्युभयं ९ धर्मलाभं १० स्थानलाभ ११ ला-
 भाधिक्य १२ दुःखदरिद्रपापयुतौ तत्तद्भावहाः कूपादिवाहनं ऋक्षेष्टत-
 रपौष्णवैष्णवमघासूलानुराधाश्विनीप्राजापत्यकरद्विदैवतगुरौशी-
 तांशुदेवेषुचनिदोषैर्वृषभद्वयैश्चसुमनो मालाभिरामालितैर्दत्ताक्षेत्र-
 पतेर्बलिं हलधरः क्षेत्रंततः कर्षयेत् ॥ चंद्रस्यशृंगोन्नतिफलं ॥ मी-
 नमेयगतश्चंद्रोभवेद्याम्योन्नतः सदा समशृंगोवृषेकुंभे शेषमेष्ट-
 रोन्नतः याम्योन्नतेचतुर्भिर्क्षं समं स्याच्चसमेधिधौ सुभिक्षं सौम्यदि-
 भागे चोन्नते मृगलांहने मूलाकारे विधौ भीतिः प्रोदिते महति रुजः
 ॥ चंद्रस्योदयफलं ॥ बृहदभ्युदिते चंद्रे भवेत्स्थान्यसमर्थता धन्ये-
 तन्महर्घत्वं समेतत्समतामता यदि शुक्ल द्वितीयायां वामे चंद्रोदयो-
 रवेः शुभंतदाखिले मासिनो शुभं दक्षिणोदये ॥ अथ प्रतिमासे दर्शफलं ॥
 शुभवाराश्विते दर्शे स्यात्सुभिक्षं प्रजासुखं पापवाराश्विते दुःखं तथा
 धान्यमहर्घता अथैकमासे पंचवासरफलम् शुक्लादिमासे चैत्पंच
 पापखेटस्य वासराः प्रजापीडा भवेत्तत्र धान्यस्यापि महर्घता मासे
 पंच शुभावाराद्येकस्मिन् प्रजायते सुभिक्षं सर्वशस्यानां तदा सर्वे सु-
 खीजनाः पंचकेरविवाराणां छत्रभंगो महाभयं सोमे धान्यसमृद्धिश्च
 सुखं भवति सर्वदा भौमे रक्तभयं घोरं छत्रभंगस्तु वामवेत् बुधे सुभि-
 क्षं सौरभ्यं जीवे शुक्रे पितृत्समं पंचके सूर्यपुत्रस्य पाताले कंपते फणी-
 ईशानदेवमंगश्च बहिर्दाहो महर्घता अथाषाढपूर्णिमायां वाद्युपरी-
 क्षां ॥ आपादे पूर्णिमायां च प्रदोषे वा दिवानिशं प्राच्यां वा योस्तु दृ-
 ष्टिस्तथा स्थान्यनिष्पत्तिरुत्तमा अल्पवृष्टिः स्तथा मेष्या ममे भीतिर्महर्घ-

ता अनाष्टिभिर्वेद्याम्यां प्रजापीडामहर्घता दुर्भिक्षंरौरवं घोरं मनावृ
ष्टिश्चनैऋतो वारुण्यांच महावृष्टिर्धान्योत्पत्तिश्चमध्यमा वायौचा युः
प्रचंडश्चवृष्टिर्धान्यंचमध्यमं बहुधान्यंसुवृष्टिश्च उत्तरस्यां सुखीजनाः
ईशान्यांशस्यसंपत्तिर्धनाढ्यास्सुखिनोजनाः ॥ संवत्सरात्सुभिक्षादि ॥
त्रिमेसंवत्सरेयुक्ते शरैर्भक्तेथसप्तभिः चतुर्द्वाभ्यामितेशेषे सुभिक्षंविपु-
लंभवेत् त्रिपंचकेचतुर्भिक्षंपदभूसंख्येचमध्यमं शून्येतुरौरवंशेषंफ-
लं वर्षेबुधैस्मृतम् अथवा द्विघ्नःसंवत्सरोरामैर्हीनो भक्तो न गैस्ततः
शेषेवाणामितेयुग्मे सुभिक्षंहायनेभवेत् वैदचंद्रमिते ज्ञेयं दुर्भिक्षंखे-
तुरौरवं ॥ अथ भूकंपफलम् ॥ भूकंपोयामतोवर्णाक्रमाद्रण्यादिवा
निशं वायुमंडलजोभूपशस्यांबुमगधंतथाग्रामान्सुदकं बह्निमंडल
स्थोनिहंतिहि इंद्रमंडलजोभूमिं तथागुर्जरदेशकं भूपालांश्चो न देशा
श्च प्रचेतो मंडलोद्भवः ॥ इंद्रमंडल ॥ ज्येष्ठानुराधारोहिण्यो धनिष्ठा
श्रवणंतथा अभिजिदुत्तराषाढा शुभं माहेंद्रमंडलं यद्यत्रचलतेकिं-
चिद्विकारं वायदाभवेत् माहेद्रं तद्विजानीयात्तस्यवक्ष्यामिलक्षणम्
प्रजाप्रहृष्टाः सर्वाः स्युः सर्परोगविवर्जिताः संधिंकुर्वन्तिराजानः सु
भिक्षंभवतिध्रुवं उपमंक्तेनृपःसौरख्यं हृष्टाभूमिर्नचेतयः निर्भयाग
दितालोका उत्पातेभूमिमंडले ॥ वारुणमंडलं ॥ आर्द्राश्लेषाशत
भिषक् पूर्वाषाढाचरेवती मूलमुत्तरभद्राच वारुणं मंडलं स्मृतं बहुदुग्ध
युतागाधो बहुपुष्पफलद्रुमाः आरोग्यं जायतेक्षोण्या मुत्पातेजलत
त्वंजेउत्तिष्ठन्तिमहामेघाविद्युत्ताडितकुंडलाः ॥ अग्निमंडलं ॥ भर-
णीकृत्तिकापुष्योविशाखापूर्वफाल्गुनी पूर्वाभाद्रपदाचेतिआग्ने-

यमशुभंमतंधनक्षयोभयंघोरंपीडारोगोलपनीरता अग्न्याख्यमं-
डलोत्पातेफलपुष्पादितुच्छता यद्यत्रचलतभूमिःपरिवेधेदुसूर्य-
योः भूमिकंपोथनिर्धातउल्कावापतितायदि अद्रणंचंद्रसूर्याणां
केतोरुत्थातदर्शनं रक्तवृष्टिः पांशुवृष्टिः पाषाणपतनंतथा आग्ने-
यं तद्दिजानीयात्तस्यवक्ष्यामिलक्षणं अल्पक्षीरास्तथागावोअल्प
पुष्पफलद्रुमाः शस्यानांनाशनंचैवअनावृष्टिंविनिर्दिशेत्कपाल
हस्तादृश्यंतेक्षुधयापीडितानराः ॥ वायव्यमंडलम् ॥ चित्रास्वाति
मृगाश्विन्यःपुनर्वसुकरोतथा उत्तराफाल्गुनीचैव वायव्यमशुभावहं
यद्यत्रचलतेवायुरन्यद्वातंमहाभयं वायव्यंतद्दिजानीयात्तस्यवक्ष्या
मिलक्षणं महावातंतथाभीतिर्महाभयमुपस्थितं उत्पन्नाहितथामेधा
नमुंचंतिजलांजलिं ॥ अथकाकनीडफलं ॥ काकनीडंयस्यांशारवायां
वृक्षस्य तस्यफलं ॥ काकमैथुनं ॥ दिवावायदिवारात्रौ यःपश्येत्का
कमैथुनं सनरोमृत्युमाप्नोति ह्यथावास्थान नाशनं

नीडचक्रम्

| पू | आ | द | नै | प | वा | उ | ई | मध्ये | यत्नाय भूमि | शुक्लरत्ने |
|--------------------|-----------------------------|-----------------------|---|------------------|-------------------------|----------------------|------------------------------|-----------|-----------------|----------------------|
| मृगशिरा मृगशिरा | हाहाकारमहाशिरा समादिशेत् | हाहाकारमहाशिरा हन् | सामान्याफल होमशिरापरमेश्वर- लक्ष्मी | वृक्षमार्गोभवेत् | वायवे वायुमप कर्तव्येति | शराणविक्रयेधनमसुमिसा | सर्पदोषासारापेपाक्षिभय नि | अनावृष्टि | महाशौरमपअवृष्टि | शौरभयराजमप विप्रदत्त |

अस्यदोषस्योपशांतये शांतिः एवकपोतेपिकदृष्ट्यांहितालायामपिच-

| काकशब्दविचार | | | | | | | | |
|--------------|----------|---------|--------|---------|---------|---------|--------|------|
| पू. | आ. | इ. | ई. | उ. | ऊ. | ऋ. | ॠ. | दिश |
| आविर्भाति | पू. | सिद्धि | इष्टाग | उभ | सोपावा | प्रसाग | मनोरमा | महरे |
| इष्टागम | उज्ज्वलं | इष्टागम | कवि | इष्टागम | शौचं | इष्टागम | मध्यग | महर |
| आविर्भाति | सुमया | प्रसागम | सुमला | मनोम | इष्टागम | मोक्षि | सुम | महर |
| सुमया | शोभा | सिद्धि | संतोष | सिद्धि | मनोरम | मनोम | सुम | महर |

दिनमिच्छाया रथचंद्र सहिता दिनमध्यरुच्याहीनातयाशरहता
 दिनमानघट्यः भक्तास्तदा भवन्ति वासरयातगम्यनाडी प्रमाणम
 तुनाथविलग्नमस्मात् छायापादैरसोपेतैरेकविंशच्छतं भजेत
 लब्धांके घटिकाज्ञेयाः शेषांके चपलास्मृताः त्र्यंशुलं नृणामा
 दाय छाया रामसमन्विता चतुर्पष्टिं भजेत्तेन लब्धानाडयः

| छायापादोपरीष्टकालः | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|--------------------|--------|----|----|----|----|----|----|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| इष्टकाल | मकरादि | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ |
| | १० | १५ | १४ | १३ | १२ | ११ | १० | ९ | ८ | ७ | ६ | ५ | ४ | ३ | २ | १ | ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ |
| इष्टकाल | करादि | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ |
| | ११ | १५ | १३ | ११ | १० | ९ | ८ | ७ | ६ | ५ | ४ | ३ | २ | १ | ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ |
| इष्टकाल | करादि | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ |
| | १३ | १५ | १३ | ११ | १० | ९ | ८ | ७ | ६ | ५ | ४ | ३ | २ | १ | ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ |

सप्तनाडी

| | | | | | | | |
|---------|---------|---------|-------|-------|-------|-------|--------|
| शनि | रवि | भौ | जी | शु | बु | चंद्र | स्वामि |
| रु | रो | सृ | आ | पु | ति | अ | भानि |
| वि | स्वा | वि | ह | उ | पू | म | भानि |
| अनु | ज्वे | मू | पू | उ | भि | अ | भानि |
| म | अ | रे | उ | पू | श | च | भानि |
| उर्ध्वा | उर्ध्वा | उर्ध्वा | मध्य | ० | ० | ० | ० |
| चंडा | शता | दहता | सौम्य | नीर | जल | ऽमृत | नाम |
| याम्या | याम्या | याम्या | मध्य | उत्तर | उत्तर | उत्तर | नाम |

स्मृताबुधैः अथ सप्तांगुलशंकुः प्रवकाः चैत्रे
माघवद्विने १४४ रु
तमनुमार्गे यमौ सप्तभू
१७२ ऊर्जे फाल्गुनके वि
यं व्रजविधुः १८० पौषे च
नेत्रौ धृति १८२ ज्येष्ठे आ-
वणभाद्रयोः कृततिथि
१५४ स्वाषाढके त्रिर्म-
नुः १४३ माघे वाणधृति

अ १६५ सर्वगणकै शंकुः सुसप्तांगुलं सप्तांगुलं तृणछायायु-
ताः सप्तभिरंगुलैः तत्तन्मासध्रुवो भाज्यो लब्धं घट्यादिकं स्फुटम्
एकविंशत्यंगुलं तृणछाया सर्वतृणो भवेत् तावत् घट्यादिकं म-
ध्यमार्गे स्थिता सौम्या नाडितस्याग्रपृष्ठगाः सौम्ययाप्यगतं ज्ञेयं
नाडिकानां त्रिकं त्रिकं कूरयाम्यगतानाड्यः सौम्या सौम्यदिगाग्नि-
ताः मध्यनाडी च मध्यस्था ग्रह रूपफलप्रदाः एकनाडी गता आ-
प्या ग्रहाः कूरा शुभायदि ततो नानाफलं वाच्यं शुभं वायदि वा शुभं
ग्रहाः कुपुर्महावातं महावाताख्यनाडिकां गतानाडी गता वायुं वहत्यां
दाहगायदि सौम्यनाडि गता मध्या नीरस्थामेधवाहकाः जलायां
वृष्टिदाश्चंडा नाडिकास्तेति वृष्टिदा एकोप्ये तत्फलं धत्ते पिनाडी सं-
स्थितो ग्रहः भूस्तुतः सर्वनाडीषु धत्ते नाडिफलं ध्रुवं प्रावृट्काले समा-

याते रौद्राधर्षगतेरयौ नाडीवेधसमायोगे जलयोगान्वदाम्यहं यत्र
 नाडीस्थितश्चंद्रः तत्रस्थः स्वेचरो यदि कूर सौम्यविमिश्रश्च तद्दिने वृष्टि-
 रुत्तमा एव मृदाशसयोगो जायते यदि स्वेचरैः तत्रकाले महावृष्टि-
 र्यावत्तस्यांशकेशशी केवलैः सौम्यपापैर्वा ग्रहैर्बद्धे यदाशशी तदा
 ति तुच्छ पानीयं दुर्दिनं भवति घ्रुवं यस्य ग्रहस्य नाडिस्थश्चंद्रमात
 द्रुहेण च दृष्टो युक्तः करोत्यंबु यदि क्षीणो न जायते पीयूष नाडिग
 श्चंद्र स्तत्ररपेदाः शुभाशुभाः त्रिचतुःपंचपानीयं दिनान्येकत्रिसप्त-
 कं एवं जलारव्य नाडिस्थे चन्द्रे मिश्रग्रहान्विते दिनार्धं दिवसं पंच
 दिनानि जायते जलं अमृतादित्रये यत्र भवन्ति सर्व स्वेचराः तत्र वृष्टिः
 क्रमाज्ज्ञेया धृत्यर्क रसवासराः १ १२।६ सौम्यनाडीगता स-
 र्वे वृष्टिदास्तु दिनत्रय शेष नाडिमहापातं दुष्टवृष्टिप्रदा ग्रहाः नि-
 र्जला जलदानाडी भवेद्योगेशुभाधिके कूराधिक समायोगे जलदा
 ह्यंबुदायकाः सौम्यनाडीगता कूरा अनावृष्टिप्रसूचकाः शुभयुक्ता
 जलांशस्था अतिवृष्टिप्रदा ग्रहाः एकराशिगता चेतौ चंद्रमा धरणी
 सुतौ यदितत्रगतौ जीवः करोत्येकार्णवां महीं चलत्यंगारके वृष्टि-
 स्त्रिधा वृष्टिः शनैश्चरे अंबुपूर्णा महीं कृत्वा पश्चात्संचलते गुरुः शु-
 क्रे चास्तमये वृष्टि रुदये च बृहस्पतौ सूर्यस्य पुरतो गच्छेद्यदाशुक्रो
 बृहस्पतिः वर्षाकालेन संदेहस्तदा वृष्टिर्निरंतरा उभौ तु गच्छत-
 स्तदा पूर्णयोगः पूर्वात्रये तथा धिन्यां हस्ते लाष्टेथ वायवे चारुणे
 मैत्ररेवत्यो मीमास्तिष्ठति वर्षति व्रजति यदि कुजः पतंगपृष्ठे घट
 मिव भिन्नजलं तदा ददाति अथ भवति दिवाकराग्रगश्चेत्प्रलयघ-

नानपिशोषयत्यवश्यं चित्रास्वातिविशारवा सु यस्मिन्मासेनवर्ष-
 तितस्मिन्मास्यजलमेधाइतिगर्गोमुनिर्जगौ उदयास्तमयेमार्गे व-
 क्रयुक्तौचसंक्रमे जलनाडिगताःस्वेदामहावृष्टिप्रदायकाःधिरस-
 मुदकंगोनेत्राभंयिद्विमलादिशो विमलविकृतिःकाकांडाभंयदाच-
 भवेन्नभः पवननिगमतोभूयं तेरूपाःस्थलगामिनो रसनमसरु-
 न्मंडूकानां जलागमहेतवः



अथपल्लीपातफलं ॥ पादयोजघनेजान्वोर्गुदेगुह्येचमृत्कदाअ-
 न्यत्रशुभदाप्रोक्ता सचैलं स्नानमाचरेत् पल्याप्रयततेचैव शरटस्या-
 धिरोहिणे यत्रोक्तं हिमनुष्यस्य शुभाशुभनिदर्शकं स्त्रीणांतुतद्वै-
 व्यत्यासात्त्वोध्यं बुद्धिमतासदा तिलमाषादिदानंचस्नात्वादेयं हि-
 जन्मने अशुभध्वस्त्यैमृत्कंजयजपस्वर्ण गोदानं ॥ अथात्रविशे-
 षः ॥ पल्याःपतनशरटारोहणेफलंवक्ष्यमाणं

पल्लीपात फलम्

| | | | | | | | | | | |
|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|
| शिरः | शिरः | शिरः | शिरः | शिरः | शिरः | शिरः | शिरः | शिरः | शिरः | शिरः |
| शिरः | शिरः | शिरः | शिरः | शिरः | शिरः | शिरः | शिरः | शिरः | शिरः | शिरः |
| शिरः | शिरः | शिरः | शिरः | शिरः | शिरः | शिरः | शिरः | शिरः | शिरः | शिरः |
| शिरः | शिरः | शिरः | शिरः | शिरः | शिरः | शिरः | शिरः | शिरः | शिरः | शिरः |
| शिरः | शिरः | शिरः | शिरः | शिरः | शिरः | शिरः | शिरः | शिरः | शिरः | शिरः |
| शिरः | शिरः | शिरः | शिरः | शिरः | शिरः | शिरः | शिरः | शिरः | शिरः | शिरः |
| शिरः | शिरः | शिरः | शिरः | शिरः | शिरः | शिरः | शिरः | शिरः | शिरः | शिरः |
| शिरः | शिरः | शिरः | शिरः | शिरः | शिरः | शिरः | शिरः | शिरः | शिरः | शिरः |
| शिरः | शिरः | शिरः | शिरः | शिरः | शिरः | शिरः | शिरः | शिरः | शिरः | शिरः |
| शिरः | शिरः | शिरः | शिरः | शिरः | शिरः | शिरः | शिरः | शिरः | शिरः | शिरः |

पल्यारोहणे
शरटपतने

व्यत्ययेनपल्यारोहणंरात्रौ शरटस्य प्रपातनं नातिदुष्टफलविद्या
 धिमुग्रंविपर्जये पतनानंतरंरोहणे समफलं मृत्युयोगेजन्म
 क्षं विष्ट्यांपातेच वै धृतौ चंद्रेष्टमेचसकूरे लभेकष्टदादक्षिणांग
 मारुह्य वामेनोत्तरीताहानिदा व्यत्यये शुभाचरणान् मस्तकं या-
 तिराज्यं दत्ते श्वेताशीघ्रं भोजनेभाजनेऽधिकलाभ पादांगुलीषु
 हानिदासिता शुभामर्कटिकागृहागोधादक्षांगे आरोहतिराज्य
 स्तरवं वामेस्त्रीणां राज्यसुखदा युग्मंचेत्यततिशुभं ॥ सरटफलं
 ॥ नाशशीर्षे मुखेहानि पृष्ठेलाभोभयंहृदि दक्षेरोगः शुभंवामेश
 रटस्यप्रपातनात् हंसाघाततमाः कोपविष्टाः शुभदाः सरवाघा
 विघ्नदाः पल्लीशरटाद्या यदिविघ्नांमूर्त्रं वा कुर्वन्ति तदापि विघ्नं बोध्यं
 वामदक्षविभागेन यत्फलं कथितं नृणां विपर्ययेण तत्स्त्रीणां ज्ञेय
 मूर्ध्वहयोस्समम् ॥ पल्लीशब्दफलम् ॥ धितं ग्रहणं कार्यसिद्धि
 रत्तुलाशाके हुताशेभयं ग्राम्ये मित्रवधक्षयश्च निर्वृत्तौ लाभः स

मुद्रालये वायव्यां वरमन्न वरत्रमतुलं सौम्यैर्यलाभो ध्रुवं ईशान्यां

[illegible]

गृहगोधिकार्थं जननित्रासंलघः शब्दिता शांतिस्तु प्रतिरुपदेवं-
॥ अथस्वप्नविचारः ॥ अद्ययामेनिशिस्वप्नो वर्षेणफलदोभवेत् द्वि-
तीयेमासषष्ठेन तृतीयेत्रिभिर्मासकैः प्रातः सद्यःफलस्वप्नस्ततः
स्वथान्नचेन्नरः रोगचिंतोद्भवाप्यर्थाश्चिरपाकाहिर्वीक्ष्यतां ॥ अथ
शुभस्वप्नाः ॥ सद्वाजा ब्राह्मणोदेवाः सिद्धगंधर्वकिन्नराः गुरुभ्ये-
तांव्रानारी तेषामाशीश्चदर्शनं प्राप्तादराजशैलानां श्वेतोक्षास

नवाजिनांदर्शनंरोहणं लाभः सिंहस्यारोहणंतथा छत्रध्वजसुव-
 र्णात्ररत्नरोप्यदधीनिच यवगोधूमसिद्धार्थाःफलदीपश्च कन्य-
 का श्रीखंडाक्षतदूर्वेक्षुदर्पणंपुष्पितद्रुमाः लाभेवादरुनेचैषां ला-
 भसौख्यंभवेद्यशः भोजनंरोदनंवीणा वादनंरोदनंतथा अगम्या
 गमनंविष्ठा लेपनं शस्तमीरितं आरूढो योहिजागर्ति पुष्पितंफ-
 लितंद्रुमं दष्टःश्वेताहिनादक्षेकरेस्यात्समहाधनः रुधिरस्नानपा-
 नंच सर्पदंशो मृतिर्निजा शय्याहर्म्यसिनानांचज्वलनस्यशिरच्छिदः
 रक्तश्रायोजलस्नानं मरणंमांसभक्षणं सुरायःपयसःपानं प्रश-
 स्तं पायसाशनं कदलीकल्पवृक्षश्चतीर्थंगंगादिकंसरित् तोरणं
 भूषणंराज्यं तथामंदिरसन्निभं वेदवाद्यादिनिर्घोषो गर्तोनिःसरणं
 तथा दंबोवृश्चिककीटानां तडागोद्यानदर्शनं१० पीतरक्तफलंपुष्पंस्व-
 भेप्राप्नोतियस्यच लभतेसोचिरात्स्वर्णपद्मरागमणितथा जयोद्वू-
 तेरणेवादे पुरुद्वूतध्वजेक्षणं आत्मनो बंधनंशीर्षं बाहूभूषणमु-
 त्तमं अभिषेककरोविप्रो देवोवाछत्रधारणं कुरुतेमहिषीव्याघ्री
 गौसिंहस्तन्यपानकंकदलीतृणवृक्षाश्चपुष्पाणामुद्रवस्तथा
 भयोभूमिधरस्यापिक्रमणोत्क्षेपणे शुभे मणिःसौचर्णैरौष्पाणांपा-
 त्रेवा भोजने तले योऽनातिपायसंस्वप्ने सराज्यमधिगच्छति गौ-
 र्लिङ्गीब्राह्मणोराजा पितामित्रेचदेवता यद्वदेत्सदसत्स्वमेतत्तथैव
 प्रजायते पूजितंशिवलिङ्गं देवतावायधायिधिः स्वमेदृष्टाप्रय-
 छंतिनराणां विपुलंधनं त्यक्त्वातक्राणिकार्पासंश्वेतवर्णंशुभंमतं
 सर्वं कृष्णमसद्वित्वा गोदेवांश्च गजद्विजान् १८ अथाऽशुभस्वप्नाः

तैलाभ्यक्तोऽथ दिग्वासाऽप्रास्तदोमहिषं रवरं उद्धंरुष्यं वृषं वा श्वया-
म्यांगच्छन्नजीवति पाकस्थाने वने स्तु पुण्यादथे सूतिका गृहे विकलां
गोविशेत्स्वप्ने सोऽसुभिर्विप्रयुज्यते जातिकुंकुमसिंहादि धातवो य-
स्य मंदिरे पतंतितरुतस्तस्य गेहदाहस्तु चौरभीः नाभेरन्यत्र गात्रेषु
तृण पुष्पद्रुमोद्गमः खरोऽपि कपि सर्वाद्यैर्यानि स्नेहस्य भक्षणं कलुषे
षां बुनामप्याकर्दमैर्गोमयेन च स्नेहेन वपुषो लेपः कर्दमे विनिमज्ज-
नं यातो दृग्दंतकस्तस्य जिह्वायाश्च त्रये तथा स्तेशोकप्रदास्वमा दृ-
ष्टा हानिकरा अपि स्वप्ने संदोलनं गीतं क्रीडितं स्फोटितं तथा हसितं
भर्त्सितं श्रोतो वहानिराह्यधोगतं सूर्ये दुध्वजताराणां पातस्वस्य सिता
वपि रज्ज्वा छेदः शिरोभागे कांस्यवर्णस्य धारणं प्रवेदो जननी गर्भे
दुष्कर्मानवलोकनं करवीरमशोकं च लतापाशेन बंधनं कृष्णांबर
धरायोषा लिंगनं मृत्युकारकं आरुह्य पुष्पितान् वृक्षान् सोऽपि दुःखप्र-
दायकः भूषयत्यरुणैः पुष्पैः सोऽपि माणैर्विद्युज्यते धृतरक्तांबरान्निष्ठो
हत्यां प्राप्नोति मानवः क्रोष्टु कुकुटमार्जारगोधावक्रभुजंगमाः मक्षि-
का वृश्चिका दंशा नृध्वा स्वप्ने न शोभनाः रत्न दिव्या युधोनाम त्राय्या भू-
षांश्च योषितां वस्त्रादि प्रियवस्तूनामपहारो र्थनाशकः विवाहोऽस्त-
वयोः शोकः श्वश्रोतान् स्वके शयोः कराद्यवयवानां तु छेदने स्वायुना-
शनं वपनं श्मश्रुके शानां त्रेत्ररुष्यतनं तथा कूपगर्तदरीध्वांतपिवरे-
पुनश्शोभनं कपोतश्चैन गृध्राद्या र्क्षकौशिक वायसाः शृगालशश-
कश्चानो दृष्टा स्वप्ने न शोभनाः शकुलिः कृशराश्चाणा गुडपूपादिभक्ष-
णं गोमयं चोष्मपानीयं स्वप्ने पीतं न शोभनं रक्ते पूरीषमृत्रे वा स्त्रव-

मृत्युमवाप्नुयात् रक्तकृष्णानिवासांसि कृष्णानिचविभर्तियः पितृ
कार्ये प्रकुर्वाणो म्रियते स न संशयः भूतप्रेतपिशाचाद्यैः श्वयचैः सह
संगतः असूर्यदियसंरात्रिं विचंद्रांगननारकां सीसपित्तलकस्तार
कांस्यताम्राज्यसन्नपाः शुष्कवृक्षौषधंशिल्पीदृष्टाश्चैतेन शोभनाः
प्रासादछत्रभूषाणां शिखराणां ध्वजस्य च पतनं शक्रचापस्य नृप
राष्ट्रविनाशनं ताराकोलाहलं दृष्ट्वा निंदाक्रोशादिसंश्रवान् विद्याद्रा-
जभयंचैव शृंगीकोशाद्युपद्रवान् ॥ अथ दृष्टस्वप्ने शांतिः ॥ दुष्टे
त्वालोकिते स्वप्ने निवेद्य ब्राह्मणाय च आशीर्भिस्तोषितो विप्रैः पुनः
स्वप्नान्तरेश्वरः नब्रूयाच्च पुनः स्वप्नं स स्नायात्सुष्यवारिभिः कार्यो मृ-
त्युं जयो होमः शांतिस्वस्त्ययनादिकं सेवाश्वत्थगवां प्रातर्दानं स्वर्णा-
दिशक्तिः श्रावणं भारतादीनां स्वप्नदोषनिवृत्तये बृहस्पतिप्रणीत-
च स्वप्नाध्यायं विचारयेत् ॥ अथांगस्फुरणं ॥ अथातः संप्रवक्ष्या-
मि यथोक्तं रुद्रयामले येन विज्ञानमात्रेण ज्ञायते च शुभाशुभं शि-
रसास्फुरणे राज्यं स्थानलाभं ललाटके भूयोगेतुमहासौख्यं स्था-
नलाभं च मस्तके नेत्रे तु च प्रियप्राप्तिं कर्णे कर्णशुभं
भवेत् ॥ नासिकायां सुगंधासिः कपोले तु वरांगना ॥ ओ-
ष्ठे वा कलहो ज्ञेयो मुखे मिष्टान्नभोजनं त्र्यधो चुंवनकं क्रीडाचिबुके
क्षोभमादिशेत् कंठभूषातुकंठे च ग्रीवायामृत्कसादिशेत् पृष्ठे परो-
क्षपार्त्ताचि स्कंधे बंधुसमागमं हृदये वांछितासिद्धिर्जठरे क्षीरभो-
जनं वाहनासिः कण्ठे देशे गुह्ये परवधेरतिः संभोगं मेढ्रदेशे तु संता-
नासिश्च जायते हर्षप्राप्तिर्वृषणयोर्वृतांतं च शुभं भवेत् ऊरुयुग्मे तु

वस्त्राणिजंघयोर्वधबंधनं गमनं वामपादे तु दक्षिणे स्थानलाभकृत्
 दक्षिणांगं शुभं पुंसां वामांगं योषितां तथा नेत्रस्याधःस्फुरणमशकृ
 त्संगरे भंगहेतुर्नेत्रस्योर्ध्वं हरतिसकलं मानसं दुःखजालं नेत्रस्यांते
 कथयति सुखं नासिकाते च मृत्युश्चैतत्सर्वं फलमपि फलं वैपरीत्यच
 यामे ॥ अथोत्साताते च विविधा दिव्यभौमांतरिक्षभेदात् प्रकृते गन्ध-
 न्न, उत्सातः दिव्यं ग्रहक्षयैकृतं उल्कानिर्यातपवनपरिवेषाः गंधर्वपु-
 र पुरंदरचापादियदंतरिक्षं स्यात् भौमंचरस्थिरभवंतत्र प्रतिमावैकृ-
 तं अभिषेकृतं वृक्षवैकृतं शस्यवैकृतं वृष्टिवैकृतं नदीवैकृतं प्रस-
 ववैकृतं चतुष्पदवैकृतं वायव्यवैकृतं मृगपक्ष्यादिवैकृतं शक्रध्व-
 जेन्द्रकीलादिवैकृतं केतुदर्शनं प्रतिसूर्यपरिवेषरजःधूमेरात्रौ धनु-
 र्दिवा उल्काताराचैव दिने तथारात्रौ च धूमकेतुश्च भूकं पश्चतथा वहि-
 एतानि दुष्टचिह्नानि देशक्षयकारीणि च शांतयो भेदाद्भूतपरत्वे नानु-
 त्पाताश्च बोध्याः ॥ युगानामुत्पत्तिः ॥ कलिर्भादपदे मासे माघे वैशा-
 कपुरस्मृतः त्रेताप्रवृत्तिर्वैशाखे कृतादिः कार्तिके तथा ॥ गजछाया ॥
 कृष्णपक्षेत्रयोदश्यां मधाविदौकरेरथौ यदा तदा गजछाया आद्वैपु-
 ण्यैरवाप्यते । ॥ अर्धोदयः ॥ अमार्कपातश्च वणाः युक्ताश्चैषोषमा-
 घयोः अर्धोदयः सविज्ञेयो कोटिसूर्यग्रहाधिकः अथ नक्षत्रपाद-
 परत्वे कष्टावलिः अश्विन्यांच भवेद्रोगो ह्यामवातस्तथा ज्वरः वातश्ले-
 ष्म तथा शोषं पीडा भवति दारुणा नंदारुद्रादिशोषिंश ९।११।१०।२०
 दिनसंख्यामिमांशृणु अश्विनौ देवताचास्य मृत्युं जयजपादिकं जपः
 पंचसहस्राणि अहोरात्रं च होमयेत् ब्राह्मणान्भोजयेच्चैव दानं दत्वा सु-

रवीभवेत् देवते अश्विनौ तत्र द्विमुजौ शुक्लवर्णकौ सुधाकलशसंयुतौ
कमंडलुधरौ शुभौ भरण्यां च यदारोगश्छर्दि रोगश्च जायते ज्वरं तं दाम
हारोगं नरो रोगैः प्रपीड्यते शून्याश्चित्त्वारिंशच्च रुद्राणि ०।८०।४०
११ दिनसंख्यया भरणी यमदैवत्यं यमायत्येति मंत्रतः नमंत्रं नौषधं
तस्य न च दानं जपादिकं जपं कुर्वीत गायत्र्या अयुतं संख्यया तथा
छायादानं प्रकुर्वीत शर्कराज्यं च पूरकं अजाच महिषी दानं गोदानं
तुरगं तथा ब्राह्मणाभोजयेत्तत्र क्षेत्रपालं च पूजयेत् यमस्तु देवता
तत्र कृष्णवर्णो द्विबाहुकः लुलायवाहनः श्रीमान्पाशदंडधरः प्र-
भुः २ कृत्तिकायां भवेद्रोगो रक्तनेत्रं प्रदृश्यते चक्षुःपीडा भवेत्तस्य ज्व-
रशूलं तथैव च अतिदाहं महाकष्टं ज्वरं तीव्रं च दारुणं ग्रहशांतिं प्र-
कुर्वीत दानं ब्राह्मणभोजनं दिनसंख्या भवेत्तस्य नवैकादश षोडश
९।११।१६।२८ अष्टाविंशति कंचैव दानं दत्त्वा सुरसी भवेत् कृत्ति-
का अग्निदैवत्यं तिलाज्यं जुहुयात्तथा अग्निमूर्धेति मंत्रेण जाप्यमे-
क सहस्रकं अग्निस्तु देवता तत्र रक्तवर्णो जवाहनः चतुर्भुजो घृताम-
त्रसुवसुक् वरदाभयः ३ रोहिण्यां मस्तकेशूलं ज्वरं पीडा च दारुणा
प्रलापं विहृतीश्चैव कुक्षिशूलं च दृश्यते दिनानि सप्तनवभिरष्टादश-
च त्रिंशकं ७।९।१०।३० प्राजापत्यं हिदैवत्यं ब्रह्मयज्ञो मिमंत्रतः स-
हस्रं तत्कृतं जाप्यं होमयेद्दधिपायसं दधितंडुलदानं च सयत्सांगां
तथैव च अष्टौ विप्रास्तथा भोज्याः कुलदेव्याश्च पूजनं रक्तवर्णश्च-
तुर्बाहुर्हंसारूढश्चतुर्मुखः पद्माक्षसूत्रवरदाभयहस्तो निरामयः
४ आर्द्रायां व्याधिरुसन्नो ग्रहपीडा च दारुणा शिरपीडा स्वदेह-

स्य नमंत्रं न च भेषजं वर्जयेत्सप्तरात्राणि श्रियते नात्र संशयः शून्य
मष्टादशचैव शून्यचैव तु शून्यकं ०।१०।१०। रुद्रोऽपि देवता तस्य नमस्ते
रुद्रमंत्रतः अयुतं च जपं कुर्यान्मध्याह्न्यानि च होमयेत् रुषिर्भूमिः प्रदा
तव्या रुष्यगवस्तूनि दापयेत् रुद्रो हि देवता तत्र वृषास्त्वदश्चतुर्भुजः
त्रिभूतः स्वदावरदाभयहस्तः प्रकीर्तितः ५ पुनर्वसौ भवेत्पीडा क-
री पीडा च जायते सप्तश्चतुर्दशश्चैव युगंचैकविंशति ७।१४।२।२१
अदितिर्देवता तत्र अदिती इति मंत्रकं शतमेकं कृतं जाप्यं घृततंडुल
होमयेत् सुवर्णकमलं दानं कौमारी पंचभोजयेत् चतुर्भुजा पीतवर्णा
साक्षसूत्रकमंडलुः परदाभयहस्ता सा साक्षसूत्रकमंडलुः पुष्पे च
व्याधिजे चैव ज्वरपीडा च दारुणा शूलपीडा चातिकालं व्याधिघोरं तथै-
व च सप्तसप्त तथा विंशदेकविंशस्तथैव च ७।७।२०।२१ बृहस्पतिर्दे-
वतास्य कथितो मुनिसत्तमैः बृहस्पतेति मंत्रेण शतानां पंचकं जपं
घृतपायसहोमैश्च होमयेत्तद्दशांशतः चतुर्भुजः पीतवर्णो देवतास्य
बृहस्पतिः दंडाक्षसूत्रपाणिस्तु साभयः सकमंडलुः आश्लेषायांग-
दोत्पन्ना वौषधं तन्न दृश्यते कुलमातृश्च योगिन्यो बालिदानं च दापये-
त् छायापात्रं च दातव्यं सुच्यते नात्र संशयः शून्यं शून्यंचैकवेदास्तद-
ग्रे शून्यमेव हि ०।१४१।० सर्पो हि देवता तत्र नमोस्तु सर्पेति मंत्रकं अ-
युतं जपं कुर्यात्तत्कासारघृतहोमयेत् दातव्यं तत्र दानं च सयत्सांगां च
नीलिकां सर्वस्तु देवता तत्र महामंडलस्त्वपघृक् सुविस्तृतशिरश्चंडो म-
धुपिंगललोचनः ९ मघायां चेद्गवे पीडा गात्रार्धे शीतलं तथा तिथिः
सप्तसप्तदश विंशतिश्चैव मानतः १५।७।१७।२० पितरो देवता चास्य

पितृभ्य इति मंत्रकं शतमेकं कृतं जाप्यं तिलतंडुलहोमयेत् तिलमाष
सवस्त्राणि दानं दत्त्वा सुखी भवेत् पितरो देवतास्तत्र कृपणवर्णाश्चतुर्भु-
जाः रुद्राक्षसूत्रभयदाः कमंडलुधरा शुभाः १० पूर्वाफाल्गुनिके पीडा
भवेदर्धशिरोच्यथा पीडयते सर्वगात्राणि तनुपीडामहाभयं संख्याशू-
न्यं तिथिश्चैव शून्यं त्रिंशद्दिनानि च ० ११५ १०१ ३० भगोहि देवता चास्य
भगप्राणेति मंत्रकं अयुतं जपकुर्यात् प्रियंगु जुहुयात्तिलाः पित्तलं चै-
व गोदानं माषान्नं च सुवर्णकं पूर्वाफाल्गुनिकायां च भागोऽदेवः प्रकी-
र्तितः रक्तवर्णो बुजा सीनो द्विभुजो मयपद्मकः ११ उत्तराफाल्गुनौ व्या-
धिर्भवेत्पीडा यदा तदा शरीरं व्यथते तस्य शिरोरोगं तथैव च सप्तश्च
तुर्दशश्चैव सप्तपष्टिः तथैव च ७ ११४ १७ १५० अर्यमा देवता चास्य दे-
वध्वे इति मंत्रकं द्विः सहस्रं कृतं जाप्यं तिलाज्यं होमयेत्ततः हिरण्यं च
कृतं दानं मन्त्रदानं तथैव च अर्यमा देवता पद्म मध्यस्थः पद्मवर्णकः
पद्माभयकरः श्रीमान् स्वर्णमूर्तिर्महाद्युतिः हस्ते पीडा च सर्वांगे उ-
दरे शूलदारुणं व्युत्थंते सर्वगात्राणि प्रस्वेदं बहु जायते पंचदश
सप्तदश तिथिश्चून्यं तथैव च १५ ११७ ११५ १० सविता देवता चास्य उ-
दित्यमिति मंत्रकं सहस्रमेकं संजाप्यं दधिसर्पिश्च होमयेत् र-
क्तवस्त्रस्य दानं च धेनुं दद्यात्तपस्विनीं सविता देवता अस्य सप्ता-
स्वरथवाहनः द्विभुजो रक्तवर्णः स्यात्पद्मासनसमाश्रयः १३ चि-
त्रायां जायते व्याधिर्विचित्रं कष्टदारुणं रुद्राग्रहाः स्वगाश्चैव
षोडशैव क्रमादमी ११ १९ १९ १५ त्वष्टा देवता चास्य त्वष्टरीये-
ति मंत्रकं जाप्यं पंचसहस्रं तु तिलतंडुलहोमयेत् विचित्रवृषभं

दद्याद्गुडंतैलं तथैष च त्वष्टापद्मास्थितश्चित्रवर्णस्यात्सचतुर्भुजः प-
 द्मासूत्राक्षवलयः पद्मामयकरप्रभुः स्वात्यामुत्पद्यते पीडाबहुरोगं च
 दृश्यते ग्रहहोमं च कर्तव्यं तथानक्षत्रमंत्रकं षष्टिः सप्तदशत्रिंशद्वरं
 च तथानृणां ७०।१७।३०।० जपंपंचसहस्रंतु तिलाज्यं च होमयेत्
 वायुश्च देवता अस्य वायोरभितिमंत्रकं आरक्तागौश्च दातव्या स्तव-
 णं च यथाविधिः वायुश्च देवता तत्र मृगास्त्वदश्च मेचकः गदाचर्मधरः
 श्रीमान् द्विभुजः परिकीर्तितः १५ विशाखायां कुक्षिशूलं सर्वगात्रस्य
 पीडनं तिथिखं वेदचन्हीदुर्नामतश्च दिनावधिः इंद्राग्निदेवता ज्ञेया इं-
 द्राग्नी इति मंत्रकं द्विसहस्रं कृतं जाप्यं दध्योदनहोमनं रक्तपीतं सु-
 वस्त्रं तु वृषभं कृष्णदानकं इंद्राग्निदेवते तत्र गजा जावाहनौ मतौ
 चतुर्बाहुरक्तवर्णौ निजशस्त्रौ धरौ तथा १६ अनुराधा भवो रोगो ज्य-
 रंती ग्रं महाभयं षष्टिर्द्वादशषट्त्रिंशत्तथा त्रिंशत्प्रकीर्तिता ७०।१२
 ३६।३० मित्रोऽपि देवता चास्य नमो मित्रेति मंत्रकं जाप्यं सहस्रमे-
 कं तु यवाज्यं होमयेत्ततः अन्नं हिरण्ययुक्तं च छायादानं तथैव च-
 चापां कुशाभयैर्युक्ता तथा समविराजिता पद्मासनो रक्तवर्णो मि-
 त्रस्तस्या तु देवता पद्माभयकः श्रीमान् द्विभुजः परिकीर्तितः १७ ज्ये-
 ष्ठायां च भवेद्भोगः पित्तं च बहु पीडनं क्रंदते व्याधितः सोऽपि आकुलं
 व्याकुलं तथा नवपंचदिना न्येव ग्रहाश्चांगास्तथा ध्वजः ५९।१।४६
 इंद्रोऽपि देवता चास्य त्रातामंत्रेति मंत्रकं तैलं वस्त्रं च दातव्यं तत्क्षणा-
 त्क्लेशनाशनं शक्रऐरावतास्त्वदोदिव्यसिंहासने विभुः श्वेतवर्णो विज-
 धरो भयपाणिर्महाभुजः १८ मूलायां च भवेद्भोगो ज्वरः शूलं प्रपीडयेत्

सन्निपातं महाव्याधिं जीवितस्यापि संशयः शून्यं नंदंतिश्चिश्चैव पड्दि-
नानि इति क्रमात् ०।९।१५। ५ निर्वृतिर्देवताचास्य माता पुत्रेति मं-
त्रकं जपं पंचसहस्राणिकं दमूलानि होमयेत् कृष्णगोदानकं चैव स-
तधान्यं सुवर्णकं छायादानं चान्नदानं स्वर्णदानं विशेषतः निर्वृति-
र्देवता तत्र श्वेतास्तु तथैव चकः खड्गखेटक धारी च द्विभुजः परिकी-
र्तितः १९ पूर्वाषाढे भगव्याधिना नाना व्याधिप्रपीडनं शिरोरोगं महा-
रोगं कं पित्तक्रं दितो नरः शून्यं पंचदश श्वैव चतुर्विंशति मंदश ०।१५।२४
१०। आपोऽपि देवताचास्य आपो धर्मेति मंत्रकं द्विसहस्रं कृतं जाप्यं स-
तिलं यवहोमयेत् जलकुंभसहस्राणि स्वर्णदानं च दीयते आपस्तु देव-
तास्तस्य शुक्लवर्णः शुभाकृतिः वरुणस्तु जलस्वामी स्वामी पूज्यस्तु
नामतः मकरे वाहने विष्टो भवेत्सन्नकरो भुवं २० उत्तराषाढे रोगे क-
टी पीडा च दारुणा प्रलापः कंदनं चैव उदरे शूलमेव च त्रिंशच्चैव चतु-
र्विंशत्पड् विंशत्योऽष्टशस्तथा २०।२४।२५। १५ विश्वे च देवताचास्य वि-
श्वेदमिति मंत्रकं जपमेकसहस्रं तु तिलाज्यं यवहोमयेत् ब्राह्मणा-
भोजयेत्तत्र हिरण्यं दीयते ततः विश्वे देवा देवताश्च श्वेतवर्णाश्चतुर्भु-
जाः वरदा भयहस्ताश्च साक्षसूत्रांबुजासनाः श्रवणे च यदारोगं यात-
पित्तं कफोद्भवं विच्छलं चातिसारं च सर्वगात्रं प्रपीडयेत् षष्टिश्चैव च-
चतुर्विंशत्पड् नवतथैव च ५०।२४।५। १ गोविंदो देवताचास्य वि-
ष्णोरराडिति मंत्रकं अयुतं जपकुर्वीत तिलाज्यं यव होमयेत् गोदा-
नं स्वर्णदानं च ब्राह्मणाभोजयेत्ततः विष्णुस्तु कृष्णवर्णः स्यात्सन्नगाश-
नवाहनः शंखचक्र गदापाणिः पीतवासा चतुर्भुजः २२ धनिष्ठायां

भवेत्कष्टं मूत्रकृच्छ्रेण पीडयेत् ज्वरं रक्तमतीसारं क्रंदते च मुहुर्मुहुः ति
 थियुविंशतिश्चैकविंशतिस्तु तथैव च १५।२।२०।२१ वसवो देवताचा-
 स्य वसोऽपवित्रेति मंत्रकं अयुतं जपकुर्वीत छत्रोपानह्नीयते योगिन्यः
 पूजयेत्तत्र बलिं ताभ्योपि दापयेत् वसवो देवतास्तत्र शुक्यवर्णाश्चतुर्भुजा
 वरदाभयहस्ताश्च साक्षस्तूत्रांबुजासनाः २३ शतभिषायां मवेद्रोगं प-
 वनाख्यायुते ध्रुवं शरीरं क्लेशमाप्नोति शीतमंगेषु दारुणं शून्यं च वाण
 वेदाश्च रामाद्वाविंशकं तथा ०।४५।३।२२ वरुणो देवताचास्य वरु-
 णस्तंभमंत्रकं अयुतं जपकुर्वीत दध्योदनहुने ततः सहिरण्यं घृतं द-
 द्यात्तैलं च पंचदीयते अजादानं च गोदानं दद्यादेवं सुखी नरः वरुणो दे-
 वता तत्र मकरोपरि संस्थितः यष्टिपाशधरः श्रीमान्गदापद्मधरस्तथा
 २४ पूर्वाभाद्रपदे रोगं सर्वगात्रं प्रपीडयेत् स छर्द्दि कृत रोगं च चित्तरो-
 गं मघे ध्रुवं शून्यं द्वादशश्चैकविंशश्चैकोनविंशतिः ०।१२।२१।१९ अजैक-
 पाद् देवतास्यादहिर्बुध्नेति मंत्रकं जपं पंचसहस्रं तु क्षीराज्यं शर्करावि-
 तं श्वेतवस्त्रं हिरण्यं च रुक्महीरं च दीयते अजैकचरणोरुद्रो देवता-
 स्य प्रकीर्तितः खड्गचर्मधरो वाग्मी भुजद्वयसमावृतः २५ उत्तराभाद्रप-
 दे रोगं कमलारोगसंभवं ज्वरातीसारतीघ्रं च पीडनं भयसंयुतं दिग्यु-
 ग्मं नवतिथयो दिनानि मुंचति ज्वरः ०।०।२।९।१५ अहिर्बुध्न्यो देवता-
 स्य अहिर्बुध्नेति मंत्रतः अयुतं च कृतं जाप्यं तिलाज्यं यवहोमयेत्
 रौप्यं च तिलदानं च रुक्मण्यस्त्रं हिरण्यकं अहिर्बुध्न्याभिधोरुद्रो दे-
 वतास्य प्रकीर्तितः श्वेतश्चतुष्करं पद्मबाहुभयश्च पाशभृत् २६ रेवत्यां
 रोगमुत्पन्नं वातपित्तं तथैव च अष्टादशदशानंदेन्दुसंख्याविंशदि-

मुहूर्तसिंधुः

(२४७)

नानिच १८।१०।११।२० पूषातुदेवताचास्यपूपेनव्रतमंत्रकं अद्युतं च
 कृतं जाप्यं तिलतंडुलहोमयेत् फलद्रव्याणि देयानिरक्तं च घृपमंददे-
 त् पूषातुदेवतातत्र पद्मवर्णोऽंबुजासनः द्विशुजः पद्मपाणिस्त्यात्पद्मग-
 र्भप्रियो विभुः २७ मृगेसमुत्थितो व्याधिः कफपूर्वस्तु संभवेत् नवपंचत-
 थासप्तदशोक्ताज्वरचासराः ९।५।७।१० चंद्रोहिदेवतातस्य इमं
 देयेति मंत्रकं सहस्रं जुहुयात्क्षारगुडूचीमिश्रितैस्त्रितैः छायापात्रं
 च दातव्यं मूर्णाचासस्तु वा पुनः सोमोहिदेवतातस्य श्वेतवर्णः शुभाकृ-
 तिः दशाश्वरथमारूढः श्वेताश्वोऽपि निगद्यते इति भाहीकद्यावली-
 ॥ अथ वौधायनोक्तातिथिवारयोः कद्यावली ॥ प्रतिपदिकष्टं संदेहः
 दिनानि १८ अग्निदेवता अग्निमीळेति मंत्रजपः हैमी प्रतिमा घृतधूपो
 दीपश्च यथासंभवं नैवेद्यं घृतं होमद्रव्यं द्वितीयायां दिनानि १६ ब्रह्मादे-
 यता ब्रह्मयज्ञानमिति पूजामंत्रः अगुरुधूपः घृतदीपः शर्करानैवेद्यं
 तिलयवाज्यानि होमद्रव्यं प्रतिमा हैमी तृतीयायां दिनानि ९ गौरिदेवता
 गौरीमिमायेति मंत्रः प्रतिमा हैमी कुंकुमधूपः घृतदीपः द्राक्षाक्षीराज्यं
 नैवेद्यं पायसं त्रिमध्यक्तं होमद्रव्यं चतुर्थ्यां दिनानि १६ गणपतिदेवता
 गणानां त्वेति मंत्रः प्रतिमा हैमी कुंकुमगंधः करवीरादिपुष्पं अगुरुधू-
 पः इक्षुषंडानैवेद्यं होम्यं च पंचम्यां दिनानि २१ तारादेवता नमोस्तु
 सर्पेभ्य इति मंत्रः हैमी प्रतिमा चंदनगंधः सुरभिपुष्पाणि घृतधूपः पयो
 नैवेद्यं तिलयवाज्यं होम्यं षष्ठ्यां दिना १२ स्कंदोदेवता इप्सस्वस्कंदे-
 ति मंत्रः पीतचंदनं रक्तानि पुष्पाणि जटामांसि धूपः फलानि नैवेद्यानि
 तिलयवाज्यं होम्यं हैमी प्रतिमा सप्तम्यां दिनानि दिननाथोदेवता आ-

कृष्णेनेतिमंत्रः हैमीताम्रीवाप्रतिमाकुंकुमंगंधः करवीरादिपुष्पाणिगु-
 गुलु धूपः शर्कराघृतघृतपायसनैवेद्यं अर्कसमिधः पायसनैवेद्यं अ-
 ष्टम्यांदिनानि त्रयोदशै ईश्वरोदेवता तमीशानमितिमंत्रः हैमीप्रतिमा
 कर्पूरगंधः बिल्वदलानि अर्कपुष्पाणि जटाभांसि धूपः पायसनैवेद्यं त्रि-
 मध्वक्ततिलाहौम्यं नवम्यांदि१८ दुर्गादेवता जातवेदस इतिमंत्रः र-
 क्तचंदनं कुंकुमादिकं दशम्यांदिनानि२५ यमोदेवता हैमीलौहप्रति-
 मा यमायस्वेतिमंत्रः मृगमदोगंधः तैलदीपः बिल्वदलानि कृष्णतिलाश्च
 हौम्यं एकादश्यांदिनानि७ विश्वेदेवादेवता विश्वेदेवास इतिमंत्र हैमी
 प्रतिमा श्वेतचंदन कृष्णागरुधूपः घृतदीपः तुलसीपत्राणि पूजायां
 यवमोदकं नैवेद्यं तिलयवमध्वाज्यं होमद्रव्यं द्वादश्यांदिनानि१० रुद्रो
 देवता यातेरुद्र इतिमंत्रः हैमीप्रतिमा श्रीखंडं चंदनं अगुरुधूपो घृतदी-
 पः पायसनैवेद्यं चंपकं पुष्पं तिलयवाज्यमधूनि हौम्यं त्रयोदश्यांदिना
 न्यष्टौ८ शशीदेवता रौक्मीरजतीवामूर्तिः आप्यायस्वेतिमंत्र श्वेतचंद-
 नं चंदनधूपं घृतदीपः घृतशर्करानैवेद्यं तिलयवारिधिमध्वक्ताहौम्यं
 चतुर्दश्यां दिनानि २२ शंभुदेवता नमः शंभवायेतिमंत्रः रौक्मीवारा-
 जती मूर्तिः श्वेतचंदनं अर्कपुष्पं बिल्वदलानि अगुरु धूपः पायसनैवे-
 द्यं त्रिमध्वाक्तास्तिलाहौम्यं अमायांदिनानि१८ शचीदेवता होतायक्ष
 दितिमंत्रः हैमीप्रतिमा कुंकुमादिगंधः नानासुगंधपुष्पाणि कृष्णागरुधूपः
 फेणिकानैवेद्यं शर्कराघृतपायसनैवेद्यं पूर्णिमायांदिनानि१५ चंद्रो
 देवता मदनकं पूजार्थमन्यत्रयोदश्यासमं इति तिथिकष्टायलिः ॥ आ-
 दित्यस्य रुद्रो देवता दिनानि सप्त सौम्यस्य दिनानि ९ सविता देवता गौरी

मुहूर्तसिंधुः

(२५९)

गौरीमिमायेतिमंत्रःऔमस्य१० दिनानिस्कंदोदेवता ५ ष्ठीवंत्तुघेदिना
 नि७विष्णुर्देवताविष्णोरराडितिमंत्रः गुरौ दिनानि १५ ब्रह्मादेवता शु-
 क्रेदिनानि ११ इंद्रोदेवताशनौ दिनानि २ यमो देवता अन्यतिथिस
 मं इतिवारकष्टावली ॥ अथैषांशांतिः ॥ यस्मिन्दिवनेज्वरादिपी
 डाभवति तत्तिथिवारभदेवतानांप्रतिमानिर्माय शुचिप्रदेशे गोमयोप
 लिप्तेतंडुलैश्चतुरस्त्रमंडलंनिर्माय गणपतिंपूज्य संकल्पंकुर्यात् अमुक
 नक्षत्रतिथिवारजप्याधिनिरासार्थं शांतिंकरिष्ये तन्मध्ये तत्तद्देवता
 प्रतिमांवक्ष्यमाणगंधादिना समाभ्यर्च्य कलशंवस्त्रद्वयवेष्टितं तीर्थपूरि-
 तं न्यस्य सर्वोपधीः पंचरत्नपंचगव्यसप्तमृत्तिकापंचपल्लवानिचततो
 हौमं यथाविधि कृत्वा यजमानाभिषेकंच कृत्वा तान्नाह्णाय देयाः सा-
 धारणाविधिः ॥ उक्तंचवौधायनेन ॥ यस्मिन्नृक्षे भवेत्पीडा तन्नक्षत्र-
 स्य देवतां सुवर्णनिर्मितां कृत्वा पूजयेत्प्रयतः शुचिः गोमयेनातुसंलि-
 प्य मंडलंच सुलक्षणं चतुरस्त्रंच संकीर्णं तंडुलैश्च कृत्वा कृतैः कृत्वा तु
 स्थंडिलं तत्रयत्नतः कृष्णयामृदातत्पार्श्वे च सुधीः कुर्यात्तंडुलानां
 चयंमहत् तत्रप्रमाणं स्वारीवा द्रोणावाद्वादशस्मृताः अभावेपंच-
 वा द्रोणा द्रोणं वा तदभावतः ईशानकोणदेशे तु कलशं स्थापयेत्सु-
 धीः निधाय द्रविणं तत्र कलशेशक्त्यपेक्षया पीरंतु पूर्वतः स्थाप्यं न्य
 वस्त्रेण संयुतं स्वस्तिकं तंडुलानांच शुभानांच समालिखेत् तन्मध्ये दे-
 वतास्तिष्ठो देवता त्रितयस्यैव यस्मिन्नृक्षे भवेद्द्रोणः तस्य पूर्वापरे सुधीः
 उडूनि पूजयेद्यत्ना दधिप्रत्यधि देवते देवतायस्य क्रक्षस्व मंत्रस्त-
 ङ्गिं एष च द्रव्यंच तस्य यत्प्रोक्तं प्रभावं प्रकृतिस्तथा तत्सर्वं पिदुषा

श्वे यं होमं तत्र प्रकल्पयेत् पंचोपचारसंयुक्तां पूजां तत्र प्रकल्पयेत् स्व
 गृहोक्तविधानेन कुर्यादग्निमुखं सुधीः कलशं जलपूर्णं च वस्त्रद्युग्मेन वे-
 ष्टयेत् निधाय चौपधीस्तत्र पंचपल्लवसंयुताः सप्तस्थानमृदः कुंभे आल-
 वालं प्रपूरयेत् इमं मे वरुण इत्येवं जलमंत्रेण वा पुनः सर्वे समुद्राः स-
 रित इति मंत्रेण मंत्रयेत् थच्चिद्धिते यशोयथेत्यादि सूक्तं जपेत् पुनः
 आवाहयेदघटं दवं वरुणं पयसांपतिं एवं नक्षत्रशांत्यर्थं विदं ध्यात्सू-
 र्वपीठिकां सामान्योयं विधिः प्रोक्तो नक्षत्राणां प्रपूजने सर्वोपधीना-
 मग्राप्तौ भवेदेकाशतावरी सर्वेषामपि गंधानामभावे चंदनं मत्तं श-
 तपत्रं सुमनसां धूपाभावे च गुग्गुलुः नैवेद्यानामभावे तु पायसं सघृतं
 स्मृतं मंत्राणामप्यभावे तु गायत्री मंत्र उत्तमः होमद्रव्यस्य दुःप्राप्तौ
 तिलाप्रोक्ता मनोषिभिः अष्टोत्तरसहस्रं च तथा शतमुदाहृतं ॥ मदन
 स्त्वेऽभिस्तु ॥ अखिलभेषु गायत्र्या यमोदशो होमोष्टोत्तरशतसंख्याकः
 बलिश्च तत्र नक्षत्रदेवतायै सोपि होमावशिष्टद्रव्यैश्चैव क्वचिदन्येन
 अथ जन्मसंबन्धिषु नक्षत्रराशिलग्न्येषु यमघटे नैधने प्रत्यरौ अष्टमचंद्रे
 रोगोत्पत्तौ मृत्युः रविमघाद्वादशी गुरुशतभिषक् षष्ठी शुक्राश्विन्यष्ट-
 मीशनौ पूर्वाषाढा नवमीनां योगे व्याधौ मृत्युः भरण्या नुराधेरयौ आर्द्रा
 तरापाटे सोमे मघाशतभिषावाभौ मे अश्विनी विशाखा च धेज्येष्ठा मृ-
 गेश्वरौ श्रवणा श्लेषा भृगौ पूर्वाभाद्रपदा हस्ते वाशनौ अत्रापि रोगे
 महाकष्टं अत्र शांतिः पुष्कला विधेया अथ जननलयफलानि ॥ श्या-
 मवर्णो भवेन्मे पे सिंदूरारुणनेत्रयोः वालश्चिरो दीर्घकांतिः प्रकृत्या श्ले-
 प्मको नरा पूर्वाशिरो भवेन्मातुर्जाया पंचचतुस्त्रयः चरो

पूर्वमधुरभोजनं ॥ अथ वृषस्य वृषलम्भे भवेद्वालो गौरवर्णं सुकांतिकः
 रक्तपित्तविकारेण वनितातिम्बः पंचवा पश्चिमे च मुखे मातुर्भोजनंगा-
 कजंकृतं शुक्लांबरधरो वासो जननीरौप्यभूषण मिथुनस्य ननं ब्रह्मरोगी
 नरो युग्मे पित्तवर्णो हि जायते वनितापंचत्रयं चैव प्रसूत्याच्चोत्तरे शि-
 रः अल्पदुग्धवती माता पित्तपीडादिकारकः लक्षणं दक्षिणस्यागे
 भोजनं लवणं पुरा जीर्णवस्त्रं भवेन्मातुर्जानीहिलक्षणं पुरा ॥ अथ क-
 र्कदस्य भोजनं वातलंकर्कं चतुस्थाने च मध्यमपूर्वाभिमुखा च जन-
 नी जायातत्र चतुस्त्रयः वातश्लेष्मविकारेण माता पितृरुगार्तिदा पू-
 र्वाल्यभोजनं कर्कं वासांसि फलितानि च गौरवर्णो भवेद्वालो दीर्घप्राणः
 सुकोमलः सौवर्णभूषणं हस्ते कर्कलघ्नप्रभावतः ॥ अथ सिंहस्य ॥
 बहुकेशो भवेत्सिंहे दीर्घप्राणः सुलोचनः मातुस्तनोरक्तवस्त्रं भृपाक-
 तहस्तयाः दक्षिणाभिमुखं मातुस्त्रियः पंचायचारसाः तांबूलभक्ष-
 णं मातुः चिन्हं पृष्ठस्य वालके अथ कन्याया कन्यालम्भे नरो जातोगौ-
 रवर्णो तिसुंदरः वनिता सुस्थिता पंचजंघयोश्चिन्हमेव हि जनन्याश्चो-
 त्तरे शीर्षं कंठे चिन्हं तु वालके गृहस्थितो न हि पिता मवालाभरणं तनो
 जननी रक्तवस्त्राच्च कन्यायां जायते पुमान् ॥ अथ तुलायाः ७ गौरव-
 र्णः तुलालम्भे नेत्ररोगी प्रजायते रक्तविस्फोटको देहे प्राच्यां शीर्षं प्र-
 जायते च तत्रो वनितास्तत्र कुमारी च समीपतः माता तत्र तनो पीडा
 संजातस्तत्र लक्षणः अल्पावरणं हस्ते जीर्णवस्त्रं समन्वितः जननी
 शीतलं वारि पीता जानीहिलक्षणं ॥ अथ वृश्चिकस्य वृश्चिके जायते
 वालो दीर्घकेशास्तुलो मगः स्वमंगे भूषणं मातुस्त्रियस्ति सृचतमृया

ज्ञेयं होमं तत्र प्रकल्पयेत् पंचोपचारसंयुक्तं पूजां तत्र प्रकल्पयेत् स्व
 गृहोक्तविधानेन कुर्यादग्निमुखं सुधीः कलशं जलपूर्णं च वस्त्रयुग्मेन व-
 शयेत् निधाय चोपधीस्तत्र पंचपल्लवमंयुताः सप्तस्थानमृदः कुंभे आल-
 वालं प्रपूरयेत् इमं मेवरुण इत्येवं जलमंत्रेण वा पुनः सर्वसमुद्राः स-
 रित इति मंत्रेण मंत्रयेत् पृथि्वि द्वितेय शोयथेत्यादि सूक्तं जपेत् पुनः
 आवाहयेदघटं देवं वरुणं पयसांपतिं एवं नक्षत्रशांत्यर्थं विदध्यासू-
 र्वपीठिकां सामान्योयं विधिः प्रोक्तो नक्षत्राणां प्रपूजने सर्वोपधीना-
 मग्राप्तौ भवेदेकाशतावरी सर्वेषामपि गंधानामभावे चंदनं मतं श-
 तपत्रं सुमनसां धूपाभावे च गुग्गुलुः नैवेद्यानामभावे तु पांयसं सघृतं
 स्मृतं मंत्राणामप्यभावे तु गायत्री मंत्र उत्तमः होमद्रव्यस्य दुःप्राप्तौ
 तिलाप्रोक्ता मनीषिभिः अष्टोत्तरसहस्रं च तथा शतमुदाहृतं ॥ मदन
 स्तेऽभिस्तु ॥ अखिलभेषु गायत्र्या यमोदशे होमोष्टोत्तरशतसंख्याकः
 बलिश्च तत्र नक्षत्रदेवतायै सोपि होमावशिष्टद्रव्ये शैब्यै च चिदन्येन
 अथ जन्मसंबंधिषु नक्षत्रराशिलग्न्येषु यमघटं नैधने प्रत्यरौ अष्टमचंद्रे
 रौ गोतसतौ मृत्युः रविमघाद्वादशी गुरुशतभिषक् षष्ठी शुक्राश्विन्यष्ट
 मीशनौ पूर्वाषाढा नवमी नां योगे व्याधौ मृत्युः भरण्या नुराधे रवौ आर्द्रा
 तरापाठे सोमे मघाशतभिषाया भौमे अश्विनी विशाखा बुधे ज्येष्ठा मृ-
 गेश्वरौ अयणाश्लेषा भृगौ पूर्वाभाद्रपदा हस्ते वाशनौ अत्रापि रोगे
 महाकष्टं अत्र शांतिः पुष्कला विधेया अथ जननलयफलानि ॥ श्या-
 मवर्णो भवेन्मे पे सिंदूरारुणनेत्रयोः बालश्चिरो दीर्घकांतिः प्रकृत्या श्ले-
 ष्मको नरः पूर्वशिरो भवेन्मातुर्जाया पंचचतुस्त्रयः रक्तांबरधरो वासो

वाः स्वामिसद्भिर्द्युतेक्ष्यास्तेषांतेषांचद्विरीशैः सुवीर्यैः पापैर्हानिर्व्य-
त्ययोर्यष्टमांत्ये ८।१२।६ प्रायोमित्रस्वोच्चपुष्टे कुलेशः शुभैर्लभात्
स्यायुः १ धन २ मनुजसौख्यं ३ गृहसुखं ४ सुविद्या ५ सत्पुत्रौपरिपु-
भयमथ स्त्रीसुखमंदौ चिरायुः ८ पुण्यार्थ ९ निजकुलपता १० लाभ
११ हृतयो १२ विधौलघ्नेछिद्रे १।८ जडिसहजतेन्यत्र शुभवत् पापैर्लभा
द्रोगान्तानिः स्वता २ स्याद्विक्रान्तलं ३ सौख्य ४ पुत्रा ५ रिनादा ६ स्व-
र्त्ता ७ रोगा ८ पापचितं ९ चशौर्यं १० लाभो ११ हानिः १२ स्वोच्चमित्रे-
त्यदौख्यं व्यर्कोज्यतोर्थे सुनफानफांते १२ द्वयो २।१२ ग्रहादौरुधिरो-
र्थदोन्यः केमुद्रमोर्त्यै ग्रहकेंदइद्रौतौवोशिवेशीत्यभयेष्टदोर्कात्-
शुक्रः खलांतरगतः सखलः सिताहापापाः सुखास्तमृतिगा ४।७।८
रमणीहराः स्युः लग्नव्ययांबुनिधनास्त १।४।१३।८।७ कुजोमिथोघ्नः
स्त्रीणांमदाष्टमखलो ७।८ विधवत्कारिता तोर्कोनयमं ९ ततोथ
जननीचंद्रस्ततोमित्रभ भ्रातासूकचतृतीय ३ मन्त्रज्ञाशिजः स्यान्मा-
तुलोतोर्लिभं ६ जीवोतांमतिरात्मजाभृगुरतरस्त्री ७ शनिश्चाष्ट-
म ८ मायुः सत्पतिदृग्युतैः सुखमक्तः पायारिभिस्तद्धतिः ॥ अथकाक
विष्टाविचारः फलितपुष्पितपल्लवितेतरावपिसदुग्धमखद्रुमसंस्थितः
सुसितविष्टिकरोयदिवायसो धनसुखायचक्षांतदिगुन्मुखः आधा-
रहीनोविरसद्रुमस्योज्वलद्दिगास्योप्यथदक्षिणास्यः कृष्णांचविष्टां
प्रकरोतिफाकोव्ययायशोकायचनैधनाय शीर्षेमृतिर्चात्रायुगेरुजा-
र्त्तिर्भुजेप्रियार्ति १ ह्युदरेचशोकः मुखेसुतार्तिः किलचाह नार्तिर्जघो
रुद्रेषोपदयोः प्रपासः कट्यांस्त्रियार्तिः खलुपृष्ठदेशे कलिर्नितंबेच

जननीपूर्वशिरस्तस्यचिह्नं पृष्ठे तु वामतः मातृपितृतनौ पीडा कंठमध्ये तु
 बालकः दीपस्तैलेन संपूर्णो दग्धं जीर्णं तथावरं अथ धनुषः ९ धने प्रवा-
 लहस्तोचसौ गध्यजननी तदा उत्तरे च शिरस्तस्य योषा तत्र शरोन्मिता ह-
 दये चिह्नितं नैव नूतनं गृहमेव च रक्तवस्त्रा न्विता माता स्वर्णभूषणसंयु-
 ता पक्वान्नभोजनं पूर्वं धनलभेकृतं तथा ९ अथ मकरस्य नक्रलभेस्या-
 मवर्णः स्थूलघ्राणं च मस्तकं दक्षिणस्यां शिरस्तस्य मातुः कन्यागमस्त-
 था अल्पकेशो भवेद्दालो गृहं जीर्णं तदा भवेत् पुरातनेन वस्त्रेण कपा-
 यं भोजनं तथा शीतलं चारि संपीतं दीपे तैलं तिलोद्भवं तत्रैवैतत्समु-
 द्दिष्टं मतिमद्भिस्तु हौरिकैः १० अथ भुभस्य ११ वातलं भोजनं कुंभे
 तनुह्रस्वो भवेन्नरः तिष्ठः पडथवा योषा मध्यलोमासकेशकः चक्षू-
 रोगी भवेद्दालो गेहे न जनकस्तथा शाकान्नभक्षणं मातुर्धटलभे च ल-
 क्षणं अथ मीनस्य १२ रक्तवस्त्रो भवेन्मीनो माता तस्थन संशयः वातश्ले-
 षप्रकोपेन पीडिता चोत्तरे शिरः स्वच्छवस्त्रेण यानारी सुखपासहवा-
 लका त्रिपंचयनिता तत्र ऊषलभे च लक्षणं १२ अथात्र सामान्यफल
 ज्ञानाय जन्मफलं सौम्याः सर्वत्रास्ता रुय रिभयग ३।६।११ स्वला-
 मूर्तिषष्ठाष्टमांसे १।६।८।१२ क्षीणश्चंद्रसुरं ध्रुव्ययतनुग ८।१२।१
 स्वलारिष्टदा जन्मभेदोः तुर्याभास्तेषु ४।१०।७ पापाः स्वपितुरस्तरव
 दा द्यव्य गांतेषु २।४।७।१२ मातुर्भातुस्त्रि स्याः सुतस्था १५ सु-
 तमतिहतिदाः सप्तमे स्त्रीहराः स्युः, यस्मिन्भावे मृत्युषष्ठांति मे शा ८
 ६।१२ यत्पास्तेषु स्यात्तदातिः प्रयत्नात् केन्द्रे कोणे रंघ्रिष्वे च १।४।७।
 १०।५।९।८।१२ पापाः पुत्रे ५ जीवस्तद्गृहं ९।१२ चात्मजास्यै ये ये भा-

सुहूर्तसिंधु

(२५३)

वाः स्वामिसद्भिर्द्युते क्षयास्तेषां तेषां वृद्धिरीशैः सुवीर्यैः पापैर्हानिर्व्य-
त्ययोर्यष्टमांत्ये ८।१२।६ प्रायोमित्रस्योच्चपुष्टै कुलेशः शुभैर्लभात्
स्वायुः१ धनं२ मनुजसौख्यं३ गृहसुखं४ सुविद्या५ सत्पुत्रोपरिपु-
भयमथ रत्नीसुखमदौ चिरायुः८ पुण्यार्थं९ निजकुलपता१० लाभ
११ हृतयो१२ विधौलभेच्छिद्रे१।८ जडिसहजतेन्यत्र शुभवत्पापैर्लभा
द्रोगतानिः स्वता२ स्याद्विक्तांतलं३ सौख्यं४ पुत्रा५ रिनावा६ स्व-
र्त्ता७ रोगा८ पापचितं९ चंशौर्यं१० लाभो११ हानिः१२ स्वोच्चमित्रे-
त्यदौख्यं व्यर्कोज्यतोर्त्ये सुनफानफांते१२ द्वयो२।१२ ग्रहादौरुधिरो-
र्थदोन्यः केमुद्रमोर्त्ये ग्रहकंदं द्रौतौ वोशिवेशीत्यभयेष्टदोर्कात्-
शुक्रः खलांतरगतः सखलः सिताद्वापापाः सुखास्तमृतिगा४।७।८
रमणीहराः स्युः लग्नव्ययां वुनिधनास्त१।४।१३।८।७ कुजोमिथोघ्नः
रत्नीणांमदाष्टमखलो७।८ विधवत्कारि तातोर्कोनयमं९ ततोथ
जननीचंद्रस्ततोमित्रभ भ्रातासृक्चतृतीय३ मन्त्रशशिजः स्यान्मा-
तुलोत्तोरिभं६ जीवोतांमतिरात्मजाभृगुरतरत्नीरत्नी७ शनिश्चाष्ट-
म८ मायुः सत्पतिदृग्युतैः सुखमतः पायारिभिस्तद्भतिः ॥ अथकाक
विष्टाविचारः फलितपुष्पितपल्लवि तेतरायपिसदुग्धमखद्रुमसंस्थितः
सुसितविष्टिकरोयदिवायसो धनसुखायचशांतदिगुन्मुखः आधा-
रहीनोविरसद्रुमस्योज्वलद्दिगास्योप्यथदक्षिणास्यः कृष्णांचविष्टां
प्रकरोमिकाकोव्ययायशोकायचनैधनाय शीर्षे मृतिर्वांशयुगेरुजा-
र्त्तिर्भुजेप्रियार्तिः हृदरेचशोकः गुह्ये सुतार्तिः फिलचाह नार्तिर्जघो
रुदेशे पदयोः प्रवासः कट्यां स्त्रियोर्तिः खलुपृष्ठदेशे कलिर्नितंबेच

लतास्यदास्यात् आधारहीनेविरसदुमेपि शुक्लाहिविष्णालघुदोषदात्री
 स्नानं सहोमंतिलहोमधेनुर्माषप्रदानं विदधीतधीमान् काकीयमंत्रैर्व-
 लिभुग्वलिंच दत्वाथ तद्विश्रुमात्प्रमुच्येत् अथ संक्रांतीनां विचारः दि-
 वा चेन्मेषसंक्रांति रनर्थकलहप्रदा रात्रौ सुभिक्षमारोग्यं संध्यायां वृ-
 ष्टिरुत्तमा रवेः संक्रमणे याते यदि चेद्भूषुते शनौ तत्र मासे भयं घोरं दु-
 र्भिक्षं वृष्टिचौरजं प्रभाकरस्य संक्रांति र्यादृशेनेदुना भवेत् तन्मासि-
 ता दृशं प्राहुः शुभाशुभफलं नृणां पूर्वसंक्रांति नक्षत्रात्परसंक्रांतिभंय-
 दि द्वित्रिसंख्यं समर्धं स्यात्तु र्यपंचमहर्धता षष्ठेलोकाभ्रमंतीह गृ-
 हीत्वा स्वर्परंकरे मासिमासि विचार्यैवंग यित्वा फलं वदेत् यदत्र सं-
 क्रमे प्रोक्तं यथा भूषणवाहनं विना शो जायते तस्य वस्त्रादीनां महर्ध-
 ता ॥ मीनसंक्रांतिः ॥ सूर्ये च वहते वायुर्भोमे पीडा चतुष्पदां दुर्भि-
 क्षं शानियारेण यदि मीनगतोरवि कदाचिद्द्वययोगेन बुधवारो यदा भ-
 वेत् रौरवं छत्रभंगं च महामारी उपद्रवाः चैत्रे तु व्याधिमामोति ग्रहो
 मंडलकारकः गुरुः शुक्रस्तथा चंद्र अतिचारी यदा भवेत् सुभिक्षं जाय-
 ते तत्र उत्सवं च गृहे गृहे ॥ वृथिकसंक्रांतिः ॥ भानोरलिप्रवेशे केन्द्रै-
 स्तस्माच्छुभग्रहाक्रांतैर्व द्विः सौम्यैर्वानिरीक्षितैर्ग्रे द्विः अ-
 ष्टमराशिगतेर्के गुरुशशिनोः सिंहसंस्थितयोः सिंहघटसंस्थयोर्या
 निष्पत्तिर्ग्रीष्मशस्यस्य अर्कासिते द्वितीये बुधे तथा युगपदे च वा स्थित-
 योः व्ययगतयोरपितद्वन्निष्पत्तिरतीव गुरुदृष्ट्या शुभमध्ये लिनिर्मुखा-
 दुरुशशिनोः सप्तमे परासपत् अल्पादिस्थे सवितरि गुरोर्द्वितीये च
 निष्पत्तिः लाभहिबुकार्थयुक्तेः सूर्यादलिगान्सितेन्दु शशिपुत्रैः सस्य-

स्यपरासंपत् कर्मणिजीवेगवांचार्ध्याकुंभेगुरुर्गविशशीसूर्योऽलिमु-
 रपे कुजार्कजौमकरे निष्पत्तिरस्ति महती पञ्चात्परचक्ररोगभयं मध्येषा-
 पग्रहयोः सूर्यः शस्यं विनाशयत्पलिगः पापः सप्तमं रशौ जातं जातं वि-
 नाशयति अर्थस्थाने क्रूरः सौम्ये रनिरीक्षितः प्रथमजातं शस्यं निहंति प-
 ञ्चादुप्तं निष्पादयेद्वक्तं जामित्रकेन्द्रं संस्थौ क्रूरौ सूर्यस्य वृश्चिकस्थ-
 स्य शस्यविपत्तिं कुरुतः सौम्ये र्दृष्टौ न सर्वत्र वृश्चिकसंस्थादर्कात्सप्त-
 मपक्षोपगौ यदा क्रूरौ भवत तदानीष्पतिः शस्यानामर्घपरिहानिः वि-
 धिनानेनैव वृषप्रवेशे शरत्समुत्थानां विज्ञेयः शस्यानां नाशाय शिवा-
 यवातजज्ञैः त्रिषु मेषादिषु सूर्यः सौम्ययुतो र्वाक्षितोऽपि वा विचरन् ग्रैष्मि-
 क धान्यं कुरुते समर्थं मुभयोपयोग्यं च कार्मुकमृगघटसंस्थः शारदस्य
 तद्देवरविः संप्रह काले ज्ञेयो विपर्ययः क्रूरदो योगात् ॥ अर्थविचारः ॥
 एकादश्यां कार्तिकस्य यदि मेघः समीक्ष्यते आपादे च यदा वृष्टिर्जाय-
 ते नात्र संशयः मार्गशीर्षस्य चाष्टम्यां दृश्यते विद्युतो यदा तदा वृष्टिः आ-
 वणे च मासे संजायते ध्रुवं रूप्यपक्षे दशम्यां च वृष्टिः श्रौष्य जायते त-
 दाभाद्रपदे मासि वृष्टिर्भवति भूयसी आपाद पूर्णिमायां यत्तन क्षत्रं वि-
 चारयेत् पूर्वाषाढे सुभिक्षं स्यान्मूले दुर्भिक्षमुच्चकैः उत्तराषाढके स्वात्यां
 पीडा कटकसंगतिः ज्येष्ठस्य प्रथमे पक्षे प्रतिपद्यां यदा भवेत् रविवारस्त-
 दावायु र्यातिवृक्षांतकारकः अत्यंतविग्रहो मौमे बुधे दुर्भिक्षमुच्चकैः अ-
 ना वृष्टिः शने वारे जलं चापि न दृश्यते सौम्यशुक्रसुरेज्यानां यदि वार प्र-
 जायते धनधान्यसुतोत्पत्तिरुत्सवं च गृहे गृहे पौषमासस्य संक्रांतौ
 रवे रारो यदा भवेत् धान्यस्य द्विगुणं मौल्यं भीमवारे चतुर्गुणं त्रिगुणं श-

निवारेच बुधेशुक्रसमंभवेत् सुराचार्य्येचसोमेच मौल्यम्
मार्गकार्तिकसंक्रांतौ वृष्टिर्वर्षति मध्यमं पौषेमाघेसुखं नृणां
वसुंधरा चैत्रफाल्गुनपैशाख ज्येष्ठानां संक्रमेघ्नः यदि वर्षति सर्वत्र
सुभिक्षं च प्रजायते आपादसंक्रमे वृष्टौ व्याधिश्च श्रावणे सुखं भाद्रपदे च
हवोरोगाः शुभं सर्वत्र चाश्विने ॥ अथ कुहूयोगः ॥ नक्षत्रेभ्यः दृष्टंति
विषनाड्यां भवेद्यदि कुहूयोग इति ख्यातो व्याधि मृत्युभयादिकृत् ॥ अ-
थ ग्रहभोगाः ॥ मासं शुक्रबुधादित्याः सपादद्विपादद्विदिनं शशीभौम
स्त्रिपक्षं जीवोद्वंतिष्टेत्यं चायनं शनिः राहुकेत्वोश्च विज्ञेयं अयनं च
सदा बुधैः अथ सामुद्रिकं ॥ उन्मानमानगतिसंहति सारवर्णस्नेह
स्वरप्रकृतिर्सत्त्वमनूकमादौ क्षेत्रं मृजांचकुशलोपि धिवहिलोक्य सामु-
द्रविद्वदतियातमनागतं च अश्वेदनौ मृदुतलौ कमलोदराभौ श्लेषांगु-
ली रुचिरताम्रनखौ सुपाष्णिर्उष्णौ शिराविरहितौ सुनिगूढगुल्फौ
कूर्मोन्नतौ च चरणौ मनुजेश्वरस्य शूर्पाकारविरूक्षपांडुरनखौ वक्रौ-
शिरासंततौ संशुष्कौ विरलांगुलीचचरणौ दारिद्र्यदुःखप्रदौ मार्गाचो-
त्कटकौ कषायसदृशौ वंशस्य विच्छित्तिदौ ब्रह्मघ्नौ परिपक्वमृदद्युति
तलौ पीतावगम्यारतौ ३ प्रविरलतनुरोमवृत्तजंघाद्विरदकरप्रतिमैर्ब-
रोरुभिश्च उपचितसमजानवश्च मूपाधनरहिताश्च मृगालतुल्यजंघाः
४ रोमेकेकं कूपके पार्थिवानां हृद्देहेयपंडितयोत्रियाणां आद्यैर्निस्वा-
मानरादुःखमाजः केशाद्यैर्वनिदिताः पूजिताश्च ५ निर्मासजानुर्भि-
यते प्रवासे सौभाग्यमल्पैर्विकटैर्द्विरिद्राः स्त्रीनिर्जिताश्चापि भवन्ति
निम्नैराज्यं समांसेश्च महद्भिरायुः ६ लिंगे ल्येधनवानपत्यरहितः स्थू-

लंविहानो धनैर्भेदे वामनते सुतार्थरहितो वक्रे न्यधा पुत्रवान् दारिद्र्यं वि-
नते लघो लपतन योलिंगेशिरासंतते स्थूलग्रंथियुते सुर्या मृदु करोत्यंतं
प्रमेहादिभिः ७ कोशनिमूढैर्भूपादीर्धैर्भगैश्च वित्तपरिहीनाः ऋजुवृ-
त्तशेफसोलघुः शिरालशिआश्च धनवंतः ८ जलमृत्युरंकवृषणो वि-
पमैः स्त्रीचंचलः समैक्षितिपः ह्रस्वायुश्चोद्धत्यैः प्रलंबवृषणस्य वात-
मायुः ९ रक्तैराढ्यामणिभिर्निर्द्रव्याः पांडुरैश्च मलिनैश्च सुखिनः स-
शब्दमूत्राभिः स्वानिशब्दधाराश्च १० द्वित्रिचतुर्धाराभिः प्रदक्षिणाव-
लितमूत्राभिः पृथिवीपतयोज्ञेयाधिकीर्णमूत्राश्च धनहीना एकैवमूत्र-
धारावलितानुपप्रधानसुतदात्रीस्त्रिगोन्नतसममण्यो धनयतिता-
रत्नभोक्ताः १२ मणिभिश्च मध्यनिम्नैः कन्यापितरो भवंति निःश्वा-
श्च बहुपशुभाजो मध्योन्नतैश्च नालुल्वणैर्धनिनः १३ परिशुष्कवस्ति-
शीर्षैर्धनुरहिता दुर्भगाश्च विज्ञेयाः कुसुमसमगंधशुक्राविज्ञातज्याम-
हीपालाः १४ मधुगंधे बहुविक्ता मत्स्यसंगंधे बहुन्यपत्यानितनुशुक्रः
स्त्रीजनको मांससंगंधो महामोगी १५ मदिरागंधे यज्वाज्ञारसगंधे चरेत-
सिदरिद्राः शीघ्रं मैथुनगामी दीर्घायु रतो न्यथा ल्यायुः १६ निस्थोति-
स्थूलस्फिक् समांसलस्फिक् सुखान्वितो भवति व्याघ्रांतो ध्वर्धस्फिग्मं-
दूकस्फिक् राधिपतिः १७ सिंहकटिर्मनुजेन्द्रः कपिकरभकटिर्धनैः प-
रित्यक्तसमजठराभोग्युता घटपिठरनिभोदरानिः स्वाः १८ अवि-
लपार्था धनिनो निघ्नैर्वक्रैश्च भोगसंत्यक्ताः समकुक्षा भोगाढ्यानि-
निम्नाभिर्भोगपरिहीनाः १९ उन्नतकुक्षाः क्षितिपाः कुटिलाः स्युर्मा-
नवा विषमकुक्षाः सर्पोदरादरिद्रा भवंति बह्वाशिनश्चैव २० परिमंड-

निवारेच बुधेशुक्रसमंभवेत् सुराचार्य्यचसोमेच मौल्यम्
मार्गकार्तिकसंक्रांतौ वृष्टिर्वर्षतिमध्यमं पौषेमाघेसुखं नृणां
वसुंधरा चैत्रफाल्गुनवैशाखज्येष्ठानां संक्रमेघ्नः यदिवर्षतिसर्वत्र
सुभिक्षं च प्रजायते आपादसंक्रमे वृष्टौ व्याधिश्च श्रावणे सुखं भाद्रपद-
हयोरोगाः शुभं सर्वत्र चाश्विने ॥ अथ कुहूयोगः ॥ नक्षत्रेयस्य दर्शति
विषनाड्यां भवेद्यदि कुहूयोग इति ख्यातो व्याधि मृत्युभयादिकृत् ॥ अ-
थ ग्रहभोगाः ॥ मासं शुक्रबुधादित्याः सपादद्विपादद्विदिनं शशीभौम
स्त्रिपक्षं जीवोदंतिष्टेत्यं चायनं शनिः राहुके लोश्च विज्ञेयं अयनं च
सदा बुधैः अथ सा मुद्रिकं ॥ उन्मानमानगतिसंहति सारवर्णस्नेह
स्वरप्रकृतिर्सत्त्वमनूकमादौ क्षेत्रं मृजांच कुशलो विधिवद्विलोक्य सा मु-
द्रविद्दति यातमनागतं च अश्वेदनौ मृदुतलौ कमलोदराभौ श्लेष्वांशु-
ली रुचिरताम्रनखौ सुपाष्णिर्उष्णेशिराविरहितौ सुनिगूढगुल्फौ
कूर्मोन्नतौ चरणौ मनुजेश्वरस्य शूर्पाकारविरूक्षपांडुरनखौ यक्रौ-
शिरासंततौ संशुष्कौ विरलांशुलीचरणौ दारिद्र्यदुःखप्रदौ मार्गायो-
क्तौ कपायसदृशौ वंशस्य विच्छित्तिदौ ब्रह्मघ्नौ परिपक्वमृदयुति-
तलौ पीतावगम्यारतौ ३ प्रविरलतनुरोमवृत्तजं घाहिरदकरप्रतिमैर्ब-
रोरुभिश्च उपचित समजानवश्च भूपाधनरहिताश्च मृगालतुल्यजं घा-
४ रोमैकेकं कूपके पार्थिवानां हेतुज्ञेयं पंडितश्रोत्रियाणां आद्यैर्निस्वा-
मानादुःखमाजः केशाश्चैवं निदिताः पूजिताश्च ५ निर्मासजानुर्भि-
यते प्रवासे सौभाग्यमल्पैर्विकटैर्द्विरिद्राः स्त्री निर्जिताश्चापि भवन्ति
निम्नैराज्यं समांसैश्च महद्विरायुः ६ लिंगे ल्ये धनवानपत्यरहितः स्थू-

मुहूर्तसिंधुः

(२५७)

लंबिर्हानो धनैर्भेदेवामनतेसुतार्धरहितो वक्रेन्यधापुत्रवान्दरिद्रं वि-
नतेत्वधोल्पतनयोलिगेशिरासंतते स्थूलग्रंथियुतेसुखीमृदुकरोत्यंतं
प्रमेहादिभिः ७ कोशनिमूढैर्भूपादीर्यैर्भग्नैश्चवित्तपरिहीनाः ऋजुवृ-
त्तशेषसोलघुः शिरालशिश्नाश्च धनवंतः ८ जलमृत्युरंकवृषणोवि-
पमैः स्त्रीचंचलः समैक्षितिपः ह्रस्वायुश्चोद्धत्यैः प्रलंबवृषणस्यशत
मायुः ९ रक्तैराढ्यामणिभिर्निर्द्रव्याः पांडुरैश्चमलिनैश्चसुखिनः स-
शब्दमूत्रानिःस्वानिशब्दधाराश्च १० द्वित्रिचतुर्धाराभिः प्रदक्षिणाच-
लितमूत्राभिः पृथिवीपतयोज्ञेयाविकीर्णमूत्राश्च धनहीना एकैवमूत्र
धाराचलितानुपप्रधानसुतदात्रीस्निग्धोन्नतसममण्योधनवतिता
रत्नभोक्ताः १२ मणिभिश्चमध्यनिम्नैः कन्यापितरो भवंति निःश्वा-
श्च बहुपशुभाजो मध्योन्नतैश्चनान्युल्लवणैर्धनिनः १३ परिशुष्कवस्ति
शीर्षैर्धनुरहितादुर्भगाश्चविज्ञेयाः कुसुमसमगंधशुक्राविज्ञातव्याम-
हीपालाः १४ मधुगंधे बहुविनामस्यसगंधे बहुन्यपत्यानितनुशुक्रः
स्त्रीजनको मांससतगंधो महाभोगी १५ मदिरागंधे यज्ज्वा ज्ञारसगंधे चरेत
सिदरिद्राः शीघ्रं मैथुनगामी दीर्घायु रतो न्यथा ल्यायुः १६ निस्वोति-
स्थूलस्फिक् समांसलस्फिक् सुखान्वितो भवति व्याघ्रांतो ध्वर्धस्फिग्मं-
हूकस्फिक् राधिपतिः १७ सिंहकटिर्मनुजेंद्रः कपिकरभकटिर्धनैः प-
रित्यक्त समजठराभोगयुता घटपिठरनिभोदरानिः स्वाः १८ अयिक-
लपार्श्वा धनिनो निघ्नैर्वर्कैश्चभोगसंत्यक्ताः समकुक्षाभोगाढ्यानि-
निम्नाभिर्भोगपरिहीनाः १९ उन्नतकुक्षाः क्षितिपाः कुटिलाः स्युर्मा-
नवा विषमकुक्षाः सर्पोदरादरिद्रा भवंति बह्वाशिनश्चैव २० परिमंड-

लोन्नताभिर्विस्तीर्णाभिश्चनाभिभिः सुखिनः स्वल्पा त्वदृश्यानिम्नाना-
 भिः क्लेशावहाभवति २१ बलिमध्यगताविषमाशूलाबाधं करोति नैः स्वंच
 शात्थंवा मावर्ता करोति मेघांप्रदक्षिणतः २२ पार्श्वार्थत्ताचिरायुषमुपरि-
 ष्ठाच्चेश्वरंगवाढ्यमधः शतपत्रकर्णिकाभानाभिर्मनुजेश्वरं कुरुते २३
 शस्त्रांतं स्त्रीभोगिनमाचार्यवदुसुतं यथासंख्यं एकद्वित्रिचतुर्बिली
 भिर्विद्यानृपंत्वबलिं २४ विषमवलयोमनुष्याभवंत्यगम्याभिगामिनः
 पापाः ऋजुवलयः सुखभाजः परदारद्वेषिणश्चैव २५ मांसलमृदुभिः
 पार्श्वैर्प्रदक्षिणाघर्तरोमभिर्भूपा विपरीतैर्निर्द्रव्याः सुखंपरिहीनाः पर
 प्रेष्ट्याः २६ सुभगाभवंत्यनुबद्धचूचुकानिर्धनाविषमदीर्घैः पीनोपचित
 निमग्नैः क्षितिपतयश्चूचुकैः सुखिनः २७ हृदयंसमुन्नतं पृथुनवेपनं मां-
 सलंच नृपतीनां अधमानां विपरीतं स्वररोमचितं शिरालंच २८ समब-
 क्षसौर्धवंतः पीनैः शूरास्त्वकिंचनास्तनुभिः विषमंवक्षोवेषांतेनिः
 स्याः शस्त्रनिधनाश्च २९ विषमैर्विषमोजन्तुभिरर्थविहीनोस्थिसंधिप-
 रिणाद्वै उन्नतजन्तुर्भागीनिस्त्रैर्निःस्वर्थवान्यानैः ३० धिपिदग्रीवोनिः
 स्वः शुष्कासशिराचयस्यवाग्रीवामहिषग्रीवः शूरः शस्त्रांतो वृषसम
 ग्रीवः ३१ कंबुग्रीवो राजा प्रलंबकंठप्रभक्षणोभवति पृष्ठमभममरोम
 समर्थवतामशुभदमतोन्यत् ३२ अस्वेदनपीनोन्नतसुगंधिसमरोमसं-
 कुलाकक्षाविज्ञातव्याधनिनामतोन्यथार्थैर्विहीनानाम् ३३ निर्मांसो
 रोमचितो भग्रावलयौ चर्निर्धनस्यांशौ विपुलावव्युच्छिन्नौ सुश्लिषौ सौ-
 ख्यवीर्यवर्ता ३४ करिकरसदृशौ धृतावाजान्वबलं चिनोसमोपीनो वा-
 हूपृथिवीशानामधमानां रोमशौ न्हस्वौ ३५ हस्तांगुलयां दीर्घाभिरायु

पामर्वालिताश्च सुभगानां मेधाविनांच सूक्ष्म्याश्चिपिटाः परकर्मान्नरता
 नां ३६ स्थूलाभिर्धनरहितावर्हिर्नताभिश्च शस्त्रनिर्वाणाः कपिसदृश
 कराधनिनो व्याघ्रोपमपाणयः पापाः ३७ मणिवधनैर्निगूढेदंश्च सु-
 श्लिष्टसंधिभिर्भूपाः हीनैर्हस्तच्छेदः श्लथैः सशब्दैश्च निर्द्रव्याः ३८ पितृ-
 वित्तेन विहीना भवन्ति निम्नेन करतलेन नराः संवृत्तनिम्नैर्धनिनः प्रोतानक-
 राश्च दातारः ३९ विषमैर्त्रिपमानि स्वाश्च करतलैरीश्वरास्तु लाक्षाभैः पा-
 तैरगम्य च निताभिगामिनो निर्धना रुक्लैः ४० तुप सदृशान् खाक्लीयाश्चि-
 पिटैः स्फुटितैश्च वित्तसंत्यक्ताः कुनखवर्णैः परतर्कुकाश्च ताम्रैश्च भूप-
 तयः ४१ अंगुष्ठयैराढ्याः सुतयंतो मुष्टमूलगैश्च ययः दीर्घांगुलिप-
 र्वाणाः सुभगा दीर्घांगुपश्चैव ४२ स्निग्धानिम्नारेखा धनिनांतद्व्यत्यये
 ननिः स्थानां धिरलांगु लयोनिः स्याः धनसंचयिनौ धनं गुलयः ४३ ति-
 स्तोरैरवामणिबंधनोऽस्थिताः करतलोपगानृपते र्मानियुगां किं तपाणिर्नि-
 त्यं सत्प्रदो भवति ४४ वज्राकारा धनिनां विद्याभाजांतु मीनपुच्छनि-
 भांशं रयातपत्रशिविकागजाश्च पद्मोपमानृपतेः ४५ कलशमृणाल
 पताकां कुशोपमाभिर्भवन्ति निधिपालाः दामनिभाभिश्चाढ्याः स्वस्ति-
 कस्तूपाभिरैश्वर्यं ४६ चक्रासिपरशुतोमरशक्तिधनुः कुंतसन्निभारे-
 खा कुर्वन्ति च मूनाथं यज्वानमुखस्वलाकाराः ४७ मकरध्वजकोष्ठाग्र
 सन्निभाभिर्धनोपेताः वेदिनिभेन्वैयाग्निहोत्रिणो ब्रह्मतीर्थिनः ४८ या-
 पीदेव कुलाद्यैर्धर्मं कुर्वन्ति च त्रिकोणाभिः अंगुष्ठमूलरेखाः पुत्राः स्यु-
 र्दारिकाः सूक्ष्मा ४९ रेखाप्रदेशिनी गात्रतायुषां कल्पनीयमूनाभिः
 छिन्नाभिर्द्रुमपतनं बहुरेखारेखिणो निरुवा ५० अतिक्लृप्तदीर्घैश्चि-

बुकैर्निद्रव्यामांसलैः धनोपेताः विंवोपे तै र्वक्त्रेरधरेभूयास्तनुभिरस्वाः
 ५१ ओष्ठैः स्फुटितविरवंडितविचर्णरूक्षैश्च धनपरित्यक्ताः स्निग्धाघ-
 नाश्च दशनाः सुतीक्ष्णदंष्ट्रासमाश्च शुभा ५२ जिह्वारक्तादीर्घाश्च लक्षण-
 सुसमाचभोगिनां ज्ञेयाश्चेतारुष्णापरुषानिद्रव्याणां तथा ताः ५३ य-
 क्रं सौम्यं संवृतममलं लक्षणं समंच भूपानां विपरीतं क्लेश भुजां महासु-
 रवंदुर्भगाणां च ५४ स्त्रीमुखमनपत्नानां शाठ्यवतां मंडलपरिज्ञेयं दी-
 र्घं निद्रव्याणां भीरुसुरवाः पापकर्माणिः ५५ चतुरस्त्रं धूर्तानां निम्नं क-
 रं च तनयरहितानां रुपणानामतिह्रस्वं संपूर्णं भोगिनां कांतं ५६ अ-
 स्फुटिताग्रं स्निग्धं स्मश्रुशुभं मृदु च सन्नतं चैव रक्तेः प्ररुषैश्चौराः श्मश्रु-
 भिरत्यैश्च विज्ञेयाः ५७ निर्मांसैः कर्णैः पापमृत्यवश्च परैः सुबहुभोगाः
 रुपणाश्च ह्रस्वकर्णाः शंकुश्रवणाश्च भूपतयः ५८ रोमशकर्णादीर्घा
 शुषस्तु धनभागिनो विपुलकर्णाः क्रूराः शिरापिनद्वै र्यालं चैमांसलैः
 सुखिनः ५९ भोगीलनिम्नगंडो मंत्री संपूर्ण मांसगंडो यः सुखभाक् शु-
 कसमना सश्चिरजीवी शुफनाशश्च ६० छिन्नानुत्पयागम्यगामिनो
 दीर्घयातुसौभाग्यं आकुंचितयाचौरः स्त्री मृत्युः स्याच्चिपिटनासः ६१
 धनिनो ग्रवक्रनासा दक्षिणवक्राः प्रभक्षणाः क्रूराः ऋज्वीस्वल्पछिद्रा
 सुपुटानासा सभा ज्ञानी ६२ धनिनां क्षतं सकृत् हि त्रिपिंडितं त्वासादि-
 सानतादं च दीर्घायुषां प्रमुक्तां विज्ञेयं संहतं चैव ६३ पद्मदलानधनि-
 नोरक्तांतविलोचनाः त्रियोभाजः मधुपिङ्ग लर्महार्थं मार्जारविलोच-
 नाः पापाः ६४ हरिणाक्षामंडललोचनाश्च जिह्वैश्च लोचनेश्चौराः क्रू-
 राक्रिकरनेत्रा गजसदृशदृशश्च भूपतयः ६५ ऐश्वर्यं गंभीरैर्नलोत्पल

कातिमिथ्यविद्वांसः अतिरूपगतारकाणां मक्ष्णामुत्पादनं भवति ५५ मन्त्रित्व
स्थूलदृशां श्यावाक्षाणां च भवति सौभाग्यं दीनाहनिः स्वानां स्निग्धाविपुला-
र्थं भोगवतां ५७ अभ्युन्नताभिरलस्यायुषो विशालोन्नताभिरतिसुरिणः
विषमभुवोदरिद्रावालेन्दु नतभुवः सधनाः ५८ दीर्घासंसक्ताभिर्धनिनः
खंडाभिरर्थपरिहीनाः मध्यविनतभुवो ये ते शक्ताः स्त्रीषु गम्यासु ५९ उ-
न्नतविपुलैः शरैर्धन्यानिम्नैः सुतार्थसंत्यक्ताः विषमललाटाविधनाध-
नवंतो र्धेन्दुसदृशेन ७० शुक्तिविशालैराचार्यताशिरासंततैरधर्मरता
उन्नतशिराभिराद्यास्वस्तिकवत्संस्थिताभिश्च ७१ निम्नललाटवधवं
धभागिनः क्रूरकर्मनिरताश्च अभ्युन्नतैश्च भूपाः कृपणाः स्युः संकट-
ललाटाः ७२ रुदितमदीनमनश्च स्निग्धंच शुभावहं मनुष्याणां रूक्षं दी-
नं प्रचुराशुचैव न शुभप्रदं पुंसां ७३ हसितं शुभदमकंपंसनिमीलितलो-
चनंच पापस्य दृष्टस्य हसितमुसकृत्तोन्मादस्यासकृत्प्रात्ये ७४ ति-
स्त्रोरेखा शतजीविनां ललाटयताः स्थिता यदि नात्यन्तसृभिरवनीश-
हं न वतिश्चायुः स पंचाब्दाः ७५ विच्छिन्नाभिश्चागम्यगामिनो भवति र-
प्यरे विण्केशांतो पगता भीरेखाभिरशीतिवर्षायुः ७६ पंचभिरायुः
सप्ततिरेकाग्रावस्थिताभिरपिषष्टीः बहुरेखेण शतार्थंच तारिंशच्च क-
क्राभिः ७७ त्रिंशदध्रुलग्राभिर्विंशतिकश्चैकचामकक्राभिः क्षुद्राभिः
स्वल्पायुर्न्यूनोभ्यध्यांतरे कल्प्यम् ७८ परिमंडलैर्गवाढ्याश्छत्राकारैः
शिरोभि रवनीशाः चिपिटैः पितृमातृघ्नाः कर्णादिशिरसांचिरान्मृत्युः
७९ घटभूर्धाध्वानरुचिर्द्दिमस्तकः पापकृद्नैस्त्यक्तः निम्नंतु शिरोम-
हतां बहुनिम्नमनर्थदं भवति ८० एकैकभवैः स्निग्धैः कृष्णैराकुंचि-

तैरभिन्नाग्रैर्मृदुभिर्नचातिबहुभिः केशैः सुखभाक्नरेंद्रोया ८० बहुमूल
 विषमकपिलाः स्थूलस्फटिताग्रपरुषप्रास्वाश्च अतिकुटिलाश्चातिघ
 नाश्चमूर्धजावित्तहीनानां ८२ यद्यद्गात्रं स क्षं मांसाविहीनं शिरायनहं च
 तत्तदनिष्टं प्रोक्तं विपरीतमतः शुभं सर्वं ८३ त्रिषु विपुलोगंभीरस्त्रीष्वे-
 व षड्भतश्चतुर्हस्वः सप्तस्तरक्तो राजापंचसुदीर्घश्च सूक्ष्मश्च ८४ नाभि
 स्वरः सत्यमिति प्रदिष्टं गंभीरमेतान् चोतयं नराणां उरोललाटं वदनं च
 पुंसां विस्तीर्णमेतन्नि तयं प्रशस्तं ८५ च क्षोथकक्षानखनामिकास्थं
 कृष्णाटिकाचेति षडुन्नतानि न्हस्वानि चालारिचलिंगपृष्ठं ग्रीवाचजंघे
 च हितप्रदानि ८६ नेत्रांतपादकरताल्वधरोष्ठजिह्वारक्तानखाश्च ख-
 लुसप्तसुरबावहानि सूक्ष्माणि पंचदशनांगुलिपर्वकेशाः सार्कलनाक्रम
 रुहाश्च नदुःखितानां ८७ हनुलोचनबाहुनासिकास्तनयोरंतरमत्रपं-
 चमं इति दीर्घमिदं तु पंचकं न भवत्येव नृणां भूभृताम् ८८ क्षेत्रं छाया
 शुभाशुभफलानि निवेदयति ॥ लक्ष्यामनुष्यपशुपक्षिशुलक्षणज्ञै
 स्तेजो गुणान्याहिरपि प्रविकाशयंति दीपप्रभास्फटिकरत्नघटास्थिते-
 य ८९ स्निग्धहिजलङ्गरवरोमकेशः छायासुगंधाचमहीतमुत्थातु-
 ष्ठयर्थलाभाभ्युदयान्करोति धर्मस्य चाह न्यहनि प्रवृत्तिं ९० स्निग्धासि-
 ताच्छहरिता नयनाभिरामासौ भाग्यमार्दव सुखाभ्युदयान्करोति
 सर्वार्थसिद्धिजननी जननी च चार्था छायाफलंतनुभृतां शुभमादधाति
 ९१ चंडाघृष्ट्या पद्महेमानिवर्णा युक्ता तेजो विक्रमैस्ततापैः आग्ने
 यीति प्राणिनां स्याज्जयाय क्षिप्रसिद्धिं वांछितार्थस्य घत्ते ९२ मलिनं
 परुषं कृष्णपापगंधानिलोत्थाजनयति वधबंधव्याध्यनर्थार्थनाशान्

स्फटिकसदृशरूपा भाग्ययुक्तात्युदारा निधिरिवगगनोत्था श्रेयसांस्वच्छ
वर्णा ९३ छायाक्रमेणकुजलाग्न्यनिलंबरोत्थाः केचिद्ददंतिदशनाश्चय-
थानुपूर्व्या सूर्याब्जनाभपुरुहूतयमोहपानां तुल्यास्तुलक्षणफलैरिति
तत्समास ९४ सृजाकरिवृषरेथोघभेरीमृदंगसिंहाब्धनिःस्वानाभूपाः
गर्दभजर्जर रु क्षस्वराश्चधनसौख्यसंत्यक्ताः ९५ ॥ स्वरः ॥ सप्तभ-
पंतिचसारा मेदोमज्जालगस्थिशुक्राणिरुधिरं मांसंचेति प्राणभृतांत
समासफलम् ९६ ताल्बोष्ठदंतपालिजिह्वानेत्रांतपायुकाचरणैःर-
क्तैस्तुरक्तसाराबहुमुखयनितार्थपुत्रयुताः ९७ स्निग्धत्वकाधनिनो
मृदुभिःशुभगाविचक्षणास्तनुभिर्मज्जामेदसाराः सुशरीराःपुत्रवित
युताः ९८ स्थूलास्थिरस्थिसारोषलवान् विद्यांतकःसुखश्च बहुगु-
रुशुक्राःशुभगाविहांसोरूपवंतश्च ९९ उपचितदेहोषिद्वान्धनीसु-
रूपश्चमांससारोपः इतिसारः ॥ संघातः॥ इतिचसुम्निष्टसंधिताः
सुरव भुजोज्ञेयाः १०० इतिसंहतिः ॥ स्नेहः पंचसुलक्ष्योग्वाजिह्वा
नेत्र नखसंस्थः सुतधनसौभाग्ययुताःस्निग्धैस्तैर्निर्धनात्क्षैः १
इतिस्नेहः द्युतिमान्वर्णःस्निग्धःक्षितिपानांनध्यमःसुतार्थयतारु
क्षोधनहीनानां शुद्धःशुभदोनसंकीर्णः २ इतिवर्णः साध्यमनूकंचक्रा
द्रोवृषशार्दूलसिंहगरुडमुखा अतिप्रतिहतप्रतापाजितरिपयोमानयेन्द्रा-
श्च ३ वानरमहिष वराहाजतुल्यवदनाःसुतार्थसुखभाजःकर्दभकर-
मप्रतिमैर्मुखैः शरीरैश्चनिःस्वमुखाः ४ इत्यनकं श्रष्टशतंभवति
परिमाणंचतुरशीतिरितिपुंसां उत्तमसमहीनानामंगुल संख्यास्वमा-
नेन ५ इत्युन्मार्गं भारार्धतनुः सुखभाक् तुलितो तोदुःखभाग्यवत्सूतः

भारोतिवाल्यानामध्यर्धः सर्वधरणीशः ५ विंशतिवर्षानारीपुरुषः खलुपं-
चविंशतिभिरद्वैः श्रद्धतिमानोन्मानं जीवितभागे चतुर्थे वा ७ इतिमानं
मूजलक्षितानिलांवरसुरनररक्षः पिचाचकतिरश्वासत्वेन भवति पुरुषाल-
क्षणमेतद्भवत्येपां ८ महिस्वभावः शुभपुष्पगंधः संभोगवान्सुधसनः-
स्थिस्थ तोयस्यभावो बहु तोयपायी प्रियाभिलाषी रसभोजनश्च ९ अ-
ग्निप्रकृत्या च पलोति तीक्ष्णश्चंडक्षुधालु बहुभोजनश्च वायोः स्वभावेन-
चलकृशश्चाक्षिप्रंचकोपस्य च शंभ्रयाति १० खप्रकृतिर्निपुणो विघृता-
स्यः शब्दगतेः कुशलः सुखिरांगः त्यागयुतः पुरुषो मृदुकोपः स्नेहातश्च
भवेत्सुरसत्तः ११ मर्त्यसत्तसंयुतो गीतभूषणप्रियः संबिभागशीलया-
नित्यमेवमानवः १२ तीक्ष्णप्रकोपः खलचेष्टितश्च पापश्च सत्वेन निशा-
चराणां पिशाचसत्तश्च पलोमलाक्तो वक्रप्रलापी च समुल्लेखपांगः १३ भी-
रुक्षुधालुर्बहुभुक् चयः स्यात् ज्ञेयः सत्वेन नरस्तिरश्चां एवं नराणां
प्रकृतिः प्रदिष्टाय लक्षणज्ञा प्रवदंति सत्तं १४ इति प्रकृतिः शार्दूलहंस
समद्विपणोपतीनां तुल्या भवंति गतिभिः शिखीनां च भूपाः येषां च शब्दरहितं तिमितं
चयन्तं पीथरादुतपरिदुतगादरिद्राः १५ इति गतिः श्रान्तस्य चानमशनं च बुभुक्षित-
स्य पानं नृपापरिगतस्य भये पुरक्षा एतानि यस्य पुरुषस्य भवंति काले धन्यं वहंतिस
क्षतं नरलक्षणज्ञाः १६ पुरुषलक्षणं मुक्तमिदं मया मुनिमता न्यवलोप्य समासतः इदं
मधीत्यनरो नृपसम्पितो भवति सर्वजनस्य च बहुभः १७ इति पुरुषल-
क्षणं ॥ अथ स्त्रीलक्षणम् स्निग्धोन्नताग्रतनुताग्रनखौ कुमार्याः
पादौ समोपचितचारुनिगूढगुल्यौ श्लिष्टांगुलि कमलकांतितलौ च
यस्यातामुद्वेगदिवोधिपतितमिच्छेत् १ मत्स्यांकुशज्वयवज्वह

लासिचिन्हायस्वेदनो मृदुतलोचरणी प्रशस्तो जंघेचरो सहिते विशिरे सुवृ-
 ते जानुद्वयं सममनुत्वागुसंधिदेशं २ उरुधनौ करिकर प्रतिमाचरो माप-
 श्वत्प्रपन्नद्वयं विपुलं च गुह्यं श्रोणीललाट गुरुकूर्म समुन्नतं च गूढो म-
 ग्निश्च विपुलांश्चियमादधाति ३ विस्तीर्णमांसो पचितो भित्तं वो गुरुश्च ध-
 त्ते रसना कलापं नाभिर्गभीरा विपुलांगनानां प्रदक्षिणावर्तगता प्रशस्ता
 ४ मध्यस्थिया स्त्रियलिनाथमरोमशं च वृनौ च नायविषमौ कटिच्चायुर-
 स्यौ रोमापवर्जितसुरो मृदुचांगनानां ग्रीवाचक्रं बु निचितार्थं सुरस्वानिध-
 ते ५ बंधुजीवकुसुमोपमो धरो मांसलो रुचिरर्धिवरूपधृक् कुंदकुङ्कुम-
 निभाः समाद्दिजा योषितां पतिसुरस्वामितार्थदाः ६ दाक्षिण्ययुक्तमशठं
 परपुष्टं हंसवल्गुप्रभापितमदीनमनल्पतौरव्यं नाशासमा समपुदारु-
 धिराप्रशस्ता ७ झीलनीरजलधूसुतिहारिणी च ८ नो संगते नानि पृथ-
 नलं वशस्ते भ्रुवौयालवावांकयके अर्धेदुसंस्थानमरोमशं च शस्तं ल-
 लाटं ननतं ननुगं ९ कण युग्ममपियुक्तमांसलं शस्यते मृदुसमं समा-
 हितं स्निग्धनील मृदुकुंचितैकजामूर्धजाः सुखकराः समं शिरः १० भृंगा-
 रासनवाजिकुंजररथश्रीवृक्षपूपेपुभिर्मालाकुंडलचामरांकुशययैः शो-
 लैर्ध्वजैस्तोरणैर्मत्स्यस्वस्तिकवेदिकाव्यजनकैः शंखातपत्रांभुजैः पा-
 देपाणितले पिचायुवतयोगच्छतिराज्ञीपदं ११ निगूढमणिवंधनौ तरु-
 णपद्मगर्भोपमौ करौ नृपतियोषितां तनुविरुष्टपर्वां गुली ननिम्नमति-
 नोन्नतं करतलं सुरेखाभितं करोत्यविधवांचिरं सुनस्तरवार्धसंभोगि-
 नी १२ मध्यांगुलिं यामणिबंधनोत्थारं स्वागतापाणि तले गनायाः उ-
 र्ध्वस्थितापाणितले थंवाया पुंसो थवाराज्यस्तरवायमास्यात् १३

कर्निष्ठिका मूलभवागताया प्रदेशिनामध्यमिकांतरालं करोतिरेखाः
 रमायुषः साममाणमूनानुतदूनमायुः १३ अंगुष्ठमूले प्रसवस्यरेखाः पुत्र
 वृद्धत्यः प्रमदास्तुतन्व्यः अछिन्दीर्घावृद्धदायुषांताः स्वल्पायुषांछिन्न
 लघुप्रमाणाः १४ इतीदमुक्तं शुभमंगनामतोविपर्यस्तमनिष्टमुक्तं विशे-
 धतोनिष्ठफलानियानि समासतस्तान्यनुकीर्तयामि १५ कर्निष्ठिकायात्
 दनंतरावामहिनयस्याः स्पृशतीस्त्रियाः स्यात्गतायवांगुष्ठमतीत्यय-
 स्याः प्रदेशिनी साकुटिलातिपापा १६ उद्ग्राभ्यां पीडिकाभ्यां शिराले
 शुष्के जंघेरोमशेवातिमांसे यामायर्त्तं निम्नमल्पंच गुह्यं कुंभाकारंचोदरं
 दुःखितानां १७ हृत्स्वातिनिः स्वतादीर्घयाकुलक्षयः ग्रीवया पृथ्व्य-
 यायोपितः प्रचंडता १८ नेत्रेयस्याः केकरं पिंगले वासादुःश्रीलाश्यायलेले
 क्षणाच्च कूपोयस्य गंडयोश्चास्मिते पुनिः संदिग्धं बंधकीतां वदन्ति १९
 प्रविलंबिनिदेवरं ललाटे श्वरं हंत्कंदरे स्फिजोः पतिंच अतिरोम-
 चयाचितोत्तरोष्ठीनशुभाभर्तुरतीवयाचदीर्घा २० स्तनौ सरोमौ म-
 लिनाच्चगौच क्लेशं दधाते विषमौ च कर्णौ स्थूला कराला विषमाश्च
 दंताः क्लेशाय चौर्याय च रुष्णमांसाः २१ क्रव्यादरूपैर्वृक्काककंफ-
 सरिसृपोलूकसमानचिन्हैः शुष्कैः शिरालैर्विषमैश्च हस्तैर्भवन्ति नार्यः
 सुखयित्तहीनाः २२ यातूत्तरोष्ठेन समुन्नतेन रुक्षाग्रकेशीकलहप्रि-
 यासा प्रायो विरूपासु भवंति दोषा यत्राकृतिस्तत्र गुणावसन्ति २३
 पादौ सगुल्फौ प्रथमं प्रदिष्टौ जंघे द्वितीये च स जातु चक्रे मेढ्योरमुष्कं-
 चतसस्तृतीयं नाभिः कटिश्चेति चतुर्थमाहुः २४ उदरं कथयन्ति पंच-
 मं हृदयं षष्ठमतः स्तनान्वितं अथ सप्तमं शज्जुणीकथयन्त्यष्टमं

मोष्टकपरे २५ नवमं नयते च स भुज्जी सललाटं दशमं शिरस्तथा अ-
 शुभेषु शुभं दशाफलं च रणावेषु शुभेषु शुभं २६ इति स्त्री लक्षणं ॥ अ-
 थ शिवास्वरविचारः श्वभिः शृगालाः सदृशाः फन्नेन विंशोपस्थां शिनि-
 रे मदासिः हूहू रूतांते परतश्च दादा पूर्णस्वरोन्ये कश्चिता प्रवीताः १ ला-
 नाशिकायाः खलुकक्षशब्दः पूर्णस्वभावप्रभवः सतस्याः धन्ये स्वरा-
 स्ते प्रकृते रपेताः सर्वे च दीप्ता इति संप्रदिष्टाः २ पूर्वोदीच्याः विचाश-
 स्तात्रांता सर्वत्र पूजिताः धूमिताभिः मुरवीहन्ति स्वरदीप्तादिगीथरान्
 ३ सर्वदिक्षु शुभादीप्ता विंशोपेणाह्वयं भना पुरे सैन्ये पसव्याचकघ्रा
 सूर्योन्मुरवीशिवा ४ याहीत्यग्निभयं शास्ति दाटेति मृतयेदिकाधि-
 धिरगुदुरुतमाचष्ट सज्जालादेशनाशिनी ५ नैवदारुणतामेके सज्जाला-
 लायाः प्रचक्षते अर्काद्यनक्तस्यावक्रं लालास्वभावतः ६ अधप्रति-
 हता याम्यासां द्वंधमृतशंसिनी वारुण्यनिरुता संयशंसते सलिले मृ-
 तं ७ अक्षोभः श्वणं चेष्टधनप्राप्तिर्धनागमः क्षोभः प्रधानभेदश्च या-
 हनानां च सम्पदः ८ फलमाससमादेत दध्याहं परतो रूतं याम्यायां
 तद्विपर्यस्तं फलं पटुपंचमादृते ९ यारोमां चं मनुव्याणां शकृन्मूत्रं
 च वाजिनां रावात्रासं च जनयेत् सा शिवानशिवप्रदा १० मौनंगता प्र-
 तिरुते नरहिन्दवाजिनां वा शिवासाशिवं सैन्ये पुरे वा संप्रवच्छति ११
 भेभेति शिवाभयं करी भोभो व्यापदमादिसे च सा मृतबंधनिवेदिनी-
 फिहूहूरात्सहिता शिवास्वरे १२ शांता त्ववर्णात्परमौ च हन्ति ८।८
 मुदीर्णा मिति वा श्यामाना ॥ टटे च पूर्वं परतश्च धेधेतस्याः स तुष्टि
 प्रभयं रूतं तत् १३ उच्चैर्घोरं वर्णमुच्चार्य पूर्वं पश्चात्कोशे कोष्ठकस्या

नुरूपंया साक्षेमं ग्राहपित्तस्य चातिसंयोगंया प्रोषितेन प्रियेणा ॥१२॥ इ-
 निशि वारुतं ॥ अथोल्कुरुतं हूं हूं गुं गुं गिति प्रियामभिलषको शत्युल्क-
 को मुदा पूर्णस्यादुरुलुप्तदीप्तमपि च ज्ञेयं सदा किं किं सिर्विज्ञेयः कलहो
 यदा बलबलं तस्या सकृद्वा शितं दोषा वैषट्टहृटेति न शुभाः शेषाः प्रदीप्ता
 न्यराः अथ च यस्त्र गृहोपरिकौशिकः प्रतियुतं कुरुते निशि वादिनेऽपि
 गेहपतेर्मरणं भयेद्भनकलत्रपशुक्षयकारकः गोशालायांगवांनाशो धान्या
 गारेतु ग्रीहिणाम् तस्मात्तत्र शांतिर्विधेया कल्पोक्ता एवमेवेतरस्मिन्नप्यु-
 त्पातेऽपि अलभियता प्रबंधेन विज्ञेयः मुहूर्तरत्नाकरनामधेयः सुसंग्रहो यं रधि-
 तः प्रयत्नात् कल्लोलकैः षोडशभिः समेतः पीतांबरः पटयुगे समर्पितः १ प्रा-
 ह्याग्राह्यविचारारव्य कल्लोलश्चादिसंज्ञकः मुहूर्तसंज्ञकस्तस्मात्संक्रांत्यारव्य
 ततः परः २ गौचरसंस्कारारव्योपरिणयनबधुवेशकौघि रागमनं अन्यथानन
 रेशाभिपेचनो यात्रिकं वास्तु ३ पवेशारव्यस्ततो मिश्रः प्रथमसंज्ञश्च कीर्तितः संकी-
 र्णारव्यस्ततश्चेमे षोडशप्रपितामया ४ रैभ्यात्रिहारितग्रंथांस्तथान्या नृपि-
 भिः कृतान् दृष्ट्वायं संग्रहः सूक्ष्मः कृतो लोकहिताय च ५ श्रीमन्मेहरचंद्रेण
 विद्याविस्तारकारिणा कारितो यं शके वेदव्योमे भास्व १८० ४ सितेशुभे ६ रु-
 र्णरुणत्रयोदशां कालं शरदिसंज्ञके जगाम पूर्णतां पत्रान्मतः श्रीगुरुसे-
 वया भ्रान्तं स्तथा मतेर्हसाद्विरुक्तं वाहिरुक्तं आर्यामात्सर्यमुत्सार्य वि-
 चार्य रचयंतु तत्पितृचरणसरोजसेवया किमपि ममाभवदुज्ज्वलामतिः
 अकरवमहमेन मादरादिदगखिलं मिहिरंदुमित्रसात् इति श्रीमद्भानुदायं द्र-
 वमिहरचंद्रकारिते मुहूर्तरत्नाकरे षोडशकल्लोलः १६ ३ भवतु भयोऽविस्तार
 मायातु च श्रीजगदंबरूपातदेवभूतः कीर्तनेन नंदपुत्रनमस्य पारुतं सर्वं शुभं भूया
 (छिद्राय पाठकाय च अथ पूर्वापंचतुर्यो लिखिते उत्तरापंचदिषा अभिषानचक्रमद्भुतातिबोधमश्नु

शुद्धाशुद्धिपत्रम्.

| अशुद्ध | शुद्ध | पृ | पं | अशुद्ध | शुद्ध | पृ | पं |
|------------|--------------------|----|-------|-------------------|------------------|----|----|
| मानदिनम् | दिनमानम् | २ | १ | ग्रा | ग्रा | १० | ५ |
| दर्शी | दर्शी | ४ | १ | या | या | १० | १० |
| योगः शुभः | योगोऽशुभः | ४ | ४ | वस्तु | वस्तु | १० | १४ |
| सर्वतो | सम्बर्तो | ४ | ५ | श्रव | श्रव | १० | १५ |
| याग | योग | ४ | ७ | सुन | सुन | ११ | ३ |
| अय | अयम् | ४ | ८ | स्था | स्था | ११ | ५ |
| लग्नाशुभः | लग्नाशुभानि | ४ | ९ | जवु | जवु | ११ | १२ |
| नृत्तीय | नृत्तय | ४ | १९ | रुपानि | रुपानि | ११ | २३ |
| रविवार | रविवारचंद्रसूर्योप | | ३० | | ५० | ११ | २२ |
| | रागभाद्रादियुचदंत | | प. द. | | पू. द. | १२ | ३ |
| | पावनम्बर्ज्यम् | ५ | १० | | परद | १२ | ७ |
| पाराणा | पाराणा | ५ | ८ | नागैवसदारुण- | सुदारुणानिहरणं | | |
| बंध | बंध | ५ | १० | निहरणं सौभाग्य | सौभाग्यकर्मशुभ | | |
| परोपो | परायी | ५ | २५ | कर्मशुभपुष्टिद्वि | पुष्टिद्विमंगलकर | | |
| लुं | लुं | ७ | ३ | मंगल्य करणानि | णानि- | १२ | १९ |
| सं | सं | ७ | ७ | नार्थ | नार्थ | १२ | २० |
| लां | लां | ७ | १० | निष्ठा | नीष्ठा | १३ | ५ |
| प्य | प्य | ७ | १२ | चापक | चपाक | १३ | ८ |
| वभे | वारे | ७ | १५ | त्रं | त्र | १४ | ६ |
| घो | घो | ७ | १६ | पू. | पू. | १४ | ७ |
| नोन | तोन्न | ८ | ४ | व्यः | व्या | १४ | १३ |
| स्तूपना | स्तूपना | ८ | ७ | नर | नरेः | १४ | १२ |
| चाष्ट | त्वाष्ट | ९ | २ | ग्रासेसा | ग्रासेसा | १५ | ३ |
| विघे | विघे | ९ | २ | मामासा | मासा | १५ | ३ |
| धेम | धेम | ९ | ३ | योत्सर्ग | योत्सं | १५ | २ |
| स्थापयनो. | स्थापनो | ९ | ५ | त्वातम | त्वातभम् | १५ | ३ |
| पट्ट | पट्ट | ९ | ११ | पनुभनु | धनुष- | १५ | ५ |
| द्रुक्षामा | द्रुमा | १० | ४ | चतु ष्ठेण | तच्चतुकरः | १५ | ६ |
| वध | वध | १० | ५ | पुरुष | पुरुषः | १५ | १० |

| असुद्ध- | सुद्ध- | पृ. | पं. | असुद्ध- | सुद्ध- | पृ. | पं. |
|--------------|-------------|-----|-----|-------------|-----------------|-----|-----|
| पितृ | पितृ | १५ | २० | दुर्लभ | दुर्लभ | २३ | ७ |
| वपुच | वपुच | १७ | १ | ज्ञाना | ज्ञाना | २३ | १५ |
| वल्ग्वेच | वल्ग्वेच | १७ | २ | नाना | ताना | २३ | १५ |
| वर्षेध | वर्षेध | १७ | १९ | वासरे | वासरे | २४ | १२ |
| आकर्णे | आकर्ण | १८ | २७ | धारणमु | धारणमु | २४ | १३ |
| संशयं | संशयं | १८ | ५ | सुभन् | सुभम् | २४ | १५ |
| स्लेच्छ | स्लेच्छ | १७ | १८ | अमृत | अमृतयोगे | २४ | १९ |
| विनष्टक | विनष्टम् | १८ | ५ | योगो | योगं | २४ | १९ |
| स्यादि | स्यादि | १८ | ५ | भोगसुभः | भोग.सुभः | २५ | १ |
| भागिरथि | भागीरथी | १८ | ७ | अग्रह | अग्रह | २५ | १३ |
| अन्याःसुमा | अन्येसुभाः | १८ | १३ | यागे | योगे | २५ | १ |
| पणफा | पणफर | १८ | २१ | वेरायां | वेण्यां | २५ | ९ |
| हापार | हापर | १८ | २८ | पदीणां | पक्षिणां | २५ | १० |
| पारिष | पारिषः | १९ | ८ | द्रेष्काणसु | द्रेष्काणःसु | २५ | १२ |
| पिज्येज्ञेयो | पेभोज्ञेयः | १९ | ९ | पराण्य | पण्य | २७ | १५ |
| अग्राहो | पेभ्यग्राहो | १९ | ९ | अग्रे | अग्रे | २७ | १५ |
| भिजित | भिजित | १९ | १७ | कर्कषह | कर्कषह | २९ | ७ |
| दुष्ट | दुष्ट | २० | ५ | ध्येयं | ध्येयं | ३० | ५ |
| वासो | वासरे | २० | १२ | समस्ते | मस्तं | ३१ | ८ |
| मुहूर्त | मुहूर्त | २० | १७ | — | सुखेहानिः | ३० | ११ |
| राहित्ये | राहित्ये | २१ | १ | — | ५पुछेलस्मीनाराः | ३० | १५ |
| नदध्या | नदध्या | २१ | ४ | पूष | पूष | ३१ | ११ |
| वारपु | वारपु | २१ | ११ | मुहुन | मुहूर्त | ३१ | १५ |
| मंजीरं | मंजीरः | २१ | २० | स्याप्या | स्याप्याः | ३१ | २० |
| नलसलं | नलसलं | २१ | ५ | तिथ्यो | तिथ्योः | ३३ | १४ |
| जलधी | जलधी | २२ | ७ | नलनर | नर | ३३ | १५ |
| याम्यायां | याम्यायां | २२ | १३ | नली | नली | ३३ | १९ |
| नयधे | नयधे | २२ | १५ | सूर्ये | सूर्येः | ३४ | २ |
| रुतिभा | रुतिःसुभा | २२ | १ | राश | राशः | ३४ | १५ |
| सूर्यादि | सूर्यादि | २२ | १ | पापांशक | पापांशकः | ३४ | २० |
| हनि | हनि | २२ | ७ | | | | |

| अशुद्ध | शुद्ध | पृ. | पं. | अशुद्ध | शुद्ध | पृ. | पं. |
|--------------|--------------------|-----|-----|-------------|---------------------|-----|-----|
| यात्रोरु | यात्रोक्त | ३७ | २१ | अस्थ | अस्थ | ५१ | ९ |
| रविगत | रविगतभाद्रपना | | | मघा | मघा | ५१ | १७ |
| | बोध्या | ३९ | १५ | रिष्टदः | रिष्टद | ५१ | १७ |
| संघर्ष्य | संघर्ष्य | ३९ | १९ | मूलार्घ | मूलार्घ | ५२ | ४ |
| शस्य | शस्य | ४० | ३ | घटिकाघं | घटिकाघं | ५२ | ४ |
| देय | देयमययामृत्युजय | ४० | ७ | घटीघटी | घटी | ५३ | ३ |
| कुपांतु | कृपांतु | ४० | १२ | मानुःगा | मानुर्गा | ५३ | ५ |
| रविबुधो | रविबुधो | ४० | १४ | पादे ५ | पादे ५ | ५३ | ३ |
| धिस्यानि | धि प्यानि | ४० | १७ | घन | घनः | ५३ | ३ |
| पूपास्त्री | पूपास्त्री | ४० | १४ | दाष्ट | दाष्ट | ५३ | ९ |
| द्वादशः | द्वादशः | ४० | १८ | यद्योग | यद्योज | ५४ | ५ |
| लिखित | लिखित | ४१ | ३ | मूल | मूलं | ५४ | १३ |
| जीवबंध | जीवबंध | ४२ | ५ | वलव | पलव | ५२ | २ |
| पक्ष | पक्ष | ४२ | १५ | निवेदयेत् | निषापयेत् | ५५ | ३ |
| मधुका | मधुक | ४३ | १ | शलेयं | शैलेयं | ५५ | १२ |
| आहुत | आहुत | ४३ | १५ | वच्चा | वच्चा | ५५ | १२ |
| होमेदिरा | होमेदिरा | ४३ | १५ | हरिद्रा ३ | हरिद्रे ४ | ५५ | ११ |
| ग्रहपते | ग्रहयज्ञे | ४३ | २१ | मृदः १० | मृदः ७ | ५५ | १२ |
| सवः | सः | ४४ | १ | स्थान १२ | स्थान १ | ५५ | १३ |
| कुट | कुष्ठ | ४५ | १ | गोष्ठः ७ | गोष्ठः ७ मसभा | | |
| प्रियुंशु | प्रियंशु | ४५ | १ | | भ्यानि | ५५ | १३ |
| वर्हि | पहिरू | ४५ | ३ | ९।८।११ | ६।९।१२ | ५७ | १ |
| तक्षः | तक्षः | ४५ | ८ | अंत्यज्ञानं | अंत्यजान् | ५७ | ७ |
| कार्यकार्ये | कारकार्ये | ४५ | १२ | वृपजाप् | वृपतीन् | ५७ | ३ |
| पलव | वलवपो | ४५ | १४ | मेषा | मेषं | ५७ | ८ |
| वेद्यं | वेद्य | ४८ | ४ | प्रपीता | प्रपिता | ५७ | १७ |
| तिथुषु | तिथिषु | ४८ | १५ | वित | वित | ५८ | ५ |
| परीक्षादीनां | परीक्षास्त्रादीनां | ४९ | ४ | रव्यादीनां | रव्यादीनांसंक्रांतौ | ५८ | ७ |
| चंद्रो | चंद्रो | ४९ | ४ | पुण्यदा | पुण्यदाः | ५८ | १० |
| तव्याश्च | तव्याश्च | ५० | १० | रहित | रहितः | ५८ | १० |
| शाल्यं | शाल्यं | ५० | ११ | शालन् | शालन | ५८ | ११ |

| अशुद्ध | शुद्ध | पृ. | पं. | अशुद्ध. | शुद्ध | पृ. | पं. |
|-----------|-----------|-----|-----|------------|------------|-----|-----|
| करपू | कर्पू | ५९ | ९ | सूर्य | सूर्यग्रहे | ६६ | २ |
| गोमुत्र | गोमूत्र | ५९ | ८ | चद्र | चद्रग्रहे | ६६ | २ |
| घन | घन | ५९ | ६ | चैदुरुः | चैदूरुः | ६७ | ५ |
| घन | घन | ५९ | ९ | ग्रहणं | ग्रहण | ६८ | १ |
| एणायु | चरणायु | ६० | २ | सप्तमवर्षश | सप्तमषोडश. | ६८ | २ |
| परत्वे | परत्वे | ६० | १ | सद्वक् | सद्वक् | ६८ | १ |
| शुभं | शुभं | ६० | ५ | कृष्णं | कृष्णे | ६८ | ११ |
| — | जातयः | ६० | ८ | शुभ | शुभः | ६९ | १७ |
| स ३० | सं.सु | ६० | १६ | पक्षे | पक्षः | ६९ | १८ |
| जन्मभात् | जन्मभातं | ६० | १२ | ज | ० | ७० | ४ |
| आदक्षे | ३ दक्षे | ६० | १६ | इति | अभि | ७० | ५ |
| ८ पक्षे | ८ पक्षो. | ६१ | ९ | जैति | जाति | ७० | ६ |
| ८ | १ | ६१ | १ | कर्मताः | कर्मना | ७० | ६ |
| समन | संमन | ६१ | २३ | सुखता | सुखना | ७० | ६ |
| सजन्म | जजन्म | ६२ | १६ | नक्त्य | नक्त्यं | ७० | १४ |
| स्वर्गाः | स्वर्गाः | ६२ | १६ | यस्मिन् | यस्मिन् | ७१ | १७ |
| सलघ्नः | सलघ्नाः | ६२ | १६ | अतिश्री | अतिश्री | ७१ | २३ |
| सुगमं | सुगमं | ६२ | २१ | बोध्या | बोधा | ७१ | १९ |
| श्री | श्री | ६३ | २ | निष्कले | त्रिस्तुले | ७३ | ६ |
| मा १ | मा १ | ६३ | ९ | शुभे | शुभम् | ७३ | ६ |
| आ | अ | ६३ | ७ | ० | ३ सुखं | ७५ | ८ |
| स्व. | स्व | ६३ | ११ | घन्मा. | ० | ७५ | १२ |
| दुषे | दुष | ६३ | ८ | दू | दु | ७५ | १३ |
| भिजु | भि | ६३ | ५ | अनः | अन. | ७५ | १५ |
| सुखो | सुखे | ६३ | ९ | द्वेषा | द्वेष्या | ७७ | ११ |
| ह | हु. | ६३ | ३ | कमे | कमे | ७७ | १३ |
| व | व | ६३ | ८ | भोजयेत् | भोजयेत् | ७८ | ६ |
| १२।९।९ | १२।९।९ | ६४ | १० | भ्यंजने | भ्यंजने | ७८ | १३ |
| जीवेय | जीववेधः | ६५ | ३ | त्नानां | स्नाना | ७८ | २० |
| द्वादश | द्वादशः | ६५ | ५ | गगिनी | गगिनो | ७९ | ४ |
| ग्रहार्थे | ग्रहार्थे | ६५ | १० | तथा | नया | ७९ | ११ |

| अशुद्ध- | शुद्ध- | वृ | प | अशुद्ध- | शुद्ध- | वृ | प |
|-----------|--------------|----|----|------------|-------------|----|----|
| पुस | पुस | ८० | ८ | प्रथमाद्धे | प्रथमोद्धे | ८० | १६ |
| शुभेंपु | शुभेपु | ८० | १४ | यार्गभे | यानुर्गर्भे | ८० | २१ |
| राशीश. | राशीश | ८० | १५ | नावापेत | नावरंग | ८१ | १ |
| धानद. | धानद. | ८० | १६ | हिजा | दिजा. | ८१ | १५ |
| सूलूखला | सूलूखला | ८१ | १ | रोश्व | रश्व | ९० | १ |
| मोभुक्त | मोमुक्त | ८१ | २ | रखी | रखी | ९१ | ४ |
| मिंदुका | मिंदुका | ८२ | ६ | नुहि | नुदि | ९२ | ३ |
| मूलायनुल | मूलायनुल | ८२ | १४ | रुवां | पूर्व | ९२ | १३ |
| मालाक्य | मालाक्य | ८२ | १४ | सर्प | शुरु | ९३ | ४ |
| त्रिभागौच | त्रिप्याशोच | ८२ | १६ | पच | पच | ९३ | १० |
| त्वाद्या | त्वाद्या | ८६ | ६ | वैचैदिक | दैधिक | ९३ | ११ |
| कुले | कुल | ८४ | ७ | सहित | सहितो | ९३ | १७ |
| सर्वपु | सर्वपु | ८४ | ७ | त्रितये | त्रितयं | ९३ | २१ |
| तद्यस्तर | तद्यस्तर | ८४ | ७ | यरो | यरो. | ९३ | २१ |
| भिषमाते | भिषंगते | ८४ | ८ | वर्णाधिपते | वर्णाधिपे | ९३ | २३ |
| सूतकान | सूतकान | ८४ | ८ | जिने | जिते | ९६ | ४ |
| कन्या | कन्या | ८४ | १० | कुठिका | कठिका | ९४ | ८ |
| नाम्नी | नाम्नी | ८४ | ११ | ग्रतं | ग्रत | ९६ | १४ |
| ततोप्याधि | ततो ५ व्याधि | ८४ | २० | नरंपु | नधिदु | ९४ | १५ |
| त | तत | ८४ | २० | युगभितं | युगाभितं | ९४ | १५ |
| वैद्यते | वैद्यते | ८५ | १० | मधुग | मधुग | ९४ | १७ |
| वर्जपि | वर्जपि | ८५ | २१ | रविहो | रविहो | ९४ | १८ |
| वीन्या | वीन्य | ८५ | २१ | केतुहो | केतुहो | ९४ | १८ |
| बान्नायो | बान्नाये | ८५ | १० | नानि | नानि | ९४ | १८ |
| दारभ्य | दारभ्य | ८५ | १३ | प्रपाते | प्रपाते | ९६ | २१ |
| गर्भा | गर्भा | ८५ | १३ | वेन | वेन | ९५ | ६ |
| जीवन | जीव | ८६ | २१ | धस्तलु | शंस्तलु | ९० | ५ |
| सिताचां | मिताना | ८७ | ४ | १३ | ३ | ९५ | ३ |
| गरा | गद | ८७ | ८ | नदे | रंधे | ९६ | ४ |
| सभूमो | सुभूमो | ८८ | १ | न्यनु | न्यानु | ९६ | ६ |
| मनाशं | नावनाशं | ८८ | १० | संगीणा | संगीणां | ९६ | ८ |

| अमुद्ध. | मुद्ध. | पृ. | पं. | अमुद्ध. | मुद्ध. | पृ. | पं. |
|-------------|-------------|-----|-----|--------------|--------|-----|-----|
| राहु | राहो | १६ | २१ | | | | |
| देवारंभः | वेदारंभः | १६ | १२ | | | | |
| न्यसेत् | न्यस्यते | १६ | १५ | | | | |
| सेपे | शेपे | १८ | २ | | | | |
| सुलो | सुद्धे | १८ | १२ | | | | |
| भ्रम | भ्रमः | १८ | १२ | | | | |
| बुधेही | बुधेदू | १८ | १७ | | | | |
| सूर्यभात् | सूर्यभात् | १०० | ५ | | | | |
| पृति | सति | १०० | १० | | | | |
| सुभ | सुभे | १०० | १२ | | | | |
| पुस्ता | पुंस्ता | १०० | १७ | | | | |
| रव्यर्च | रभ्यर्च्य | १०० | १८ | नाडि | | | |
| यूयली | पुंयली | १०१ | ५ | दोभाग्यं | | | |
| चंद्रे | चंद्रे | १०१ | ८ | न्यसेते | | | |
| गुणा | गुण | १०१ | १२ | गुणाः | | | |
| धिक | धिक | १०१ | १५ | पतिःश्रेष्ठे | | | |
| हीला | हिला | १०१ | २० | राशिर्वरंभ | | | |
| वरशोः | वरराशोः | १०२ | १ | लादपी | | | |
| गुणा | गुण | १०२ | १ | दुःकरं | | | |
| उभं | उभ | १०२ | ४ | धिष्णा | | | |
| अं | अ | १०२ | ५ | मिति | | | |
| स्वसीलं | स्वशीलं | १०२ | २० | दयं | | | |
| मांशे | भांशे | १०४ | ७ | दिहान्यद | | | |
| चित्य | चित्य | १०४ | ८ | यथो | | | |
| दशमं | दशमे | १०४ | १३ | आजो | | | |
| सप्तम्ये | सप्तकेय्य | १०४ | १४ | स्तां | | | |
| कुंभं | कुंभे | १०४ | १५ | घ्नी | | | |
| निता | नित | १०४ | १७ | स्मे | | | |
| दंशकाद्वातः | दंशकाद्वातः | १०४ | १८ | णीं | | | |
| पुसोश | पुंसोश | १०४ | २० | विवाहाः | | | |
| | | | | पुविष | | | |

अभिनीचक्रम

| | | |
|---|---|---|
| न | न | न |
| न | न | न |
| न | न | न |
| न | न | न |
| न | न | न |
| न | न | न |
| न | न | न |
| न | न | न |
| न | न | न |
| न | न | न |

१४

२१

१०४ २०

१०५ २

१०५ ७

१०५ १८

१०५ १९

१०५ २०

१०६ १

१०६ १

१०६ २

१०६ ३

१०६ ८

१०६ १०

१०६ ११

१०६ १२

१०६ १३

१०६ १४

१०६ १५

१०७ २

१०७ १५

१०७ १५

| अशुद्ध. | शुद्ध. | पृ. | पं. | अशुद्ध. | शुद्ध. | पृ. | पं. |
|-----------------|----------------|-----|-----|----------------|-----------------|-----|-----|
| झडा | झूडा | १०८ | ४ | चतस्रो | चतस्रो | ११८ | ३ |
| अन्या | अन्या | १०८ | १३ | गुणिताः | गुणित. | ११८ | ४ |
| चूडा | चूडा | १०८ | २० | सौम्यदर्शगश्मि | सौम्यदर्शगः शशी | ११८ | ५ |
| सुष | सष | १०८ | २० | यमः | यमः | ११८ | ११ |
| मोड | मौड | १०९ | १४ | राहुकेतो | राहुकेतोः | ११८ | ११ |
| सुस्म | सुस्म | १०९ | १५ | प्रमोदिनी | प्रमोदिनी | ११९ | २ |
| रायसा | रयश | १०९ | १५ | रश्च | राश्च | ११९ | १५ |
| दा | दा | १०९ | १७ | तोहि | तोहि | ११९ | १८ |
| अति | आति | १०९ | १८ | तादा | तोष्ट | ११९ | १९ |
| राज्ञा | राज्ञां | १०९ | १९ | अव्ययस्य | अव्यस्य | १२० | १ |
| दंति | दीनि | १०९ | १९ | धनस्यापो | धनस्यपो | १२० | १ |
| त | त | ११० | ६ | समाशले | समांशले | १२० | १ |
| मा | मर | ११० | ८ | एकार्गलोपि | एकार्गलोप | १२० | ७ |
| अणा | अण | ११० | ६ | अ्यामिच | जामिच | १२० | ७ |
| माघं | माघ | ११० | १५ | भ्युदये | भ्युदये | १२० | ८ |
| काल्युन | काल्युन | ११० | १७ | मुद्रुती | मुद्रुती | १२० | ११ |
| यद्यदा | यद्युदा | ११० | १७ | भूतिफां | भूतिफां | १२० | १० |
| धज्योः१० | यज्योः१० | ११० | २० | गोधुलि | गोधुलिः | १२१ | २ |
| तरं | तरं | १११ | ५ | १।१।५ | १।२।५ | १२१ | १० |
| मृतं | मृतुं | १११ | ६ | ८।१० | ९।१० | १२१ | ११ |
| मोत्थ | मोत्थ | १११ | ६ | ५।७।११ | ५।७।५। | १२२ | ३ |
| विषयः | विधयः | १११ | ९ | भारय | भारंख | १२२ | १५ |
| वाद्यपं | वाद्यां | १११ | १४ | विधमाः | विद्यमाः | १२३ | २० |
| वेधे | वेधे | ११४ | २ | उदी | नुदी | १२३ | ५ |
| दुष्टां | दुष्टा | ११५ | ३ | विभा | गविभा | १२३ | १३ |
| त्याज्यो | त्याज्यो | ११५ | १८ | माना | भानाः | १२३ | १२ |
| पकं | पक. | ११५ | १९ | कोपि | सिध्यं | १२३ | १२ |
| नाश | नाश | ११५ | १८ | २।२।२। | ३।२।२। | १२४ | १३ |
| योष | पगे | ११५ | ४ | १८।७। | १९।७। | १२७ | १८ |
| हर्षणोत्पादितुं | हर्षणोत्पादितु | ११५ | ९ | घटिका | घटिकाः | १२९ | ९ |
| विधित्य | विधित्यः | ११५ | १७ | मोदां | मोदां | १३० | ४ |

| अशुद्ध. | शुद्ध | पृ | प | अशुद्ध | शुद्ध | पृ | प |
|---------|-----------------------|-----|-----|-------------|-------------|-----|----|
| पन्ना | पना | १३३ | १९ | तुंग | तुंग | १४८ | १९ |
| भर्तु | भर्तृगृह | १३४ | ४ | कार | कारकाः | १४८ | १९ |
| वाल | वाल | १३४ | ६ | कास्य | कायस्युः | १४८ | १९ |
| नारी | नारी | १३४ | १५ | जयः | जयं | १४९ | ६ |
| वध्या | वध्या | १३४ | १८ | यत्स | यत्त | १४९ | ९ |
| पह | पह | १३५ | ४ | सुत | सुतः | १४९ | ५ |
| पुद्ध | पुच्छे | १३५ | १८ | राहु | राहुः | १४९ | ५ |
| मज | गज | १३५ | १३ | चिरण | चिरेण | १४९ | ९ |
| शुक्रव | शुक्रन | १४२ | ३ | पिया | रिया | १५१ | १५ |
| दोषो | दोषोन | १४२ | ५ | मृत्तजीव | मृत् | १५१ | २० |
| सद | सुद | १४२ | ८ | चंद्रो | चंद्रौ | १५१ | २१ |
| बाना | याता | १४३ | १ | तदपि | तदापि | १५१ | २१ |
| नुमा | नुगा | १४३ | ३ | स्याई | स्यापी | १५२ | २ |
| मसा | मदा | १४६ | ८ | स्यानू | स्यात् | १५२ | ५ |
| पञ्चे | पत्ते | १४७ | १ | वर्ष | वर्षं | १५२ | ८ |
| सक्य | राक्य | १४७ | १ | भक्त | भुक्ता | १५२ | १० |
| पति | पति | १४७ | २१३ | नलोवापि | नलोवापि | १५२ | १२ |
| १४ | १५ | १४७ | ११ | शोभने | शोभनो | १५४ | ४ |
| दृष्ट | दृष्ट | १४७ | १२ | शून्यश | शून्यशः | १५४ | ५ |
| | दक्षेष्टं शुभ. राज्ञे | | | द्विगुभे | द्विगुभे | १५५ | ५ |
| | संमुखदिकौयय | | | रादे | रादे | १५९ | १ |
| | पश्चिमआग्नेयादि | | | देया | दय | १५९ | २ |
| | चारोराहोवाध्य | १४७ | १२ | हृद्यवाद्या | हृद्यवाद्या | १६० | २ |
| टिका | टिकाः | १४७ | १८ | वर्ज | वर्ज | १६१ | ५ |
| धीदु. | धीदुः | १४८ | १ | गर्जति | गर्जित | १६१ | ७ |
| उप | उप. | १४८ | १ | निद्योप | निद्योप | १६१ | ९ |
| शस्त | शस्य | १४८ | १ | दिगी | दिगी | १६१ | १२ |
| तरा | तरा | १४८ | १ | धराणा | धराणि | १६२ | ३ |
| सिद्धि | सिद्धिः | १४८ | ५ | औय | जोय | १६३ | २ |
| कुंभो | कुंभ | १४८ | ५ | रीतां | रीताः | १६३ | १० |
| एक | एका | १४८ | १८ | ब्राह्मणा | ब्राह्मणा | १६३ | १५ |

| अशुद्ध | शुद्ध | पृ | प | अशुद्ध | शुद्ध | पृ | प |
|----------|--------------|-----|----|--------------|-----------------------|-----|----|
| सकुना | सकुना | १६३ | १८ | सधि | सधि | १७१ | २ |
| जात | जात | १६५ | २ | हर्ति | हर्ति | १७३ | २ |
| वर्त्ति | वर्त्ती | १६५ | ५ | मक्ष | सक्षे | १७३ | ४ |
| वक्र | वक्र | १६६ | १ | मातो | मानो | १७३ | ५ |
| पार्थ | पार्थ | १६६ | १ | पामार्घा | चारा | १७३ | ८ |
| योश्च | योश्च | १६६ | २ | कवार्थ | कवा ८० | १७४ | ३ |
| स्तब्ध | स्तब्ध | १६६ | ३ | ८० | ९० | १७५ | १ |
| भूरव | भूरव | १६६ | ६ | उत्क | उक्त | १७५ | १ |
| मिष्ट | मिष्ट | १६६ | ८ | वृति | वृति | १७५ | ३ |
| नह | नह | १६६ | १२ | नेड | नहू | १७६ | १ |
| स्त्रिभि | स्त्रीभि | १६७ | १ | क्रमाक्रमप्र | क्रमप्र | १७६ | २ |
| स्यश्चो | स्यो | १६७ | २ | नग | गन | १७६ | ५ |
| मव | मव | १६७ | ५ | तदपिजये | तदापिजय | १७६ | ६ |
| वासि | पाशि | १६७ | ७ | पद्या | पद्य | १७६ | ८ |
| अति | अति | १६७ | १० | चेद्र | चेद्र | १७६ | ११ |
| भवति | भवतिअधवर्गभर | १६९ | १ | शुव | मूव | १७६ | १४ |
| रूप्यत | प्यत | १६९ | ३ | | उदयाद्रोद्रमादिरणे | | |
| प्यन | धन | १६९ | ६ | | मैत्रसोमेमुहूर्त्तक ज | | |
| स्त्रिई | स्त्रिउ | १६९ | ७ | | पदभेमपारेतुरदय | | |
| दे | दे | १६९ | ८ | | बुधेतथारावणशुक्रप | | |
| न्ययो | न्ययो पक्षयो | १६९ | ९ | | रेचभार्गवेचभिभीषण | | |
| पाठे | सौठे | १६९ | १० | | शनौयममुहूर्त्तक वदि | | |
| दव | दय | १७० | ३ | | काहयसमितदिनाणे | | |
| तेच | तेच | १७० | ३ | | य समापानितस्मादे | | |
| नदा | नदा | १७० | १२ | | फातरेभुवं एनेरादोमि | | |
| अनु | अनु | १७० | १५ | | जानीयासदलेपुंशुन | | |
| प्रभा | प्रभा | १७० | १५ | | सोमदिने सत्यरजिअ | | |
| ०० | राक्षश | १७० | १६ | | गारुके भृगोरविम | | |
| ०० | १२ | १७० | १६ | | दनुषेधेचमानाडी | | |
| स्वरो | स्वरा | १७१ | १७ | | चतुष्टय उद्दे | | |
| प्य | एव | १७१ | १७ | | नारोगाकाभाशुभाच | | |

| अशुद्धः | शुद्धः | पृ. | प. | अशुद्धः | शुद्धः | पृ. | प. |
|-----------|----------------------------|-----|----|----------------------|------------------|-----|----|
| | लाचला वाराखष्टोम | | | ज्यं | ज्य | १९६ | १० |
| | वेदरोनिशास्वेवंक | | | नाभि | नाभिं | १९७ | ३ |
| | मः स्मृतः नभः प्रभृ | | | वाड | वाड् | १९७ | ८ |
| | तिभिः शून्यं गणपत्य | | | पमु | पडु | १९७ | १३ |
| | क्षरैर्धनुः मृत्युपदादि | | | पूजा | पूजां | १९७ | १८ |
| | रादैस्तु वर्णे शौरिय | | | युत्त | युतः | १९७ | २० |
| | मादिजैः अमृतं विष्णु | | | पन | पनः | १९७ | २१ |
| | वर्णेऽप्यज्ञेयमन्नस्त्रिजा | | | वनी | वंती | १९८ | ३ |
| | नता | १७७ | १० | विर्धे | विधो | १९८ | ८ |
| कम्पति | क्रमतोमति | १८९ | ६ | लये | लये | १९८ | ८ |
| पृष्ठ | पृष्ठे | १९० | १५ | श्वोत्तरे | श्वोत्तरे | १९८ | १३ |
| निद्दे | निर्द्दे | १९१ | १ | दक्षिणा | दक्षिणाः | १९८ | २० |
| प्रष्टु | मष्टुः | १९१ | १ | धं | धं | १९८ | २१ |
| स्कृडिता | स्कृडिताच | १९१ | ७ | कटकि | कटकि | १९९ | ८ |
| ग्रावाणोः | ग्रावाणैः | १९१ | १५ | त्वं | त्परं | १९९ | १३ |
| दृढ | दृढं | १९१ | १५ | फन | पन | १९९ | १३ |
| तनु | तनु | १९१ | १५ | य | याः | १९९ | १४ |
| वक्र | वक्र | १९१ | १७ | विल्वादाडिमकैश | विल्वादाडिमकैश | | |
| रूपा | रूपा | १९१ | २० | रैर्मध्यगैरपि हर्षज | रैर्मध्यगैरपिनवे | १९९ | १५ |
| क्त | क्ता | १९१ | २० | नकाः क्रियुतो गृहेषु | | | |
| वृः | वः | १९३ | ५ | स्नाभि | स्नाभि | १९९ | १७ |
| क्षः | क्षः | १९३ | ५ | दास्थानं | दारस्थानं | २०० | ५ |
| भिगु | भिर्गु | १९४ | ११ | द्वार | द्वारं | २०० | |
| प्यं | पि | १९५ | २ | यद्वारं | यद्वारं | २०१ | १ |
| सर्व | सर्व | १९५ | २ | ३म | ३मध्य | २०१ | ५ |
| ध्रुव | ध्रुवं | १९५ | ८ | सु | सु | २०२ | ३ |
| कर्कटं | कर्कटे | १९५ | ८ | दुष्य | दुष्य | २०२ | ४ |
| निद्य | निद्य | १९५ | ११ | कुज | कुंजप | २०३ | १ |
| क्षस | क्षसं | १९६ | ९ | मिंतो | मिंतो | २०३ | ७ |
| मुखं | मुखं | १९६ | १२ | दोग्रह | दोग्रह | २०३ | १० |
| कुण्ड | कुण्ड | १९६ | १४ | रचन | रचनं | २०१ | १३ |

| अशुद्ध- | शुद्ध- | पृ. | प. | अशुद्ध- | शुद्ध- | पृ. | प. |
|--------------------|---------------|-----|----|----------|-------------------|-----|----|
| न | न | २०३ | १४ | हं | हं | २३८ | १९ |
| सिनम् | सनम् | २०३ | १५ | ष्कः | ष्कः | २३८ | २१ |
| गुर | गर | २०३ | १६ | त्य | त्य | २३९ | १ |
| अधि | आधि | २०३ | १७ | शुभे | शुभे | २३९ | ५ |
| गुरो | गुरो | २०३ | १८ | ह्ये | ह्ये | २३९ | ९ |
| दशमे | दशमे | २०४ | २ | चंद्रे | चंद्रे | २३९ | २० |
| मरागं | विरागं | २०४ | १६ | पापा | पापाः | २३९ | २१ |
| शाल | शाले | २०४ | ६ | गुरु | गुरुः | २३९ | २१ |
| मेदापं | भेदाःप | २०४ | ८ | क्ये | क्ये | २२० | १ |
| धामि | धामि | २०४ | ९ | पत्या | पत्या | २२० | ४ |
| मन | मना | २०४ | २१ | तो | ते | २२० | ४ |
| ध्या | ध्या | २०५ | ४ | सौम्या | सौम्याः | २२० | २० |
| शुभां | शुभां | २०७ | ७ | रित्य | रित्य | २२१ | ८ |
| रोप | रोप | २०७ | ८ | रेध्रे | रेध्रे | २२१ | १० |
| नगरप्रवेशे प्रवेशे | पुरनगरप्रवेशे | २०७ | १६ | तिची | तीची | २२१ | १७ |
| फलं | फल | २०७ | १५ | मंदे | मंदे | २२२ | २ |
| हट | हट्ट | २०९ | ६ | दड | दंड | २२२ | ६ |
| अति | अलि | २०९ | ७ | मिप्रि | मिथि | २२२ | ७ |
| सीतौ | सितौ | २१३ | ७ | नेष्य | जेष्य | २२२ | ११ |
| अती | अती | २१३ | १७ | हर | हरतः | २२२ | १२ |
| मंच | पंच | २१३ | १९ | मेंशे | मेशे | २२२ | १२ |
| वृ | वृः | २१४ | १ | कंठ | कंठ | २२२ | १३ |
| पुर्व | पुर्व | २१५ | ९ | क्ति | क्ति | २२२ | १७ |
| देव | दये | २१५ | १७ | सप्तम | सप्तमपः | २२३ | ५ |
| षः | शः | २१५ | १९ | सुमंद्या | सुमंद्या | २२३ | ५ |
| चंद्रो | चंद्रो | २१७ | ६ | शुभ | शुभे | २२३ | ७ |
| शेषः | शेषाः | २१७ | १५ | दृष्ट्या | दृष्ट्या | २२३ | ८ |
| गृह | ग्रह | २१७ | २१ | वृष्टि | वृष्टिदि. स्वभावे | २२३ | ९ |
| नडाः | नाडाः | २१७ | २१ | | दिनोनरं वृष्टि | २२३ | ९ |
| तत्स | तत्स | २१८ | २ | चंद्रे | चंद्र | २२३ | १० |
| सरिष्यो | सरिष्यो | २१८ | १९ | जलार्थ | जलार्थ | २२३ | १४ |

| अशुद्ध- | शुद्ध- | पृ. | पं. | अशुद्ध- | शुद्ध- | पृ. | पं. |
|-----------|-----------|-----|-----|---------|----------------|-----|-----|
| यशदां | यशदा | २२३ | १५ | यन्ये | जघन्ये | २२८ | ९ |
| चंद्र | चंद्रे | २२३ | १५ | क्षां | क्षा | २२८ | २० |
| यद्री | चंद्रो | २२३ | १८ | वर्णा | वर्ण | २२९ | ९ |
| पष्टो | पृष्टो | २२३ | १९ | श्रीन | श्रीन | २२९ | ११ |
| यादी | यदी | २२३ | २१ | कत | लते | २३० | २ |
| पापे | पापेः | २२४ | १ | लु | पु | २३० | ६ |
| परां | परांशं | २२४ | ५ | यथा | स्यथ | २३० | १३ |
| द्राशी | द्राशि | २२४ | १३ | ताला | नाला | २३० | १७ |
| त्रोष | त्रोषु | २२४ | १५ | दिनमि | दिनमिति | २३१ | १ |
| शयं | सुखं | २२४ | १८ | मनंति | मनति | २३१ | ९ |
| द्विच | द्विश्च | २२४ | १९ | जेत | जेत् | २३१ | ३ |
| भापे | भाष | २२४ | १९ | नृण | तृण | २३१ | ४ |
| येत | येत् | २२४ | २१ | पाप्य | पाम्य | २३१ | १४ |
| तुसु | तुसु | २२५ | ९ | सौम्या | सौम्याः | २३१ | १५ |
| दीय | वेय | २२५ | ९ | कुयु | कुरु | २३१ | १८ |
| धां | परं | २२५ | ५ | क्षात्र | क्षात्र | २३३ | ३ |
| कः | कं | २२५ | १० | सयो | संयो | २३३ | ३ |
| दीर्घस्वः | दीर्घस्वः | २२५ | ८ | वैद्ये | वैद्यो | २३३ | ४ |
| आ. ए. | आ. ए | २२५ | १२ | १ | १८ | २३३ | १० |
| स्वरा | स्वरा | २२५ | १२ | गता | गताः | २३३ | १३ |
| काला | कालाः | २२७ | ५ | ० | तत्तनाडीचक्रम् | २३४ | ६ |
| पाञ्च | पादाञ्च | २२७ | ५ | यतते | यतने | २३४ | ८ |
| शाले | शालेः | २२७ | ११ | फल | फलं | २३५ | ३ |
| शृंगो | शृंगो | २२८ | ५ | धि | द्विधि | २३५ | ४ |
| हनि | हनी | २२८ | ८ | र्ज | यं | २३५ | ४ |